PRINTED MATTER/PRINTING BOOK CLAUSE 121 (A) P & T GUIDE

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)
द्वारा भिवानी (हरियाणा), काठमाण्डू (नेपाल) से प्रकाशित

ISSN : 2395-7115
Impact Factor 8.642

बोहल शोध मंजूषा
Bohal Shodh Manjusha
AN INTERNATIONAL MULTI DISCIPLINARY, MULTIPLE LANGUAGES
PEER REVIEWED, REFREED RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

Website :
www.bohalshodhmanjusha.com
Email : grsbohal@gmail.com

Editor :
Dr. Naresh Sihag, Advocate
HOD Hindi, Tantia University
M. : 8708822674, 9466532152

गीना देवी शोध संस्थान
द्वारा श्रीगंगानगर, (राजस्थान), पटियाला (पंजाब) व नेपाल से प्रकाशित

ISSN : 2321-8037
Impact Factor 7.834

Gina Shodh
SANGAM
A Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

Website : www.ginajournal.com
Email : grngobwn@gmail.com
Office : 8708822674

Editor :
Dr. Rekha Soni, Vice Principal
Education, Tantia University
M. 9828531975

गिरधारीलाल घासीराम शोधपीठ
द्वारा नई दिल्ली, आगरा, गाजियाबाद एवं नेपाल से प्रसारित

ISSN : 2348-5639
Impact Factor 6.521

SHODH SAMALOCHAN
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Website : https://ginajournal.com/shodh-samalochan/
Executive Editor : Dr. Varsha Rani M. 9671904323
Managing Editor : Dr. Mukesh Verma M. 9627912535

Editor :
Dr. Naresh Sihag, Advocate
M. 8708822674

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गुगनराम सोसायटी (रजि.) के लिए डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट ने सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली-110094
से छपवाकर गीना प्रकाशन, 202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा) से वितरित की।

ISSN 2348:5639

SHODH SAMALOCHAN 2025

Dr. Versha Rani
Dr. Naresh Sihag, Adv.

गिरधारीलाल घासीराम शोधपीठ
द्वारा भारत-नेपाल से प्रसारित

ISSN : 2348-5639
Impact Factor : 6.521

SHODH SAMALOCHAN

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Vol. : 12, Issue : 2

April-May-June : 2025

Executive Editor :
Dr. Varsha Rani

Editor :
Dr. Naresh Sihag 'Bohal'
Advocate

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.) द्वारा प्रकाशित

SHODH SAMALOCHAN

शोध-समालोचन (त्रैमासिक)

संस्थापक संपादक
स्व. फतेहचंद

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REREREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTTERLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

वर्ष-12, अंक-2 | अप्रैल-जून 2025 (भाग-6) | आईएसएसएन : 2348-5639

संपादक
• डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल' एडवोकेट

विशेषांक संपादक
• डॉ. निशिकान्त पाण्डेय

कार्यकारी संपादक
• डॉ. वर्षा रानी

प्रबंध संपादक
• डॉ. मुकेश 'ऋषिवर्मा'

सह-संपादक
• डॉ. लता एस. पाटिल,
• डॉ. सुलक्षणा अहलावत

अक्षर संयोजन
• मो. सलीम

कानूनी सलाहाकार
• डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट
• अजीत सिहाग, एडवोकेट

सलाहकार सम्पादक मंडल

• डॉ. निशीथ गौड, आगरा
• डॉ. ऊषा रानी, शिमला
• डॉ. गोविन्द सोनी, श्रीगंगानगर
• डॉ. सुषमा रानी, जीन्द
• डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट, श्रीनगर
• डॉ. दीपशिखा, पटियाला
• डॉ. गौतम कुमार साहा, दरभंगा
• श्री राकेश शंकर भारती, युक्रेन
• डॉ. के.के. मल्होत्रा, कैनेडा
• डॉ. आशीष कुमार दीपांकर, मेरठ
• डॉ. कामिनी कौशल, गाजियाबाद
• डॉ. रवि शंकर सिंह, आरा
• डॉ. संजय कुमार, रांची
• डॉ. संतोष कुमार भगत, रांची

1. 'शोध-समालोचन' का प्रबंधन और संपादन पूर्णतः अवैतनिक है।
2. 'शोध-समालोचन' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के अपने हैं। उनके प्रति वे स्वयं उत्तरदायी है।
3. पत्रिका से संबंधित प्रत्येक विवाद का न्याय क्षेत्र भिवानी न्यायालय ही मान्य होगा।
4. प्रकाशक/ स्वामी डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट ने सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली-110094 से मुद्रित करवाया।

'शोध समालोचन' की सदस्यता का शुल्क भुगतान राष्ट्रीयकृत बैंकों द्वारा सीधे ट्रांसफर या जमा किया जा सकता है। बैंक का विवरण निम्नानुसार है–**बैंक :** PUNJAB NATIONAL BANK **Branch :** Yamuna Vihar, Delhi-110053 **IFSC :** PUNB0225600 **Account Holder :** SANIA PUBLICATION **Current Account No.** 2256002100405546 भुगतान की मूल रसीद, शोध-पत्र पत्रिका की ई-मेल पर भेजना अनिवार्य है।

नोट :- इस अंक की प्रिंट कॉपी खरीदने के लिए सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली-110094 से सम्पर्क करें मो. 9818128487

मूल्य : 650/- रु. एक प्रिंट प्रति | वार्षिक 2500/- रु.

Editorial Board Member

1. **Dr. Priyanka Ruwali**
   Dept. Of Sociology
   D.S.B. Campus, Kumaun University, Nainital, Uttrakhand
2. **Ashutosh Singh**
   Department of History,
   Kurukshetra University, Kurukshetra, Haryana
3. **Mansi Sharma**
   ICSSR- Doctoral Fellow,
   Department of Political Science,
   University of Lucknow, Lucknow, U.P.
4. **Kishor Kumar**
   Department of History,
   Kumaun University, Nainital, Uttarakhand.
5. **Vivek Kumar**
   Research Scholar,
   Department of Medivial and Modern History,
   University of Lucknow, U.P.

विषय विशेषज्ञ सलाहकार समिति/ संपादकीय मंडल :

- **Dr. Mudita Popli**
  Principal, Maa Karni B Ed College Nal, Bikaner
- **Dr. Tapasya Chauhan**
  Assistant Professor,
  Dr. Bhimrao Ambedkar University, Agra (Utter Pradesh)
- **Dr. AMBILI V. S.**
  Assistant Professor, Department of Hindi,
  N.S.S. College, Pandalam, Pathanamthitta Distt. University of Kerala.
- **Dr. Om Prakash Mehrara**
  Director, Shri Ramnarayan Dixit PG College, Srivijaynagar, Distt. Anupgarh (Rajasthan)
- **Dr. Anju Bala**
  Assistant Professor Hindi,
  Guru Nanak Girls College, Yamunanagar-135001
- **डॉ. श्रीमती अभिलाषा सैनी**
  प्राचार्य, स्व. रामनाथ वर्मा शासकीय महाविद्यालय, मोपका, जिला-बलौदा बाजार, छत्तीसगढ़
- **डॉ. माया गोला,** असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा (उत्तराखंड)
- **डॉ. मोहित शर्मा**
  श्री सर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, निम्बार्क तीर्थ किशनगढ़, जिला अजमेर (राजस्थान)-305815
- **रजनी प्रिया**
  राँगाटाँड़ रेलवे कॉलोनी, क्वार्टर सं. 502/136, तरुण संघ क्लब दुर्गा मंदिर, धनबाद, लैण्डमार्क - नियर श्रमिक चौक, पोस्ट जिला-धनबाद, झारखंड-826001

- **डॉ. आँचल कुमारी,** असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी
  राम चमेली चड्ढा विश्वास गर्ल्स कॉलेज गाजियाबाद चौधरी चरणसिंह युनिवर्सिटी, मेरठ (उ. प्र.)
- **डॉ. सरिता भवानी मालवीय**
  असिस्टेंट प्रोफेसर, फैकल्टी ऑफ लॉ.,
  आर.के.डी.एफ. विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्यप्रदेश)
- **डॉ. संदीप कुमार,** असि. प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, कन्हैयालाल मानिकलाल मुंशी हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ, डॉ. भीमराव अम्बेडकर वि.वि., आगरा
- **डॉ. प्रमोद नाग**
  सहायक प्राध्यापक, आचार्य इंस्टीट्यूट ऑफ ग्रेजुएट स्टडीज, बेंगलुरु-560107
- **पल्लवी आर्य**
  असि. प्रोफेसर, भाषाविज्ञान विभाग, के.एम.आई. डॉ. भीमराव अम्बेडकर वि.वि., आगरा
- **डॉ. अमित कुमार सिंह**
  डी. लिट्., असि. प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, के.एम. आई., डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा
- **कोकिला कुमारी**
  शोद्यार्थी, हिंदी विभाग, राँची वि.वि. राँची, झारखंड
- **गोस्वामी सोनीबाला**
  शोधार्थी - जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार
- **डॉ. करुणेन्द्र सिंह**, असिस्टेंट प्रोफेसर
  रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, गोरखपुर, बापू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पीपीगंज, गोरखपुर
- **डॉ. मीरा चौरसिया**
  चमनलाल महाविद्यालय लंढौरा, रुड़की, हरिद्वार, उत्तराखण्ड-247664
- **Dr. Vimal Parmar**
  Assistant Prof. Rajasthan P.G. Law College, Chirawa , Rajasthan
- **डॉ. तनु श्रीवास्तव**
  असिस्टेंट प्रोफेसर (अर्थशास्त्र), स्कूल ऑफ सोशल साइंस, देवी अहिला विश्वविद्यालय, इन्दौर
- **डॉ. कुमारी लक्ष्मी जोशी**
  उप-प्राध्यापक, केंद्रीय हिन्दी विभाग
  त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडू, नेपाल
- **Dr. Archana Tiwari** , Assistant Professor , History and Indian Culture, Uni. Rajasthan, Jaipur
- **डॉ. जगदीप दुबे**
  सहायक प्राध्यापक वाणिज्य (म.प्र.), शासकीय आदर्श महाविद्यालय, डीनडोरी (म.प्र.)
- **डॉ. चन्द्रशेखर सिंह**
  समाज कार्य विभाग, काशी विद्यापीठ, वाराणसी
- **लेफ्टि. डॉ. सन्दीप भांभू**
  शारीरिक शिक्षा विभाग, टॉटिया वि.वि. श्रीगंगानगर

Request to Writers

Send quality original and unpublished works written on language, literature, society, science and culture. For publication, along with the translated works, also send the letters of consent received from the original authors. Compositions should be typed in Hindi Unicode Mangal font, English Time Roman. At the beginning of the article, a summary of the article is required which should be between 150 to 200 words maximum. The abstract must reflect the purpose of writing the article. Also write 5 to 7 'key words' (seed words) according to the article.

Write the article by dividing it appropriately into subheadings. Be sure to give a conclusion at the end of the article. The word limit should be 2000 to 2500 words. List of bibliographies at the end of the article APA Be in the format of. While sending the article, please write your name, address, phone number and title of the article in the e-mail. Submit a declaration to the effect that the article is original, unpublished, the author and not the editorial board will be responsible for any dispute related to it in future.

At the end of the composition, mention your complete postal address, mobile number and e-mail address.

- Editor

लेखकों से निवेदन

भाषा, साहित्य, समाज, विज्ञान एवं संस्कृति पर लिखी गयी स्तरीय मौलिक तथा अप्रकाशित रचनाएं भेजें। प्राकशनार्थ अनूदित रचनाओं के साथ मूल लेखकों से प्राप्त सहमति पत्र भी भेजें। रचनाएँ हिंदी यूनिकोड मंगल फान्ट अंग्रेजी टाइम रोमन में टंकित होनी चाहिए। लेख के प्रारंभ में लेख का सार अपेक्षित है जो अधिकतम 150 से 200 शब्दों के मध्य हो। सार में लेख लिखने का उद्देश्य अवश्य परिलक्षित होना चाहिए। लेख के अनुरूप 5 से 7 (की वर्ड) (बीज शब्द) भी लिखें। लेख को यथोचित उपशीर्षकों में विभाजित करके लिखें। लेख के अंत में निष्कर्ष अवश्य दें। शब्द सीमा 2000 से 2500 शब्दों की हो। आलेख के अंत में संदर्भ ग्रंथों की सूची ए.पी.ए. के प्रारूप में हो। लेख भेजते समय अपने नाम, पता, फोन नंबर एवं लेख का शीर्षक ई-मेल में अवश्य लिखें। इस आशय का एक घोषणा-पत्र प्रस्तुत कर दें कि लेख मौलिक है, अप्रकाशित है, भविष्य में इससे संबंधित किसी भी विवाद के लिए लेखक उत्तरदायी होंगे संपादक मंडल नहीं।

रचना के अंत में अपना पूरा डाक पता, मोबाइल नंबर और ई-मेल पता अंकित करें।

-संपादक

प्रकाशित पत्रिका प्राप्त करने के लिए संपर्क करे :

सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली-110094

मोबाइल : 9818128487, 8383042929

ISSN : 2348-5639

SHODH SAMALOCHAN

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

[भाग III—खण्ड 4] भारत का राजपत्र : असाधारण 105

Table 2

Methodology for University and College Teachers for calculating Academic/Research Score

(Assessment must be based on evidence produced by the teacher such as: copy of publications, project sanction letter, utilization and completion certificates issued by the University and acknowledgements for patent filing and approval letters, students' Ph.D. award letter, etc,.)

S.N.	Academic/Research Activity	Faculty of Sciences /Engineering / Agriculture / Medical /Veterinary Sciences	Faculty of Languages / Humanities / Arts / Social Sciences / Library /Education / Physical Education / Commerce / Management & other related disciplines
1.	**Research Papers in Peer-Reviewed or UGC listed Journals**	08 per paper	10 per paper
2.	**Publications (other than Research papers)**		
	(a) Books authored which are published by ;		
	International publishers	12	12
	National Publishers	10	10
	Chapter in Edited Book	05	05
	Editor of Book by International Publisher	10	10
	Editor of Book by National Publisher	08	08
	(b) Translation works in Indian and Foreign Languages by qualified faculties		
	Chapter or Research paper	03	03
	Book	08	08
3.	**Creation of ICT mediated Teaching Learning pedagogy and content and development of new and innovative courses and curricula**		
	(a) Development of Innovative pedagogy	05	05
	(b) Design of new curricula and courses	02 per curricula/course	02 per curricula/course

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

संपादकीय

प्रिय पाठकों, भारत एक ऐसा देश है, जिसकी आत्मा उसकी सांस्कृतिक विरासत में रची-बसी है। यहाँ की मिट्टी में इतिहास की गूंज सुनाई देती है, तो हवा में वेदों की ऋचाएँ। सदियों पुरानी परंपराओं और आस्थाओं से लेकर आज की आधुनिक सोच और विज्ञान तक, भारत का सफर समय के साथ बदलता रहा, लेकिन उसकी आत्मा अडिग रही। यही भारत की पहचान है—शाश्वत विरासत, जो परंपरा से आधुनिकता की ओर गतिशील है, परंतु अपनी जड़ों से कभी अलग नहीं होती।

भारतीय सभ्यता हजारों वर्षों पुरानी है और इसकी सांस्कृतिक धरोहर बहुआयामी है। वैदिक ज्ञान, उपनिषदों का दर्शन, रामायण और महाभारत जैसे महाग्रंथों से लेकर योग, आयुर्वेद, संगीत, नाट्य और वास्तुशास्त्र जैसे प्राचीन विज्ञानों तक यह सब आज भी भारत की आत्मा में जीवित हैं। तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्वविद्यालयों ने ज्ञान के दीप जलाए, जिनकी रोशनी आज भी शिक्षा के मार्ग को आलोकित करती है। भारत की सांस्कृतिक विरासत केवल अतीत का गौरव नहीं है, वह आज की चुनौतियों का समाधान भी प्रदान करती है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना - संपूर्ण विश्व को एक परिवार मानने का विचार आज वैश्विक समरसता की सबसे बड़ी ज़रूरत बन गया है। चाहे वह काशी की आरती हो, तमिलनाडु के मंदिर उत्सव हों, या पंजाब की गुरबानी भारत की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ एक साथ सह-अस्तित्व और समरसता की सीख देती हैं। हालांकि भारत की यात्रा सिर्फ परंपरा तक सीमित नहीं रही। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने आधुनिकता को अपनाया, लेकिन अपनी परंपराओं की छाया में। विज्ञान, तकनीक, शिक्षा, अंतरिक्ष, चिकित्सा और डिजिटल दुनिया में भारत की अद्भुत उपलब्धियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि हम आधुनिकता की ऊँचाइयों को छूते हुए भी अपनी सांस्कृतिक नींव से जुड़े हुए हैं।

आज भारत डिजिटल युग में भी अपनी जड़ों से जुड़े रहने का श्रेष्ठ उदाहरण बन चुका है। योग को पूरी दुनिया में मान्यता मिली, आयुर्वेद फिर से चिकित्सा पद्धति के रूप में उभरा, भारतीय खानपान और वस्त्रशैली वैश्विक मंचों पर सराही जा रही है। ष्मेक इन इंडियाष, ष्डिजिटल इंडियाष, ष्एक भारत, श्रेष्ठ भारतष जैसे अभियान इस बात का संकेत हैं कि आधुनिक भारत वैश्विक मंच पर अपनी सांस्कृतिक पहचान के साथ खड़ा है। भारत की सबसे बड़ी ताकत उसकी विविधता में निहित एकता है। अनेक भाषाओं, धर्मों, जातियों और संस्कृतियों का यह संगम, न केवल लोकतांत्रिक भारत की बुनियाद है, बल्कि यह उसकी शाश्वत शक्ति भी है। इस विविधता को स्वीकारते हुए भारत ने उसे अपनी शक्ति में बदला है, यही इसकी सांस्कृतिक बौद्धिकता का प्रमाण है। इस विशेषांक का उद्देश्य भी इसी समरसता और संतुलन को उजागर करना है। 'भारत की शाश्वत विरासत रू परंपरा से आधुनिकता तक' विषय पर आधारित शोध-पत्र न केवल ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहलुओं को उद्घाटित करते हैं, बल्कि यह भी दिखाते हैं कि किस प्रकार भारतीय समाज ने समय के साथ अपने मूल्यों को पुनर्परिभाषित करते हुए आधुनिक यथार्थ से संवाद स्थापित किया है। इस अंक में भारतीय संगीत, नृत्य, स्थापत्य, दर्शन, साहित्य, लोक परंपराएं, चिकित्सा, तकनीक, शिक्षा, संस्कृति, और डिजिटल युग में भारतीयता की पुनर्व्याख्या जैसे विविध विषयों पर विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किए हैं। यह अंक अतीत से वर्तमान और वर्तमान से भविष्य की यात्रा का एक गहरा और संजीदा दस्तावेज़ बनकर उभरा है। यह अंक न केवल शोधार्थियों और शिक्षाविदों के लिए उपयोगी है, बल्कि उन पाठकों के लिए भी प्रेरणास्पद है, जो परंपरा और आधुनिकता के संतुलन को समझना चाहते हैं। यह संवाद भारत के आत्म-निर्माण की प्रक्रिया का हिस्सा है - जहां हम जड़ों को थामे हुए, नई ऊँचाइयों की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

अंत में, मैं उन सभी विद्वानों और लेखकों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने इस विशेषांक को समृद्ध बनाने में अपनी बौद्धिक ऊर्जा और दृष्टि प्रदान की। मैं विशेष रूप से विशेषांक संपादक डॉ. नीरज रुवाली सर एवं संपादक डॉ. नरेश कुमार सिहाग सर का भी आभार प्रकट करता हूँ, जिनकी दूरदृष्टि, रचनात्मक नेतृत्व और संपादन-दक्षता के कारण यह अंक अपनी विषयगत गरिमा और गुणवत्ता को साकार रूप दे सका है। साथ ही, मैं अपनी शोध-सहयोगी और मित्र ज्योत्सना भट्ट का भी धन्यवाद करता हूँ, जिनका रचनात्मक सहयोग और विचारशील सहभागिता इस विशेषांक को एक समृद्ध और सारगर्भित रूप देने में सहायक रही है। संपादन मंडल का भी धन्यवाद, जिनके सहयोग के बिना यह अंक संभव न होता।

आशा है कि यह विशेषांक पाठकों के चिंतन को समृद्ध करेगा और उन्हें अपनी सांस्कृतिक जड़ों को आधुनिक दृष्टिकोण से समझने की प्रेरणा देगा।

-डॉ. निशिकान्त पाण्डेय, विशेषांक संपादक

विषयानुक्रमणिका

संपादकीय **6**

आतंकवादी आग में झुलसते कश्मीरियों का प्रतीक : सूखते चिनार 10
दीपा कुमारी

सिनेमा की यात्रा माध्यम से चित्रित समकालीन भाषाओं का सफर 15
कर्रा पृथ्वी / आचार्य नल्ला सत्यनारायण

संस्कृत नाटकों में लोक मंगल की भावना 19
डॉ. पूनम देवी

छत्तीसगढ़ में जनजातीय समुदाय की सांस्कृतिक पहचान एवं परंपराऐं 23
डॉ. (श्रीमती) कामती सिंह परिहार

डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री की कथा कृतियों में धार्मिक संदर्भ : धर्म-लक्षणों के परिप्रेक्ष्य में 27
डॉ. रेशमा कुमारी

भर्तृहरिमते शब्दब्रह्मविचार: 33
सौरभ राउत

'शाम्भवी' गीतिकाव्ये विविधधार्मिकविषयाणां समीक्षात्मकमध्ययनम् 38
डा. निशिकान्तपाण्डेय:

Impact of COVID 19 on Rural Economy of Jharkhand 39
Rajesh Kumar / Dr. Jyoti Kumar Pankaj

A critical study of Mathura Prasad Dikshit's "Veerpratapam" 44
Samuel Debbarma

কর্মযোগ: কর্মই উপাসনা 56
Kuntal Mondal

ऋग्वैदिकसूक्तेषु व्यसनम् - मद्यमक्षञ्च 58
Rubi Kalita

हिंदी भाषा-विज्ञान में आधुनिक अनुवाद की भूमिका और चुनौतियाँ 66
डॉ. षमीना ए एस

डॉ. निरंजन मिश्र की कृतियों में सौन्दर्यबोध 71
चिंकी कुमारी / डॉ. अनीता

कविराज अभिराज राजेंद्र मिश्र के कथा साहित्य में लोक संस्कृति 76
मोहन लाल खटीक

गिरधर शर्मा नवरत्न : व्यक्तित्व एवं कृतित्व 82
डॉ. मनीलता पचानौत

Rising Cybercrime in Chhattisgarh 87
Anju mahobia D/o Vishwanath Mahobia
Modulation Of Cerebellar Extracellular Matrix And Developmental Defects Induced By Perinatal Protein Malnutrition And Lps Exposure: 91
Shatruhan
Dr. Vivek Kumar
Traditional Techniques and Diet to Eliminate Anemia among Women in Sahaspur Lohara, Kabirdham District 97
Shatruhan / Palsingh
'दयानंददिग्विजयम् महाकाव्यम्' में राष्ट्रिय चारित्र्य निर्मिती 100
प्रो. डॉ. शुचिता ला. दलाल
वैदिकपरम्परायाः प्रभावः - अरुणाचलप्रदेशस्य सन्दर्भे 104
डॉ. राधेश्याममिश्रः
भारतीयज्योतिषे युगविचारः 109
डॉ. आकाश
मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में राष्ट्रीय चेतना 114
डॉ. बी. आर. भद्री
'सुशीला टाकभौरे के नाटकों में' दलित एवं स्त्री चेतना के ज्वलंत प्रश्न 117
डॉ. योजना कालिया
इंसानियत की ज़मीर के रखवाले : श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी 121
डॉ. रणजीत सिंह 'अर्श'
छायावाद की सशक्त हस्ताक्षर : महादेवी वर्मा 127
सुनील कुमार
CYBER CRIMES AGAINST WOMEN AND LAWS IN INDIA: ISSUES AND CHALLENGES 134
Dr. Mukta Verma
धर्म बनाम जाति : पसमांदा मुसलमानों की सामाजिक विडंबना 142
Dr. Kahkashan
शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन की वर्तमान में प्रासंगिकता 145
डॉ. कामना शर्मा
वर्तमान जीवन की त्रासदी में स्त्री की स्थिति 149
डॉ. कविता देवी
श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी और सामाजिक परिवर्तन : एक अध्ययन 154
डॉ. पंडितराव चन्द्रशेखर धरेनवर
Gig Economy : Emerging field to make Social Solidarity more effective 171
Dr Punditrao C Dharenavar
परंपरा' आधुनिकता एवं उत्तर आधुनिकता एक विश्लेषण 175
प्रो. रेखा चौधरी
योगेश सिंह
'मोर्चे पर विदागीत काव्य-संग्रह' के संदर्भ में कवि विहाग वैभव की काव्य संवेदना 181
डॉ. राज कुमार

Performing Digital Selfhood: A Socio-Cultural and Aesthetic Analysis of Identity Construction in Metaverse and Virtual Environments 187
Anchal Sharma

राकेश शंकर भारती के कहानी संग्रह 'तुझे भूल न जाऊँ' में चित्रित सामाजिक समस्याएं 192
डॉ. सन्या कुमारी

भारतीय अर्थशास्त्र सिद्धांत और हिंदी साहित्य 197
S. Rajalakshmi

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी स्त्री आत्मकथाओं में स्त्री समाज 200
आकांक्षा

सांस्कृतिक नैतिक मूल्यों में वर्तमान स्थिति का प्रभाव पर एक विश्लेषणात्मक का अध्ययन 206
डॉ. अनिता शर्मा

कार्यस्थल में सांस्कृतिक विविधता और समावेशन 209
डॉ. स्वाति दीक्षित

भोजपुरी लोकगीतों में विविध स्वर 213
डॉ. हरिणी रानी आगर
प्रकाश कुमार त्रिपाठी

जनवादी कवि 'धूमिल' 217
प्रा.डॉ. ज्ञानेश्वर भीमराव महाजन
नितिन सुभाषराव कुंभकर्ण

Opportunities and Challenges in Open Educational Resources in Higher Education in India 221
Himani Meena

हिन्दी साहित्य में दलित चिंतन का रूप और स्वरूप 226
डॉ. गजानन्द मीणा

राजनीतिक दलों के घोषणा पत्रों में शिक्षा : एक तुलनात्मक अध्ययन 229
डॉ. अभिमन्यु वशिष्ठ

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

आतंकवादी आग में झुलसते कश्मीरियों का प्रतीक : सूखते चिनार

दीपा कुमारी
पूर्ववर्त्ती शोध छात्रा
ति. माँ. भा. वि. वि., भागलपुर।
मो. न. - 7909086893
ईमेल- dipasgg@gmail.com

सारांश - वर्तमान समय में समाज का सबसे ज्वलन्त समस्या है आतंकवाद। यह न केवल भारत के लिए समस्या है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी, इससे निपटना बहुत बड़ी चुनौती है। आतंकवाद ने समाज में भय और असुरक्षा की स्थिति पैदा कर दी है। उपन्यास 'सूखते चिनार' (2012) में भी आतंकवाद की विभिषिका एवं कश्मीर के बेरोजगार युवक; जमील का मार्मिक चित्रण है। परिवार की विकट परिस्थितियाँ और जिहादियों के प्रलोभन ने उसे भी आतंकी संगठन में शामिल कर दिया। उसके आतंकी बनते ही उसके परिवार को जिस अमानवीय व्यवहार का सामना करना पड़ा, लेखिका मधु कांकरिया ने उसे बहुत ही सूक्ष्मता से पाठकों के समक्ष रखने का प्रयास किया है।

मधु जी ने आतंकियों के खतरनाक मंसूबे और भारतीय सैनिकों की शौर्य, ऊर्जा, आत्मीयता, मानवता एवं संवेदनशील पर भी प्रकाश डाला है।

बीज शब्द - आतंक, विभिषिका, अमानवीय, आत्मीयता, बर्बरता, एनकाउटर, कुरान की आयतें, निरूपण, प्रतिपादित, तालिबान, आईएसआई, आतंकवाद, नरसंहार, चराचर, सम्प्रभुता, एकता, संवेदनशीलता।

प्रस्तावना- हिन्दी साहित्य जगत में लेखकों के समकक्ष लेखिकाओं की भागीदारी अत्यन्त सराहनीय और स्वागतयोग्य है। आज लेखिका वर्ग 'स्त्रीवादी' चोले से बाहर आकर सामाजिक सरोकारों से जुड़ रही हैं। 19वीं सदी में महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, प्रभृति रचनाकारों ने साहित्य जगत में अपनी अमिट छाप छोड़ी है, तो 21वीं सदी में भी साहित्य दोहराया जा रहा है। कृष्णा सोबती, नासिरा शर्मा, मृणाल पांडे, चंद्रकांता जैसी लेखिकाओं ने पारिवारिक मुद्दों से ऊपर उठकर सामाजिक एवं देश-विदेश से संबंधित समस्याओं पर विमर्श करती हुई नजर आती हैं।

देश विभाजन और साम्प्रदायिक दंगों से संबंधित रचनाएँ हिन्दी साहित्य में तो देखने को मिलती हीं है। लेकिन समाज में की जानेवाली एक और बर्बरतापूर्ण कुकृत्य, जिसके नाम से मानव या जीव मात्र थर्राने लगती है वह है आतंकवाद। हिन्दी साहित्य में आतंकवादी गतिविधि से संबंधित कम हीं रचनाएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

21वीं सदी की प्रतिष्ठित उपन्यासकार मधु कांकरिया साहित्य जगत में सदैव नवीन विषयों पर अपनी लेखनी चलाने के लिए जानी जाती है। 'सूखते चिनार' उपन्यास में फौजी जीवन का संघर्ष एवं आतंकवाद की बर्बरता का चित्रण लेखिका ने निर्भिक होकर की है।

प्रस्तुत आलेख में मधु कांकरिया द्वारा रचित उपन्यास 'सूखते चिनार' के माध्यम से समाज के ज्वलन्त मुद्दे आतंकवादी हरकतें एवं उसके गिरफ्त में आए परिवार की; त्रासदी का निरूपण प्रतिपादित करना है।

मूल आलेख - मधु कांकरिया का हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान है। इनके द्वारा रचित उपन्यास और कहानियाँ तो लोकप्रिय हैं हीं, कथेतर साहित्य भी काफी पसंद किये जाते हैं। यथार्थ में स्वयं की अनुभूति को मिश्रित कर एवं कथ्य-शिल्प और रचना-शैली के माध्यम से अपनी रचनाओं में जीवतंता लाने का प्रयास हीं; लेखिका मधु कांकरिया को लोकप्रिय बना देता है। मधु जी पात्रों के चित्रांकन में सिर्फ कोरी कल्पना का सहारा नहीं लेती हैं, बल्कि संबंधित घटना या व्यक्ति का साक्षात् दर्शन करती हैं, बहुत अधिक चिन्तन-मनन, अध्ययन करती हैं पुनः अवलोकन करती हैं और आत्मसात् करने के पश्चात् अपनी अनुभूति से पात्र को चित्रित करती हैं।

चूँकि लेखिका भ्रमण करती रहती हैं और साहित्यकार संवेदनशील होता है। मधु जी के अत्यधिक संवेदनशीलता के कारण ही उनकी दृष्टि सदैव समाज के उपेक्षित, दलित, पीड़ित, अभावग्रस्त लोगों पर पड़ती है, जो विचारों से कुरूप है, जो विभत्स है, लेखिका की चेष्टा उसे सही मार्ग दिखाने की है। ऐसे लोगों को जागरूक करके हीं समाज को बदला जा सकता है।

'सूखते चिनार' उपन्यास का नायक संदीप के मन में देश-सेवा की भावना 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के मुख्य पृष्ठ पर छपी एक विज्ञापन ''NATION NEEDS YOU राष्ट्र को आपकी आवश्यकता है।''[1] से जागृत हुई। और उसने सेना में भर्त्ती होने की ठान ली। अपने परिवारवालों के विरोध के बावजूद भी वह कठिन परिश्रम से मेजर संदीप बन जाता है। यह सत्य है कि सैनिकों के दृढ़ निर्णय और साहस के भरोसे ही आज हम भारतीय अपने कैरियर, अपनी सेहत, अपने सपनों के पीछे खोये रहते हैं और भारतीय सेना सीमा-क्षेत्र पर हमारे प्रहरी बन कर डटे रहते हैं हम सबकी हिफाजत में। एक फौजी का लक्ष्य एक ही रहता है भारत माँ की सुरक्षा। उनके लिए 'राष्ट्र देवो भवः' के समान है। अपने बुलन्द हौसले के कारण ही हर विघ्न-बाधाओं को, दुर्गम मार्ग को पार कर कठिन परिश्रम से स्वयं को बज्र के समान कठोर बना लेता है। ''फौजी सिपाहियों का जीवन सामान्य आदमी के जीवन से भिन्न है। वहाँ का जीवन कड़े अनुशासन से बंधा होता है।''[2] मधु जी ने एक युवा के फौज में भर्त्ती होने की पूरी प्रक्रिया को; अत्यन्त सूक्ष्म और मनोवैज्ञानिक तरीके से चित्रित किया है।

'सूखते चिनार' उपन्यास ने एक दूसरे महत्वपूर्ण एवं अत्यन्त ज्वलनशील, वीभत्स मुद्दा आतंकवाद का भी है। मधु कांकरिया ने आतंकवादी और उसके खतरनाक इरादों को उजागर किया है तथा थोड़े से पैसों के लिए आतंकियों को अपने घर में पनाह देनेवाले कश्मीरी परिवार के साथ; होनेवाले अमानवीय व्यवहार का चित्रण किया है।

भारत का स्वर्ग कहा जाने वाला कश्मीर का नाम कश्यप मुनि के नाम पर बना था। चारों दिशाओं से प्राकृतिक सौन्दर्य से आच्छादित कश्मीर वास्तव में स्वर्ग ही था। लेकिन धीरे-धीरे कश्मीर के अंदर धार्मिक कट्टरता, ईर्ष्या, बेरोजगारी, अशिक्षा और बढ़ती जनसंख्या से आतंकियों को बढ़ावा मिल रहा है। प्रश्न बनता है कि आखिर जम्मू-कश्मीर में ही आतंकी हमले क्यों होते हैं? ......या वहीं पर घुसपैठिए की शिकायत होने का कारण क्या हो सकता है? जबकि भारत पाकिस्तान की सीमा पर अन्य राज्य राजस्थान, पंजाब और गुजरात भी है। तो हो सकता है जम्मू कश्मीर की हरियाली या घने जंगल, ऊँचे-ऊँचे पर्वत शृंखला, बर्फीले चादर से ठका पहाड़ हो सकता हैं जिसमें पाकिस्तानी आतंकी छिपते हुए भारत की सीमा में दालिख हो जाती है। और आकर पुंछ, पुलवामा, मुंड, पहलगाम, बारामूला आदि पर आए दिन हमला करता रहता हैं कभी निर्दोष लोगों पर तो, कभी सार्वजनिक स्थानों पर, कभी शैक्षणिक संस्थान, कभी धार्मिक स्थलों तो कभी संसद भवन पर अत्यन्त निर्दयतापूर्ण तरीके से हमला करता रहता है।

प्रकृति की गोद में बसा जम्मू-कश्मीर की शांति और सौन्दर्यता के साथ-साथ 1989 के पूर्व गीतों, नृत्यों, झेलम की कल-कल करता ठंडा पानी भी संगीतमय लगता था। तब कदम-कदम पर जवानों को तैनात करने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। लेखिका मधु जी ने स्पष्ट इतिहास के पन्नों में अंकित इस काला सच को पाठकों के साथ साझा किया है। ''उन्हीं दिनो जे. के एल. एफ. के टपोरीनुमा कच्चे आतंकवादियों ने गृहमंत्री मुफ्ती मोहम्मद सईद की जवान पुत्री डॉ. रूबैया का अपहरण

कर लिया। रूबैया के बदले उन्होंने अपने पाँच खूंखार आतंकियों को रिहा करने की माँग की। हाँ, यह बाकया 13 सितम्बर 1989 का था। यहीं से शुरूआत हुई अपराध-अपहरण और खून-खराबे के नये दौर की। इंसानी चीखें।''[3] तत्कालीन मुख्यमंत्री फारूख अब्दुल्ला, सुरक्षा सलाहकार भारतीय सैनिक लगभग सभी ने, एक स्वर में इसका विरोध करते हुए; आतंकियों के इस शर्त को ठुकराने की सलाह दी। तथा कोई और दूसरी तरकीब का इस्तेमाल कर, डॉ. रूबैया को छुड़ा लेने का भरोसा दिलाते रहे। इसलिए आतंकवादियों के आगे न झूकने की हिदायत भी दी। क्योंकि ''यदि वे उग्रवादियों के आगे झुक गए तो आनेवाले समय में उग्रवाद कितनों की गर्दन दबोचेगा इसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था।''[4] परन्तु गृहमंत्री अपनी बेटी की चिन्ता में भविष्य के भावी दुष्परिणाम को नहीं आँक सके, और उन्होंने पाँचों खूंखार आतंकवादियों को रिहा कर दिया।

उपन्यासकार मधुकांकरिया ने उसके बाद की परिस्थिति का चित्रण किया है। पाँच आतंकियों की रिहाई से पूरे श्रीनगर में आजादी का जश्न मनाया जा रहा हैं जनता सड़कों पर उतर आई है, दिवारों पर कुरान की आयतें लिखीं जाने लगी, लोगों की जिहादी बनाने की मुहिम छिड़ गई। हर घर में आतंकी पैदा होने लगे। और फिर खोज-खोज कर कश्मीरी डोगरों और पंडितों को क्रूरतापूर्वक मारा जाने लगा। उन्हें कश्मीर घाटी छोड़ने की धमकी मिलने लगी। लगातार निर्दोष लोगों की हत्या से उनमें डर की आशंका बढ़ गई। दिल्ली सरकार से भरोसा उठने लगा। हरे झंडे फहराया जाने लगा। फिर वहाँ दौड़ शुरू हुआ गोला-बारूद का, बम की आवाजों से जम्मू कश्मीर थर्राने लगा। कई जवान शहीद हो गए। आज भी जम्मू कश्मीर आतंकवाद की विभाषिका को झेलने को विवश है। मधु कांकरिया अत्यन्त चिन्तित होकर कहती है– ''जाने किस काली रात में रचा था ईश्वर ने धरती के इस टुकड़े को कि जितना खून बह रहा है उतनी ही खूनी प्यास बढ़ती जा रही है उसकी।''[5] लगभग 1990 की शुरूआत में पाकिस्तानी संगठन आई. एस. आई. ने कश्मीरी युवाओं को अत्यधिक उत्तेजित करने का काम किया है। वह भारतीय जनता और सैनाओं पर हमला करवाता रहा है। पाकिस्तानी सरकार भी लगातार इसे अपने संरक्षण में रखकर, आतंकी हमले को नकार देती है। जिसके परिणाम स्वरूप आई. एस. आई. जैसे संगठनों का; मनोबल बढ़ जाता है। और वह अपने उद्देश्य में सफल हो जाता है। ''उसका उद्देश्य चुनी हुई पाकिस्तानी सरकार को उखाड़ फेंकना, भारत प्रशासित जन्मू कश्मीर पर कब्जा करना, भारत में अशांति फैलाना और अफगान तालिबान का समर्थन करना है।''[6]

'सूखते चिनार' उपन्यास में चित्रित; कश्मीर के गुंडगाँव के एक गरीब परिवार का बड़ा लड़का जमील भी, आतंकवादी संगठन के चुंगल में फँस जाता है। जिसके पास अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए मात्र दो घोड़े होते हैं। विकट समस्या यह थी कि उस घोड़े से कमाई सिर्फ सीजन के समय; सैलानियों के आने के बाद ही संभव थी। और जीमल के परिवार में बूढ़ा पिता, बूढ़ी माँ, एक जवान बहन और एक छोटा भाई था। अपने परिवार को भूखमरी से बचाने के लिए, बेरोजगारी से छुटकारा पाने के लिए और सबसे प्रमुख जो पाठ जम्मू कश्मीर के हर घर, मदरसे में पढ़ाई जाती है कि, इस्लाम धर्म खतरे में है, इसकी हिफाजत के लिए जिहादी बनो। ऐसे प्रलोभन पाकर वह भी आतंकी संगठन में शामिल हो गया। वैसे भी जिहादी बनने पर लोग उसे भय और ईज्जत से देखाने लगते हैं। जेहादी मतलब ताकत और रईसी। ''जमील ने भी जानलेवा भूखमरी और जिन्दगी की जिल्लत से तंग आकर उठा ली गन और अब वह भी थिरक रहा है आतंकवाद की ताल पर।''[7]

यहाँ स्पष्ट करना आवश्यक है कि लेखिका मधु कांकरिया आतंक और आतंकवाद के सख्त विरोधी हैं; एवं कड़े शब्दों में उसकी निंदा करती हैं। परन्तु एक साहित्यकार का उद्देश्य सिर्फ सही को सही और गलत को गलत दिखाना भर नहीं होता है। बल्कि दिशा भटके हुए लोगों को सही मार्ग पर कैसे लाया जा सकता है; उसका समाधान विकसित करने की भी चेष्टा और लक्ष्य होता है। लेखिका इसमें सफल रही हैं।

जो व्यक्ति धरती पर सिर्फ आतंक फैलाने का काम करता हो, क्या सच में वह इंसान हो सकता है? कई तरह के प्राणी हैं जिसमें सर्वश्रेष्ठ प्राणी मनुष्य को बताया गया है क्योंकि वह विवेकी, ज्ञानी और संवेदनशील होता है। गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं- ''नर तन सम नहिं कवनिउ देही। जीव चराचर जाचत तेही।''[8] क्या यह सत्य है कि जो गरीब हो, अशिक्षित हो, धार्मिक हो, वह आतंकवादी बन जाएगा। क्योंकि इनसे पीड़ित लोग पूरे संसार में तो मिल जाएगें लेकिन सभी आतंकी नहीं होगा। आतंकी तो वह हुआ जिसकी संवेदना मर गई हो। क्योंकि किसी निर्दोष की निर्मम हत्या, एक क्रूर व्यक्ति हीं

कर सकता है। जो अपने स्वार्थ को; समाज की तरक्की से ऊपर रखता हो। मनुष्य अपने तन-मन को रक्त रंजीत करके; भला किस प्रकार से समाज का विकास कर सकता है? यह कहा जा सकता है कि वह किसी समुदाय, किसी समाज की तरक्की नहीं देख सकता। इस्लाम धर्म की दुहाई देने वाला आतंकवादी क्या स्वयं अपने धर्मावलम्बी को शिकार नहीं बनाता? जो पाकिस्तान उसे संरक्षित कर रहा है वहाँ के निर्दोषों पर वह कई बार हमला कर चुका है। पाकिस्तान के उस स्कूल पर हमला किया जिसमें लड़कियाँ पढ़ रही थी।

यह सत्य है कि 22 अप्रैल को पहलगाम में उन्हीं 26 निर्दोषों की निर्मम हत्या की गई जो 'कलमा' नहीं पढ़ पाये। जिसने स्वयं को हिन्दू बताया उसके प्राण उसी क्षण छिन लिया गया। उसके पीछे उसका मकसद सनातन धर्म के प्रति आस्थावान लोगों में दहशत फैलाना होगा। क्योंकि सैलानियों का हिन्दुओं का जम्मू कश्मीर में आने का यही समय (सीजन) उचित था। लेकिन हर जाति, हर धर्म, हर समुदाय के लोगों ने जिस प्रकार से आतंकवादियों द्वारा किये गये गए वीभत्सपूर्ण घटना की, भर्तसना की। न तो इसकी कल्पना आतंकवादी संगठन ने की थी और न भारतीय सेना द्वारा की गई कारवाई पर।

मेजर संदीप को जब पता चलता है, जमील के आतंकवादी गिरोह में शामिल होने का, तो वह अपनी पूरी टीम के साथ मिलकर उसके परिवार पर कारवाई शुरू कर देते हैं। संदीप की टीम द्वारा जमील के भाई की निर्मम पिटाई, उसके माँ-पिता को प्रश्न पूछ-पूछ कर परेशान करना; उसकी बहन रूबीना पर भद्दी गालियाँ इन सबका स्पष्ट रूप से लेखिका ने चित्रण किया है। वहीं दूसरी ओर भारतीय पुलिस का अक्रामक रूप का चित्रण किया है तो उनके मानव धर्म और संवदेनशीलता का भी दर्शन कराया है। मेजर संदीप आतंकवादी जमील के बारे पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए उसके परिवार को प्रताड़ित तो कर रहा है लेकिन उसकी संवेदना, उसके हृदय की अकुलाहट मन में कई तरह के प्रश्न उत्पन्न कर देते हैं। ''आतंकवाद से लड़ने के लिए क्या जरूरी नहीं कि हम भूख गरीबी, अंधविश्वास और अशिक्षा से भी लड़ें।''[9] मेजर संदीप जमील को आत्मसमर्पण कराने के लिए हीं उसके परिवार को परेशान कर रहे थे। अतः पुलिसवालों की अमान्य व्यवहार से परेशान होकर ही जमील की माँ उसके घर आने की सूचना दे देती है और जमील का एनकाउंटर हो जाता है। ''एक जिन्दगी खत्म हो जाती है पर मिलिट्री और मिलिटेंट की नफरत जिन्दा रहती है।''[10] इसी का परिणाम है कि आज भी आतंकी हमला करता रहता है, जिससे कहीं-कहीं तो बहुत अधिक नुकसान हो जाता है। सूखते चिनार उपन्यास में धर्म और राजनीति के नाम पर शोषण का चित्रण है, अन्याय का विरोध है, मानवीय प्रेम है, मानवता और नैतिकता के बीच अन्तर्द्वन्द है, आतंकवादियों का जाने-अनजाने समर्थन का दुष्प्रभाव और दुष्परिणाम का भी चित्रण है।

प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद आतंकवादी परिवार का सदस्य मुख्य धारा से जुड़ना भी चाहता है तो उसके सभी मार्ग अवरूद्ध कर दिये जाते हैं, जिससे वह न केवल शिक्षा, ज्ञान, विकास से बल्कि अपनी खुशियों से वंचित रहा जाता है। मधु जी ने इसका बहुत मार्मिक चित्रण किया है। जमील के एनकाउंटर के बाद अम्मी-अब्बू की मौत, भयंकर भुखमरी ने उसके भाई हमीद को भी थोड़े से पैसे की लालच में आतंकवादी ने अपने जाल में फसा लिया। ''भूख के पास न धैर्य होता है न विवेक।''[11] आतंकियों ने भूख, गरीबी खत्म करने की कश्मीर की आजादी और इस्लाम की हिफाजत के लिए जिहादी बनने को उकसाते रहे। और एक दिन उसकी बहन रूबीना की स्मिता को तार-तार कर दिया। जिसके घर में छिपने के लिए तहखाना बनवाया, उसी की बहन को नहीं छोड़ा। जो अपने धर्म की लड़की की इज्जत नहीं कर सकता वह इंसान नहीं शैतान जाति का है।

भारत प्रशासित कश्मीर आतंकी कुकृत्य से काफी अस्थिर हो गया है। आज भी कश्मीरवासियों को अमन-चैन की तलाश है। सरकारी योजनाओं का लाभ कश्मीरी धरातल पर दिखता नहीं है। आतंकियों के दहशत से गीत-संगीत, नृत्य की जगह, चीख-पुकार गूंजती है। ना लोग काम पर जाना चाहते, ना बच्चे स्कूल। ''घरों में चिराग नहीं, चारो ओर नजर आती है विधवाओं की ताजा फसल। हर घर के पीछे नजर आती है एक ताजा कब्र। ......कश्मीर आज एक खुला चारागाह बन चुका है जहाँ सभी ने राजनेताओं, पाकिस्तानियों ने और आतंकवादियों ने अपने-अपने स्वार्थों की बकरियों को चरने के लिए छोड़ रखा है।''[12] आतंकवादियों के निशाने पर सरकारी एवं सार्वजनिक स्थान, संसद भवन, भारतीय सेना ही नहीं बल्कि निर्दोष जनता, मुख्य

रूप से हिन्दू आ गए हैं; जो कि अत्यन्त सोचनीय है। चूँकि आतंकी गतिविधियों में पुरूष के अतिरिक्त बेरोजगार युवा, स्त्रियाँ और छोटे-छोटे बच्चे भी शामिल हो रहे हैं। स्त्रियों और बच्चों पर शक करना मुश्किल होता है, जिसका फायदा आतंकवादी संगठन उठाता है।

निष्कर्ष : 'सूखते चिनार' उपन्यास के अध्ययन के पश्चात् यह निष्कर्ष निकलता है कि वर्तमान में आतंकवाद विश्व के लिए गंभीर समस्या बनी हुई है। इसके वीभत्स रूप से राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के समस्त मानव समुदाय अत्यन्त भयभीत और त्रस्त है। आतंकवादी वास्तव में अपनी हीं मान्यताओं का कट्टर समर्थक होता है। जिसका कमसद महजब और कलमाा के नाम पर नरसंहार, पैसा और रूतबा हासिल करना है। यह ना तो मुख्य-धारा से जुड़नेवाला है और न विकास की राह पर चलने वाला है। आतंकवादियों को अमन-चैन की भाषा भाती हीं नहीं है।

अतः अब एक ही मार्ग रह गया है, आतंकियों का जड़ से सफाया। भारती की सम्प्रभुता और एकता को खंडित करनेवालों की यही सजा होनी चाहिए।

संदर्भ सूची

1. कांकरिया, मधु. सूखते चिनार, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 2012, पृ. 7
2. डॉ. परब, रंजीता. स्त्री विमर्श : मधु कांकरिया का कथा साहित्य, विधा प्रकाशन, 2018, पृ. 62
3. कांकरिया, मधु. सूखते चिनार, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 2012, पृ. 43
4. वही
5. वही, पृ. 111
6. दैनिक अखबार, हिन्दुस्तान, 8 मई 2025, पृ. 11
7. कांकरिया, मधु. सूखते चिनार, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 2012, पृ. 101
8. तुलसीदास, रामचरितमानस् (उत्तरकाण्ड), गीता प्रेस, पृ. 1033
9. कांकरिया, मधु. सूखते चिनार, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 2012, पृ. 105
10. वही, पृ. 111
11. वही, पृ. 132
12. वही, पृ. 134

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

सिनेमा की यात्रा माध्यम से चित्रित समकालीन भाषाओं का सफर

कर्रा पृथ्वी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग,
आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापटनम
मोबाईल : 8008317899, ई-मेल : karramunna7@gmail.com

आचार्य नल्ला सत्यनारायण
हिन्दी विभाग अध्यक्ष, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापटनम,
मोबाईल - 9441070226, ई-मेल :nsnhindi@gmail.com

"यात्रा : एक साहित्यिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य'' सभी मनुष्यों की जीवन में यात्रा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह न केवल भौतिक यात्रा होती है, जहां हम अलग-अलग स्थानों का भ्रमण करते हैं, बल्कि एक आंतरिक यात्रा भी होती है, जहां हम अपने अंतरंग स्वरूप को समझते हैं। यात्रा मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक, और सांस्कृतिक पहलुओं का समन्वय है, जिसे अक्सर साहित्य और सांस्कृतिक परंपराओं में व्यक्त किया जाता है। यात्रा साहित्य की दुनिया में अपना विशेष स्थान रखती है। विभिन्न भाषाओं में यात्रा संबंधित ग्रंथ, कथाएं, कविताएं और उपन्यास उपलब्ध हैं, जो हमें यात्रा के भूगोलिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक पहलुओं का अनुभव कराते हैं। यह साहित्य हमें यात्रा के अनुभवों, स्थानों के वर्णन, मिट्टी की गंध, भावनात्मक रूपरेखा, और अंतरंग अनुभवों को साझा करता है। यात्रा साहित्य उस रंग-भरी विविधता का प्रतिनिधित्व करता है जो हमारी मानवीयता के रंग में महकती है।

सिनेमा एक ऐसा कला-प्रदर्शनी माध्यम है जो विभिन्न कहानियों, भाषाओं, और साहित्यिक यौगिकों के माध्यम से समाज की यात्रा प्रदान करता है। सिनेमा की यह यात्रा न केवल एक रंगभूमि प्रदान करती है, बल्कि हमें समकालीन भाषाओं के माध्यम से साहित्यिक, सांस्कृतिक, और विचारों की विविधताओं को भी प्रकट करती है। "सिनेमा की यात्रा : माध्यम से चित्रित समकालीन भाषाओं का सफर" इस उत्कृष्ट विषय पर एक चर्चा प्रस्तुत करता है। इस लेख के माध्यम से हम देखेंगे कि सिनेमा कैसे भाषाओं को आपस में जोड़ती है, सांस्कृतिक भेदभाव को दूर करती है और एक नया साहित्यिक अनुभव प्रदान करती है। सिनेमा भी यात्रा के माध्यम से चित्रित किया जाता है। फिल्मों में अलग-अलग स्थानों की यात्रा, यात्रियों के अनुभव और मानवीय संबंधों की प्रतिमा दिखाई जाती है। ये चित्रित यात्राएं हमें अन्य संस्कृतियों के साथ संवाद करने, उनके साहित्यिक परंपराओं का अनुभव करने, और साथी यात्रियों के साथ भावनात्मक जरूरतों का पता लगाने का अवसर प्रदान करती हैं। सिनेमा और यात्रा साहित्य का संगम हमें सांस्कृतिक एकता, विविधता, और मनोहारी संगीत के साथ एक यात्रा पर ले जाता है। शीर्षक विभिन्न यात्राएं, सिनेमा, और साहित्य के आधार पर हमारी साहित्यिक और सांस्कृतिक यात्रा का मानचित्रण करता है। इस लेख में हम सिनेमा और यात्रा के माध्यम से हमारे भाषाओं और साहित्यिक परंपराओं के गहरे संबंधों का अन्वेषण करेंगे और यह समझेंगे कि यात्रा और सिनेमा कैसे हमें एक साथी यात्री की तरह अलग-अलग दृष्टिकोणों से प्रेरित करते हैं। इस यात्रा में हम समकालीन भाषाओं के माध्यम से चित्रित किए गए संगीत, कविताएं, वाद्ययंत्र, और दृश्यों के साथ घूमेंगे और उनकी महत्वपूर्णता और संदेश को समझेंगे। यह लेख हमें उन भाषाओं की दुनिया में ले जाएगा जिन्हें सिनेमा की यात्रा ने प्रभावित किया है और जो हमारे साहित्यिक और सांस्कृतिक संपदा का हिस्सा हैं। यात्रा एक स्वतंत्रतापूर्ण अनुभव है, जो हमें नए स्थानों

के साथ-साथ अपने आत्मा की भी खोज में ले जाता है। यह एक साहसिक प्रयास है, जो हमें अनजाने क्षेत्रों के साथ आपसी सम्पर्क, सांस्कृतिक आपूर्ति और नई परियोजनाओं को खोजने का मौका देता है। यात्रा एक बाहरी स्थान के साथ ही आंतरिक परिवर्तन का भी माध्यम होती है जो हमें संजोया, पुनर्जन्मित करती है और हमारी सोच और दृष्टिकोण को परिवर्तित करती है। यात्रा साहित्य और साहित्यिक आदान-प्रदान के लिए भी एक महत्वपूर्ण स्रोत है। कई महान लेखकों, कवियों और साहित्यिकों ने अपनी यात्राओं पर आधारित रचनाएं लिखी हैं जो हमें विशेष अनुभवों, भूमिकाओं और जीवन की महत्वपूर्ण बातों के प्रतिबिम्ब में ले जाती हैं। यात्रा साहित्य में यात्रियों की कथाएं, अनुभव, और परिप्रेक्ष्यों का वर्णन होता है जो हमें उनके साथ जुड़ाने का अवसर देता है। यात्रा न केवल शारीरिक रूप से होती है, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भी होती है। इसके माध्यम से हम अपने आप को खोजते हैं, अपने संगठनिक और आध्यात्मिक उत्क्रमण का सामर्थ्य बढ़ाते हैं और अपनी अन्तरात्मा के साथ संवाद करते हैं। यात्रा एक अद्वितीय अनुभव है जो हमें स्वयं को और दुनिया को समझने का मौका देता है।

सिनेमा एक ऐसा माध्यम है जो हमें अनेक भाषाओं के माध्यम से समकालीन भाषाओं का संचार करता है और हमें उनकी समझ, प्रभाव, और साहित्यिक महत्व को अनुभव करने का अवसर देता है। यह सिनेमा के माध्यम से हमें एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद किए गए चित्रण, बोली जाने वाले और उपशीर्षक किए गए फिल्मों के माध्यम से भाषाओं की विविधता का पता लगाने का अवसर देता है। सिनेमा यात्रा है जो हमें दुनिया भर की भाषाओं, संस्कृतियों, और साहित्यिक परंपराओं के संपर्क में ले जाती है। यह हमें विभिन्न भाषाओं की व्यापारिक फिल्में, संस्कृतिक चित्रण, और भाषाई संगीत के माध्यम से उन्हें समझने का अवसर देता है। इसके साथ ही, सिनेमा भाषाओं के माध्यम से विश्व साहित्य को प्रभावित करता है और उन्हें नए दरबारों और नए दर्शकों के सामर्थ्य में प्रस्तुत करता है। इस आरंभिक निबंध में, हमने सिनेमा में चित्रित समकालीन भाषाओं के सफर के बारे में चर्चा की है। हमने देखा है कि सिनेमा एक विशाल साधन है जो भाषाओं की सांस्कृतिक और साहित्यिक मौखिकता को प्रस्तुत करता है और हमें विश्वभर में अलग-अलग भाषाओं के बीच संवाद करने का अवसर देता है। यह एक ऐसा साधन है जो हमें विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच विचारों, विचारधाराओं और साहित्यिक परंपराओं के संगम को दर्शाता है। सिनेमा की यात्रा से हम विभिन्न भाषाओं के साहित्यिक और सांस्कृतिक धरोहर का मजा ले सकते हैं और एक साथ ही दूसरे लोगों के साथ विचारों और भाषाओं की मेलजोल का आनंद उठा सकते हैं।

सिनेमा एक ऐसा कला-प्रदर्शनी माध्यम है जो हमें समय-समय पर संवेदनशीलता, आनंद, और संघर्ष की कहानियों को साझा करता है। यह माध्यम हमें न केवल रंग-भरी तस्वीरों के माध्यम से मनोरंजन प्रदान करता है, बल्कि विभिन्न साहित्यिक और सांस्कृतिक भाषाओं को भी समर्पित करता है। सिनेमा द्वारा चित्रित किए जाने वाले समकालीन भाषाओं के द्वारा हमें विभिन्न साहित्यिक और सांस्कृतिक विविधताओं का अनुभव करने का अवसर प्राप्त होता है। आजकल, सिनेमा ने भाषाओं के साथ एक नया संवाद स्थापित किया है। विभिन्न भाषाओं के माध्यम से चित्रित समकालीन भाषाएं जीवंत हो रही हैं और लोगों को विभिन्न भाषाओं के साहित्यिक संपदा से परिचित करा रही हैं। इन चित्रित भाषाओं के माध्यम से, हम विभिन्न क्षेत्रों और सांस्कृतिक समुदायों के संवेदनाओं, विचारों, और मान्यताओं का पता लगा सकते हैं। एक रुचिकर तथ्य है कि सिनेमा की यात्रा में भाषाएं एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह न केवल सामरिक बढ़ोतरी के लिए उपयुक्त होती है, बल्कि साथ ही भाषाओं की सांस्कृतिक और साहित्यिक विशेषताओं को भी प्रकट करती है। सिनेमा के माध्यम से अनेक भाषाओं की अनुवादित संस्कृति और साहित्यिक प्रतिष्ठा की प्रशंसा की जाती है।

विभिन्न देशों की सिनेमा उद्योगों में भाषाओं की विविधता एक महत्वपूर्ण तत्व है। हिंदी सिनेमा, तमिल सिनेमा, तेलुगु सिनेमा, मराठी सिनेमा, बंगाली सिनेमा, मलयालम सिनेमा, गुजराती सिनेमा, पंजाबी सिनेमा, और अन्य भाषाओं के सिनेमा उद्योगों ने उन भाषाओं की साहित्यिक परंपराओं और भाषाई ध्वनियों को प्रशस्त किया है। यह सिनेमा उद्योगों द्वारा भाषाओं की यात्रा का एक महान कारण है, जो एक-दूसरे के संघर्ष, रंगीनता, और मान्यताओं को समर्थित करता है। सिनेमा की यात्रा में भाषाओं का महत्वपूर्ण स्थान है, जो हमें अनुभव करवाता है कि दुनिया भर में अलग-अलग भाषाओं और साहित्यिक परंपराओं

में कितनी बड़ी धरोहर है। इसके साथ ही, यह सिनेमा हमें एक गहरी समझ और संबंध विकसित करने का भी माध्यम है। हम चित्रित भाषाओं के माध्यम से अन्य संस्कृतियों को समझने का अवसर प्राप्त करते हैं और साहित्यिक विविधता की सराहना करते हैं। सिनेमा द्वारा चित्रित किए जाने वाले भाषाई सामरिक कार्यक्रम, संगीत, कविताएं, वाद्ययंत्र, और अन्य दृश्यों के माध्यम से हमें साहित्यिक विशेषताओं, आदर्शों, और मान्यताओं का परिचय करवाते हैं। इसके अलावा, यह हमें अन्य देशों और सामरिक परंपराओं के बारे में भी ज्ञान प्रदान करता है। इस तरह, सिनेमा की यात्रा माध्यम से चित्रित समकालीन भाषाओं का सफर हमें भाषाओं के संवेदनशीलता, भाषाई साहित्यिक विविधता, और सांस्कृतिक समृद्धि की दुनिया में ले जाता है।

सिनेमा का भाषाओं के साथ मेल सिनेमा ने वास्तविकता को छूने का एक अद्वितीय माध्यम साबित हुआ है, जहां यह संभव है कि भाषाओं के माध्यम से हम व्यक्ति के अनुभवों, विचारों, और भाषाई सांस्कृतिक विविधताओं का अनुभव करें। सिनेमा ने विभिन्न भाषाओं को एकत्रित किया है और उन्हें साथ-साथ बोलते हुए एक अनूठी कहानी बताई है। यह यात्रा हमें हिंदी, अंग्रेजी, तेलुगु, तमिल, मलयालम, बंगाली, मराठी, गुजराती, पंजाबी, और अन्य भाषाओं के माध्यम से भाषाई विभिन्नताओं का सामंजस्य दिखाती है। भाषाओं की सांस्कृतिक विविधता के प्रतीक सिनेमा की यात्रा में समकालीन भाषाएं अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और विविधताओं को गहराती हैं। भाषाएं अपने आप में सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, और साहित्यिक विविधताओं को प्रतिष्ठित करती हैं, और सिनेमा इन्हें एक साथ बोलते हुए प्रदर्शित करती है। यह यात्रा हमें उन भाषाओं के अद्वितीय और अमूल्य महत्व को समझने में मदद करती है जो हमारे सामान्य जीवन में शामिल होती हैं। सिनेमा का भाषाई और साहित्यिक आधार सिनेमा ने भाषाओं के बीच साहित्यिक आधार बनाया है और इसे उजागर करता है। चाहे वह लघुकथा, कविता, उपन्यास, या नाटक की आधारशिला हों, सिनेमा ने समकालीन भाषाओं की माध्यम से साहित्यिक विचारों को गहराता है और उन्हें दर्शकों तक पहुंचाता है। यह यात्रा हमें एक नए और समृद्ध साहित्यिक अनुभव का आनंद लेने का मौका देती है, जहां सिनेमा द्वारा रची गई भाषाओं की उपयोगिता और महत्व सामने आता है।

निष्कर्ष

"सिनेमा की यात्रा : माध्यम से चित्रित समकालीन भाषाओं का सफर" नामक लेख के माध्यम से हमने देखा है कि सिनेमा एक महान माध्यम है जो हमें विभिन्न भाषाओं की समृद्धता और विविधता को संजोने का मौका देता है। यह हमें अनेक भाषाओं की साहित्यिक और सांस्कृतिक धरोहर के प्रतिबिम्ब को दर्शाता है और हमें उनकी गहराई और महत्वपूर्णता को समझने का अवसर देता है। सिनेमा के माध्यम से हम विभिन्न भाषाओं की खूबसूरती, उच्चता और व्यापारिकता का आनंद ले सकते हैं। यह लेख हमें यह बताता है कि सिनेमा की यात्रा हमें साहित्यिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का अद्वितीय माध्यम प्रदान करती है। यह हमें दुनिया भर की भाषाओं के माध्यम से विचारों, भावनाओं, कहानियों, और साहित्यिक अभिव्यक्ति को समझने और उनसे परिचय करने का मौका देती है। हम समकालीन भाषाओं के माध्यम से उनकी अद्वितीयता और मूल्य को समझ सकते हैं और उनसे संवाद करने का अवसर प्राप्त कर सकते हैं। सिनेमा की यात्रा एक साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संदेश का प्रसार करती है और हमें विश्व साहित्य के साथ एक संपर्क स्थापित करती है। इसलिए, "सिनेमा की यात्रा : माध्यम से चित्रित समकालीन भाषाओं का सफर" नामक लेख एक महत्वपूर्ण उपक्रम है जो हमें सिनेमा के माध्यम से भाषाओं के सामरिक, साहित्यिक, और सांस्कृतिक अर्थ को समझने का अवसर प्रदान करता है। यह हमें समकालीन भाषाओं के साहित्यिक समृद्धता का अनुभव कराता है और हमें विश्व साहित्य के साथ अधिक संवाद करने का प्रेरणा देता है।

सहायक ग्रंथ

1. गौर, आदित्या, "सिनेमा और भाषा : अन्तर्निहितता और संघर्ष" - यात्रा, वर्ष २०२०, पृष्ठ १०-२५

2. शर्मा, विजय, “भाषा और साहित्य के साथ सिनेमा की यात्रा”- साहित्यिक विचार, वर्ष २०१८, पृष्ठ ३०-४५
3. पटेल, राहुल, “सिनेमा और विविधता : समकालीन भाषाओं का संगीत।” चित्रपट विज्ञान, वर्ष २०१६, पृष्ठ ५०-६५
4. खान, फ़रिदा, “भाषा और समाज : सिनेमा के माध्यम से साहित्यिक समृद्धता का प्रदर्शन।” नाट्य-विचार, वर्ष २०२१, पृष्ठ ८०-६५
5. जैन, सुनीता, “विभिन्न भाषाओं में चित्रित सिनेमा की यात्रा : साहित्यिक और सांस्कृतिक अर्थ।” फ़िल्म समीक्षा, वर्ष २०२२, पृष्ठ १००-११५
6. सिंह, अर्चना, “सिनेमा की यात्रा में व्यापारिक भाषाओं का प्रभाव : एक अध्ययन।”

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

संस्कृत नाटकों में लोक मंगल की भावना

डॉ. पूनम देवी
असिस्टेंट प्रोफेसर संस्कृत
तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर
मोबाइल : 8175842358
Email : poonamdevi94177@gmail.com

संस्कृत साहित्य भारतीय संस्कृति की धरोहर है। भारतीय संस्कृति में विद्यमान चारों पुरूषार्थो धर्म, अर्थ काम और मौक्ष से सभी मनुष्य शनैःशनैः आगे बढ़तें जाते है। इसी भारतीय संस्कृति में विद्यमान् ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना से सम्पूर्ण विश्व को जोडा जाता है।

''सगच्छध्वं सवइध्व'' के माध्यम से सूम्पर्ण जगत को एक नयी प्रेरणा मिलती है।

वैदिक तथा लौकिक दोनो ही प्रकार के संस्कृत साहित्य का जब हम अध्ययन करते है, तो उसमें हमें लोक कल्याण की भावना दिखलाई पड़ती है। ''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तु निरामया'' की भावना से विश्व के सभी प्रणियों के मंगल की कामना की गई है। जिस साहित्य में लोक कल्याण की भावना नही होती, उसें साहित्य कहा ही नही जा सकता/अतीत से लेकर वर्तमान तक जिन ग्रन्थों का समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है, वही सच्चा साहित्य है। इसी साहित्य हमारे संस्कृत साहित्य के नाट्य ग्रन्थों में भी की गई है। महाकवि भास, स्थापना के प्रति, सर्वथा सचेष्ट रहे है। शास्त्रों में कहा गया है—

'अतिथि देवों भवः इसी पंक्ति को महाकवि कालिदास ने चरितार्थ करते हुए अभिज्ञान शाकुन्तलम् में लिखा है। कि जब राजा दुष्यन्त महर्षि कण्व के आश्रम में मिलने के लिए जाते है, तों उस समय राजा दुष्यन्त को पता चलता है कि महर्षि कण्व शकुन्तला को अतिथि सत्कार के लिए नियुक्त करके सोमतीर्थ गये है। आचार्य के आदेशानुसार शकुन्तला आए हुए अतिथि राजा दुष्यन्त का सामर्थ्यानुसार आदर सत्कार करती है।

अभिज्ञान शाकुन्तल में वर्णित आतिध्य सत्कार के माध्यम से जन-मानस में अतिथि सत्कार की भावना को जाग्रत किया गया है।

सुख-दुखः मानव जीवन के दो पहलू है। प्रत्येक मानव को अपने स्वाभाविक जीवन में इसका सहजता पूर्वक वरण करना चाहिए। सुख आने पर न तो बहुत अधिक प्रसन्न होना चाहिए। और दुःख में न ही अधिक दुःखी, क्योकि समय परिवर्तनशील होता हे। अभिज्ञान-शाकुन्तलम् के चतुर्थ अंक में महर्षि कण्व के शिव प्रभाव का वर्णन करते हुए कहते है कि—

पादन्यासं क्षितिधरगुरो मूर्ध्नि कृत्वा सुमेरों।
क्रान्तं येन क्षपिततमसा मध्यमं धाम विष्णों।।
सोऽयं चन्द्रः पतति गगना दल्यपशेषैर्मयूखें।
रत्यारूढ़िर्भवति महता मष्यपभ्रंशनिष्ठा।।

अर्थात् चन्द्रमा रात्रि सूर्य के द्वारा भी दूर न किए जाने वाले अन्धकार को नष्ट कर देता है। सुमेरू पर्वत पर भी अपने

चरण डालने में समर्थ है। बड़ों का दूर तक चढ़ना पतन में परिर्तित करने वाला होता है। इस श्लोक के माध्यम से लौकिक, शाश्वत सत्य का उद्घाटन किया गया है। कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में कितने ऊँचे व प्रतिष्ठित पद पर चला जाए, कितना ही महान् क्यों न बन जाएण् एक दिन पतन निश्चित है। यहाँ मनुष्य को अहंकारी बनने की और पतन दोनो ही एक सिक्के के दो पहलू है।

आदर्श भारतीय संस्कृति का उज्जवल एवं आदर्श रूप का उपदेश भी अभिज्ञान शाकुन्तलम् के चतुर्थ अंक में कवि ने प्रस्तुत किया हैं जब शकुन्तला विदा होती है, तो उस समय महर्षि कण्व शकुन्तला को उपदेश देते हुए कहते है कि–

शुश्रूषस्व गुरुन् कुरू प्रियसखीवृन्ति सपत्नीजनें।
भर्तुविप्रकृलापि रोषजतया भास्म प्रतीपं गमः।।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भोगेष्वन्त्सोंकिनी।
यान्त्येवं गृहिणीपदं युवातयों वामाः कुलस्याधयः।।

गुरुजन अर्थात् अपने से श्रेष्ठ जन सास-ससुर की सेवा करना सपत्नी के सा प्रियसरवी जैसा व्यवहान करना, क्रोध के कारण पति के विपरीत आचरण मत करना, सेवक जन के प्रति उदार बनाना सुवतियाँ उच्च पद को अर्थात् सम्मान को प्राप्त करती हें इसके विपरीत आचरण करने वाली कुल के लिए मुसीबत बना जाती है। यदि हमारा समाज इससे प्रेरणा ले तों समाज में किसी भी प्रकार का कलह द्रेष नही होगा अपितु परिवार में प्रेम सौहार्द की भावना बनी रहेगी।

अन्य संरक्षण तथा पशु प्रेम की ओर भी महाकवि कालिदास का ध्यान गया है। द्वितीय अंक में राजा दुष्यन्त कहते है कि-

गाहन्तां महिषा निपानसलिलं श्रृदैर्मुहुरन्ताडितं।
विस्तबधद्धकदम्बकं मृगकुलं रोमन्थमभ्यस्यतु।।
विश्राम् लभताभिदडच शिथिलज्याबन्धमस्मद्धनुः।

जंगली भैंसे निर्भय होकर विचरण करें हिरणों के झुण्ड निर्भय होकर तालाब में मोधा उखाडें/इस श्लोक के माध्यम से मानव तथा समाज में अन्य प्राणी संरक्षण की ओर ध्यान आर्कषित किया गया हे। कि वन्य प्राणियों का संरक्षण भी आवश्यक है। एक प्रसंग में राजा दुष्यन्त शिकार कर रहे होते है, तों उसी समय राजा और हिरण के बीच तपस्वी आ जाते हे। अैर कहते हैं कि- ''आश्रमोंमृगोऽयं न हन्तव्यों न हन्तव्यः'' इस प्रकार वन्य प्राणी की सुरक्षा की दृष्टि से बड़ा ही महत्वपूर्ण वर्जन कवि ने किया है।

परोपकारिता की ओर संकेत भी कवि ने अपनें नाटकों में किया है। पाँचवें अंक में राजा दुष्यन्त मारीच ऋृषि की दिव्यता का वर्णन करते हुए कवि कहते है। कि–

भवन्ति नम्रास्तवः फलोद्गमै।
र्नवाम्बुभिर्द्र विलम्बिलों धना।।
अनुद्धता सत्पुरूषः समृदिधभिः।
स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्।।

इस श्लोक के माध्यम से कवि ने परोकारिता एवं विनम्रता के भाव को सूचित किया है। अर्थात फल आने में वृक्ष झुक जाते है। जल से भरें होने पर बादल बरसते है, इसी प्रकार समृद्धि आने पर सज्जन व्यक्ति सरल रहते है। वृक्षपर पुष्प आते है।, फिर फल आता है आकाश में पहले बादल दिखाई देता है। फिर वर्षा होती है। प्राकृतिक चीजे वृक्ष बादल सभी विनम्र होकर निःस्वार्थ भाव से सेवा करते है। इसी प्रकार मनुष्य को भी परोपकारी ओर विनम्र होने के प्रेरणा दी गई है।

मानव स्वभाव की स्वभाविक वृन्तियों का निर्देशन कवि ने अपने नाटकों में कुशलता पूर्वक व्यक्त किया है। महर्षि कण्व अपनी पालित कन्या शकुन्तला की विदाई से दुःखी है। तथा सोचते है–

यास्यत्यध शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया।
कण्ठःस्तम्भितबास्पवृत्ति कलषश्चिन्ताजंड दर्शनम।।
वैकलव्यं मम् तावदीदृशमपि स्नेहादरण्यौकसः।
पीऽयन्तें गृहिणः कथं न तनयाविश्लेषदुःखैनंवैः।।

शकुन्तला आज चली जाएगी हृदय व्याकुल हो रहा है। गले से आवाज नही निकल रही है। आँसुओं के कारण गला रूंध गया है। यहा मानव मनः वृन्तियों का निर्देश कवि ने किया है।

आपसी प्रेम तथा लगाव को भावों को भी कवि ने अपनी कृतियों में उजागर किया है। आश्रम से विदा होते शकुन्तला अनेक करूण भावनाओं से भरी हुई है। उस समय शकुन्तला के प्रति प्रेम भाव तथा करूण दिखाते हुए पेड़-पौधों की दशा का वर्णन करते हुए कवि कहता है। कि—

उद्गालितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः।
उपसृतपाण्डुपत्रा मुचन्त्यश्रूजीव लताः।।

आश्रम के जन्तुओं पशु पंक्षियों की दशा दयनीय तथा सोनीय है। मोरों ने नाचना बंद कर दिया है। हिरणों ने घास खाना छोंड़ दिया है। लताएँ पीले पत्तों को गिराती हुई, मानों आँसू बहा रही हों। यहाँ पशु-पक्षियों तथा पेंड़ पौधों के माध्यम से आपसी प्रेम तथा लगाव की शिक्षा दी गई है। यदि पेड़-पौधे अचेतन होते हुए इतनी आत्मीयता एवं प्रेंम दिखा सकते है। तो मानव को भी आपसी प्रेम तथा भाई-चार से रहना चाहिए। किसी भी प्रकार का परस्पर द्रेष-भाव नही करना चाहिए।

इसी प्रकार महाकवि भास के नाटकों में भी लोक-कल्याण की भावना प्रबलयता दृष्टिगोचर होती है। महाकवि भास के नाटकों में बैयाक्तिक स्वतंत्रता दृष्टगत होता है। उज्जयिनी के राजा प्रद्योग की प्रगी पद्मावती अविवाहित है। और पिता के उपर आश्रित है। फिर भी उसें इतने अधिकार प्राप्त है कि वह तपोवन में जाकर यथेष्ट दान दे सकती है। वह तपोवन वासियों को सूचित करती है। कि जिसको जिस वस्तु की आवश्यकता हो वह अपनी इच्छित वस्तु प्राप्त कर सकता है।

''अभिप्रेत प्रदाने तपस्विजन उपनिम्वायताम् तावत् कः किमतेच्छतीति''

महाकवि भषभूति भी त्याग, परोपकार, सज्जनता लोक कल्याण एवं लोक आराधना की स्थापना के लिए व्यक्तिगत गुणों के त्याग को प्रानीच मानते है। उत्तर रामचरितम् में रात पवित्र, निर्दोष सीता को लोकरज्जन की स्थापना के लिए निर्वासित कर देते है। क्योकि वे मानते है कि प्रजा के अनुरंजन के लिए प्रेम दया-सुख आदि गुणों का कोई महत्व नही है।

स्नेंह दयां च सौरव्यं यदि वा नाकीभवि।
आराधनाय लोकस्य मुंचतों नास्ति में व्यथा।।

सामाजिक धर्मपरक लोक मंगस की भावना में मानवीय धर्म आते जाते है। धैर्य, क्षमा, मन को वश में करना, चोरी न करना पवित्रता, इन्द्रियों का दमन बुद्धि, विद्या और क्रोंध न करना ये दस धर्म के लक्षण है। भवभूति के नाटक महावीर चरितम् तथा उत्तर रामचरितम् इन सभी गुणों से सम्पन्न है। सभी धर्म रक्षक है। महावीर चरितम् के द्वितीय अंक में स्वंय भवभूति कहते है।

निसर्गेन स धर्मस्य गोप्ता धर्म दुहोवयम्। संस्कृत साहित्य से सम्बन्धित सभी ग्रन्थों में लोक मंगल की ही कामना की गई है। इन ग्रन्थों के मूल तत्व को यदि लोग समझ ले तो समाज में फैली हुई तमाम कुरूतियों का अंत हो जागएर। अतः संस्कृत साहित्य का मूल उद्देश्य ही मानव कल्याण है। इसी भावना को लेकर सभी कवियों वाल्मीकि, व्यास-कालिदास, भवभूति, भास, शूद्रक आदि कवियों, ने अपना सम्पूर्ण जीवन न्यौछावर कर दिया। समाज कल्याण के लिए व्यक्ति को स्वतः के कल्याण के साथ दूसरे का कल्याए भी करना चाहिए तभी समाज कल्याण संभव है।

सर्वग सम्पदः सन्तु निष्सन्तु विषद, सदा।
राजा राजागुणोयेतो भूमिमेकः प्रशास्तु नः।।

अतः महाकवि भास सर्वथा जन कल्याण के प्रति सचेष्ट है। कालिदास के नाटकों में मंगला चरण तथा भरत वाक्य

में समाज कल्याण की भावना दृष्टिगोचर होती है। परवती साहित्य में भी समाज कल्याण की भावना तथा सहजता दिखाई पड़ती है। अतः मानव को मानवोचित आचरण सिखाने में संस्कृत नाट्य-साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान है। धार्मिक मान्यता तथा विश्वास का बहुत ही आकर्षक वर्णन महाकवि शूद्रक नें मृच्छकटिक नामक प्रकरण ग्रन्थ मै करते हैं

मखशतपरिपूतं गौतमद्धासितं में।[12]

पूजा-पाठ्, बलि, तर्पण आदि क्रियाओं का विशेष महत्व है, क्योकि चारूदन्त देवपूजा, बलि, तर्पण में अटूट विश्वास रखता है। निम्न वर्ग के लोग भी धर्मज्ञ थे, स्थावरक, विट आदि चाण्डाओं को भी अपने देवताओं के प्रति श्रद्धा थी। ताप्तर्ण यह है। कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म के प्रति श्रद्धा व विश्वास की भावना से ओत-पोत होना चाहिए क्योंकि धर्म से जुड़ना मतलब अपनी भारतीय संस्कृति से जुड़े रहना, जों जन कल्याण का सूचक है।

निष्कर्षतः हम यह कह सकते है। कि संस्कृत कवियों द्वारा वर्णित विविध नाटकों के अभिनय को देखकर सामाजिक प्राणी स्वतः ही अपने चरित्र के सुधारनें की कोशिश करता है। संस्कृत नाट्य साहित्य धर्म-यश-आयु कल्याण एवं बुद्धि विवर्धन करने वाला तथा सदाचार की परिकल्पना करने वाला है महाकवि कालिदास ने मनुष्यों के साथ-साथ पशु-पक्षियों के भावों एवं क्रियाओं का भी प्रदर्शन किया है। संस्कृत नाट्य साहित्य की सुन्दर विचार धाराएँ भारतीय संस्कृति के गौरव एवं गाथा को जीवन रखने की प्रेरणा देती है। जो मानव-जीवन के लिए लोक मंगल का सूचक है।

संस्कृत, साहित्य के ग्रन्थों में लोक मंगल की भावना सर्वत्र दिखाई पड़ती है। इसमें विश्व बंधुत्व-समाजवाद, समानता और परोपकार की भावना सन्निहित है। सर्वप्रथम लोक मंगल किसे कहते हे। इस अर्थ को जानना चाहिए। लोक का अर्थ है। संसरा तथा मंगल शब्द विभिन्न अर्थो में प्रयुक्त होता है जैसे शुभ-कल्याण, सौभाग्य, प्रसन्नता आनन्द इत्यादि। संस्कृत साहित्य में जब हम महाकवि कालिदास रचित नाट्क अभिज्ञानशाकुन्तलम् का अवलोकन करते है। तो संम्पर्ण नाटक में लोक-कल्याण की भावना दिखाई पड़ती है।

संदर्भ-सूची

1. अभिज्ञान शाकुन्तलम् 4/05
2. अभिज्ञान शाकुन्तलम् 4/20
3. अभिज्ञान शाकुन्तलम् 2/06
4. अभिज्ञान शाकुन्तलम् प्रथम अंक
5. अभिज्ञान शाकुन्तलम् 5/13
6. अभिज्ञान शाकुन्तलम् 4/08
7. अभिज्ञान शाकुन्तलम् 4/14
8. स्वप्नवासवदन्तम् (प्रथम अंक)
9. उत्तररामचरितम् 2/12
10. महावीरचरितम् 2/07
11. कर्णभारम् अंक/03
12. मृच्छकटिकम् 10/12

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

छत्तीसगढ़ में जनजातीय समुदाय की सांस्कृतिक पहचान एवं परंपराऐं

डॉ. (श्रीमती) कामती सिंह परिहार
''सहा.प्राध्या.इतिहास''
शास.गजानन माधव मुक्तिबोध महाविद्यालय,
स.लोहारा, जिला-कबीरधाम(छ.ग.)
मोबाईल नम्बर-9406207974
E-mail id- kamtisinghparihar@gmail.com

प्रस्तावना

जनजातीय समुदाय अपनी विशिष्ट संस्कृति, रीति-रिवाजों, भाषा और जीवन शैली के लिए जाना जाता है। उनका प्रकृति के साथ गहरा संबंध है और वे अपनी परम्पराओं को पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाते है। भारतीय जनजातियों को आर्थिक, सामाजिक एवं. राजनैतिक दृष्टि से विकसित करने के प्रयास स्वतंत्रता पूर्व से ही किए जा रहे है और उन्हीं प्रयासों के फलस्वरूप स्वतंत्र भारत के संविधान में आंरक्षण की व्यवस्था के लिए भारतीय जनजातियों को सूचीबद्ध किया गया। तभी से ये सूचीबद्ध जनजातियां ही ''अनुसूचित जनजातियां'' कहलाती है।[1] छत्तीसगढ़ एक जनजातिय बाहुल्य राज्य है। जो अपनी पृथक संस्कृति को बनाये रखने में सफल रहा है। यहां 43 प्रकार की जनजातियां पाई जाती है। जो 161 जनसमूहों में विभाजित है। जिनमें से प्रमुख गोड़, बैगा, कमार, मुड़िया, पहाड़ी कोरबा, भतरा माड़िया, भुंजिया, पारथी, खरियां, गढ़वा आदि प्रमुख रूप से है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद में जनजातियों से सम्बंधित प्रावधानों का उल्लेख है। 2011 की जनगणना के अनुसार प्रदेश की कुल जनसंख्या का 30.6 प्रतिशत जनजातिय समूह इस प्रदेश में निवास करता है।[2]

शब्द कुंजीः- घोटुल, लुगरा-पोल्खा, खिनवा, सुता, रुपया-माला, घोटो-पेज, ओझा, खपरैल, एवं सल्फी।

छत्तीसगढ़ की जनजातियां दुर्गम वनों एवं पहाड़ों पर निवास करती हैं। इस कारण इनकी जीवन पद्धति भी स्वतंत्र होती है। जनजाति समूह के लोग एक सुसम्बद्ध समुदाय में जीते हैं तथा उनकी सांस्कृतिक रीति रिवाज, विश्वास, भाषाऐं विशिष्ट एवं विभेदक हैं। ये खुशहाल रहते हैं। इनका जीवन सरल अकृतिम एवं आदिम है। इनका विचरण ही नर्तन है और इनकी भाषा ही गायन है। किसी भी जनजाति, भाषा, संस्कृति एवं साहित्य का विकास जनजातीय समुदाय के चिरकाल तक किसी स्थान पर स्थायी तौर पर बसने से जुड़ा हुआ नही है। जनजाति हमेशा ही एक वंशानुक्रमिक सम्मानित तथा स्वतंत्र जीवन जीने के आदि रहते हैं।[3]

जनजातियों का जनजीवन, उनकी वेशभूषा, रंग-सज्जा तथा उनका रहन-सहन जनजातीय संस्कृति कहलाता है। जो विभिन्न रूपों में अपने मूल्यों परंपरा एवं संस्कृति को जीवित रखता है। जनजातीय महिलायें गोदना को अपना स्थाई गहना मानती है। मस्तक, नाक के पास, हथेली के ऊपरी भाग, ठुड्ढी के पास गोदना गुदवाया जाता है। सामान्यतः जनजाति महिलायें

गिलट एवं नकली चांदी के गहने पहनती है। पैर में तोड़ा, कमर में कर्धन, कलाईयों में चुड़ी, गले में सूता, रुपया-माला, चैन व मूंगा-माला, कान में खिनवा पहनती है। बालों को अनेक तरह के पीनों से सजाती है।

जनजातीय समुदाय के पुरुष वर्ग लंगोटी, लुंगी व गमछा एवं सिर पर पगड़ी बांधते हैं। महिलायें लुगरा को कमर से घुटने तक लपेट कर पहनती है। इनका मुख्य भोजन चावल, माड़ीया, कोदो-कुटकी, मक्का आदि का घोटो-पेज और भात, उड़द दाल, मूंग, कुलथी की दाल, जंगली कंदमूल फल एवं भाजी, मौसमी सब्जियां, मांसाहार में विभिन्न प्रकार के पशुपक्षी इत्यादि होते हैं। महुये की शराब व सल्फी का प्रयोग जन्म से मृत्यु तक के सभी संस्कारों में अनिवार्य आवश्यकता के रूप में किया जाता है।[4]

भारत के ह्दयस्थल पर स्थित छत्तीसगढ़ जो भगवान राम की जन्म स्थली रही है। प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति इतिहास और पुरातत्व की दृष्टि से अत्यंत सम्पन्न है। छत्तीसगढ़ व्यापक रूप से गांवों कस्बों का प्रदेश है। यहां की संस्कृति को लोकसंस्कृति के रूप में देखना ही अधिक सार्थक है। जनजातीय भू-भागों में अपनी पृथक सास्कृतिक अस्मिता के कारण इनके आचार-विचार, रीति रिवाज, उत्सव, मान्यताऐं जीवनशैली लोकगीत, लोककथाऐं एवं लोक चित्रकला से भरपूर हैं।

जनजातीय समूदाय के लोग एक ही भाषा बोलते हैं। इस समूह के लोग अपने समुदाय के प्रति बहुत वफादार, प्रकृति पूजक एवं अपने जाति समूह में विवाह करने पर विश्वास करते हैं। इनके जीवन में नातेदारी, विवाह, परिवार, वंशसमूह, गोत्र आदि का विशेश महत्व होता है। साथ ही अपने पूर्वजों एवं देवी-देवताओं की पूजा करते है। नृत्य संगीत गृह-सज्जा में विशेश अभिरूचि रखते हैं।[5]

आदिवासी समाज का संगठन, प्रजातंत्र और समाजवाद पर आधारित है। यहां महिलओं को पुरुष के समान अधिकार एवं प्रतिशठा प्राप्त है। जनजातीय समाज में महिलाओं की स्थिति अन्य समूहों से पर्याप्त भिन्न रहीं है। अलग-अलग जनजातीय समूहों में महिलाओं की स्थिति सामान्य वर्ग की महिलाओं से अलग-अलग रही है। इस समूह में महिलाओं का स्थान पुरुषों के बराबर माना माना जाता है। महिलाओं को ऐसे बहुत से सामाजिक अधिकार सुविधाऐं प्राप्त है जो तथाकथित सभ्य सामाज में नहीं पाए जाते है। समानता के प्राकृतिक सिद्धांत पर आधारित इनके सामाजिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक जीवन में स्त्री व पुरुष बराबर के भागीदार होते है। परंपरागत रूप से महिलाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। सच्चिदानंद के अनुसार -‘‘आदिवासी महिलाओं की स्थिति उनकी आर्थिक जीवन से नही वरण उन सामाजिक नियमों परंपराओं द्वारा निर्धारित होती हैं जिन पर समूदाय विशेश रूप से आधारित होता है। आदिवासी महिलाऐं सामाजिक जीवन के अनेक क्षेत्रों में अधिकार सम्पन्न स्थिति रखती है। वधूमूल्य एवं विधवा पुनर्विवाह के कारण इनकी स्थिति उच्च हो जाती है। यहां बाल-विवाह भी बहुत कम देखा गया है। पारिवारिक मुद्दों एवं सामाजिक जीवन के संदर्भ में इन्हे हिन्दू महिलाओं की अपेक्षा अधिक अधिकार एवं स्वतंत्रता प्राप्त है। इस समाज में विवाह विच्छेद की प्रथा प्रचलित है और स्त्रियों को भी इसका समान अधिकार प्राप्त है।’’[6] वही शादी के पूर्व जीवनसाथी के चयन में भी जनजातिय समाज खुले विचारों का है। युवक-युवतियों को अपना जीवनसाथी चुनने के लिए घोटुल जैसी प्रथाएं प्रचलित है। जहां पर आदिवासी लड़के-लड़कियां एक साथ रात-बसेरा करते है, यह भावनात्मक दृष्टि से अपने साथी से जुड़ने व एक-दूसरे को समझने का मौका होता है। घोटुल में रहने वाले युवाओं को गांव की तरफ से रहने, खाने की पूरी व्यवस्था की जाती तथा जीवन साथी चुनने के लिए सात दिन का अवसर दिया जाता है।[7]

जनजातीय समुदाय की कुछ प्रमुख जनजातियां है। जैसे - गोड़ यह छत्तीसगढ़ की सबसे बड़ी जनजाती है। जो दण्डकारण्य क्षेत्र में निवास करती है। गोड़ जनजातिय में विभिन्न उप-जनजातियां शामिल है जैसे- मूरिया गोड़ और माड़िया गोड़। ये लोग जंगल से अपने मजबूत जुडाव और परांपरिक जीवन शैली के लिए जाने जाते है, इनके पास मौखिक कहानियां और संगीत की समृद्ध परम्परा है। ये लोग प्रमुख देवी-देवताओं के रूप में दूल्हादेव, बुढ़ादेव को मानते है। अपने देवताओं को प्रसन्न करने के लिए सूअर, बकरे और मुर्गे की बलि देते है।[8] बैगा यह समुदाय जंगल का संरक्षक कहा जाता है। बैगा शब्द का अर्थ ओझा, झाड़-फूक करने वाला होता है। ये लोग जड़ी-बूटियों की औषधी के रूप में जानकारी रखने वाले होते है। इनकी सांस्कृतिक विरासत संमृद्ध है। गायन और नृत्य उनकी संस्कृति का अभिन्न अंग है बैगा पुरुष पारम्पारिक रूप

से लंगोटी और सिर पर गमछा बांधते है। जबकि महिलाएं घुटने से ऊपर लुगरा एवं पोल्खा पहनती है। गोदना - गोदवाना बैगा महिलाओं की संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।[9] कबीरधाम जिले के दूरस्थ वनाचाल क्षेत्र फिफलीपानी पानी के सुखीराम बैगा ने बात-चीत के दौरान जानकारी देते हुए बताया की छत्तीसगढ़ की बैगा जनजाति का मध्यप्रदेश की बैगा जनजाति से गहरा रिश्ता है। उनकी संस्कृति परम्पराएं और जीवन शैली प्राकृतिक और पारंपरिक मूल्यों से जुड़ी हुई हैं। बैगा जनजाति का सामाजिक जीवन उनकी पारंपरिक मान्यताओं रीति-रिवाजों, धार्मिक आस्थाओं और समुदायिक भावना के इर्द-गिर्द घूमता हैं। आमतौर पर संयुक्त परिवार पारंपरा है। परिवार का मुखिया पुरुष होता है। पारिवारिक और सामाजिक निर्णयों में महिलाओं की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है। बैगा जनजाति प्रकृति के असली रक्षक है। वन संसधनों का आदर करते है।[10]

हल्बा कृषि एवं शिल्पकला में परांगत होते हैं। कंवर खोजी एवं पारंपरिक औषधि में परांगत होते है। उरांव इनकी पहचान कृशि कार्य एवं पारंपरिक नृत्य से होती है। अबूझमाड़िया, ये अपनी स्वच्छंद जीवनशैली के लिये जाने जाते है। इनकी प्रमुख बोली गोंडी, हल्बा, छत्तीसगढ़ी एवं कुडुख है। ये कच्चे घरों में रहते है। जिनकी छते पत्तों एवं खपरैल की होती है। इनका गांव जंगलों के बीच होता है।[11]

मंगलू राम बैगा, ग्राम-बोहील, जिला-कबीरधाम (छ.ग.) के द्वारा चर्चा के दौरान जनजातीय समाज की परंपराऐं एवं त्योहारों के विषय में बताया गया। इस समूदाय के लोग फसल कटाई के पश्चात कर्मा उत्सव मनाते हैं। नई फसल के स्वागत के रूप में नवाखाई मनाया जाता है। मड़ई मेला के रूप में सामाजिक सांस्कृतिक आयोजन होते है, एकादशी के दिन देवताओं को जगाने के लिये देवउठनी एकादशी मनाई जाती है।[12]

सुआ, पंथी कर्मा, राउत नाचा और गोंडी नृत्य के साथ इन लोग ढ़ोल मांदर बासुरी तंबेरा जैसे वाद्य यंत्रों से अपना मनोरंजन करते है। प्रकृति पूजा के रूप में जंगल पहाड़ नदी एवं पेड़ों को देवता मानकर पूजा जाता है। बूढ़ादेव माता, अंगारमोती, धुरवा देव प्रमुख देवता है। जड़ी-बूटियों एवं झाड-फूक से बिमारी का इलाज करने में विश्वास करते है। आज भी जनजातीय समाज में अंधविश्वास व पुरानी मान्यताएं देखी जाती है। दूरस्थ क्षेत्रों में निवास करने के कारण इनके विचारों में अभी तक पूर्णतः परिवर्तन देखने को नहीं मिलता है, किन्तु शासन की योजनाओं, इनके बीच से कुछ शिक्षा प्राप्त कर रहे युवाओं व समाज-सेवी संस्थाओं के द्वारा किए गए प्रयासों से धीमी-गति से इनके जीवन में बदलाव देखा जा रहा हैं।[13]

छत्तीसगढ में जनजातीय समुदाय की सांस्कृतिक पहचान एवं परम्पराएं आज भी जीवन्त है। समय के साथ धीमी-गति से इसमें बदलाव देखा जा सकता है। स्वास्थ्य और शिक्षा से लंबे समय तक वंचित यह वर्ग अब धीरे-धीरे शासकीय सुविधाओं का लाभ प्राप्त कर रहा है फिर भी यह सुविधाऐं सीमित है। जंगल एवं जमीन पर उनके अधिकार भी बदले है। सरकार एवं गैर सरकारी संगठन उनकी संस्कृति एवं परंपरा को संरक्षित रखने के लिये काम कर रहें है क्योंकि उनकी जीवनशैली न केवल क्षेत्र की पहचान है बल्कि वैश्विक स्तर पर भी भारतीय जनजातीय धरोहर का हिस्सा है।

संदर्भ सूची

1- https/wwwdeshbandhucollege.ac.in
2. डॉ.मुखर्जी-छत्तीसगढ़ का सामाजिक परिदृश्य।
3. हीरालाल शुक्ल-वृहद बस्तर।
4. डॉ.टी.के.वैष्णव-छत्तीसगढ़ की आदिम जनजातियां(परिदृश्य), आदिम जाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान रायपुर 2008।
5. डॉ.मुखर्जी-छत्तीसगढ़ का सामाजिक परिदृश्य।
6. सच्चिदानंद सोशल स्ट्रक्चर स्टेटस एण्ड मोबिलिटी पैटर्न द केस ऑफ ट्राइबल वीमेन इन इंडिया, वाल्यूम-58।
7- hi.quora.com

8- https//hi.wikipedia.org.
9- https//ijassonline.in
10. सुखीराम बैगा, ग्राम-फिफलीपानी, जिला-कबीरधाम (छ.ग.) का साक्षात्कार दिनांक-10.12.2024.
11. वी.के.तिवारी-छत्तीसगढ़ की जनजाति, मध्यप्रदेश हिन्दी अकादमी।
12. मंगलू राम बैगा, ग्राम-बोहील, जिला-कबीरधाम (छ.ग.) का साक्षात्कार दिनांक-10.12.2024.
13. एस अलंग-छत्तीसगढ़ की जनजातियां और जातियां।

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री की कथा कृतियों में धार्मिक संदर्भ : धर्म-लक्षणों के परिप्रेक्ष्य में

डॉ. रेशमा कुमारी
संस्कृत विभाग,
कला संकाय दयालबाग शिक्षण संस्थान, आगरा

धार्मिक शब्द 'धर्म' शब्द में 'ठक्'- प्रत्यय के विधान से निष्पन्न हुआ है, जिसका आशय 'धर्म से युक्त' है। धर्म शब्द 'ध्रियते लोकोऽनेन' व 'धरति लोकं वा' अर्थ में 'धृ' धातुपूर्वक 'मन्' प्रत्यय के योग से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ- धारण करना अर्थात् धारण करने योग्य है तथा जो धारण करता है।

वह वृत्ति अथवा आचरण या व्यवहार जो लोक की स्थिति के लिए आवश्यक हो, वह व्यवहार, जिसके द्वारा समाज की रक्षा व चैन-सुकून की वृद्धि हो एवं समाज में श्रेष्ठ गति प्राप्त हो, वह धर्म कहलाता है।[1]

अथर्ववेद में धर्म शब्द का अर्थ इस प्रकार है—

"सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो, ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।"[2]

वेदों और उपनिषदों में धर्म की व्याख्या करते हुए वेद को धर्म का मूल बताया है— 'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्।'[3] इसी तरह महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास ने धर्म को 'अहिंसा परमो धर्मः'[4] कहा है तो मनुस्मृति में 'आचारः परमो धर्मः'[5] कहकर सम्बोधित किया है।

मनुस्मृति में आचार्य मनु ने धर्म के दस लक्षण भी बताये हैं जो इस प्रकार है—

"धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।"[6]

इस प्रकार धर्म मानवीय समाज और संस्कृति का आधारभूत तत्त्व होता है। जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं होता जो धर्म के अन्तर्गत न आता हो अर्थात् धर्म सर्वत्र विद्यमान है। चाहे वह राजतंत्र हो, समाजतंत्र हो अथवा अर्थतंत्र हो। भारतीय संस्कृति का मूल भी धर्म होता है। अर्थात् धारण करना के योग्य हो। उद्देश्य मानव की सद्भावना और सत्प्रवृत्तियों की स्थापना करना हो। यह अन्तरात्मा की शुद्धता हेतु आवश्यक है।

डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री की कृतियों में यद्यपि स्पष्ट रूप से धार्मिक सन्दर्भ प्राप्त नहीं होते हैं, किन्तु कथाओं में प्रसंगवश धर्म के जो दस लक्षण बताये गये हैं उनके आधार पर कहा जा सकता है कि डॉ. शास्त्री की कृतियों में धृति, क्षमा, दम, अस्तेय इत्यादि का स्वरूप दृष्टिगोचर होता है।

धृति (धैर्य)- धृति से तात्पर्य विभिन्न प्रकार के विघ्नों के रहने पर आरम्भ किये गये किसी भी कार्य को दृढ़ विश्वास के साथ पूर्ण करना है। मनुष्य के साहस, उत्साह व सफलता का हेतु धैर्य ही है। ऐसे धैर्यवान् व्यक्ति अथवा पुरुष को श्रेष्ठ व्यक्ति की संज्ञा दी जाती है। ऐसे व्यक्ति समाज में रहते हुए न तो निन्दा से घबराते हैं और न ही अति प्रशंसा के कारण गर्वान्वित होते हैं। कविवर की कृतियों की कथाओं में प्रायः हमें धैर्य, उत्साह, साहस के दिक् दर्शन होते हैं। 'अनभीप्सितम्'

कृति की एक कथा 'अनभीप्सितम्' में हमें कथा की नायिका सुभद्रा की माँ धैर्यशालिनी के रूप में प्रतीत होती है। उसमें धैर्य, उत्साह व परोपकार जैसे मानवीय गुण विद्यमान हैं। वह समाज में अपनी स्थिति मजबूत बनाने के लिए प्रत्येक अवस्था में समुन्द्र की भाँति गम्भीर रहती है। वह अपने पति से तलाक होने पर अत्यन्त विकट परिस्थितियों में धर्य के साथ अपनी पी-एच. डी. तक की पढ़ाई पूर्ण करती है तथा वह एक महाविद्यालय में प्रवक्ता के रूप में प्रतिष्ठित होकर अपने सभी कार्यो को निष्ठा व धैर्य के साथ पूर्ण करती है। सुभद्रा की पुत्री सुभद्रा के विषय में कहती है कि–

"विवाहविच्छेदाऽनन्तरम् मम जननी पुनरध्ययनं प्रारब्धवती। विवाहसमये सा केवलं इण्टर-परीक्षोत्तीर्णा आसीत्। अधुना सा राजनीतिविज्ञानविषये परास्नातकपरीक्षामुत्तीर्य तदन्तरं च अनुसन्धानकार्यं परिश्रमपूर्वकं सम्पाद्य पी-एच.डी. उपधिमपि लब्धवती। योग्यताकारणात् प्रयासवशाच्च सा स्वावलम्बितां साधयमाना एकस्मिन् महाविद्यालये पूर्वं प्रवक्तृपदे नियोजनमासाद्य ततः दशवर्षानन्तरमेव प्रोन्नतिमधिगम्य साम्प्रतम् उपाचार्यपदं प्राप्तवती।"[7]

इसी प्रकार कविवर शास्त्री की एक अन्य कृति 'आषाढस्य प्रथमदिवसे' की कथा 'प्रेम-परीक्षा' में धैर्य का सुन्दर उदाहरण प्राप्त होता है, जिसमें समाज को यह सन्देश मिलता है कि हमें प्रत्येक स्थिति-परिस्थिति में धैर्य को नहीं खोना चाहिए। कथा की नायिका प्रभावती की किसी दुर्घटना वश नेत्र-ज्योति चली जाती है और चिकित्सकों के द्वारा भी यह घोषित कर दिया जाता है कि इनकी नेत्र ज्योति पुनः नहीं लौट सकती एवं सत्यप्रकाश नाम के मंगेतर के द्वारा भी छोड़ दिया जाता है, तब भी वह धैर्य के साथ अपने जीवन में आगे बढ़ने का प्रयत्न करती रहती है तथा अपनी माँ के समझाने पर पुनः किसी अन्य चिकित्सक को अपने नेत्र-परीक्षण करने के लिए तैयार हो जाती है। उसकी माँ उसको समझाती हुई कहती है कि- "पुनरपि तत्र गमने दर्शने च का हानिः? त्वं तु निषेध श्रवणेऽभ्यस्ता वर्त्तसे। तत्राऽपिनिषेधोच्चारणे न कश्चिद् विशेषः स्यात्।"[8]

क्षमा-क्षमा में उदारता का भाव निहित रहता है। यहाँ बलवान निर्बल के प्रति, विद्वान, मूर्ख के प्रति इसी प्रकार निर्धन के प्रति धनवान उदारता का व्यवहार करके अनेकानेक सामाजिक अपराधों को होने से बचा लेते हैं। क्षमा ही सत्पुरुषों का आभूषण होता है। क्षमाशील व्यक्तियों के शत्रु भी एक दिन पुनः मित्र बन जाते हैं। 'अनाघ्रातं पुष्पम्' नामक कृति की कथा 'सौमनस्याऽतिरेक' में बिरजू की क्षमाशीलता, दयालुता व मानवता का परिचय प्राप्त होता है। कहानी में वह द्वेष भाव नहीं रखता है, अपनी जमीन पर कब्जा करने वाले सरूप नाम के व्यक्ति के द्वारा भी माफी माँगने पर उसके ऊपर चल रहे न्यायालय के केस से भी उसको मुक्ती दिला देता है। इसके साथ ही वह कहानी के अन्त में अपने भाई सरूप जो कि उसी की ही आँख को नष्ट करना चाहता था, के पुत्र रघुवीर को ही अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति का उत्तराधिकारी बनाना चाहता है। इस विषय में वह लेखक को कहता है कि

"अहं स्वकीयां समग्रामपि सम्पत्तिम् उत्तराधिकारिरूपेण रघुवीरस्य नामधेये करिष्यामि। स एव चाऽस्माकं परिवारे एक एव उत्तराधिकारी। भवांस्तु जानात्येव यदहं निःसन्तानः। यदि च रघुवीरेण वंशो चलिष्यति तदा किमस्माकं नामधेयं जीवितं न भविष्यति? यदि स सुखेन निवत्स्यति तदाऽस्माकमपि चात्मा तृप्तितामनुभविष्यति"[9]

इस प्रकार बिरजू अपनी क्षमाशीलता, दयालुता के माध्यम से समाज के उन कपटी, व निर्दयी एवं नकारात्मक सोच वाले लोगों को सुधारने का प्रयास करता है।

इसी तरह का प्रसंग 'मामकीनं गृहम्' की एक अन्य कहानी 'केवलम् प्रश्ना एव' में परिलक्षित होता है। कथा की पात्र सुधा, जिसको अपने पति सुशील तथा सीमा के बीच चल रहे अवैध-सम्बन्धों के बारे में जानकारी होते हुए भी वह अपने पति से किसी भी प्रकार का क्लेश नहीं करती है तथा वह अपने पति के साथ अनैतिक सम्बन्ध बनाने वाली पराई स्त्री सीमा के सभी अपराधों को क्षमा कर देती है तथा उसकी विकट परिस्थितियों व मनोस्थितियों को जानकर उसके साथ अत्यन्त दयाभाव से व्यवहार करती है। जब सीमा उसका धैर्य धारण करने की बात कहती है तब वह कहती है कि मैं तो धैर्य धारण कर लूँगी, किन्तु मैं अपने से अधिक तुम्हारे विषय में निश्चिंत हूँ। इसके साथ ही वह सीमा के रोजगार को बनाये रखने का प्रबन्ध भी कर देती है। वह सीमा को कहती है कि "अहं निर्णयं कृतवती यत् त्वम् अस्मिन्नेव व्यापार-कार्यालये (कम्पनी में) यथापूर्ण

कार्यं करिष्यसि। मम सहोदरो दिल्लीनगरात् समागतो वर्तते। स सुशीलमहोदयस्य सर्वं व्यापारकार्यम् अवलोकयिष्यति। त्वं तस्यैव साहाय्यं सम्पादयिष्यसि।''[10]

दम-दम अर्थात् विनम्रता से वीर पुरुषों के पराक्रम की आभा व शोभा होती है। पराक्रमी व्यक्ति की शत्रु के प्रति प्रदर्शित विनम्रता उसकी कीर्ति को सर्वत्र बढ़ाती है। 'आषाढस्य प्रथमदिवसे' नामक कृति की एक अन्य कहानी 'मातृगेहस्य दुर्मोहः' में लेखक स्वयं कहानी के नायक हैं। वह विनम्र व आदर्श व्यक्ति के रूप में वर्णित है। लेखक अपने विवाह पश्चात् जीवन पर दृष्टिपात करते हैं कि प्रायः प्रतिदिन ही उसकी पत्नी के घरवाले उनके घर आकर उनकी पत्नी को वस्तुतः ले जाया करते थे, क्योंकि उनकी ससुराल लगभग उसी शहर में थी। लेखक चिन्तित हैं कि उनकी पत्नी अपने भरे-पूरे परिवार को छोड़कर ससुराल आई है। अतः उसे किसी भी तरह का अकेलापन महसूस न हो तथा वह अपनी पत्नी के निवेदन पर प्रायः प्रतिदिन उसे उसकी माँ के घर भी ले जाया करते थे। इसके साथ ही वे अपनी पत्नी को विनम्र भाव से सलाह भी देते थे कि उसे रोज-रोज अपनी माँ के घर नहीं जाना चाहिए। साथ ही साथ वे उस पर किसी बात की कोई जबरदस्ती भी नहीं करते थे। कहानी के अन्त में लेखक अपनी पत्नी के अकेलेपन का अनुभव करते हुए विनम्रतापूर्वक सोचते हैं कि—

"शोभनमेव अस्ति यदस्य नवयुगलस्य विशेषतः प्रतिवेशिन्याः स्त्रियाः परिचयः कल्पनया समम् अभवत्। एतेन मम कार्यालये गमनान्तरं मम भार्या एकाकिनीत्वम् अन्यमनस्कतां च न अनुभविष्यति। यतो हि जनन्याः गमनानन्तरम् एषा नितान्तम् एकान्तताम् अन्यमस्कतां च अनुभवति स्म। मम जननी तु न जाने कदा प्रयागतः प्रत्यागच्छेत्।''[11]

इस तरह लेखक अपने विनम्र भाव एवं आदर्श पति के रूप में गृहस्थ समस्याओं अर्थात् दाम्पत्य समस्याओं को दूर करने का प्रयास करते हैं।

इसी प्रकार से कविवर शास्त्री ने अन्य कथाओं में भी विनम्रता को प्रदर्शित किया है। यथा- 'अनाघ्रातं पुष्पम्' की कथा 'रूप्यकद्वयम्' में चौकीदार बहादुर नामक व्यक्ति की विनम्रता को व्यक्त किया गया है। वह विनम्रभाव से अपने वेतन में वृद्धि हेतु प्रत्येक आवास क्षेत्र निवासी के समीप जाकर निवेदन करता है, किन्तु श्रीगोविन्दाचार्य जी उसके वेतन में वृद्धि के लिए मना कर देते हैं तथा उसको गाली-गलौज के द्वारा भला-बुरा भी कहते हैं, फिर भी वह चुपचाप वहाँ से अपना सिर नीचे करके चला आता है।

"प्रायः पञ्चमिनटपर्यन्तम् उभयोर्मध्ये रूप्यकद्वयस्य कृते विवाद इव समवर्त्तत। अन्ततः स बहादुरः पराजित इव भूत्वा प्रतिनिवृत्तः। तस्य तथाविधं शिरो नमयित्वा निराश सतो गच्छतो विलोकनमपि तदानीं मत्कृते कष्टकारकं करुणोत्पादकं चाऽभवत्। तत्पश्चात् श्रीगोविन्देनतत्कृते तानि गालिवाक्यानि समुच्चारितानि येषां संकीर्त्तनमपि अत्र हास्यास्पदम्। तत्क्षणं तु तत्राऽवस्थानमपि मह्यं नाऽरोचत। अत एवाऽहं ततः सद्य एव प्रस्थितः।''[12]

ऐसे ही कविवर शास्त्री ने अपनी अन्य कृतियों में प्रायः अस्तेय अर्थात् 'चोरी न करना' का भाव दिखाया है। 'अनभीप्सितम' कृति के अन्तर्गत 'गुण्डा गुरुसिंहः' नामक कथा में मुख्य पात्र 'गुण्डा गुरुसिंह' नाम के व्यक्ति के 'चोरी न करने' के भाव को कथा में दिखाया गया है। लेखक स्वयं इस कथा के अन्य पात्र हैं। वे कहते हैं कि गुरुसिंह कथा में ऐसा व्यक्ति है, जो किसी अपराध करने के कारण जेल की सजा को भी काट चुका है, वह एक सुदृढ़ काय वाला नौजवान है, उसके अंगारे के समान विशाल नेत्र व चेहरे पर गहरी दाढ़ी एवं चेहरे पर किसी गहरी चोट का चिह्न है। इसी कारण आवास क्षेत्र के लोग उसे शराबी व गुण्डा कहकर सम्बोधित करते हैं, किन्तु वास्तव में वह एक उपकार को मानने वाला व परोपकारी तथा किसी की वस्तु को न चुराने वाला युवक है। लेखक गुण्डा गुरुसिंह के भाव को प्रदर्शित करते हुए कहते हैं कि जब राजकिशोर अपनी पुत्री के विवाह में दहेज की व्यवस्था हेतु मजबूरी वश कुछ रुपयों को चुरा लेता है, तब गुरुसिंह निरीक्षक को कहता है कि- "कृपया राजकिशोरमहोदयस्योपरि कथमपि सन्देहं न कुर्वन्तु। तस्य आचरणम् अत्र न कथमपि सन्दिग्धं वर्तते। असौ महानुभावः पवित्रः वर्तते। रूप्यकाणि तु मया चोरितानि, एतस्य स्यूते च रक्षितानि। अहमेव अत्र अपराधी, न खलु

राजकिशोरमहोदयः।''[13]

इसी प्रकार 'शौच' अथवा पवित्रता का भाव डॉ. शास्त्री की कथाओं में अनेक स्थानों पर दृष्टिगोचर होता है। 'अनाघ्रातं पुष्पम्' कृति की 'सीतया रावणो हतः' में कथा के नायक जो कि स्वयं लेखक ही एक चरित्रवान् व पवित्र व्यक्तित्व वाले उद्धृत हैं। वे एक स्थान पर कहते हैं कि शास्त्रानुसार ब्रह्मचारी को स्त्री के साथ से दूर रहना चाहिए। अतः वे 'मुक्ता' नामक झरने पर जाकर अपनी भाभी के पास स्नान करने से इंकार कर देते हैं तथा भाभी के द्वारा वासनात्मक व्यवहार किये जाने पर लेखक दुःखी हो जाते हैं और उस रात्रि को कैसे भी बिताकर ब्रह्ममुहुर्त में उठकर प्रातः कुछ नाश्ता आदि करके उस पर्वतीय प्रदेश से पहली बस पकड़ कर अपने घर के लिए रवाना हो जाते हैं। लेखक स्वयं भाभी के वासनात्मक व्यवहार के बारे में कहते भी हैं कि–

"भ्रातृजाया मम पार्श्वे पर्यङ्के एव समुपविष्टा वर्त्तते। तदानीमहं हतप्रभमात्मानं कथमपि संयम्य निःशब्दो विचित्राऽनुभवसम्पन्नः सन् किमपि कोपयितुं विचारयितुं वक्तुं कर्तुं च न प्राभवम। मस्तिष्कं झङ्कृतमिव सञ्जातम्। हृदगतिः सहसा तथाविधमवर्धत यत् तस्य स्पन्दनमपि सेतुपथे गतिं कुर्वतो ट्रेनयानस्येव धड़धड़ायमानमश्रूयत। स्वकीयश्वासा अपि झञ्झावातसदृशाः प्रतीयन्ते स्म। तस्मिन् क्षणे त्वहं सहसैव कातरता-रुष्टता प्रहृष्टता-समुदिग्नता-भीतता-किंकर्तव्यविमूढतादि-नानाभावैरेकस्मिन्नेव काले संग्रस्तोऽभूवम्।''[14]

इस तरह से लेखक ने भाई-बहिन के तुल्य भाभी-देवर के सम्बन्ध को बनाये रखा व अपनी पवित्रता पर आंच नहीं आने दी।

लगभग ऐसा ही प्रसंग 'आषाढस्य प्रथमदिवसे' नामक कृति के अन्तर्गत 'हृदयशूलम्' में प्रतीत होता है। लेखक स्वयं सुनीता नामक पात्र के विषय में कहते हैं कि–

"आवयोः मैंया आरम्भानन्तरं वर्षम् एकम् अतीतम्। एतन्मध्ये मया सुनीतायां तथाविधं किमपि न दृष्टं यत् तस्याः चारिये सन्देहवृत्तिं जनयेत्। यदि तस्याः स्थाने काचित् अन्या अभिनेत्री स्यात् तर्हि एतावता सा मां करतलामलकवत् आरयेत। सुनीतायाः मित्रता तु मम समृद्धिभावं न अपेक्षते स्म। सा मया प्रदत्तम् उपहारादिकम् अपि सविनयं परिवर्जयति स्म। यदा अहं स्वविदेशायात्रातः आनीतं कमपि उपहारं तस्यै ददामि, तदा सा तत् विनयेन निराकरोति स्म। तस्याः तथाविधाः व्यवहाराः एव मां मोहितवन्तः।''[15]

अर्थात् कविवर शास्त्री यह कहना चाहते हैं कि मेरी और सुनीता की मित्रता को लगभग एक वर्ष व्यतीत हो चुका है, किन्तु मुझे सुनीता के चरित्र में ऐसा कुछ नजर नहीं आया, जिससे उसके चरित्र पर शंका व्यक्त की जा सके। यदि उसके जगह पर अन्य कोई अभिनेत्री होती तो अब तक वह मेरा हाथ पकड़ लेती। उसने तो मेरे द्वारा दिये गये भेंट-स्वरूप उपहारों को भी सविनय लेने से इंकार कर दिया। इसी प्रकार इसी कथा में एक और अन्य पात्र राममोहन जो गुप्तचरों की तरह कार्य करने वाला एक पत्रकार है, वह भी लेखक के कहने पर सुनीता के विषय में जानकारियाँ एकत्रित करने के पश्चात् लेखक को कहता है कि सुनीता का स्वभाव एवं चरित्र अत्यधिक सुशील है। उसका किसी भी निर्माता-निर्देशक अथवा अभिनेता के साथ कभी कोई सम्बन्ध नहीं सुना गया है। उसके आगे वह कहता है कि उसके जीवन में थोड़ी भी लोक-निन्दा प्रतीत नहीं होती। इस तरह हमें सुनीता की पवित्रता का लेखक के द्वारा पता चलता है।

इन्द्रिय-निग्रह- यह सर्वविदित है कि शरीर में अवस्थित दश ब्राह्य इन्द्रियाँ (पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्च कमेन्द्रियाँ) होती हैं तथा मन को अन्तःकरण कहा जाता है। अन्तः करण का अर्थ आन्तरिक इन्द्रिय से है। ब्राह्य इन्द्रियाँ मन के साथ चलती हैं, चूंकि मन अति चलायमान अथवा चंचल होता है इसलिए बाह्य इन्द्रियाँ मन के साथ अपने-अपने विषयों से संलग्न होती है। इन्द्रियों को उनके विषयों की ओर भागने से रोकना ही इन्द्रिय-निग्रह कहा जाता है। उपनिषदों में इन्द्रिय-निग्रह का विस्तृत अध्ययन प्राप्त होता है। कठोपनिषद् में इसे रथ-रथी के रूप में कहा गया है–

"आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च।।

इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयांस्तेषु गोचरान्।
आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः।।''[16]

अर्थात् शरीर में अवस्थित आत्मा को रथी (रथ पर सवार मुख्य मानव) समझना चाहिए तथा इस शरीर को रथ, बुद्धि को सारथी एवं मन को लगाम समझना चाहिए। इन्द्रियाँ रथ के घोड़े हैं, जो अपने विषयों के प्रति दौड़ रहे हैं। जीवात्मा सभी इन्द्रियाँ व मन के साथ चलकर भोक्ता कहा गया है।

कविवर शास्त्री की कथाओं में प्रायः इन्द्रिय-विग्रह परिलक्षित होता है। 'आषाढस्य प्रथमदिवसे' की कथा 'कुरूपरू सत्पुरुषरू' में कृष्णमूर्ति एक इन्द्रिय-निग्रही व्यक्ति के रूप उद्धृत हुआ है। कथा की पात्र नलिनी के द्वारा उसको तिरस्कृत व अपमानित किये जाने पर वह उसके प्रति कोई बदले की भावना नहीं रखता है तथा उसकी उत्तेजनापूर्ण बातों को शान्त मन से व नीची गर्दन करके सुनता रहता है। एक स्थल पर नलिनी उसको अपमानित करते हुए कहती है कि- **"त्वया केनाऽधिकारेण मह्यं पत्रं लिखितमासीत्?... गच्छ... निर्गच्छाऽस्मदीयगृहात्... अहं तुभ्यं जुगप्से... केन मुखेन त्वं मदीयसम्प्रेमाणं कामयसे?... आवयोर्मध्ये का समानता?... यदि भविष्यत्काले पुनरत्र मम गृहं समागमिष्यसि तर्हि सर्वान् प्रतिवेशिन आकार्य पदाघातपुरः सरं निष्कासयिष्यामि...।''**[17]

इसी प्रकार एक अन्य कथा 'ईश्वरीयो दण्डः' में भी 'सुप्रिया' नाम की पात्र इन्द्रिय-निग्रही के रूप में चित्रित हुई है।

जब विदेश जाने से पहले अवनीन्द्र नाम का पात्र उससे मिलने के लिए उसके घर आता है तो उसका मन करता है कि वह उसके समीप चली जाये तथा उससे वार्तालाप करे साथ ही उसके मन में यह भी शंका होती है कि न जाने कभी उससे पुनः मिलन हो पायेगा अथवा नहीं हो पायेगा? क्योंकि जो अमरीका जैसे मायावी देश में जाता है, वह वहीं जाकर जम जाता है, किन्तु उसने स्वयं को संयमित रखकर उसके समीप न ही गयी और न ही उससे बाते की। जब अवनीन्द्र हाथ धोने के बहाने से उसके समीप आता है तो वह केवल इतना ही कहती है कि- "कृपया मां विहाय न तथा भवान् गच्छतु।''[18]

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि शास्त्री जी ने अपनी सभी कृतियों में धर्म के किसी भी बिन्दु को प्रत्यक्ष रूप से प्रोत्साहित नहीं किया है। उन्होंने धर्म को आवश्यक न मानकर व्यक्ति के श्रेष्ठ कर्त्तव्य या उचित व्यवहार को प्रमुखता प्रदान की है। कवि के अनुसार धर्म का सहारा अनेक बार व्यक्ति अपने कर्मो को उस रूप को छुपाने के लिये भी लेता है जिसे वह समाज के समक्ष सीधे-सीधे प्रस्तुत नहीं कर सकता। धर्म का अनुपालन करने की अपेक्षा व्यक्ति को अपने उचित-अनुचित कर्मों के प्रति स्वयं अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिए, ऐसा उनकी कृतियों के अध्ययन से पता चलता है।

कवि की तर्कना ऐसी है कि वे प्रत्येक कार्य अथवा व्यवहार की सिद्धि तर्कपूर्ण करना चाहते हैं जो कि धार्मिक अनुष्ठान अथवा आडम्बरों में असम्भव है। इसलिए कवि ने धार्मिक पक्ष को बहुत अधिक अपनी कृतियों में प्रस्तुत नहीं किया है।

सन्दर्भ

1 पं. श्रीराम शर्मा की सांस्कृतिक -सामाजिक चेतना, पृ. 160
2 अथर्ववेद, 12/1/16,युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि, मथुरा
3 गौतम धर्मसूत्र, 1/1/2
4 महाभारत, अनुशासन पर्व, 1/5/1, वेदव्यास, मोतीलाल जालान, गीता प्रेस, गोरखपुर, संवत् ,2027
5 मनुस्मृति, 1/108, मनु/जनार्दन शर्मा, चौ. सी., वाराणसी, 1936
6 मनुस्मृति, 6/92, मनु/जनार्दन शर्मा, चौ. सी., वाराणसी, 1936
7 अनभीप्सितम्, पृ. 36, डॉ.प्रशस्यमित्र शास्त्री, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद, 2007
8 आषाढस्य प्रथमदिवसे, पृ, 22, डॉ.प्रशस्यमित्र शास्त्री, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद, 2001
9 अनाघ्रातं पुष्पम्, पृ. 62, डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद, 1994

10 मामकीनं गृहम्, पृ. 84, डॉ.प्रशस्यमित्र शास्त्री, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद, 2016
11 आषाढस्य प्रथमदिवसे, पृ. 39, डॉ.प्रशस्यमित्र शास्त्री, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद, 2001
12 अनाघ्रातं पुष्पम्, पृ.22, डॉ.प्रशस्यमित्र शास्त्री, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद, 1994
13 अनभीप्सितम्, पृ. 30, डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद, 2007
14 अनाघ्रातं पुष्पम्, पृ. 8, डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद, 1994
15 आषाढस्य प्रथमदिवसे, पृ. 79, डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद, 2001
16 कठोपनिषद्, 1/3/4, निर्णय सागर संस्करण, बम्बई, 1930
17 आषाढस्य प्रथमदिवसे, पृ. 61, डॉ.प्रशस्यमित्र शास्त्री, अक्षयवट प्रकाशन, 2001
18 आषाढस्य प्रथमदिवसे, पृ. 87, डॉ.प्रशस्यमित्र शास्त्री, अक्षयवट प्रकाशन, 2001

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

भर्तृहरिमते शब्दब्रह्मविचारः

सौरभ राउत
शोधच्छात्र
राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय, तिरुपति, आन्ध्रप्रदेश
Mail Id routsourav636@gmail.com
Mob no- 8328883056

शोधसारः

सर्वशास्त्राणां परमप्रयोजनं भवति पारमार्थिकतत्त्वज्ञानेनापवर्गलब्धिः। विदितचरमेव समेषां यत् दार्शनिकविचार पूरितवेदान्तादिप्रतिपादितब्रह्मतत्त्वं जिज्ञास्य मोक्षमीप्सन्ति ऐहिकाः। त्रिमुनिव्याकरणरहस्यं गवेषयतां शब्दतत्त्वमहरहः परिशीलयतां सुरसरस्वतीजुषां विदुषां यत् "एकः शब्दः सम्यक् ज्ञातः सुप्रयुक्तः" इत्यादिश्रुत्युक्तदिशा ज्ञानपूर्वकसाधुशब्दप्रयोगजन्यपुण्यपूतान्तःकरणे वाग्रूपशब्दब्रह्मसाक्षात्काररूपो मोक्षः परमपुरुषार्थः प्रयोजनमतः भर्तृहरिविरचितवाक्यपदीयदिशा स्फोटशब्दस्य स्वरूपम्, स्फोटशब्दस्य निरुक्तिः, प्रपञ्चस्य शब्दब्रह्मविवर्त्तत्वम्, शब्दस्य नित्यत्वादिविचाराः यथामति संकलय्य प्रतिपाद्यन्ते।

भर्तृहरिः वाक्यपदीये शब्दब्रह्मणः स्वरूपं प्रपञ्चयामास ।तमेव शब्दमाश्रित्य प्रपञ्चोऽयं व्यवहारशीलो भवति। नामरूपात्मके शब्द एव जगदाश्रितम्। अतः जगतः मुमुक्षूणां मूलतत्त्वस्योपरि विशेषध्यानं दीयते।

प्रमुखशब्दाः

ब्रह्म, शब्दः, अर्थः, स्फोटः, शक्तिः, शब्दानुशासनम्, विवर्तः, परिणामः;अ क्षरः, जगत्, परा, पश्यन्ती, मध्यमा, वैखरी, मोक्षः, ध्वनिः, व्यष्टिः, समष्टिः, परब्रह्म, पराशक्तिः।

सर्वमपि शास्त्रं किमपि प्रयोजनमुद्दिश्यैव प्रवर्तते। यथा-ज्योतिष्टोमेन स्वर्गकामो यजेतेत्यादिवैदिकवाक्यैः यागस्य साक्षात्प्रयोजनं स्वर्गप्राप्तिः ज्ञायते, तथैव शब्दानुशासनस्य साक्षात्प्रयोजनं साधुशब्दज्ञानम् ।आसधुशब्देभ्यः विविच्य कथ्यन्ते साधुशब्दा अनेनेति। अत्रायं सन्देहः- "कथं शब्दानामनुशासनम्" इति। प्रतिपदपाठेनास्य परिहार इति चेत्, श्रुयते बृहस्पतिरिन्द्राय दिव्यं वर्षसहस्रं प्रतिपदोक्तानां शब्दानां शब्दपारयणं प्रोवाच नान्तं जगाम इति। अत्र तु बृहस्पति प्रवक्ता, इन्द्रश्चाध्येता दिव्यं वर्षसहस्रं च अध्ययनकालः, न चान्तं जगाम ।कथं पनरद्यतनकाले ।यः सर्वथा चिरं जीवति वर्षशतं जीवति ।चतुर्भिः प्रकारैः विद्योपयुक्ता भवति - आगमकालेन, स्वाध्यायकालेन, प्रवचनकालेन, व्यवहारकालेन चेति ।आगमकालेनैव अस्यायुः कृत्स्नं पर्युपयुक्तं भवति। तस्मात् अनभ्युपायः शब्दानां प्रतिपत्तौ प्रतपदपाठः। तर्हि शब्दप्रतिपत्तिः कथं भवेदिति चेत् -सामान्यविशेषरूपाणां लक्षणानां प्रवृत्तौ बहूनां शब्दानाम् अनुशासनं लघुनोपायेन भविष्यतीत्यङ्गीक्रियते। एवं सर्वशब्दानाम् अनुशासनं भविष्यति ।साधुशब्दानां प्रयोगेणैव जनानाम् अभ्युदयः सञ्जायते। अत एव श्रुतिः एकः शब्दः सम्यङ्ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके कामधुक् भवतीति। अनया च साधुशब्दानां प्रयोगे कामप्रपुर्त्तिरवगम्यत। तथा च शुद्धान्तकरणानां महात्मनाम् एकस्यापि शब्दस्य सम्यक्ज्ञानपूर्वकं अर्थेन सह सम्बन्धस्य साक्षात्कारे तदर्थोत्पादनसामर्थ्यम् आविर्भवति। तादृशस्य शब्दस्य महता देवन सह साम्यं भवतीति श्रुतौ कथ्यते-

चत्वारि शृङ्गा त्रयोऽस्य पादा, द्वे शीर्षे सप्तहस्तासोऽस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्या आविवेश ॥

स्फोटशब्दस्य निर्वचनम्

वर्णातिरिक्तो वर्णाभिव्यङ्ग्योऽर्थप्रत्यायको नित्यः शब्दः स्फोटः। स्फुट विकासे इति धातोः घञ् प्रत्यये स्फोटशब्दस्य निष्पत्तिः।कर्मणि घञा अपादानघञा च द्विधा व्युत्पत्तिः व्याकरणसमये प्रसिद्धा।

१. स्फुटति स्फुटीभवति अर्थः अस्मादिति स्फोटः। इत्यत्रापादानघञा अर्थवाचकस्फोटः प्रतिपद्यते।

२. स्फुट्यते व्यज्यते वर्णैरिति स्फोटः।इत्यत्र कर्मणि घञा नादभिव्यङ्ग्यशब्दस्फोट इति।

वाक्यपदीयस्य ब्रह्मकाण्डे स्फोटसिद्धान्तः विस्तरेण व्यवस्थापितः। न्यायप्रस्थानमार्गविराजितः स्वदर्शनोपबृंहितश्च भर्तृहरिगुरुप्रणीत- आगमसंग्रहो वाक्यपदीयस्य द्वितीयोपजीव्यः अभूत्। वस्तुतस्तु महावैयाकरणभर्तृहरिणा ब्रह्मकाण्डे अविकला व्याकरणपरम्परा समाहृता।सरलया भावप्रवणया च सरण्या आनुष्टुभैः छन्दोभिः निबध्य वाक्यपदीयं, संग्रहग्रन्थप्रतिकृयिरिवोपस्थापितम्।

शब्दस्फोटस्वरूपम्

प्रप्रथमतया स्फोटसिद्धान्तः स्फोटायनादिभिराचार्यैराविष्कृतः। तदनन्तरं भर्तृहरिणा सिद्धान्तोऽयं वैयाकरणानां परमसिद्धान्तत्वेन परिष्कृतः। शङ्कराचर्यस्य अद्वैतसिद्धान्तवत् भर्तृहरेः शब्ददर्शनमपि आशयतल एव वर्तत इति केचनाभिप्रयन्ति। शङ्करमतानुसारं सर्वचराचराणां मूलकारणं माययाच्छादितं वर्तते, किन्तु हरिमते सर्वेषां मूलकारणं शब्दब्रह्मैव।

शब्दतत्त्वं तावत् नाशर्हितं परिणामहीनं च केवलसत्तेति हरेर्मतम्। तादृशादाद्यन्तरहिताच्छब्दतत्त्वादेव चराचरात्मकरूपस्य प्रपञ्चस्योत्पत्तिरिति भर्तृहरिः विश्वसिति।

नामरूपात्मकः प्रतिभासिकः कालाख्यस्य स्वतन्त्रशक्तेः सहाय्येनैव विनिर्मितो भवति। षड्भावविकाराः भवन्तीति वार्ष्यायणिः। निरुक्तोक्तषड्ध्भावविकाराणां कालमालक्ष्य शब्दब्रह्मणि भिन्नाः शक्तयः सन्तीति प्रतिपाद्यते। तादृशशक्तयः अवस्था-देशकालानां भेदमनुसृत्य भिन्नाः भवन्ति। निर्ज्ञातशक्तिरपि सा विशिष्टद्रव्यसम्बन्धे सति प्रतिबध्यते। किञ्च इमाः शक्तयः सङ्कीर्णाश्च भवन्ति। भेदसंसर्गवृत्तयः परमाणवः सर्वशक्तित्वात् छायातपादिभावेन परिणामिनः भवन्ति। एवं च शब्दाख्यपरमाणवः स्वशक्तौ व्यज्यमानायाम् अभ्राणीव प्रचीयन्ते। अस्य विश्वस्य निबन्धनी शक्तिः शब्देष्वेव आश्रिता वर्तते।पुरुषाश्रयो यः तर्कः, तन्निष्ठा या शक्तिः सा शब्दानामेवेति च शब्दब्रह्मसम्बन्धिनानाशक्तयः समाख्याताः।

शब्दब्रह्मणः अस्य प्रपञ्चस्य सृष्टिप्रक्रिया एवं भवति- शब्दब्रह्मणः आकाशः, ततः चत्वारि भूतानि आविर्भवन्ति इति वाक्यपदीये प्रतिपादितं दृश्यते। यथा अद्वैतिनां परब्रह्मसिद्धान्तः तद्वत् शब्दब्रह्मणः अस्य प्रपञ्चस्य सृष्टिरपि मायासाहाय्येन इति यद्यपि हरिणा उपपाद्यते तथापि हरेः शब्दब्रह्मसंकल्पः शङ्करस्य केवलब्रह्मसंकल्पात् भिन्न एव इति दर्शनीयं वर्तते।

प्रपञ्चोऽयं शब्दब्रह्मविवर्तः

"शब्दस्य परिणामोऽयमित्याम्नाय विदो विदुः" इति हरिकारिकामुद्धृत्य वाक्यपदीयकारः परिणामवादीति केचन पण्डिताः अभिप्रयन्ति।" किन्तु तादृशाभिप्रायो नादर्तव्य इति स्पष्टीकरणाय किञ्चित् विचारणीयं वर्तते।

भारतीयदर्शनेषु चत्वारः दर्शनसंकेताः सन्ति संघातवादः, आरम्भवादः, परिणामवादः, विवर्तवादश्चेति। बौद्धाः संघातवादिनः। 'मृत्संघातः घटः' इति तेषां मतम्। आरम्भवादिनः नैयायिकाः। तेषां मते मृदः घट उत्पद्यते। किन्तु वेदान्तिनः वैयाकरणाश्च विवर्तवादिनः। परिणामवादिनः सांख्याः। प्रधानं जगद्रूपेण विपरिणमते इति ते वदन्ति। 'दुग्धं दधि भवति' इत्यस्ति तेषां प्रसिद्धोदाहरणम्। अत्र विवर्तपरिणामयोः भेदः सश्रद्धं विमर्शनीयो वर्तते। 'रज्जुः सर्पो भवति,' 'दुग्धं दधि भवति' इत्येते खलु यथाक्रमम् अनयोः उदाहरणत्वेन उक्ते। तत्र दुग्धस्य दधित्वप्राप्तेः अनन्तरं, तस्य दध्नः पुनः दुग्धत्वप्राप्तिः नितरां न सम्भवति। किन्तु रज्जोः सर्पत्वप्रतीतेः अनन्तरं दीपानयने सति, सर्पत्वेन प्रतीता रज्जुः वस्तुतः न सर्पः किन्तु रज्जुः इति ज्ञायते। अत्र

एकदा सर्पत्वेन प्रतीता रज्जुः पुनः दीपानयनानन्तरं रज्जुत्वेनैव प्रतीयते। इयमेव विवर्तवादस्य सत्ता। परन्तु पूर्वोक्तवद् दुग्धस्य दधित्वप्राप्तौ पुनः दुग्धत्वप्राप्तिः न सम्भवति। स एव परिणामवादः। एवञ्च अत्र विवर्तपरिणामयोः भेदः स्पष्ट एव। परिणामवादे एकदा दधित्वप्राप्तस्य दुग्धस्य पुनः दुग्धत्वप्राप्त्यभावात् अत्र पूर्ववस्तुप्राप्तिः नास्ति इति वक्तुं शक्यते। किन्तु विवर्तविषये सर्पत्वेन प्रतीता रज्जुः पुनः बाधके (प्रकाशे आनीते) सति रज्जुः एव, न तु सर्प इति यथार्थबोधसम्भवात् अत्र पूर्ववस्तुप्राप्तिः अस्ति इति वक्तुं शक्यते। एवं च पूर्ववस्तुप्राप्तिः- पूर्ववस्तुप्राप्त्यभाव इत्येव अनयोः भेदः। विवर्ते असत्वस्य केवलं 'सत्त्वप्रतीतिः'। वस्तुतः आधारभूतस्य वस्तुनः न कापि हानिः। किन्तु परिणामे आधारभूतस्य वस्तुनः हानिः (विकारो) भवत्येव। तस्मात् शब्दब्रह्मसाक्षात्कारे सति अर्थभावानां पूर्ववस्तुप्राप्तिसत्त्वात् विवर्तवादनिष्ठो भवति भर्तृहरेः शब्दब्रह्मसिद्धान्तः। तत्तु ग्रन्थारम्भ एव स्पष्टीक्रियते-

'अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दतत्त्वं यदक्षरम्।
विवर्ततेऽर्थभावेन प्रक्रिया जगतो यतः।।'' इति।

अनेन शब्दब्रह्मणः एव सर्वाणि भूतानि जायन्ते तत्रैव विलीयन्ते इति बोध्यते। तस्मात् 'शब्दस्य परिणामोऽयम्' इति हरिकारिकायां यः परिणामशब्दप्रयोगः दृश्यते सः तु साङ्केतिकार्थे न, किन्तु केवलं लौकिकप्रयोग एव इति स्पष्टमेव। अस्मिन् विषये अस्याः कारिकायाः उत्तरार्धमपि प्रमाणं भवति 'छन्दोभ्य एव प्रथममेतद् विश्वं व्यवर्तत -' इति। एतेन हरेः शब्दब्रह्मवादः परिणामवादनिष्ठ इति एकदेशिमतं निराक्रियते।

भर्तृहरिमते शब्दः अर्थश्च

वैयाकरणदार्शनिकेषु प्रमुखः भर्तृहरिः शब्दार्थयोः तादात्म्यं पश्यति। अर्थस्तु तत्तद्वर्णैः अभिव्यज्यमानस्य स्फोटस्य विवर्तः। वाच्यवाचकभावस्तु तादात्म्यम्। शब्दम् अर्थेन समीकरोति भर्तृहरिः। शब्दस्योच्चारणेन अस्य स्वं रूपं नैव अस्माभिः अवगम्यते; किन्तु वक्तुरिच्छा (तात्पर्यम्) एव अवगम्यते। वक्तुरिच्छा एव शब्दस्य अर्थं ददाति। वर्णादयस्तु शब्दानां केवलं बाह्यरूपमेव।

अथ हरिमते अर्थस्वरूपं किमिति विचार्यते। तेनैव एवं निरुच्यते -

यस्मिंस्तूच्चरिते शब्दे यदा योऽर्थः प्रतीयते।
तमाहुरर्थस्तस्यैव नान्यदर्थस्य लक्षणम्॥

इति। यस्मिन् शब्दे उच्चरिते योऽर्थः प्रतीयते तं तस्य अर्थमाहुः, अर्थस्य लक्षणं नान्यत् किमपि अस्तीत्यर्थः। अर्थस्य इदं लक्षणं पतञ्जल्युक्तशब्दलक्षणेन तुल्यं भवति। तस्मात्, शब्दोच्चारणवेलायामेव स्फोटः अर्थश्च गृह्येते इत्येव अस्यार्थ इति केचन अभिप्रयन्ति।

शब्दस्तु उच्चारणात् प्राक् वक्तुतः बुद्धौ अवतिष्ठते। बुद्धिस्थः शब्दः ध्वनिसाहाय्येनैव अभिव्यज्यते। यथा अग्निः सर्वदा अरण्यां वर्तते, परन्तु अन्यवस्तुसम्पर्के सत्येव प्रकाशते; तद्वत् शब्दः सर्वदा बुद्धौ तिष्ठति, परन्तु तत्तद्ध्वनिभिरेव अभिव्यक्तो भवति। तादृशशब्दस्य शक्तिद्वयं वर्तते; प्रथमं शब्दैः स्वा जातिः एव अभिधीयते, ततः अर्थजातिश्चेति। अनेकैः दृष्टान्तैः हरिणा एतत् समर्थ्यते। शब्दः तेजसा ज्ञानेन च तुल्यं वर्तते इति तेन उच्यते। ज्ञाने यथा आत्मरूपं ज्ञेयरूपं च विद्यते, तथा शब्दे अर्थरूपं स्वरूपं च प्रकाशते इति। एवं तेजसि यथा ग्राह्यत्वं ग्राहकत्वं चेति द्वे शक्ती, तद्वत् सर्वेषां शब्दानां ग्राह्यत्व ग्राहकत्वरूपे द्वे शक्ती वर्तते इति हरिमतम्। प्रकाशस्तु स्वं प्रकाशते, एवम् अन्यवस्तून्यपि प्रकाशते; तद्वत् ज्ञानं स्वयं जानाति, अन्यवस्तून्यपि जानाति इति अत्र तात्पर्यम्। तस्मात् सर्वस्यापि हि शब्दस्य स्वबोधकत्वशक्तिः, तत्तच्छब्दाभिव्यक्तबाह्यवस्तुबोधकत्वशक्तिरपि वर्तेते इति तेन स्पष्टीक्रियते।

हरिमते शब्दनित्यत्वम्

भर्तृहरिणा वाक्यपदीये शब्दानित्यत्ववादिनां केषांचनाचार्याणामपि मतानि निरूप्यन्ते। शब्दः अभिव्यज्यते इति केचन अभिप्रयन्तिः शब्दः व्युत्पाद्यते इत्यपरे। उभयथापि शब्दः अनित्य एव इति ते। यतो हि अभिव्यज्यमानोत्पद्यमानयोः आशुविनाशित्वमेव। आलोकसाहाय्येन घटः अस्मद्दर्शनविषयीभवतिः घटस्तु एकदा विनश्यतीत्येतद् अस्माभिः ज्ञातमेव। 'यदुत्पद्यते तद् विनश्यति'

इत्येतद् मनसि निधायैव तेषाम् एतादृशवादः। तादृशशब्दोत्पत्तिवादः निष्फल इति हरिः मन्यते। 'यत् व्यज्यते स अनित्यः' इत्येतद् जातिविषये न युज्यते इति सः वदति। जातेः आविष्कारः व्यक्तिभिरेव इति कारणात् जातिः अनित्या इति वक्तुं नैव शक्यते। यद्यपि घटादयः व्यक्तयः अनित्याः तथापि आभिः अनित्यव्यक्तिभिः नित्या जातिः अभिव्यज्यते। तद्वत् अनित्यध्वनिभिः नित्यस्फोटः अभिव्यज्यते।

एवं च भर्तृहरिमते शब्दः स्फोट एव; सतु नित्या नाशरहिता च काचन सत्ता भवति। तत्तु अस्मासु सर्वासु वर्तते; यदा उत्तिजति तदा अर्थं बोधयति। उच्चार्यमाणाः ध्वनयः एव आन्तरस्फोटं ध्वनयन्ति। एते ध्वनयः बाह्यवर्तिस्थानप्रयत्नादिभिः निष्पाद्यमानाः; तस्मात् ते नश्वराः। सः 'ध्वनः' इति कथ्यते।

शब्दनित्यत्वं तावत् उच्चरितशब्दरूपे न (वर्तते); परन्तु वक्तुतः हृदयदेशे एव वर्तते। शब्दभावनारूपेण एतन्नित्या। यथा वायुः सर्वत्र वर्तते, परन्तु व्यजनाद्विना नोपलभ्यते (नैव प्रतीयते); तद्वत् अजस्रवृत्तिः अविच्छेदेन वर्तमानः, नित्यश्च यः शब्दः सूक्ष्मत्वात् न सर्वदोपलभ्यते। किन्तु निमित्तादेव उच्चारणेनैव प्रतीयते इति हरिणा उच्यते।

शब्दब्रह्मणः चतुरवस्था

व्यष्ट्यां वा समष्ट्यां वा बहुविधाभिव्यक्तीनां प्रभवस्थानं शब्दतत्त्वम् इति हरिणा मन्यते। तस्य शब्दस्य अभिव्यक्तिस्तु चतुस्सोपानैः भवति। तानि क्रमात् परा-पश्यन्ती-मध्यमा-वैखरी च। परा तावत् विशुद्धायाः अद्वैतावस्थायाः आदिमस्वरूपं भवति। पश्यन्ती अपि परासदृशा; किन्तु तत्र पदार्थौ परस्परं मिलित्वा अविभाज्यत्वेन वर्तेते। योगिनां तु तत्रापि प्रकृतिप्रत्ययविभागः साध्य एव। शब्दार्थयोः अविभक्ता इयम् अवस्था अनयोः आदिमं प्रभवस्थानं भवति। एतस्य स्पष्टीकरणाय हरिणा मयूराण्डस्य दृष्टान्तं दीयते

आण्डभावमिवापन्नो यः क्रतुः शब्दसंज्ञकः।
वृत्तिस्तस्य क्रियारूपा भागशो भजते क्रमम्॥ इति।

मयूरप्राप्तेः पूर्वं बहुप्रकाराः चेतोहराश्च मयूरवर्णाः अण्ड एव अन्तलीना भवन्ति। तद्वत् शब्दार्थावपि विभिन्नद्योतकस्वभावप्राप्तेः प्राक् मयूराण्डवत् पश्यन्त्यां स्वस्वगुणसहितौ समाहतौ वर्तेते। या कापि भाषाऽस्तु, तस्याः प्रयोक्तॄणां मनसि श्रवणश्रावणशक्तिः अन्तलीना वर्तते इति अत्र हर्याशयः।

अनाहते हृदये पवनसंयोगात् पश्यन्त्याः विवर्तो भवति मध्यमा। अस्यां च अवस्थायां प्रयोक्तुः विवक्षितचिन्तनस्य तदनुसारिणां वाचां च विविच्य मननं कर्तुं शक्यते। जिह्वानपेक्षितमौनोच्चारणस्य जपस्य वा अवस्था भवति मध्यमा। इयमेव आन्तरस्फोट इत्युच्यते।

वाचकस्य अत्यन्तबाह्यः आविष्कारो भवति वैखरी। विशुद्धे कण्ठदेशे पवनसंयोगात् मध्यमायाः विवर्तः। मध्यमायां विचारितस्य आशयस्य जिह्वादीनां साहाय्येन वर्णरूपेण शब्दो भूत्वा उच्चार्यमाणा अवस्था भवति वैखरी।

वैखर्या मध्यमायाश्च पश्यन्त्याश्चैतदद्भुतम्।
अनेकतीर्थभेदायास्त्रय्या वाचः परं पदम्॥इति।

परन्तु महाभाष्यस्य पस्पशाह्निके व्याकरणप्रयोजनप्रतिपादनावसरे 'चत्वारि वाक्परिमिता...' इति ऋग्वेदमन्त्रमुद्धृत्य भाष्यकारः 'तुरीयं' इत्यस्य अर्थम् एवं वदति- ष तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति। तुरीयं वा एतद्वाचो यन्मनुष्येषु वर्तते चतुर्थमित्यर्थः इति। अत्र भाष्यकारेण वाचः तुरीयावस्था अङ्गीक्रियते इत्यतः तेन परावस्था स्वीकृता इति अनुमातुं शक्यते। भाष्याभिमतं तत्त्वं निश्चयेन भर्तृहरेः अपि अभिमतं भविष्यति इति विचारेण नागेशः, 'चत्वारि वाक्परिमिता.. इति भाष्यस्य व्याख्यानवेलायाम् उद्योते, 'वैखर्या मध्यमायाश्चष इति हरिकारिकामुपादाय एवं विवृणोति'- ष्तत्र श्रोत्रविषया वैखरी। मध्यमा हृदयदेशस्था पदप्रत्यक्षानुपपत्या व्यवहारकारणम्। पश्यन्ती तु लोकव्यवहारातीता। योगिनां तु तत्रापि प्रकृतिप्रत्ययविभागावगतिरस्ति। परायां तु नेति 'त्रय्या' इत्युक्तम्। किञ्च वाक्यपदीये न कुत्रापि परायाः तिरस्कारो हरिणा कृतो दृश्यते।

भर्तृहरिणा परावस्था स्वीकृता, न वा अस्तुः उभयथापि भारतीयचिन्तापद्धत्यां 'परा' इति संकल्पनस्य अनुप्रेरणा अनिषेध्या

एव। 'परब्रह्म' 'पराशक्तिः' इत्येवं प्रकारेण भारतीयदर्शनेषु तन्त्रेषु वा प्रचुरोपयोगिनः 'परा' इति चिन्तनस्य प्रभावः भर्तृहरौ नासीत् इति वक्तुं न शक्यते।

संदर्भ

1. महाभाष्यम्-पश्पशाह्निकम्
2. महाभाष्यम्-पश्पशाह्निकम्
3. वा.प-१.१
4. वा.प-१.१
5. वा.प-१.३
6. नि.पृ-६
7. वा.प-१.३२
8. वा.प-१.३२,३३,८८,११०,११८,१३७
9. वा.प-१.२०
10. वा.प-१.१२०
11. महा.भा०-प.आह्निकम्
12. वा.प०-१.५०,५५
13. वा.प०-१.६३
14. वा.प०-१.११६
15. वा.प०-१.४१
16. वा.प०-१.१४३
17. म.भा०-प.आह्निकम्

सहायकग्रन्थसूची

१. वाक्यपदीयम्, चौखम्भा संस्कृत पुस्तकालय, वाराणसी, २०१६।
२. महाभाष्यम्, चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी, २०१४।
३. निरुक्तम्, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी।
४. वेदान्तपरिभाषा, चौखम्भा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी, १०१।
५. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, २०१७।
६. अर्थसंग्रहः, चौखम्भा ओरियन्टालिया, वाराणसी, १९७७।

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

‘शाम्भवी’ गीतिकाव्ये विविधधार्मिकविषयाणां समीक्षात्मकमध्ययनम्

डॉ. निशिकान्तपाण्डेयः
कैकला संस्कृत विद्यापीठ, हावडा अतिथि अध्यपकः

सारसंक्षेपः

संस्कृतकाव्यस्य चर्चा प्रचलिताऽस्ति प्राचीनकालादेव भारतवर्षे। आधुनिककालेऽपि भारतराष्ट्रस्य विविधप्रान्ते काव्यविरचनं कुर्वन्ति संस्कृतकवयः। संस्कृतसाहित्ये ‘शाम्भवी’ इति नामकं काव्यं सुप्रसिद्धमस्ति। तथापि अस्य काव्यस्य चर्चा प्रायशः बहुत्र न भवति इति कारणवशात् अयं प्रबन्धः निर्मातुं मम मनसि अभीप्सा जायते कश्चित। काव्यस्य अस्य रचयित्री महामहोपाध्याया-चार्यापुष्पादीक्षितमहोदया। त्रयस्त्रिंशत् संख्यकाः कविताः विद्यन्ते अत्र। अभिनवं गीतिसंकलनम् एतत्। शाम्भव्यां संकलितेषु त्रयस्त्रिंशत् कवितासु प्रायः सर्वत्र धार्मिकविषये कथिताः। यथा कालिका करालिका, च। प्रबंधेऽस्मिन् दीक्षितमहोदये विरचिते “शाम्भवी” इति गीतिकाव्ये प्रयुज्यमान विविधधार्मिकविषये आलोकपातकरणार्थमत्र लघुप्रयासमेकं कृतम्।

भूमिका : प्राचीनकालादेव भारतवर्षे संस्कृतस्य प्रभावः परिलक्ष्यते। बहवः प्राच्याः पण्डिताः, विचक्षणविद्वांसः नवनवावधारणाः दत्तवन्तः। प्राचीनमहिलासु काश्चनेव प्रसिद्धाः भवन्ति। अतिविशाले वैदिकवाङ्मये गार्गी-मैत्रेयी-लोपामुद्रादीनां नामानि उल्लेखयोग्यानि। गङ्गा देवी, तिरुमलाम्बा, क्षमाराव, कमलापाण्डेयः इत्यादि कवयित्रीणां नामानि आधुनिकयुगे सम्पूर्णरूपेण उपलब्धानि भवन्ति इति महदानन्दस्य विषयः। विंशतिशतिकाया एका प्रमुखा आधुनिकी कवयित्री अस्ति पुष्पादीक्षितमहोदया, तत्र कोऽपि संशयो नास्ति। सा न केवलं कवयित्रीरूपेण व्याकरणशास्त्रे पारंगतरूपेणापि परिचिता। भारतवर्षस्य सर्वत्रैव सा संस्कृतस्य प्रचारसेवा कुर्वती अस्ति। सा “सौन्दर्यलहरी” इति ग्रन्थस्य संस्कृतानुवादिका, व्याख्याकर्ती तथा ‘अग्निशिखा’ ‘शाम्भवी’ च इति गीति- काव्यग्रन्थस्य रचनां च कृतवती।

असाधारणा काव्यप्रतिभा, गहनं शास्त्रीयं ज्ञानम् - एतत् सर्वं मिलित्वा साहित्यस्य व्याकरणस्य च जगति प्रशंसितम् अद्वितीयं स्थानं निर्मान्ति पुष्पादीक्षितमहाभागाः।

महामहोपाध्यायाचार्या पुष्पादीक्षित अन्तर्राष्ट्रीयख्यातिसम्पन्ना व्याकरणविदूषी तथा साहित्यिक-कवयित्री च, हिन्दी-संस्कृत-भोजपुरी-आङ्गलभाषायां काव्य-नाट्य-कथा-समीक्षायाः च लेखिकाऽस्ति। तस्याः ज्ञानं यथा गभीरम्, तस्याः काव्यरीति अपि प्रभावशालिनी, बोधगम्या च। तस्याः कृतयः जनानां मनांसि असीमितं प्रभावम् उत्पादयन्ति।

पुष्पादीक्षितमहोदया स्वकीये ‘शाम्भवी’ इति गीतिकाव्ये विविधधार्मिकविषयाणां सजीवचित्रणं करोति। वस्तुतः ‘शाम्भवी’ नाम लोकप्रियगीतिकाव्यं समसामयिकसामाजिक-चित्राणि समुद्घाटयति। प्रायः सर्वाः कविताः सामाजिकव्यवस्थायां व्याप्तानां प्रवृत्तीनां परिदशानां च सजीवचित्राणि उपस्थापयन्ति।

पुष्पादीक्षितमहोदयायाः काव्ये धार्मिक- सांस्कृतिकविषयादिकं समुचितविम्बैः उद्भासितं क्रियते। अतः गीतिकाव्येऽस्मिन् प्रतिफलितानां विविधधार्मिकविषयाणां समीक्षणम् उपस्थाप्यते।

धार्मिकविषयः

'शाम्भवी' गीतिकाव्यस्य शुभारम्भः कवयित्र्याः धार्मिकसंस्कारेण भवति। दीक्षितमहोदयायाः या पौत्री शाम्भवी अस्ति, तस्याः नाम्नः छलेन धार्मिकावधारणाया आभासः प्राप्यते। कवयित्री कथयति यत् इयं शाम्भवी पार्वती स्वरूपा वर्तते। सा शिवस्य कृपया एव किमपि कर्तुं शक्नोति। इयं स्थितिः केवलं 'शाम्भवी' इति कन्यायाः नास्ति। वस्तुतः शाम्भवी अत्र सर्वेषां मानवानां प्रतीकभूताऽस्ति। इयं धरा वस्तुतः एका विशाला रङ्गमञ्चस्वरूपा वर्तते, तत्र वितानरूपं सम्पूर्णं नीलगगनं विराजते। एतस्य वितानस्य सूत्रधारः शम्भुरस्ति, यस्य निर्देशानुसारं "शाम्भवी" अर्थात् जीवलोकः वारं वारं पृथक् पृथक् भूमिकाभिः अभिनयं नर्तनं वा करोति। यथा सूत्रधारस्य निर्देशानुसारं सर्वाणि पात्राणि स्वाभिनयं प्रदर्शयन्ति तथैव चराचरजगतः परिचालकः शम्भुः सूत्रधारस्य भूमिकायामस्ति

"धरणी विशालमञ्चो नीलं नभो वितानम्।
सूत्रं दधाति शम्भुर्नरिनर्ति शाम्भवीयम्।।"[1]

शाम्भवीवत् जीवजगतः प्रत्येकजनः जीवो वा नृत्यति। कवयित्री कथयति यत् संसारस्य पञ्चभूतेषु प्रतिक्षणं व्याप्तस्य शिवस्य संकेतेन नृत्यति तिष्ठति च शाम्भवी।

अत्र 'शाम्भवी' इति पदे श्लेषोऽस्ति। एक अर्थोऽस्ति शिवस्य निर्देशेन नृत्यरता पार्वती। द्वितीयतः संसारस्य सर्वे जीवाः च सूच्यन्ते। अत्र कवयित्री पौत्रीं 'शाम्भवी' इति नाम्ना प्रतिध्वन्यते। संसारस्य सृष्टिः, पालन-पोषणम्, संहारञ्च वारं वारम् इयमेव आदिशक्तिः पार्वती करोति।

यदा मन्वन्तरेषु व्यतीतेषु कालेषु धरणी जले निमग्ना भवति तदा भविष्यतस्य सृष्टेः बीजं पार्वतीदेव्या एव सुरक्षितं कृतम्। यथोक्तम्—

"मन्वन्तरेष्वतीतेष्वप्सु क्षितिर्निलीना।
आगामिसृष्टिबीजं दरिधर्ति शाम्भवीयम्।।"[2]

बहुभवनं धनं साम्राज्यं वा स्वस्याः अधीने रक्षित्वा शाम्भवी सुरक्षां ददाति। अर्थात् सर्वविधानस्य कारणभूता शाम्भवी तिष्ठति, सैव एतत्सर्वस्य संहारिकाऽपि अस्ति।

यथोक्तम्

"अट्टालिका विशाला व्योम्न्युन्नताभ्रमाला।
क्रोडे निधाय सर्वं जरिहर्ति शाम्भवीयम्।।"[3]

इयं शाम्भवी अर्थात् पार्वती संसारस्य सकलासु क्रियासु सर्वत्र वर्तते। यथोक्तम्

"अश्रान्तजागरा वा स्वप्नस्य वागुरा वा।
सकलक्रियासु सततं सरिसर्ति शाम्भवीयम्।।"[4]

जगन्मातुः पार्वत्याः हृदयस्य अन्तर्भागे कोऽपि प्रवेशयितुं न समर्थो भवति। इयमेव समस्तजीवलोकं भूय-भूयः पालयति। यथोक्तम्

"हृदयं जगज्जनन्याः कोऽपि क्षमो न मातुम्।
निखिलन्नु जीवलोकं बरिभर्ति शाम्भवीयम्।।"[5]

"कालिका करालिका" इति कवितायां मातुः कालिकायाः विविधानां स्वरूपाणां चित्ताकर्षकं चित्रणं करोति पुष्पादीक्षिताचार्या। तत्र कालिकायाः करालरूपं चित्रयित्वा तस्याः समुत्पत्ते एकं रेखाचित्रं कवयित्री अङ्कयति। कवयित्री कथयति यत् इयं करालिका कालिका स्वकीयैः आकाशभेदकैः गर्जनैः चलाचल-रसातल-महातल-तलातल-धरातलादिकं पूरयित्वा स्वकीयपादताडनैः धरणीतले समुत्पन्ना।

यथोक्तम्

"रसातलं महातलं तलातलं धरातलं
प्रपूर्य गर्जनैर्नभोविदारकैश्चलाचलम्।
प्रचूर्ण्य पादताडनैर्दिगन्तदन्तिनां बलं
समुत्थिता क्षितिं विदार्य कालिका करालिका।।"[6]

इयं कालिका सांसारिकमायामोहेन ग्रस्तानाम्, रागद्वेषक्रोधादिषु निमग्नानां धनसम्पदेनापि असन्तुष्टानां च मनांसि सुविचारं बोधयित्वा तेषां मनसोऽन्धकारं दूरीकरोति। यथोक्तम्

"गृहान्धकूपलुण्ठनेन चेतनामपश्यता-
मसच्छरीरशर्वरीप्रकाशमेव पुष्यताम्।
निमज्ज्य रागकर्दमे चलश्रिया न तुष्यताम्
मनांसि बोधयेद् द्रुतं मनस्तमोविदालिका।।"[7]

देवाः भवन्तु अथवा जीवलोकाः पशुपक्षिणः वा भवन्तु , सर्वे तस्याः कृपया एव किमपि कर्मकर्तुं समर्थाः भवन्ति। कवयित्री कथयति यत् शम्भुरपि सृष्टिकर्तुं संहारकर्तुं च तस्याः कृपां विना असमर्थोऽस्ति। ब्रह्मा सृष्टिप्रक्रियायाम् अक्षमः, विष्णुः भरणपोषणाय असमर्थः, मेघाः वर्षणाय अशक्ताः , समुद्रः मज्जनाय असमर्थः। कथनस्य तात्पर्यमस्ति यत् कालिकायाः कृपयैव ब्रह्मा सर्जनम्, विष्णुः पालनपोषणम्, मेघाः वर्षणम्, समुद्राः मज्जनञ्च कर्तुं समर्थाः भवन्ति। यथोक्तम्–

"हरोऽपि हर्तुमक्षमः क्षमो न सर्जने विधिः
हरिर्न पालनाय लभ्यते न शक्तसन्निधिः।
घनावली न वर्षणाय मज्जनाय वारिधिः
प्रभुर्न दुग्धनीरयोर्विवेचने मरालिका।।"[8]

कवयित्री करालिकायाः सान्निध्यम् अभिलषति "हे करालिके कालिके! त्वं मां पक्षिभिः साकम् शुभ्राकाशे विचरणं कर्तुं शक्तिं ददातु। मत्स्यैः सह सागरान्तप्रदेशे शयितुम्, सिंहशिशुभिः सह उतङ्गपर्वते आरोहणाय च शक्तिं ददातु। त्वं विश्वपालिका भूत्वा सर्वत्र भुजं प्रसार्य मां पालयतु।"

यथोक्तम्–

"क्वचिद् विहङ्गमैः समं डयेय शारदाम्बरे
क्वचित् तिमिङ्गिलैः शयीय सागरस्य गह्वरे।
क्वचिच्च सिंहशावकै रमये तुङ्गभूधरे
भुजौ प्रसार्य सर्वदिक्षु पातु विश्वपालिका।।"[9]

कवयित्री कालिकाम् अर्चयति यत् सा अधर्ममार्गे निरतं मानवं सम्पूर्णं नाशयेत्। सा नराधमान् राष्ट्रघातकान् जनान् च विनशयन्तु। यथोक्तम्–

"समूलकाषमुत्कषेदधर्मशासने स्थितान्
पिनष्टु शुष्कपेषमाततायिनो नराधमान्।
चरच्चरेति चर्वतात् प्रसह्य राष्ट्रघातुकान्
विशुभ्रदन्तपङ्क्तिनिः सन्मरीचिजालिका।।"[10]

कवयित्री करालिकायाः शक्तिं निरूप्य कथयति–

"विपाट्य खं यया रविः शशी च कन्दुकीकृतौ
विशोष्य कं ययाऽनिलानिलौ च कुक्षिसात्कृतौ।
क्षणेन किं विलक्षणं न कोऽपि दृश्यते क्षितौ
प्रचालयत्यरेऽखिलं दिगन्तरप्रचालिका।।"[11]

एवं रूपेण काव्येऽस्मिन् धर्मविषयकविश्वासः समाजे प्रचलितधर्मीयपरिवेशश्च काव्यरीत्या चित्रितोऽस्ति। उपयुक्तपरिशीलनेन वक्तुं शक्यते यत् जनेषु नवजागरणसृष्टौ शाम्भवीकाव्यस्य महत्त्वं सर्वदा स्वीकरणीयम्।

सन्दर्भसूचिः

1. शा., पृ.१
2. तदेव., पृ.१
3. तदेव., पृ.१
4. तदेव., पृ.१
5. तदेव., पृ.१
6. तदेव., पृ. ७०
7. तदेव., पृ. ७०
8. तदेव., पृ.७०
9. तदेव., पृ.७१
10. तदेव., पृ.७१
11. तदेव., पृ.७१

ग्रन्थपञ्जी

दीक्षित, पुष्पा। शाम्भवी। राष्ट्रीयसंस्कृतसंस्थानम्, २०१२

दाहालः, आचार्य लोकमणि। संस्कृतसाहित्येतिहासः। चौखम्बा कृष्णदास अकादेमी, 2019

ঘোষাল, বনবিহারী। অর্বাচীন সংস্কৃত সাহিত্যের ইতিহাস।(1802-2020), তুলসি প্রকাশন, ২০১১

डॉ. निशिकान्त पाण्डेय

कैकला संस्कृत विद्यापीठ,

आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, कैकला, हावडा

Impact of COVID 19 on Rural Economy of Jharkhand

Rajesh Kumar
PhD Research Scholar
University Department of Economics
Sido Kanhu Murmu University, Dumka
Email:- rajeshkr63000@gmail.com
Mobile No.- 9128220586

Dr. Jyoti Kumar Pankaj
PhD Supervisor:
Assistant Professor,
Dept. of Economics,
Godda College, Godda

Abstract

Coronavirus was a global pandemic and the whole world was badly affected by it. It took the lives of millions of people. It is a contagious disease, so lockdown had to be resorted to to stop it. Lockdown in India started from 25 March 2020. All sectors were badly affected due to the lockdown. Through this article, an attempt has been made to study the impact of coronavirus on the rural economy of Jharkhand. During this period, growth was seen in the agricultural sector in Jharkhand. During this period, MNREGA provided employment to reverse migrants and people were not forced to go to other states due to lack of work during coronavirus

Keywords: Covid-19, Rural Economy, MNREGA, Agriculture, Jharkhand

Introduction

COVID -19 was first declared as a public health emergency and later a pandemic by the world Health organisation (WHO). More than 213 countries/territories have been affected so far by the deadly virus. There was National emergency and lockdown in most of the countries. In the span of a few months, COVID - 19 pandemic has devastated health system and the economics of countries including economy of some developed countries. According to Ministry of Health and Family Welfare, Government of India, at the end of July more than 20 lakh people have been affected, more than 50 thousand people are getting affected per day and around 50 thousand people have lost their lives in just 4 months due to this disease.

The world was taken by surprise completely by the rapid spread of COVID -19 virus worldwide from its original epicenter in Wuhan, Chine. This pandemic found both the Central Government and the state Government in varying degrees of unpreparedness. But Governments reacted reasonably quickly to combat the situation, as saving lives was the priority of the Government. The Epidemic Disease (Amendment) ordinance was promulgated on 22nd April, 2020 amending the provisions of the Epidemic Disease Act, 1897 and central Government announced certain measures in 4 phases of lockdown started from March 25, as lockdown can slowdown the spread of the infection as well as provide time to health systems to deal with the disease at multiple levels. However, the effect of

lockdown has come at an economic cost to all sections of the society throughout the globe.

Issues and challenges in the Rural Economy

Due to lockdown broadly three kinds of rural activities have been affected : agriculture and allied activities, local non-farm sectors and rural urban migration. Slowdown of economic activities in urban areas had an effect on the income of rural people as most of the rural migrant labourers are engaged in different urban activities such as construction work, electrical work, painter, driver, coocks of different hotels and restaurants, sales person of different showrooms, security guard etc. who are the support hands to every sector of the economy. As lockdown was announced suddenly, to arrest the spread of virus, millions of labourers became jobless, foodless and even shelter less. Though it was declared a national disaster and the government had made it obligatory for the employers to pay the wages as per National Disaster Management act, but many enterprises did not comply especially financially weak enterprises.

Impact of COVID-19 lockdown on crop production

The area, output and yield of Paddy and Maize crops, however, increased significantly in the year 2020-21. The area, output and yield of Paddy has increased by 7.5 per cent, 37.4 per cent and 28 per cent respectively and that of Maize by 7.5 per cent, 30.2 per cent and 21.0 per cent respectively in 2020-21, in comparison to the previous year.

Table 1: Trends in Area, Production and Yield of the principal Kharif crops

Area — 000' hectares, production in 000' tonnes, Yield in Kg/Hectare

Crop	2016-2017			2017-2018			2018-2019			2020-2021		
	Area	Production	Yield	Area	Production	Yield	Area	Production	Yield	Area	Production	Yield
Paddy	1678.96	4988.06	2971	1735.4	5131.9	2957	1527	2894	1895	1641.21	3975.99	2423
Maize	286.23	578.07	2020	294.7	596.7	2025	261.1	455.3	1744	280.8	592.7	2111

Source:SAMETI, Jharkhand

The area, output and yield of Rabi crops have followed the same trend as those of the Kharif crops. A good Monsoon along with winter rains causes expansion in all the three while bad weather causes contraction. The area, production and yield in 2020-21 increased by about 31 per cent, 45 per cent and 11 per cent respectively.

Table 2 : Area, Production and Yield of Rabi crop

Area — 000' Hectare, Production in 000' tonnes, Yield in Kg/Hectare

Financial Year	Total Area	Total Production	Yield
2015-16	161.724	296.507	1833
2016-17	221.444	443.159	2001
2017-18	231.096	489.330	2117
2018-19	169.791	313.879	1849
2019-20	222.424	455.444	2048

Source: The Directorate of Agriculture, Governmentof Jharkhand

Non-farm activities

Start-up Villages Entrepreneurship Programme (SVEP)

Under the SVEP, a total of 6,948 Micro Enterprises have been established till 31st October, 2020 and 1.2 lakh SHGs members have initiated or revived the micro enterprises after getting a loan from the SHGs. A total of 1499 SVEP MEs were operational even during the COVID-19 lockdown period.

Reverse Migration and the Role of MNREGA in Rural Employment Recovery

In the FY 2020-21 more than 961 lakh person days of employment have been generated and it is 49.73 per cent higher than that of 642 lakhs generated in the FY 2019-20. The total number of households which have completed 100 days of wage employment has also increased in the FY 2020-21. It is 49,093 as against 30,989 in the FY 2019-20. About 9.2 thousand differently abled persons have also worked in MNREGA during the FY 2020-21. The average wage rate has also increased in the FY 2020-21 to 193.93 from 170.98 in the FY 2019-20. Figure 1 shows that the employment generation under MGNREGA has increased significantly over the years in Jharkhand.

Conclusion

When COVID-19 was declared as a pandemic no one imagined the changes it would bring Economic activities had come to a standstill, output and production collapsed, leading to significant loss of livelihood which has driven the economy beyond the economic boundaries. The complete shutdown was more visible in the transportation, manufacturing, automotive and construction sectors. These sectors are marked with the presence of unorganised labour force and migrant workers. The shutdown earning doors for migrant workers and migrants were left with no money, no job and no food and shelter in cities and forced to be back to their home villages where at least they can work in farms and could arrange food for their family. Both the Central and state governments have to utilise and enhance the allotment of the MNREGA programme, the safety net in rural areas, in a more expanded and inclusive way so that the returnees can get jobs and do not compel to return back to the cities in this pandemic situation. In the wake of the COVID -19 crisis, the government of India came up with its ambitious and holistic programme of Atamnibhar Bharat Abhiyan or self Reliant movement in

May 2020 to address the challenges posed by the pandemic. The area, output and yield of Kharif and Rabi crops increased in 2020-21 compared to the previous year.

Figure 1: Total person -days generated under MGNREGA in Jharkhand (in lakh)

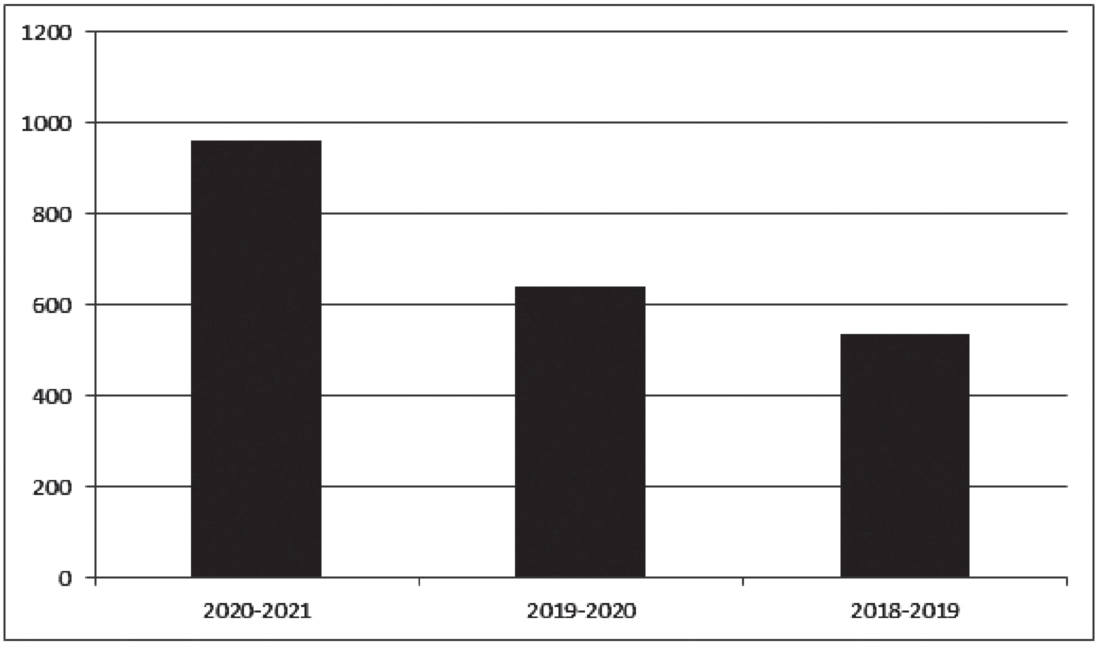

Source: Jharkhand Economic Survey 2020-21

References

1. Nair, K.R. (2020). Impact of COVID-19 19 on Rural India. Diplomatist
2. Bhavani, R. V. (2020). Impact of COVID-19 on Rural Lives and Livelihoods. ORF, New Delhi.
3. Chakravorty, B., Imbert, C., Lohnert, M. & Panda, p. (2020). COVID-19 lockdown and migrant workers. Survey of vocational trainees from Bihar and Jharkhand. Ideas for india.
4. Choudhary, R. (2020). COVID-19 pandemic. Mental health challenges of internal migrant workers of India. Asian Journal of Psychiatry.
5. Azeez, A. & Begum, M. (2009). Gulf Migration, Remittances and Economic impact. Journal of social sciences.
6. Goud, T. C.(2020). Indian Immigrants in the Gulf countries: Issues, Trends and polices.
7. Busari, S., & Salaudeen, A. (2020). 'We don't work, we don't eat. ' informal workers face stark choices as Africa's largest megacity shuts down
8. Dey, S. K. (1962). Panchayat -I-raj: A synthesis. Asia publishing House.
9. Shoo, N. (2020). Panchayats and pandemic. ORF
10. WHO. (2020). Naming the Coronavirus Disease (COVID -19) and the virus that causes it.
11. Banerjee, C., Director General, confederation of Indian Industry, The New Indian Express.
12. Muro, M.,Maximum, R.,& Whiton, J. (2020). The place of the COVID -19 recession will likely hit hardest.

The Avenue.
13. Jharkhand Economic survey 2017-18
14. Jharkhand Economic survey 2018-19
15. Jharkhand Economic survey 2019-20
16. Jharkhand Economic survey 2020-21
17. Jharkhand Economic survey 2021-22
18. Jharkhand Economic survey 2022-23
19. Jharkhand Economic survey 2023-24
20. Jharkhand Economic survey 2024-25

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

A critical study of Mathura Prasad Dikshit's "Veerpratapam"

Samuel Debbarma
Assistant Professor, Department of Sanskrit,
Government Degree College, Kamalpur, Dhalai, Tripura.
Email : samueldebbarma50@gmail.com

Abstract:

Mathura Prasad wrote the play *Veerpratapam* during India's freedom struggle to inspire courage and valour in the youth and warriors, aiming to motivate them to free the country from bondage. Set against the historical backdrop of Maharana Pratap's resistance against Akbar, the play blends patriotic themes with the depiction of Pratap's indomitable spirit. The narrative spans several acts, focussing on Pratap's strategic and emotional challenges. His resistance against the Mughals, interactions with his allies, and Akbar's schemes are all key points. Pratap's council devises strategies to starve enemy forces, while Akbar expresses his desperation to defeat Pratap. Other significant characters include Man Singh, who betrays Pratap, and Shaktising, who redeems himself by saving Pratap's life in battle. In terms of dramaturgy, Mathura Prasad uses ekoktis (monologues) effectively to reveal the inner thoughts of characters, especially during moments of reflection or decision-making. The language is a blend of straight-forward idiomatic expressions, lending realism, and complex compound words that evoke the harshness of the wilderness and battlefield. Songs and verses in the play, particularly from a yogini, serve as commentary and further the emotional tone of the scenes. While the play is filled with patriotic zeal and powerful dialogues, it sometimes loses its focus due to unnecessary elaboration. Although not labeled as such, the play clearly employs traditional Sanskrit dramatic techniques like vishkambhak. Despite its flaws in narrative cohesion, *Veerpratapam* effectively conveys a message of resilience and sacrifice, deeply resonant with the spirit of India's independence movement.

Keywords: *Veerpratapam,* Maharana Pratap, Nationalism, Patriotism, Historical Drama, Courage.

Introduction:

Mahamahopadhyay Shri Mathura Prasad Dikshit, a renowned scholar and literary figure of modern India, penned " *Veerpratapam*," a histirical Sanskrit drama. Dikshit, deeply immersed in Vedic traditions and classical Sanskrit literature, was born in the village of Bhagwantnagar, Hardoi, Uttar Pradesh. Works reflecting his extensive contributions to Sanskrit drama and poetry span a diverse range of topics, from historical events to philosophical discourses. "*Veerpratapam*" is a notable example of Dikshit's engagement with historical and nationalist themes, particularly centred on the

valour and resistance of Maharana Pratap, a prominent Rajput king known for his relentless struggle against the Mughal Empire. Dikshit composed this drama in the early 20th century, amidst India's independence struggle. It aimed to inspire and galvanise the youth and warriors of India. It reflects the socio-political climate of the time, emphasising themes of patriotism, resistance, and the valour of Indian heroes. The drama's narrative weaves through historical events and fictional elements, presenting Maharana Pratap's heroic efforts to protect his kingdom and culture from Mughal aggression. Through its portrayal of courage and resistance, *Veerpratapam* serves as both a historical account and a motivational text, underscoring the enduring spirit of India's freedom struggle.

An overview of the poet:

Mahamahopadhyaya Shri Mathura Prasad Dikshit was a highly respected scholar of the modern era. He was born in 1878 CE in Bhagwantnagar village, located in Hardoi district, Uttar Pradesh. He grew up in a family of Sanskrit scholars and received his early education at home. He was known for his sharp intellect and a strong interest in scriptural debates from his student days. He completed his higher education in Varanasi and later taught at Aitchison College in Lahore. From 1921 to 1923, he participated in the Non-Cooperation Movement. In addition to poetry, Shri Dikshit wrote in many branches of literature. Some of his published works include Nirnayaratnakar, Kashishastrarth, Narayanbalanirnaya, Kundgolnirnaya, Jainrahasya, Matridarshan, and Rogimrityuvigyan. He enriched Sanskrit drama literature by writing several Sanskrit plays on historical, national, and cultural themes. Some of his famous nationalistic and patriotic plays include Veerpratap Natakam, Bharatvijay Natakam, and Gandhivijay Natakam. These plays tell the stories of people who sacrificed their lives for India's independence. His poetry is highly regarded, and other well-known works include Kavyakala, Kavitarahasya, Prakritprakash, Kelikautuhalam. Shri Dikshit lived a fulfilled life with a well-educated and prosperous family, and he passed away at the age of 88 in 1966.

Summary of the Drama:

The seven-act drama *Veerpratapam*, completed in 1915 by Mathura Prasad, revolves around the life and struggles of Rana Pratap, a heroic figure from Mewar. Initially, Jaganmalla succeeds Pratap, the eldest son of the king, in the succession. However, after the king's death, the feudal lords and ministers recognise Pratap's valour and leadership, leading to his coronation. During the ceremony, Pratap dismisses a dancer and makes a powerful declaration of his dedication to Mewar's freedom:

"यावन्मे धमनी-मुखेषु रुधिरक्लेदोऽपि सन्तिष्ठते..."।। १.२६

In the second act, Shaktisingh and Salumb meet Pratap. Salumb's rescue of Shaktisingh leads him to swear loyalty to Pratap. Meanwhile, a spy, Bhadramukh, reports that Akbar is attempting to marry Kshatriya princesses to attain Kshatriya status. In exchange for his betrayal, Akbar promises Sagar Singh, Pratap's uncle, the kingdom of Mewar and the fort of Chittor. Pratap goes hunting, and a dispute arises between him and Shaktisingh over a boar they both shoot. To settle it, they duel, but Ram Guru sacrifices himself to stop the fight. Pratap blames Shaktisingh and banishes him from Mewar. After killing two Mughal generals who were pursuing Pratap, Akbar's court elevates Shaktisingh to the position of commander of the Kshatriya army. Despite his previous disillusionment with Mughal rule, Shaktisingh reconciles with Pratap. The third act artificially honours Man Singh of

Jaipur, who had given his sister in marriage to Akbar. Pratap refuses to meet him, leading to tensions. Man Singh vows revenge, but Salumb challenges him with a cutting response:

''भर्त्तारमादाय पितृष्वसुस्त्वं संग्रामभूमिं समुपाश्रयेथाः...''

Then, Man Singh threatens to destroy Mewar. In the fourth act, Pratap plans to deprive the enemy of food, while in Akbar's council, Shaktisingh suggests strategies to defeat Pratap. A fierce battle ensues, and Pratap retreats. Shaktisingh kills the Mughal generals pursuing him, saving Pratap. The fifth act portrays Pratap's hardships in the forest. His family suffers hunger, and his daughter's distress causes him immense sorrow. Overwhelmed, Pratap writes a peace treaty to Akbar, asking for a resolution:

''दुःखादुद्विग्नचेताः क्षुभितनिजसुतां क्षीणकायं कलत्रं...'' ।। ५.१५

Akbar celebrates upon hearing of the treaty but remains cautious, as Prithvi Singh doubts its authenticity. Pratap, troubled by his own actions and Prithvi Singh's letter, reaffirms his commitment to the fight. In the sixth act, a yogini's song revives Pratap's spirit after driving him from Mewar. Bhamagupta, a loyal follower, convinces Pratap to use his wealth to raise an army and defeat the Mughals. Pratap launches a surprise attack on the Mughal forces, overturning Man Singh's claim that he had fled. In the final act, Pratap's army recaptures most of Mewar, except for his uncle Sagar Singh's hold on Chittorgarh. Pratap decides not to attack Chittorgarh, but instead targets Man Singh's city of Amer. Amer is captured by Pratap's forces, and a yogini sings in praise:

हर हर जय जय देव।

जय प्रताप जयभारतभूषण जय वसुधाधिप देव!

जय जय माननगरविध्वंसक जय राजततारेश,

Ultimately, Pratap sends a message to Akbar, accepting peace…."स्वीकृतस्तैसन्धिः"।

Dramatic Technique:

Mathura Prasad Dikshit has utilised monologues (ekoktis) in *Veerpratapam*. In the first act, following the departure of Shakti and Salumb, Pratap addresses Akbar on his own, referring to him as

'रे म्लेच्छाधिप दुर्विनीत फलितः। कौटिल्यजालाकुलः।' इत्यादि।

Later in the same act, Pratap briefly reveals his future plans through a monologue, saying that he will leave Sagar in Chittor because he is a member of his own family. This monologue provides a hint of future events. In another monologue in the same act, Akbar expresses his discomfort, saying, "How can I have peace as long as Pratap is free?" He predicts that Man Singh will bring Pratap to his feet, and after his conquest of the south, he will travel to Mewar to meet Pratap. However, Pratap will disrespect him, causing Man Singh to vow to destroy Mewar. This monologue provides important hints about future events. In the fourth act, there is a scene where Akbar is in Ajmer. His monologue is brief but expresses concern over the Battle of Haldighati. This monologue serves as a thematic setup for future developments, much like a prologue. Akbar's monologue opens the fifth act, speculating that the death or capture of Pratap will liberate his kingdom from threats.

Similar to the traditional Sutradhara (narrator) in ancient Indian plays, who remains on stage and occasionally provides descriptions, the fifth act contains the following verse:

स्वाङ्के निधाय रुदतीं परिलालयन्तीं दृष्ट्वाथ रोदिति स रोदते च सर्वान्।

वृक्षा विहंगमगणाः पशवो विलोक्य क्रीडां विहाय विलपन्ति वनोद्भवाश्च।। ५.१३

In the play, curtain-raising marks scene transitions, although the printed text does not clearly indicate these transitions. For instance, a curtain-raising marks the change of scenes before the hunting scene in the second act. The second act employs this technique to depict events from two distant places, Mewar and Agra. The fourth act depicts events from two distinct regions, one from the Bhil province and the other from Pratap's capital. Later in the same act, a new scene shows Akbar's council in Agra. Through scene transitions, the fifth act depicts events that occur after a gap of several months. Although the play does not name them Vishkambhakas, many of the intermediary scenes function as such. The inclusion of songs in the play adds to its charm. In the third act, the yogini (formerly a courtesan) sings:

त्यज रे मान कपटमदजालम्।

भज शिवकरणमीशपदपंकजममरशिरोजयमालम्।। इत्यादि

The yogini also sings in other acts, including several songs in the seventh act. These songs often serve as subtle references to future events or reflect past occurrences. However, due to unnecessary details, the narrative of *Veerpratapam* becomes somewhat weak, lacking the dramatic unity that is essential for a well-structured play. Discussions from Akbar's court recur in the fourth act, and Pratap later reiterates them, rendering this repetition redundant.

Contemporary relevance:

During India's freedom struggle, Mathura Prasad Dikshit wrote *Veerpratapam* to inspire the youth and warriors to break the shackles of Mother India. In the preface, the sutradhara (narrator) states:

"इदानीं भारतदेशे हीनदीनदशापन्नानां वीराणां शौर्य-साहस-सहिष्णुता-गुणानामुद्योतनाय, परकाष्ठामापत्ति भजमानानां पौर्वकालिकक्षत्रियाणां शौर्यधैर्याद्यभिनयेन भाविनवयुवकेषु तत्तद्गुणसम्पादनाय इत्यादि।"

The play *Veerpratapam* holds contemporary relevance as it reflects and reinforces values of patriotism, resilience, and strategic thinking in the face of adversity. Created during the Indian independence movement, the play aimed to inspire the youth and warriors of its time to challenge oppression and fight for national freedom. Its portrayal of Maharana Pratap's resistance against the Mughal empire resonates with modern audiences as it emphasises the enduring spirit of bravery and self-determination. In today's context, the play serves as a powerful reminder of the importance of protecting cultural heritage and national integrity against external threats. Additionally, *Veerpratapam* employs a rich linguistic style and incorporates traditional idiomatic expressions, preserving and celebrating India's cultural and literary traditions. This not only enriches the audience's understanding of historical and cultural narratives but also fosters appreciation for the depth of Indian languages and literature. The strategic aspects highlighted in the play, such as Pratap's military tactics and strategic resilience, offer valuable lessons in leadership and perseverance, which are applicable to contemporary challenges faced by individuals and societies. Overall, *Veerpratapam* continues to inspire and educate, reflecting timeless values that remain relevant in the modern world.

Finding and Discussion:

Mathura Prasad Dixit's *Veerpratapam* is a powerful amalgamation of history, patriotism, and historical Sanskrit dramaturgy. It captures the essence of Maharana Pratap's unwavering defiance against

Mughal dominance, serving as an inspiring narrative for India's freedom fighters and the general populace during the colonial period. Through its characters, themes, and dramatic techniques, the play reflects not only the historical events of the Mughal-Rajput conflict but also the socio-political atmosphere of early 20th-century India.

Findings:

1. Historical and cultural context:

The play *Veerpratapam* by Mahamahopadhyay Shri Mathura Prasad Dikshit provides a vivid portrayal of Maharana Pratap's resistance against the Mughal Empire, emphasising his valour and commitment to preserving his homeland. Set during a crucial period of the Indian independence movement, the play reflects the nationalist sentiment and desire for freedom prevalent at the time. It highlights the historical significance of Maharana Pratap's struggle and provides insight into the socio-political dynamics of the era.

2. Literary Techniques:

Dikshit's use of vivid language, idiomatic expressions, and dramatic elements enhances the narrative's impact. The play features a mix of rich literary style and traditional idioms, such as

"कुठारेणात्मपादौ छिनत्ति"। "मुमूर्षोः पिपीलिकायाः पक्षौ समुत्पद्यते"।, "वकोऽपि हंसगतिमृच्छति"।, "ईश्वस्त्विदानीं पाश्चात्त्यदेशेषु परिभ्रमणार्थं गतः"। "वीराणां रणे मरणं प्राकृतमेव"

adding depth to the dialogues and character portrayals. We craft the strategic and dramatic scenes to engage the audience and highlight the heroism and tactical acumen of Maharana Pratap.

3. Contemporary Relevance:

The play's themes of patriotism, strategic resilience, and cultural pride remain relevant today. It serves as an inspiring reminder of the values of bravery and self-determination. The portrayal of strategic warfare and leadership in the play provides timeless lessons applicable to modern challenges. Additionally, the preservation of linguistic and cultural heritage through the play's language and expressions offers a valuable connection to India's historical and literary traditions.

4. Dramatic Structure:

Veerpratapam employs a dramatic structure that includes a variety of acts and scenes depicting historical events and character interactions. The use of one-act scenes and dramatic dialogues contributes to the overall narrative flow and thematic depth. The play's structure, including its use of songs and strategic depictions, adds a layer of engagement and educates the audience about historical and cultural aspects.

Discussion:

The play *Veerpratapam* not only serves as a historical account of Maharana Pratap's resistance but also functions as a piece of nationalist literature aimed at inspiring contemporary audiences. By portraying the valour of Maharana Pratap and his resistance against the Mughal Empire, Dikshit provides a narrative that aligns with the spirit of the Indian independence movement, emphasising the importance of defending one's homeland and cultural heritage. The play's rich use of language and idioms reflects the author's deep connection to traditional literary forms, making it a significant

contribution to the preservation of Indian languages and cultural expressions. The play's depiction of strategic warfare and leadership highlights the importance of tactical thinking and resilience, lessons that are applicable to modern-day leadership and conflict resolution. Moreover, the dramatic structure of the play, with its use of scenes and dialogues, effectively conveys the historical narrative and engages the audience. The inclusion of songs and the strategic portrayal of characters enhance the play's educational and emotional impact, making it a relevant and valuable piece of literature for both historical and contemporary audiences. Overall, *Veerpratapam* stands as a testament to the enduring values of patriotism, bravery, and cultural pride.

Conclusion:

Veerpratapam by Mahamahopadhyay Shri Mathura Prasad Dikshit stands as a significant literary work that interweaves historical events with dramatic storytelling, reflecting the nationalist spirit of its time. The play not only chronicles the valour and strategic prowess of Maharana Pratap but also serves as a powerful medium for expressing the ideals of bravery, patriotism, and resistance against oppression. Dikshit's adept use of vivid language, traditional idioms, and dramatic techniques enhances the play's ability to engage and inspire its audience. The play's relevance extends beyond its historical context, offering timeless lessons on leadership, strategic thinking, and the importance of cultural preservation. Its portrayal of Maharana Pratap's steadfast resistance and the detailed depiction of historical events provide valuable insights into India's rich heritage and the enduring values of courage and self-determination. The literary and dramatic techniques employed by Dikshit contribute to the play's educational and emotional impact, ensuring its continued significance in both historical and contemporary discussions. In essence, *Veerpratapam* serves as a testament to the enduring legacy of Maharana Pratap's resistance, encapsulating the spirit of nationalism and cultural pride that resonates with audiences even today. Through its rich narrative and strategic depiction of historical events, the play remains a valuable piece of literature that upholds the values of bravery, resilience, and patriotism.

Works Cited:

1. उपाध्यायः, रामजी। आधुनिकसंस्कृतनाटकः। चौखम्बा विद्याभवन्, २०२०।
2. दीक्षितः, मथुरा प्रसादः। वीरप्रतापम्। कमल प्रकाशनम्, १६५३।
3. मिश्रः, अजयकुमारः। म. म. मथुरा प्रसाद दीक्षितस्य रूपकाणां समीक्षा। अभिव्यक्तिप्रकाशनम्, दिल्ली, २००६।
4. अग्रवालः, प्रीति। "स्वतन्त्रता पूर्वकालीन हिन्दी साहित्ये राष्ट्रीयगौरवस्य चित्रणम्।"
   eGyanKosh 9.2

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

কর্মযোগ: কর্মই উপাসনা

কুন্তল মন্ডল

Guest Lecturer

Kaikala Sanskrit Vidhyapeeth

(Sanskrit Adarsa Mahavidyalaya)

sampurnand sanskrit university

সারসংক্ষেপ

সকল আধ্যাত্মবাদী ভারতীয় দর্শন সম্প্রদায় মোক্ষ কে পরম পুরুষার্থ বলে স্বীকার করে থাকে। এই মোক্ষ লাভের উপায় স্বরূপ যোগ সাধন অন্যতম মুখ্য আলোচ্য বিষয়। প্রত্যেকেই এক একটি পথ অবলম্বনে সেই পরম সত্যকে উপলব্ধি করেছেন। কেউ জ্ঞানের পথে, কেউ ভক্তির পথে সাধনা করেছেন। তেমনি একটি মার্গ হলো কর্মমার্গ। কর্মের পথে যে যোগ সাধন সম্ভব তাকে বলে কর্মযোগ। স্বাভাবিকভাবে প্রশ্ন ওঠে কোন ধরনের কর্ম মোক্ষপ্রাপ্তির সহায়ক। এ প্রসঙ্গে শ্রীমদ্ভগবতগীতায় আমরা নিষ্কামকর্মের কথা পাই। তবে ব্যবহারিক জীবনের কর্মানুষ্ঠানের সাথে নিষ্কাম কর্মের বিরোধ পরিলক্ষিত হয়। এই আপাত বিরোধ দূর করার সম্ভব কর্মের যথার্থ স্বরূপ অনুধাবনের দ্বারাই। তাই কর্ম সম্মন্ধে আমাদের যথার্থ দৃষ্টিভঙ্গি কেমন হওয়া উচিত? যোগ কি? কর্মযোগের স্বরূপ কি? উপাসনা কি? এই সকল প্রশ্নের উত্তর অনুসন্ধান পূর্বক আমাদের দৈনন্দিন কর্মকে কিভাবে উপাসনায় পর্যবসিত করে প্রত্যেকেই নিজ নিজ স্থান থেকে কর্মযোগী হয়ে উঠতে পারি তা উপস্থাপন করায় আমার গবেষণা পত্রের মুখ্য আলোচ্য বিষয়।

মুখ্য শব্দ:– যোগ , কর্মযোগ, নিষ্কাম কর্ম, যথার্থ দৃষ্টিভঙ্গি, উপাসনা

ভূমিকা:

কর্মযোগ শব্দটি বিশ্লেষণ করলে আমরা দুটি পদ পাই। একটি হল ‘কর্ম’ এবং অপরটি ‘যোগ’। কর্ম শব্দটি এসেছে কৃ ধাতু থেকে যার সাধারণ অর্থ করা। অপরদিকে যোগ শব্দটি ‘যুজ’ বা ‘যুজি’ ধাতুর উত্তর ঘঞ্ প্রত্যয় করে নিষ্পন্ন হয়। এই যুজ ধাতুর নানান অর্থ হয়ে থাকে যেমন সংযোগ, সমাধি ইত্যাদি। তাই ব্যুৎপত্তিগত ভাবে জীবাত্মা ও পরমাত্মার মিলনই হল যোগ। মহর্ষি পতঞ্জলি যোগের বর্ণনায় চিত্তবৃত্তি সমূহের নিরোধের কথা বলেছেন। আবার শ্রীমদ্ভগবতগীতায় ভগবান শ্রীকৃষ্ণ যোগের ব্যাখ্যায় বলেছেন– “যোগ: কর্মসু কৌশলম্”। অর্থাৎ কর্ম কুশলতা বা নৈপুণ্যতা অর্জনের নামই হল যোগ। তবে আক্ষরিক অর্থ ভিন্ন হলেও পরমার্থ রূপে প্রতিটি ভারতীয় আধ্যাত্মবাদী দর্শন সম্প্রদায় আত্মসাক্ষাৎকারের উপায় স্বরূপ যোগ সাধনার উল্লেখ করে থাকেন।

ভারতীয় দর্শনে চতুর্বিধ যোগের ধারনা আমরা পাই। যথা– জ্ঞানযোগ, ভক্তিযোগ, রাজযোগ এবং কর্মযোগ। প্রত্যেক দর্শন সম্প্রদায় নিজ নিজ দৃষ্টিভঙ্গি থেকে এক একটি মার্গ বা পথ অবলম্বনে আত্ম সাক্ষাৎকারের উপায় বর্ণনা করেছেন। যারা জ্ঞানমার্গ অবলম্বনে মোক্ষ প্রাপ্তির কথা বলেছেন তারা হলেন জ্ঞানযোগী আবার যারা ভক্তির পথে সাধনা করে আত্ম সাক্ষাৎ লাভের কথা বলেন তারা ভক্তিযোগকে সমর্থন করেন। অনুরূপভাবে কর্মের দ্বারা যে যোগ সাধন সম্ভব তাই হল কর্মযোগ।

কর্মযোগ কী?

স্বাভাবিক ভাবেই প্রশ্ন ওঠে যেকোনো কর্মের দ্বারাই কি যোগ সাধন সম্ভব? আমরা প্রত্যেকেই প্রতি মুহূর্তেই কর্ম করে চলেছি। শ্রীমদ্ভগবতগীতার তৃতীয় অধ্যায় তথা কর্মযোগে শ্রীকৃষ্ণ বলছেন,

“ ন হি কশ্চিৎ ক্ষনমপি জাতু তিষ্ঠ্যত্ব্যকর্মকৃৎ।

কার্য্যতে হব্যশ কর্ম সর্ব: প্রকৃতিজৈর্গুনে :।। ৫।।

অর্থাৎ কেউ ক্ষণকালও কর্ম না করে থাকতে পারে না। ত্রিগুনাত্মক প্রকৃতির দ্বারা মানুষ কর্তব্য কর্ম করতে বাধ্য হয়। তাই একাধারে প্রকৃতির গুনের বশবর্তী হয়ে আমরা যদি প্রতি মুহূর্তে কর্মে নিয়োজিত থাকি এবং অপরপক্ষে এই কর্মই যদি আত্ম সাক্ষাৎকার তথা দু:খের আত্যন্তিক নিবৃত্তির অন্যতম উপায় হয় তবে জগৎ দু:খে নিমজ্জিত কেন? কেন জীব প্রতি মুহূর্তে বন্ধনে আবদ্ধ হয়?

এই সমস্যার সমাধান সম্ভব কর্ম সম্বন্ধে যথার্থ দৃষ্টিভঙ্গি তথা কর্মের সঠিক অর্থ নিরুপণের দ্বারা। অর্থাৎ যেকোন কর্ম নয় বরং কোন ধরনের কর্ম সম্পাদনের দ্বারা বন্ধন দশা কাটিয়ে দু:খের আত্যন্তিক নিবৃত্তি সম্ভব তা জানা প্রয়োজন। এ প্রসঙ্গে গীতায় নিষ্কাম কর্মের কথা বলা হয়েছে। কর্মফল অনুসারে দুই প্রকার কর্মের উল্লেখ পাওয়া যায়। যথা– সকাম কর্ম এবং নিষ্কাম কর্ম। সাধারণত কামনা বাসনার সহিত যে কর্ম করা হয় তা হল সকাম কর্ম এবং কামনা বাসনা শূন্যভাবে যে কর্ম করা হয় তাই হল নিষ্কাম কর্ম। এই সকাম কর্মই বন্ধনের কারণ হয়ে থাকে। অপরদিকে নিষ্কাম কর্ম কে মুক্তি লাভের উপায় রূপে গণ্য করা হয়।

নিষ্কাম কর্মের ধারণা

এখন প্রশ্ন নিষ্কাম শব্দের অর্থ কী ? গীতায় নিষ্কাম কর্ম অর্থে আসক্তি হীন কর্ম কে বোঝানো হয়েছে। “ কর্মেন্দ্রিয়ৈ: কর্মযোগমসক্ত: স বিশিষ্যতে।। “ অর্থাৎ যিনি অনাসক্ত ভাবে কর্মযোগের অনুষ্ঠান করেন তিনিই হলেন বিশিষ্ট ব্যক্তি। এইরূপ আসক্তি হীন নিষ্কাম কর্ম পালন করা সাধারণ মানুষের কাছে অত্যন্ত দুরুহ হওয়ায় অধিকাংশ মানুষের এই প্রকার কর্মে প্রবৃত্তি হয়না। তাই প্রায়োগিক দৃষ্টিকোণ থেকে নিষ্কাম কর্মযোগ তত্বকে সর্ব সাধারণের বোধগম্য করে তুলতে এই অনাসক্ত কর্ম কে দুভাবে বোঝা যেতে পারে।

প্রথমত:- আসক্তির দিকে দৃষ্টি না দিয়ে কর্ম করা।

দ্বিতীয়ত:- আত্মস্বার্থ কে মহৎ স্বার্থে পর্যবসিত করা।

কামনা পরিত্যাগ পূর্বক কর্ম করা এবং কামনাকে লক্ষ্যের অগোচরে রেখে কর্ম করা নামক দুটি বিষয় কখনো অভিন্ন নয়। মায়াধীশ জগতে আসক্তি কামনা বাসনা থাকা অনাবশ্যক নয়। তাই তা সম্পূর্ণরূপে পরিত্যাগ করা সাধারণ মানুষের কাছে দুষ্কর মনে হয়। ফলস্বরূপ সে তা পালনে নিবৃত্ত হয় কিন্তু যদি কামনা বাসনার প্রতি দৃষ্টি না দিয়ে কর্মে প্রবৃত্ত হওয়া যায় তবে একসময় অধ্যাবসায় পূর্বক কর্মটি প্রধান হয়ে ওঠে এবং ফলটি লক্ষ্যের অগোচরে বিলীন হয়ে যায়। অর্থাৎ এই প্রকার অনাসক্ত কর্মের অর্থ হল ফলের দিকে না তাকিয়ে কর্ম করে যাওয়া। উদাহরণ স্বরূপ বলা যায় আন্তর্জাতিক স্তরের কোনো প্রতিযোগিতায় প্রতিযোগীর প্রতিটি পদক্ষেপ সমগ্র দেশবাসীর

নিকট উচ্ছ্বাস ও উৎযাপনের কারণ হলেও প্রতিযোগিতা চলাকালীন প্রতিযোগী অবিচল থেকে কেবল নিজের কর্মে নিয়োজিত থাকে। কিন্তু সেই মুহূর্তে যদি পর প্রতিযোগী প্রতিটি সফল পদক্ষেপে উচ্ছ্বাস প্রকাশ করে কিংবা আসন্ন সাফল্যের দিকে তাকিয়ে উৎযাপনে মত্ত হয় তবে তবে প্রতিকূল পরিস্থিতির সম্মুখীন হতে হয় যার মূল্ কারণ হল কর্মফলের প্রতি আসক্তি।

দ্বিতীয় আরেক প্রকার প্রায়োগিক দৃষ্টিকোণ থেকে নিষ্কাম কর্ম সম্পাদন সম্ভব তা হল স্বার্থপরতার পরিবর্তে পরার্থপরতার দৃষ্টিভঙ্গি। দৃষ্টান্ত স্বরূপ বলা যায় লবণ কুশপুত্তলিকার অহম বোধ কেবল সমুদ্র উপকূল পর্যন্ত সীমায়িত থাকে। যখনই তা সমুদ্রের বিরাট জলরাশির সান্নিধ্য পায় তখনই তা মহা সমুদ্রে বিলীন হয়ে যায়। অনুরূপভাবেই অহম বোধ তথা আত্মস্বার্থের গণ্ডিকে ভেদ করে যখনই মানুষ পরহিতার্থে আত্মোৎসর্গ করতে সক্ষম হয় তখনই তা আসক্তির ক্ষুদ্র গন্ডিকে বিচ্ছিন্ন করে অনাসক্ত কর্মে পর্যবসিত হয়। স্বামী বিবেকানন্দের মতে, "পরের হিতসাধন হচ্ছে আপনার আত্মার বিকাশের একটা উপায়,একটা পথ,....জ্ঞান ভক্তি প্রভৃতি সাধন দ্বারা যেমন আত্মবিকাশ হয় পরার্থের কর্ম দ্বারাও ঠিক তাই হয়"। এ যেন সেই কথারই পুনরাবৃত্তি, "সকলের তরে সকলে আমরা

প্রত্যেকে আমরা পরের তরে" । অর্থাৎ আত্মকেন্দ্রিক জীবন যাপনের পরিবর্তে পরার্থ প্রিয়তার মধ্যে দিয়ে নিজের বিকাশ সাধনই মানব জীবনের মূল আদর্শ।

এখন প্রশ্ন হতে পারে কীভাবে কর্ম করলে বা কোন মানসিকতা থেকে কর্ম করলে কামনা বাসনা বা আসক্তির ক্ষুদ্র স্বার্থপরতার সীমাকে অতিক্রম করে পরার্থে জীবন যাপন করা সম্ভব?

সাধারণ কর্ম এবং কর্তব্য কর্ম

এর জন্য প্রথমে সাধারণ কর্ম এবং কর্তব্য কর্মের পার্থক্য জানা আবশ্যক। প্রত্যহিকভাবে যা কিছু করি তা সকল-ই কর্মরূপে বিবেচ্য হলেও সমস্ত কর্মকে কর্তব্যকর্ম বলা যায় না । তাই কর্মযোগ কে বোঝার জন্য কর্তব্য জ্ঞান থাকা প্রয়োজন। তবে কর্তব্যের ধারণা সকলের কাছে সমান নয়। গীতাই কর্তব্যকর্ম কে শ্রীকৃষ্ণ যেভাবে উপস্থাপন করেছেন স্বামী বিবেকানন্দের দৃষ্টিতে তা কিছুটা ভিন্ন প্রকৃতির। আপাতদৃষ্টিতে কর্তব্য শব্দটির দ্বারা আমরা কারো অবশ্য পালনীয় কর্মকে

বোঝালেও সকলের কাছে তা সার্বিকভাবে প্রয়োগ হতে পারে না। এক জাতি বা ব্যক্তির কাছে যা কর্তব্য অপরজাতি বা ব্যক্তির কাছে সেই কর্মই অকর্তব্য রূপে বিবেচিত হয়ে থাকে । সেই জন্যই ব্যক্তি নিরপেক্ষভাবে কর্তব্যের সংজ্ঞা প্রদান করা যায় না। ভগবদ্গীতায় গীতায় বর্ণাশ্রম অনুসারে কর্তব্যকর্ম নির্ধারণের কথা বলা হলেও দৈশিক ও কালিক সীমা অনুসারে এবং ভিন্ন ভিন্ন সামাজিক ও রাজনৈতিক পরিকাঠামো অনুসারে ভিন্ন ভিন্ন সংস্কার বিদ্যমান। ফলস্বরূপ অপরাপর জাতি বা ব্যক্তির কর্মকে ছোট করে নিজ কর্ম কে শ্রেষ্ঠ বলে বিবেচনা করতে চাই অধিকাংশ মানুষ ।এর প্রধান কারণ হলো নিজস্ব দৃষ্টিভঙ্গিতে অপরের কর্মকে বিচার করার মানসিকতা । প্রত্যেকটি ব্যক্তি প্রত্যেকটি জাতি নিজ নিজ কর্মক্ষেত্রে মহান পার্থক্য কেবল দেখার মানসিকতায় তাই ব্যক্তি নিরপেক্ষভাবে নয়, বরং বিশেষ সময় ও বিশেষ পরিবেশ অনুসারে নিজ নিজ কর্তব্য পালন করায় জগতে শ্রেষ্ঠকর্ম।

এই জগত সংসারে নিজস্ব কর্তব্য অনুসারে প্রতিটি মানুষ নানান কাজে নিয়োজিত। তার মধ্যে অন্যতম হলো উপাসনা কর্ম। শাস্ত্রবিহিত পদ্ধতি অবলম্বনে সগুন ব্রহ্মে মনোনিবেশ করাই হলো উপাসনা । অর্থাৎ ঈশ্বর ভাবনায় নিমজ্জিত হওয়া হলো উপাসনা । কিন্তু সাধারণ দৃষ্টিতে উপাসনা বিষয়টি আধ্যাত্মিক মনস্কতার মধ্যে সীমাবদ্ধ থাকায় তাকে কেবল পূজা অর্চনা অর্থই আমরা বুঝে থাকি। অর্থাৎ মূর্তিমান দেবতার আরাধনাই হল উপাসনার আপাত অর্থ । কিন্তু কর্মযোগের মর্মার্থ উপলব্ধি করতে হলে কর্মের সাথে উপাসনার সম্বন্ধ কি রূপ তা জানা প্রয়োজন । এই তত্ত্ব যথাযথ ভাবে অনুধাবন করতে পারলে তবেই আমরা স্বার্থপরতার ক্ষুদ্র সীমাকে অতিক্রম করে পরার্থে জীবন যাপন করতে পারি। তবে প্রথমেই এই রূপ চেতনার উত্তরণ সম্ভব নয় তার জন্য দৈনন্দিন জীবনে বেশ কিছু স্তর অতিক্রম করতে হয় যেমন-

কর্ম এবং উপাসনা

প্রথম স্তরে সাধারণ মানুষ কর্ম করে এবং উপাসনা করে। অর্থাৎ এই স্তরটি হল "Work And Worship " এর স্তর । এখানে দৈনন্দিন জীবনে কর্মকে এবং উপাসনাকে সম্পূর্ণ পৃথকভাবে সম্পাদন করা হয়। যেমন দৃষ্টান্ত স্বরূপ বলা যায় কোন ব্যবসায়ী তার ব্যবসা আরম্ভের পূর্বে দেবতার উদ্দেশ্যে আরাধনা পূর্বক নিজ কর্মে অর্থাৎ ক্রেতার সেবায় নিয়োজিত হন। অধিকাংশ মানুষ উপাসনা এবং পরিষেবা প্রদান কে পৃথকভাবে অনুষ্ঠিত করে থাকেন। ফলতো ষড়রিপুর বশবর্তী হয়ে অধিকাংশ কর্মী

কর্মস্থলে নানান অনৈতিক কর্মে লিপ্ত হয়ে পড়েন এবং কর্মের প্রতি অধৈর্য্য বশত অনিহা দেখা যায়। বাস্তবিক সমাজের অধিকাংশ মানুষ এই স্তর থেকে কর্ম সম্পাদন করে থাকে।

কর্মের দ্বারা উপাসনা

দ্বিতীয় স্তরটি হল "Work As Worship "এর স্তর অর্থাৎ এই স্তরে মানুষ নিজস্ব কর্তব্য কে উপাসনার দৃষ্টিতে সম্পাদন করে থাকেন। সাধারণ দৃষ্টিতে আমরা উপাসনা বলতে বুঝি কোনো দেবতার আরাধনা এবং সেই আরাধ্য দেবতার নিকট প্রার্থনা ও আত্মসমর্পণ। তাই প্রতিটি আধ্যাত্মিক মনস্ক মানুষ দেবতার আরাধনার মুহূর্তে শুচিতা ও পবিত্রতা বজায় রাখতে সচেষ্ট হন। কিন্তু অধিকাংশ ক্ষেত্রে মানুষ নিজ নিজ কর্মস্থলে এই প্রকার পবিত্রতা ধরে রাখতে পারে না। যখন কোন ব্যক্তি নিজের কর্তব্য কর্ম অনুসারে পবিতত্রতার সহিত কর্মানুষ্ঠান সম্পন্ন করে থাকেন তিনি কর্মের দ্বারাই উপাসনা করেন। দৃষ্টান্ত স্বরুপ বলা যায় কোনো ব্যবসায়ী যদি কেবল ব্যবসার প্রারম্ভে নয় বরং সমগ্র কর্মকেই উপাসনার মানসিকতা থেকে সম্পাদন করেন তখন উপাসনার স্তরে কেবল শুদ্ধতা স্বচ্ছতা পবিত্রতা আবদ্ধ থাকে না, তা প্রতিটি ক্রেতার প্রতি সমভাব বশত উপাসনামূলক কর্মে পরিণত হয়।

কর্মই উপাসনা

তৃতীয় স্তরটি হল "Work Is Worship "এর স্তর অর্থাৎ এই পর্যায়ে এসে একজন কর্মীর কাছে তার কর্মটাই উপাসনায় পর্যবসিত হয়ে যায়। তার কর্মই তার উপাসনা। অর্থাৎ যিনি কর্ম রহস্যের প্রকৃত ভাব অনুধাবন করতে সক্ষম হয়েছেন তাঁর কাছে কর্ম নিছক কর্ম থাকে না, তা তখন উপাসনায় পর্যবসিত হয়। দৃষ্টান্ত স্বরুপ বলা যায় যখন কোনো ব্যবসায়ীর নিকট তার ক্রেতারাই ঈশ্বর রূপে পরিগণিত হয় তখন নিজ কর্তব্য কর্ম অনুসারে তাদের সেবা করাই একমাত্র লক্ষ্য হয়ে ওঠে এবং তাদের চাহিদা অনুসারে সবটুকু দিয়ে সেবা করাই তার একমাত্র উপাসনা। অনুরূপভাবে একজন শিক্ষকের কাছে তার শিক্ষা প্রতিষ্ঠান মন্দির , শিক্ষার্থী ঈশ্বর এবং তাদের সেবায় নিয়োজিত থাকায় তার একমাত্র উপাসনা। আবার একজন চিকিৎসকের কাছে তাঁর রোগীরাই ঈশ্বর, চিকিৎসাক্ষেত্র মন্দির হয়ে উঠবে। রোগীর সেবা পূর্বক তার সর্বাঙ্গীন সুস্হ কামনায় চিকিৎসকের উপাসনা হয়ে উঠবে। অর্থাৎ এই পর্যায়ে উপনীত হওয়া ব্যক্তির নিকট পৃথকভাবে ঐশ্বরিক ভাবনায় বিরাজ করার আবশ্যকতা থাকে না । সমাজের প্রতিটি

স্তরের প্রতিটি কর্মক্ষেত্রে প্রত্যেকটি মানুষ যদি নিজ নিজ কর্মক্ষেত্রে এরূপ দৃষ্টি রেখে কর্ম করে যেতে পারেন তবে নিজের অজান্তেই আত্মস্বার্থের ক্ষুদ্র গণ্ডি অদৃশ্য হয়ে তা পরের হিতকার্য রূপ মহা সমুদ্রে মিলিত হয়ে যাবে। আমাদের প্রয়োজন এইরূপ কর্মীর যার কাছে কর্মই উপাসনা তবেই যথাযথভাবে কর্মযোগী হয়ে ওঠা সম্ভব।

উপসংহার

তবে এই স্তরই কর্মযোগের সর্বোচ্চ স্তর নয় । কর্মযোগ চরম উৎকর্ষতা লাভ করেছে স্বামী বিবেকানন্দের কর্মযোগ প্রসঙ্গে আলোচনায়। যেখানে তিনি বলেন; " শ্রেষ্ঠ মানব কর্ম করিতে পারেন না , কারণ তাহার মধ্যে কোন বন্ধনের ভাব আসক্তি বা অজ্ঞান নাই "। অর্থাৎ কর্মযোগের সর্বোচ্চ স্তর হলো কেবল উপাসনা স্তর যেখানে কর্মটাই অদৃশ্য হয়ে যায়। অর্থাৎ আমি করছি এই রূপ কর্তৃত্ববোধ সেখানে আর থাকে না। কর্মই উপাসনা এই স্তরকে বিশ্লেষণ করলে পাই আমি যে কর্ম করছি সেটি উপাসনা। অর্থাৎ "আমি করছি" এইরূপ কর্তৃত্বাভিমান থাকে। কিন্তু যখন কর্মযোগের মূল তত্ত্বকে প্রজ্ঞাস্তরে উপনীত করা সম্ভব হয় তখন সেখানে আর কর্মী ভাব থাকে না । থাকে কেবল উপাসনা । তখন সেই মহাত্মা কেবল উপাসক হয়ে ওঠেন। তার সমগ্র জীবন টাই হয়ে ওঠে উপাসনা। যে স্তরে জ্ঞান ভক্তি কর্ম মিলেমিশে একাকার হয়ে যায় সেইরূপ কর্মযোগই হয়ে ওঠার বার্তায় দিয়ে গেছেন স্বামী বিবেকানন্দ। তাই পরিশেষে বলা যায় আপাতদৃষ্টিতে কর্ম উপাসনা পৃথক মনে হলেও যিনি কর্মযোগের প্রকৃত রহস্য বোঝেন; যিনি কর্মের সঠিক অর্থ অনুধাবন করেছেন তার কাছে কর্ম এবং উপাসনার মধ্যে কোন ভেদ নেই বরং সমগ্র জীবনী উপাসনায় পর্যবসিত হয়।

তথ্যপঞ্জি

১. স্বামী বিবেকানন্দের বাণী ও রচনা, (প্রথম খখন্ড)

২. শ্রীমৎ ভগবত গীতা যথাযথ (তৃতীয় অধ্যায়)

৩. স্বামী বিবেকানন্দের বাণী ও রচনা (নবম খন্ড)

৪. ভারতীয় দর্শন – প্রদ্যোত কুমার মন্ডল , প্রগ্রেসিভ পাবলিশার্স।

৫. শিক্ষা প্রসঙ্গে-স্বামী বিবেকানন্দ, উদ্বোধন ককার্যালয়

৬. Contemporary Indian Philosophy, Basant Kumar Lal, Matilal Banarsidass

NAME – KUNTAL MONDAL

VILL- TELAKONA

PO- BALIDAHA

PS- GURAP

DIST- HOOGHLY

PIN- 712303

STATE – WEST BENGAL

CONTACT NUMBER – 6296053377 / 9832252805

WHATSAPP NO- 6296053377

EMAIL ID – kuntalmondal513@gmail.com

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

ऋग्वैदिकसूक्तेषु व्यसनम् - मद्यमक्षञ्च

Rubi Kalita
Research Scholar, Department of Sanskrit Vedic Studies
Kumar Bhaskar Varma Sanskrit And Ancient Studies University, Nalbari
Mail id - rubikalita00@gmail.com
Mobile no. - 9101167884

शोधसारः

साम्प्रतिके विश्वे व्यसनं भ्रष्टाचारो वा एका गम्भीरसमस्यारूपेण परिगणितोऽस्ति। एतेन समाजस्य सामाजिक-नैतिकमूल्यबोधः ध्वंसप्राप्तो भवति, अपि तु न केवलं समाजस्य देशस्य विकासे चौषः बाधको भवति। व्यसनकारणात् देशे सामाजिकाशान्तिः, असमानता, दारिर्द्यञ्च वर्धमानमस्ति। व्यसनं तादृशी समस्या अस्ति या कस्यचित् व्यक्तेजीवनं नाशयति। अस्य प्रभावः केवलं व्यसनिष्वेव सीमितो नास्ति, अपितु व्यसनस्य व्याप्तिरतीव विस्तृता अस्ति तथा च सः परिवारं, समाजं, सम्पूर्णं राष्ट्रमपि व्याप्नोति।

अधुना युवान अधिकतया मादकद्रव्यस्य व्यसनं कुर्वन्ति, अक्षक्रीडायाः व्यसनं कुर्वन्ति। ते दुसङ्गतिभिः सह स्वजीवनोद्देश्यं विनष्टं कुर्वन्ति। व्यसनं न केवलं व्यक्तेः कृते अपितु परिवारस्य, समाजस्य, देशस्य च कृतेऽपि घातकं भवति। तस्मादेतत् सदैव वर्जनीयम्। परन्तु कथं? निश्चितभावेन तदर्थमावश्यकीयता वर्तते निदर्शनस्य। कस्यापि उत्तमनिदर्शनस्य शक्तिरेषा भवति यत् समग्रस्यापि प्रतिनिधित्वम् कर्तुं समर्थ्यते निदर्शनम्। न केवलं भारतीयदृष्टौ समग्रजगत्येव वेदस्यापौरुषेयत्वं प्रामाणिकत्वं सर्वैः स्वीकृतम्। वेदे यन्नास्ति न तत् क्वचिदिति अन्तःकरणेन सर्वैः मन्यते। तस्मात् व्यसनवर्जनपुरस्सरं यत् किमपि निर्देशः वेदेष्वादिमे ऋग्वेदे कृतोऽस्ति तेषां सन्धानमवश्यमेव कर्तव्यमिति शोधकर्तुरिच्छा।

प्रास्ताविकम्

आसक्तिरेव व्यसनशब्दस्यार्थः। परन्तु अद्यत्वे व्यसनशब्दः दुर्व्यवहारार्थं प्रसिद्धो भवति। अपि तु आक्षरिकार्थे व्यसनशब्दः 'विअसन' इत्यस्मात् शब्दात् निष्पन्नः इति वक्तुं शक्यते। यत्र 'वि' इत्यस्यार्थः विकृतः, विकृतिकारकः, विपर्यताकारकः वा, पुनश्च "असन" शब्दस्यार्थ आहारः। अथवा सामाजिकव्यवहारविरोधी, धर्माचारसद्मूल्यविनाशका, लोकव्यवहारधर्मविरोधी, निन्दनीयाः महापापहेतुभूताः दुराचाराः व्यसना उच्यन्ते।

वयं सर्वे जानीमः यत् मनुष्याः सर्वेषु प्राणिषु श्रेष्ठाः सन्ति। अद्यत्वे मनुष्यः यदसम्भवं ज्ञानबुद्धिबलेन साधयितुं समर्थो भवति तत् कल्पनायाः परमस्ति। एषैव समाजः यस्मिन् महापुरुषाः जाताः, कवयः, लेखकाः, दार्शनिकाः, वैज्ञानिकाश्चोद्भूताः, समग्रस्य मानवजातेः कृते गौरवपूर्णविषयो वर्तते। परन्तु अस्मिन्नेव समाजे विविधानामुद्वेगजनकघटनानां विविधानामसामाजिककार्याणाञ्च दर्शनमस्माकं कृते लज्जा न भवति वा? अस्यैकमात्रकारणं समाजे मादकद्रव्याणां मुक्तसञ्चारोऽथवा तेषां नियन्त्रणाभावेति प्रत्यक्षतया परोक्षतया च प्रतिपादयितुं शक्यते। अपि च अक्षक्रीडा मित्राणां मध्ये वैरं जनयति, मैत्रीं च नष्टं कुर्वन्ति। एवं

शत्रुवृद्धिर्भवति तथा अर्थहानिर्भवति चेत् मानसिकशान्तिरपि विनष्टा भवति, जीवनस्य मानमति न्यूनं भवितुमर्हति। तस्मादेतत्सर्वं वर्जनीयम्।

ऋग्वेदे व्यसनरूपेण मद्यमक्षश्च

व्यसनम् इत्यस्य शब्दस्य प्रारम्भिकोल्लेखः कुत्र प्राप्यते इति प्रश्नोत्थापितो भवति चेत् जगत आदिमग्रन्थत्वेन यद्यपि वेदान् प्रति दृष्टिनिक्षेपो भवति, तथापि एतत् वक्तव्यं यत् व्यसनम् इत्यस्य शब्दस्य व्यावहारः मनुना एव सम्यक्तया कृतः न तु वेदेषु। परन्तु मनुः व्यसनशब्दस्य किमपि पर्यायपदं न प्रयुङ्क्ते। तथापि तेषां शब्दानां व्यसनपदे समावेशो भवति, येषामर्थः लक्षणापेक्षया परीक्षितः चेत् कुकर्म इति गम्यते। तस्मात् संकटः, पापं, शोक इत्यादयः व्यसनशब्दस्याभिधानिकार्थाः।

यतोहि एतस्य व्यसनपदस्योल्लेखात् पूर्वं तेनोक्तं यत् जितेन्द्रियः राजा स्वप्रजां वशीकर्तुं शक्नोति अर्थात् राजा राजपदे उन्नतिं कर्तुं शक्नोति, तथा ये इन्द्रियाणि जेतुं न शक्नुवन्ति, इन्द्रियकारणात् ते सर्वानि कुकार्यानि कुर्वन्ति येन तस्य विनाशमार्गं प्रशस्तं भवति[1]। एतानि सर्वाणि दुष्कृतानि व्यसनानीति मनुः कथयति।

"व्यसनस्य च मृत्योर्मा व्यसनं कष्टमुच्यते।
व्यसन्यधोऽधो व्रजति स्वर्यात्यव्यसनी मृतः।।"[2]

अनेन श्लोकेन मनुना उक्तं यत् मृत्योरपेक्षयापि व्यसनं कष्टतरम्। यतोहि व्यसनहीनः मनुष्यः शरीरत्यागानन्तरं स्वर्गं गच्छति परन्तु

व्यसनासक्तो मनुष्यो शरीरत्यागानन्तरं नरकं प्राप्नोति।

मनुना दशकामजव्यसनान्यष्टौ क्रोधजव्यसनानि चेति कृत्वा विसर्जनीयानि व्यसनानि निर्दिष्टानि।

"दश कामसमुत्थानि तथाष्टौ क्रोधजानि च।
व्यसनानि दुरन्तानि प्रयत्नेन विवर्जयेत्।"[3]
"मृगयाऽक्षो दिवा स्वप्नं परिवारः स्त्रियो मदः।
तौर्यत्रिकं वृथाट्या च कामो दशको गणः।।"[4]
"पैशुन्यं साहसं ईर्ष्यासूयार्थदूषणम्।
वाग्दण्डजं च पारुष्यं क्रोधजोऽपि गणोऽष्टकः।।"[5]

एतेषु व्यसनेषु पूर्वोक्तानि व्यसनान्युत्तरव्यसनापेक्षया गम्भीरोऽस्ति। उक्तञ्च मनुना **"कामजेषु प्रसक्तो हि व्यसनेषु महीपतिः। वियुज्यते अर्थधर्माभ्यां..."[6]** कामजव्यसनं क्रोधजव्यसनञ्चेति उभयप्रकारकव्यसनं हानिकारकं मन्यते। एतेषां सर्वेषां व्यसनानां मूलं लोभ एव। लोभ एव मनुष्यं व्यसनासक्तं करोति, तस्य धनं जीवनञ्च नाशयति। यद्यपि सर्वे व्यसनाः हानिकारकाः सन्ति तथापि मद्यपानमक्षक्रीडा चेति कामजव्यसनान्तर्गतं द्वयमेवव्यसनमतिगम्भीरं व्यसनमिति वक्तुं शक्यते। प्रारम्भिकक्षणेषु व्यसनिनः मानसिकप्रशान्तिरूर्ध्वतमं गच्छति परन्तु यदा तदेकदा तस्य व्यसने परिवर्तितं भवति तदा तस्य वशं न भवति।

मादकद्रव्यस्य प्रयोगोऽद्यत्वे समाजे एकेन व्याधिरूपेण दृष्टिपथमायाति। समाजस्य विविधस्तरस्य जना एतादृशान् पदार्थान् सेवन्ते येन जनाः स्वं विस्मरन्ति, हिताहितं ज्ञानञ्च कदाचित् नष्टं भवति। एतानि द्रव्याणि कामपि पूर्वसूचनां विनैव जनानां जीवने अपकारं साधयन्ति।

मद्यमेका सामाजिकव्याधिरस्ति। मद्यं मानवजातिं मानवसमाजं च नाशयितुं शक्नोति। श्रीकृष्णस्य यदुवंशः कदाचित् 'मैरेयक' नामिकायाः मदिरायाः कारणेनैव नष्ट इति को वा न जानाति?[7]

मद्यपानं स्वास्थ्यस्य कृते हानिकारकं भवति। न केवलं शारीरिकस्य, अपितु मानसिकस्वास्थ्यस्य कृतेऽपि। मद्यपानेन स्वस्थमस्तिष्कस्यापि स्नायुतन्त्रं बाधितं भवति तथा चाधिकमात्रया कृतेन मद्यपानेन अन्तःकरणस्य, विवेकज्ञानस्य च हानिर्भवति। अस्य मादकपदार्थस्य दीर्घकालं यावदुपयोगेन स्मृतिशक्तिः, दृष्टिशक्तिः, संज्ञानात्मकशक्तिः क्षीणाः भवन्ति तथा च हृदयदौर्बल्यं,

तंत्रिकादौर्बल्यम्, उच्चरक्तचापादयश्च च भवितुमर्हन्ति। मद्यपानायार्थव्ययेन तु सम्पत्तेश्च विनाशो भवति। एवं मद्यपानं धनस्य जीवनस्य च कृते संकटं जनयति।

दृश्यते यत् कतिपयः जनाः सोमं मद्यञ्चोभयमेव मादकद्रव्यत्वेन विचार्यन्ते, परन्तु तथा न तु वेदेषु क्वचिदप्युपलभ्यते। यत्र मद्यं वा अन्यं मादकद्रव्यं वा बुद्धिं मूढ़ं करोति, तद्विपरीतमृषीणां 'सोमः' परमं प्रज्ञां प्रदाति, दिव्यं कर्म प्रति प्रेरयति च। यथा मन्त्रे

"हृत्सु पीतासो युध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायाम्।
ऊधर्न नग्ना जरन्ते ॥"[8]

अस्मिन् मन्त्रे सुरासोमयोर्मध्येऽन्तरं दर्शितमस्ति। यत् सेवितः सोमरसः पुष्टिः, सुखं, बुद्ध्यादयः सद्गुणा उत्पादयति, न सः मद्यादिवत् दुर्मदं जनयति अर्थात् यथा मद्यः बुद्धिं शारीरिकबलञ्च नाशयति, न तथा सोमरसः। पुनः मत्ताः जनाः मत्तावस्थायां परस्परं नग्नाः सन्तः युद्धं कुर्वन्ति, अनर्थकञ्च वदन्ति; अतः मद्यादिमादकद्रव्याणां सेवनं न कर्तव्यमिति।

ऋग्वेदस्य नैकेषु मन्त्रेषु सुबुद्धे आरोग्यस्य च प्रवर्धनं काम्य तेषां नाशकद्रव्येभ्यः प्रवृत्तिभ्यः च दूरं स्थापयितुं प्रार्थना कृता वर्तते। वेदेऽस्मिन् मूढताकारकस्योन्मादजनकस्य सर्वविधस्य व्यसनस्य निन्दा भवति। यथा

"न स स्वो दक्षो वरुण धृतिः सा सुरा मन्युर्विभीदको अचित्तिः।
अस्ति ज्यायान्कनीयस उपारे स्वप्नश्चनेदनृतस्य प्रयोता ॥"[9]

स्वभावेन कृतं कार्यं न पापप्रवृत्तेः कारणं किन्तु मन्दकर्मणि प्रबलप्रवृत्तिः सुरावत् भवतीतिकारणात् यथा मद्यव्यसनं भवति चेत् व्यसनी तदा सः पानं न विरमति। तथैव यदा पापप्रवृत्तिषु प्रवृत्तं मनः क्रोधपापप्रवृत्तिद्यूताज्ञानादिव्यसनानां कारणं भवति। जीवस्यास्य हृदये एक अन्तर्यामीपुरुषोऽस्ति, यः सतां सत्कर्म प्रति प्रेरयति, मन्दं मन्दप्रवाहं प्रति प्रवाहयति चेति।

"अस्य पिब यस्य जज्ञान इन्द्र मदाय क्रत्वे अपिबो विरप्शिन्।
तनु ते गावो नर आपो अद्रिरिन्दुं समाह्यन्पीतये समस्मै।।"[10]

अर्थात् मन्त्रे उक्तमस्ति यत् तादृशं भोजनं कुर्यात् तादृशं पेयं पिबेत् यत् बुद्धिवर्धनं बलवर्धनं करोति, परार्थमपि तादृशं भोजनं कारयेत् च, परन्तु तन्न खादयेत् न पिबेत् येन बुद्धिभ्रंशो भवति। पुनश्च

"अयं मे पीत उदियर्ति वाचमयं मनीषामुशतीमजीगः।
अयं षळुर्वीरमिमीत धीरो न याभ्यो भुवनं कच्चनारे ॥"[11]

अस्मिन् मन्त्रेऽपि तदेवोक्तमस्ति यत् वाक्बुद्धिदेहवर्धकं शास्त्रस्य सम्यगवगमने सहायकं च यत् तत् सेवयेत् न तु बुद्धिनाशकमिति।

ऋग्वेदे मनुष्याणां जीवनयात्रायाः सप्तमर्यादाः वा सीमाः वा प्रतिबन्धरेखाः वा निर्दिष्टाः, यासामतिक्रमणं न कर्तव्यम्; एतासु एकस्या अपि लङ्घनेन अथवा तद्विपरीतस्या एकस्यापि अमर्यादायाः सेवनेन पापं भवति। यथा

"सप्त मर्यादाः कवयस्ततक्षुस्तासामेकामिदभ्यंहुरो गात्।
आयोर्ह स्कम्भ उपमस्य नीळे पथां विसर्गे धरुणेषु तस्थौ ॥"[12]
सप्तामर्यादाः काः का इति विषयेऽस्मिन् निरुक्ते निर्देशः विद्यते

"सप्तैव मर्यादाः कवयश्च-कुस्तासामेकामप्यभिगच्छन्नंहस्वान् भवति, स्तेयं तल्पारोहणं ब्रह्महत्यां भ्रूणहत्यां सुरापानं दुष्कृतस्य कर्मणः पुनः पुनः सेवां पातकेऽनृतोद्यमिति ॥"[13] अनेन ज्ञायते यत् एतासु अमर्यादासु सुरापानमस्ति अन्यतमामर्यादा। कदापि तस्य पानं न करणीयमिति।

श्वश्रू कितवं निन्दति, भार्या च त्यजति; यदि सः धनं याचते कोऽपि तस्मै किमपि न ददाति। यथा वृद्धाश्वस्य मूल्यं नास्ति, तथैव द्यूतकर्ता कुत्रापि न सम्मानितो भवति।

"द्वेष्टिं श्वश्रूरप जाया रुणद्धि न नांथितो विन्दते मर्ढितारम्।
अश्वस्येव जरतो वस्न्यस्य नाहं विन्दामि कितवस्य भोगम् ॥"[14]

शक्तिशालिन अक्षाः कितवस्य धनं लोभेन पश्यन्ति, तस्य व्यभिचारिणी भार्या परैः स्पृष्टा भवति। कितवस्य माता, पिता, भ्राता च ऋणं याचमानान् वदन्ति यत्ते तं बद्ध्वा नयन्तु यतोहि कोऽपि कितवं न जानन्ति।

"अन्ये जायां परिं मृशन्त्यस्य यस्यागृधद्वेदने वाज्यऽक्षः।
पिता माता भ्रातर एनमाहुर्न जानीमो नयता बद्धमेतम् ॥"[15]

अनिश्चितस्थानेषु भ्रमन्तस्य कितवस्य भार्या तं विना दुःखिता भवति, माता च चिन्तिता भवति। कितवोऽन्येषामृणस्य वर्धनेन भीतो भवति। सः परधनहर्तुमिच्छन् रात्रौ गृहमागच्छति।

"जाया तप्यते कितवस्य हीना माता पुत्रस्य चरतः क्व स्वित्।
ऋणावा बिभ्यद्धनमिच्छमानोऽन्येषामस्तमुपनक्तमेति ॥"[16]

परेषां सुखिभार्यां, सुनिर्मितानि गृहाणि च दृष्ट्वा कितवः दुःखी भवति। प्रातःकाले अश्वेन निर्गच्छति परन्तु वस्त्राभावेन दुःखितः सन् अग्निसमीपे रात्रौ वसति।

"स्त्रियं दृष्ट्वाय कितवं ततापान्येषां जायां सुकृतं च योनिम्।
पूर्वाह्णे अश्वान्युयुजे हि बभ्रून्त्सो अग्नेरन्ते वृषलः पपाद ॥"[17]

सविता कितवेभ्यः वदति, यत् अक्षक्रीडां मा क्रीडन्तु, कृषिकार्यं कुर्वन्तु। तस्मात् यत्किमपि धनं प्राप्यते तेन धनेन गां क्रीत्वा भार्याञ्च प्राप्य सुखानुभवं कुर्वन्त्विति।

"अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित्कृषस्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः।
तत्र गावः कितव तत्र जायातन्मे वि चष्टे सवितायमर्थः ॥"[18]

उपसंहारः

वार्तापत्रिकाणां पृष्ठासु, दूरदर्शनस्य वार्तायाञ्च नगरेषु, ग्रामेषु सर्वत्र अशान्तिरेव वर्तते इति द्रष्टुं शक्यते। चौरकार्यं, हत्या, लुण्ठनम्, बलात्कारः, अपहरणम्, आतङ्कवादः, प्रवञ्चनम्, दुर्घटना इत्यादीनां अतिरिक्तता सर्वदा जनान् पीडयन्ति एव। किमधिकं विवाहेषु, धार्मिकस्थानेषु, वनभोजस्थलेषु च प्रायः भवन्ति अद्वेगजनकघटनानि, यानि सर्वैः दृष्टानि वा श्रुतानि वा। अपि तु यानवाहनादिभिर्कृता यात्रा अपि सर्वथा चिन्तामुक्ता न भवति। एतेषु अधिकांशः घटना केवलं मादकद्रव्यनियन्त्रणाभावादेव भवति। पुनश्च अपराधकर्तारः तु प्रायेण अक्षक्रीडायाः व्यसनिन् एव सन्ति। प्रायेण प्रत्यक्षकृतानि प्रामाणिकतथ्याधारितान्येतानि भवन्ति।

युवानां मध्ये मादकद्रव्यसेवनासक्तिः अक्षक्रीडायाः व्यसनञ्च तीव्रगत्या वृद्धिं प्राप्नुतः। एतादृशं व्यसनं समाजस्य कृते संकटः। किं बहुना समाजस्य देशस्य च निर्माणस्याधाराः युवा एव। आधारः सुदृढो न भवति चेत् निर्मितोऽपि दृढो न भवति। अतः सुन्दरतया प्रारम्भिकनिदर्शनेन सम्यग्ज्ञानं युवसमाजाय प्रवहनीयः।

फुटनोट्स

1. मनुस्मृतिः ७.४४
2. तत्रैव ७.५३
3. तत्रैव ७.४५
4. तत्रैव ७.४७
5. तत्रैव ७.४८
6. तत्रैव ७.४६
7. श्रीमद्भागवत-महापुराणम्, ११.३०.१-२५

8. ऋग्वेद ८.२.१२
9. तत्रैव ७.४६.६
10. तत्रैव ६.४०.२
11. तत्रैव ६.४७.३
12. तत्रैव १०.५.६
13. निरूक्तम् ६.२७
14. ऋग्वेदः १०.३४.३
15. तत्रैव १०.३४.४
16. तत्रैव १०.३४.१०
17. तत्रैव १०.३४.११
18. तत्रैव १०.३४.१३

सन्दर्भग्रन्थसूची

1. सम्पा. सूर्यकान्त, वैदिक कोश, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, २०२०
2. राय, रामकुमार, शौनकीय बृहद्देवता, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, २०१०
3. सम्पा. शर्मा, डा. उमाशङ्कर, यास्कप्रणीतं निरुक्तम्, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, २०१६
4. द्विवेदी, डॉ. कपिलदेव, वैदिक देवों का आध्यात्मिक और दैविक स्वरूप, विश्वभारती अनुसन्धान परिषद्, ज्ञानपुर (भदोही), २०१८
5. द्विवेदी, डॉ. कपिलदेव, वैदिक साहित्य एवं संस्कृति विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, २०१८
6. सम्पा. शर्मा, नारायण, शर्मा, चिन्तामणि, ऋग्वेदसंहिता, आदर्श-संस्कृत-शोध-संस्था (वैदिक-संशोधन मण्डलम्), पुणे, २०१४
7. मनुस्मृतिः, चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी,
8. Srimad Bhagavata Mahapurana, Gita Press, Gorakhpur, 2020
9. अमरकोशः, श्रीमदभरसिंह, निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९६१
10. शब्दकल्पद्रुमः (पञ्च भागाः), चौखम्भा संस्कृत ग्रन्थमाला, ग्र.सं. ९३, वाराणसी, १९६७

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

हिंदी भाषा-विज्ञान में आधुनिक अनुवाद की भूमिका और चुनौतियाँ

डॉ. षमीना ए एस
सहायक आचार्य, प्रोविडन्स वुमन्स कॉलेज,
कालिकट विश्वविद्यालय
shameenacejoy@gmail.com
Ph No. 9633734880

शोध सार

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अनुवाद एक ऐसी प्रक्रिया बन चुका है, जो न केवल भाषाओं के बीच सेतु का कार्य करता है, बल्कि सांस्कृतिक, वैचारिक एवं बौद्धिक आदान-प्रदान का माध्यम भी बन गया है। शोध का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि हिंदी भाषा के विकास, वैज्ञानिक अभिव्यक्ति और ज्ञान-विस्तार में अनुवाद की क्या भूमिका है तथा भाषा-विज्ञान के सिद्धांतों के आधार पर अनुवाद प्रक्रिया को कैसे अधिक प्रभावी और सुसंगत बनाया जा सकता है। आधुनिक तकनीकी उपकरणों (जैसे मशीन अनुवाद, CAT tools) के आगमन से अनुवाद की गुणवत्ता एवं गति में किस प्रकार का परिवर्तन आया है। इस अध्ययन में यह चर्चा की गई है कि भाषिक संरचना, सांस्कृतिक भिन्नता, मुहावरे, शैली और वैचारिक संप्रेषण जैसे पहलुओं के कारण अनुवादक को कई जटिलताओं का सामना करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त, हिंदी भाषा में तकनीकी शब्दावली के मानकीकरण की कमी, संदर्भानुसार अर्थ ग्रहण करने की चुनौती, तथा आधुनिक संदर्भों में उपयुक्तता बनाए रखने की आवश्यकता को भी विश्लेषित किया गया है।

भूमिका

आज के वैश्वीकरण और तकनीकी विकास के दौर में भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि ज्ञान के आदान-प्रदान, सांस्कृतिक विनिमय और वैश्विक संवाद का महत्वपूर्ण उपकरण बन चुकी है। इस संदर्भ में अनुवाद का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। विशेष रूप से हिंदी भाषा में अनुवाद की भूमिका को भाषा-विज्ञान के दृष्टिकोण से समझना आज की एक प्रमुख आवश्यकता बन गई है। भाषा-विज्ञान, जो भाषा की संरचना, कार्य और विकास का वैज्ञानिक अध्ययन है, अनुवाद की प्रक्रिया को केवल भाषिक परिवर्तन के रूप में नहीं, बल्कि एक गहन बौद्धिक और सांस्कृतिक अभ्यास के रूप में देखता है। आधुनिक काल में, जब बहुभाषिकता और बहुसांस्कृतिकता समाज की प्रमुख विशेषताएँ बन गई हैं, अनुवाद केवल दो भाषाओं के बीच पुल नहीं बल्कि विचारों, मूल्यों और ज्ञान की साझेदारी का साधन भी बन गया है।

अनुवाद और भाषाविज्ञान

भाषा मनुष्य के विकास के साथ-साथ धीरे-धीरे विकसित होकर आज की स्थिति में आयी हैं। एक भाषा में बताए हुए

बात को दूसरी भाषा भाषियों की समझ में आने के लिए अनुवाद की सहायता लेनी पड़ती हैं।

भाषाओं की विभिन्न प्रगति अनुवादों में समस्याएं उत्पन्न करती है। भाषा केवल विचारों का माध्यम ही नहीं बल्कि विचार की प्रक्रिया भी है। भाषा के वैज्ञानिक चिंतन तथा विश्लेषण के लिए भाषा विज्ञान जरूरी था तो एकाधिक भाषाओं में ज्ञानप्रसारण के लिए अनुवाद की अनुप्रेक्षणीयता थी। दैनिक जीवन में भाषा का उपयोग जहां वस्तुओं और विचारों को प्रस्तुत करने के लिए किया जाता है वही साहित्य के माध्यम से वह अप्रस्तुत को प्रस्तुत करने तथा कल्पना एवं बिंबो की सहायता से नया और मौलिक सूचना का मार्ग प्रस्तुत करती हैं।

प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक चोम्स्की के मतानुसार "भाषा के इस्तेमाल में यह जरूरी नहीं है कि हम केवल उन्हीं ध्वनियों का इस्तेमाल कर सकते हैं जिन्हें पहले कभी सुना हो या जिनकी सूची आपके मस्तिष्क में हो। भाषा का उपयोग करने वाला अनसुनी और अनकही ध्वनियों को उत्पन्न कर सकता है। अतः भाषा पर मनुष्य का अधिकार है जिसे चोम्स्की ने उसकी उत्पादक क्षमता के रूप में परखा है।"[1]

आज अनुवाद ने साहित्य के क्षेत्र की अपनी सीमा को लांघकर मानव व्यवहार के सभी क्षेत्रों को व्यापक बनाया है। आधुनिक युग की परमावश्यक प्रक्रिया के रूप में समाज, भाषा, संस्कृति आदि के समन्वय के लिए अनुवाद - कौशल का नितांत महत्व है।

बीसवीं शताब्दी अंतरराष्ट्रीय संबंधों की शताब्दी है और इस विश्व संस्कृति के रूपायन में अनुवाद का योगदान है। धर्म, दर्शन, साहित्य, शिक्षा, विज्ञान, तकनीकी, वाणिज्य, व्यवसाय, राजनीति जैसे संस्कृति के विभिन्न पहलुओं से अनुवाद का अभिन्न संबंध है। आज वैज्ञानिक, तकनीकी, शैक्षणिक, व्यवसायिक, पत्रकारिता समाचार - संप्रेषण और राजनीतिक क्षेत्र में अनुवाद एक मूलभूत आवश्यकता है बैंकिंग, वाणिज्य, अंतरिक्ष विज्ञान डॉक - तार विभाग एवं दूसरे अनेकों क्षेत्र में अनुवाद की पहुंच है। बिना अनुवाद के किसी भी क्षेत्र में काम सफल नहीं हो पता। स्पष्ट है कि राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनुवाद का क्षेत्र आज व्यापक होता जा रहा है।

सस्युर एवं आधुनिक भाषाविज्ञान

आधुनिक भाषा विज्ञान का प्रारंभ स्विस विद्वान ससुर (1857 - 1913) की रचनाओं से माना जाता है। उन्होंने न केवल भाषावैज्ञानिक चिंतन को आधुनिक संदर्भ प्रदान किया, बल्कि उनके विचारों ने मानविकी के अन्य क्षेत्रों को भी दूर तक प्रभावित किया। आज विकसित 'संरचनावाद' और 'प्रतीक - विज्ञान' की आधार शिला सस्युर ने तैयार की रखी थी। इस प्रकार आधुनिक भाषा विज्ञान की मूलभूत संकल्पनाओं का बीज ससुर की चिंतन धारा से विकसित है।

सस्युर के मतानुसार भाषा - व्यवस्था समूहगत अभिव्यक्तिमूलक प्रबंधन का परिणाम होती है। वह भाषिक प्रतीकों के उस संहिता (कोड) से संबंध होती है जो उसके प्रयोक्ताओं की इच्छा पर निर्भर है। पहले पहल भाषा उच्चारण या लेखन - पद्धती से नियंत्रित नहीं होती। व्यक्ति - भेद और मध्यम - विकार से मुक्त होने पर ही भाषा -व्यवस्था का स्पष्ट रूप है। इसके कारण इसका संबंध एक ओर व्यक्ति के क्रिया - व्यापार (कोड़ीकरण और विकोडीकरण) से रहता है और दूसरी तरफ उसके अभिव्यक्ति माध्यम (मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति) के साथ।

आधुनिक भाषा विज्ञान का आरंभ संरचनात्मक भाषा विज्ञान से होता है। आधुनिक भाषा विज्ञान की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसने पारंपरिक तुलनात्मक भाषा शास्त्र से अपने को मुक्त करके स्वायत्तता हासिल की। इस वजह से स्वतंत्र विषय के रूप में आधुनिक भाषा विज्ञान को मान्यता मिली। आधुनिक भाषा विज्ञान ने अपने को दूसरे विषयों के सामानान्तर खड़ा किया। भाषा विज्ञान में संरचनात्मकता की शुरुआत यूरोप के फरदिनाद दि सस्युर तथा अमेरिका में ब्लूम फील्ड से माना जा सकता है। संरचनात्मकता की धारणा को विस्तृत और व्यवस्थित ढंग से पहली बार प्रस्तुत करने का श्रेय सस्युर का है।

ससुर यह मानते हैं की भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन बहुकालिक होने के अलावा एक कालिक दृष्टिकोण पर भी किया जा सकता है। भाषा के एककालिक विश्लेषण में किसी भाषा का विश्लेषण किसी निश्चित समय के परिपेक्ष में किया जाता

है। एडवर्ड स्पीर जैसे महान भाषा वैज्ञानिक और मानवशास्त्री भाषा और साहित्य के संबंधों पर -भाषा, जाती और संस्कृति के संबंध पर तथा भाषाओं के संबंध पर बहुत प्रभावशाली ढंग से अध्ययन पेश किया था। स्पीर ने कहा है कि "भाषा का अपना अनोखा सच उसकी इकाइयों के अलग करने की वजह से हैं। एक ही परिवार की दो भाषाओं में बहुत सी ध्वनियां समान हो सकती है, लेकिन उनके स्वनिम समान नहीं होते। प्रत्येक की इकाइयों का कसाव अपना होता है। स्पीर ने कहां है की भाषा, संस्कृति से अलग नहीं है। प्रत्येक भाषा का अपना एक सांस्कृतिक परिवेश होता है।"[2]

भाषा वैज्ञानिक चर्चा एवं अनुवाद के सिद्धांत

रचना तथा रचनाकार या लेखन तथा लेखक के अन्तर्संबंधो की चर्चा पुरानी है। रचनाकार के महत्व पर परस्पर सिद्ध चर्चा उपलब्ध है। पुराने जमाने में लेखक को ईश्वरीय सत्ता के अभौतिक परिसर में देखने की रीतियां मिलती है। पर 'संरचनावाद' ने 'वाचन' की अविरल प्रक्रिया की महत्ता पर चर्चा कायम रखी। सृष्टा एवं कर्ता की जगह कृति के वाचन या पठन - पाठन की प्रणालियाँ चालू हुई।

इस तरह 'संरचनावाद' ने अर्थ एवं शब्द के संबंधों की व्यापक व्यवस्था विश्लेषित की है, जिसके फल स्वरुप चिन्ह विज्ञान उत्तर संरचनावाद, विनिर्माण आदि अध्ययन प्रणालियां चालू हुई। सस्युर का अभिमत था कि भाषा चिह्नों की एक व्यवस्था है जिनका अर्थ नियत नहीं होता है। अतः उनके अनुसार सूचक एवं सूचित की परस्पर आश्रितता के कारण अर्थ का संप्रेषण होता है। अर्थ को सूचित करने के लिए जो वाक्य बिंब या चिन्ह इस्तेमाल किए जाते हैं वह सूचक कहे जाते हैं। असल में शब्द का कोई भी अर्थ स्थिर नहीं है, वह रूप से निर्मित या आरोपित है। हो सकता है की भाषा में इस तत्व के विपरीत अर्थ का भी शब्द व्यव्हृत हो। अनुकरणात्मक एवं सूचनात्मक आवाजें इसके उदाहरण हैं। पर व्यापक चर्चा में इनका स्थान प्रमुख नहीं है।

भाषा भर को चिन्ह व्यवस्था मान लेने के कारण संरचनात्मक अध्ययन की दृष्टि से हर भाषिक कार्य चिन्हविज्ञानीय कार्य बन जाता है। भाषिक विनिमय की प्रक्रिया होने के नाते अनुवाद में चिन्ह व्यवस्था का प्रतिस्थापन होता है। सांस्कृतिक संदर्भ में ऐसा प्रतिस्थापन जब संपन्न होता है तब उसकी प्रक्रिया संश्लिष्ट बन जाती है। अतः अनुवाद या अनुदित सामग्री को सभी प्रकार के सांस्कृतिक कार्यो व प्रवृत्तियों के अध्ययन के लिए उपयुक्त किया जा सकता है। इस महत्व के कारण अनुवाद की प्रक्रिया एवं व्यवहार की सांस्कृतिक चर्चा में महती भूमिका है।

अतः भाषा की संरचना वादी चर्चा के फलस्वरुप व्युत्पन्न सभी तरह के चिंतन - मनन एवं साहित्यिक -सांस्कृतिक अध्ययनों को अनुवाद की चर्चा में भी उचित रूप में सम्मिलित किया जा सकता है। उत्तर संरचनावाद, कर्ता की मृत्यु, नृवंश विज्ञान, चिन्ह विज्ञान, स्वनिम विज्ञान जैसे परवर्ती अध्ययनों को अनुवाद विज्ञान व अनुवाद विषयक अध्ययनों में स्थान मिलता है। इसमें रोलैंड बर्थ्स का चिन्हविज्ञानीय चिंतन ने सांस्कृतिक व साहित्य विमर्श को नई दिशा प्रदान की है। करता की मृत्यु पर बर्थ्स के चंदन ने कृति एवं उसमें अंदर निहित अर्थ को हमेशा के लिए मुक्त कर दिया था।

अर्थ की चिन्हविज्ञानीय व्याख्या

"आधुनिक अनुवाद विषयक अध्ययनों में अर्थ चिन्हविज्ञानीय अनुवाद का महत्वपूर्ण स्थान है। चिन्ह विज्ञान के मुताबिक समय मूलक, सूचना मूलक व प्रतीकात्मक चिन्ह होते हैं।"[3] अतः अनुवाद के संदर्भ में इन सब का स्थान है। पाठ के अनुवाद में भी इन चिह्नों का अध्ययन विश्लेषण संभव है।

उत्तर संरचनावादी समय में ससुर द्वारा आरंभ किए गए चिन्ह विज्ञानीय अध्ययनों का परवर्ती समय में अध्ययन विश्लेषण हुआ तो पाठ के भीतर - बाहर का सांस्कृतिक परिसर चर्चा में महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया। आशय अर्थ एवं विनिमय के आंतरिक संबंधों के अनुरूप हर पाठ की विशद चर्चा इस समय की उपलब्धि है। फिल्म, फोटोग्राफी, चित्रकला, फैशन, परिष्कृति चिंतन, सांस्कृतिक विकास आदि सब विषयों में चिन्ह विज्ञानीय अध्ययन प्रणालियां उपयुक्त की जाती है। मनुष्य के दैनंदिन जीवन

की प्रक्रिया होने के नाते इन सब का निर्माण, प्रसारण संप्रेषण तथा अनुकरण में अनुवाद या अनुवर्तन का स्थान है। बक्तिन के अनुसार "शब्दों का कोई पहला या अंतिम अर्थ नहीं है अर्थ का निरंतर फिसल जाना व्यावहारिक तौर पर भाषिक सच बन जाता है।"[4]

उत्तर संरचनावादी विकास

उत्तर संरचनावाद में संरचना के भीतर उपस्थित अर्थ स्थितियों तथा उसके परिवर्तनों पर विभिन्न कोणों से दृष्टि डाली गई। विनिर्माण परक अर्थोत्पादन पर देरिदा, मनोवैज्ञानिक अर्थव्यवस्था पर लकान, दार्शनिक अर्थो पर फूके तथा संरचनात्मक अर्थ स्थिति -भेदों पर बार्थ्स ने बहस को आगे बढ़ाया। संरचना, चिन्ना भाषण, भाषा, सूचक - सूचित, एककालिक - बहुकालिक अर्थ परिवर्तन आदि कई संकल्पनाओं का विशद आकलन हुआ। इसी समय में श्मूलश को भी अनुवाद मानने की चिंतन - पद्धतियां भी उभर आई।

उत्तर संरचनावादी कार्य में कृति

एवं पाठक की दो अलग-अलग पहचान होती है कृति रचनाकार का सृजन है तो पाठ, पाठ की आजादी है। पाठ का सृजन नाचन की स्थितियों के आधार पर सृजित होता है, जो संदर्भानुसार भिन्न हो सकते हैं। भाषिक संरचना के अनुवाद को लेकर नब्बे के दशकों में गंभीरता पूर्वक चर्चा हुई थी। बार्थ्स एवं देरिदा के अभिमतों का साहित्यालोचना एवं अनुवाद की सैद्धांतिकी पर व्यापक पैमाने का प्रभाव वर्तमान है।

असल में रचना एवं आलोचना की चर्चा में श्कर्ता की मृत्यु श वाली संकल्पना का जितना प्रभाव है, उससे अनूदित रचनाओं की आलोचना संभव है। समतुल्य अनुवाद की पूर्वधारणा के कारण इस बात पर लोगों की दृष्टि अधिक नहीं पड़ी। इक्कीसवीं शती के आरंभिक दशकों से लेकर इस ओर ध्यान मिल गया है।

"पाठ की व्याख्या के लिए आलोचना में अति भाषा (Meta Language) की जो संकल्पना बार्थ्स जैसे विद्वानों ने सामने रखी थी, उसी के आधार पर अनुवाद को लक्ष्य संस्कृति में नई रचना घोषित की जाती है।"[5] रचना विश्लेषण में विनिर्माण(Deconstruction) का उपयोग किया जाता है तो उसको समझने, समझाने का दायित्व पाठकों व आलोचकों का है। पठन - पाठन की पूरी प्रक्रिया को दायित्वपूर्ण कार्य करने की दिशा में अनुवाद एवं अनुवर्तन का कार्य आगे बढ़ रहा है।

उत्तर औपनिवेशिक अनुवाद का वर्तमान संदर्भ

प्रक्रिया के रूप में अनुवाद की हजारों साल पुरानी परंपरा है। कहा जाता है कि 3000 बी.सी में इजिप्ट के पुराने राज्य में अनुवाद की पहली प्रक्रिया हुई थी तब से लेकर उसकी सतत परंपरा रही है यद्यपि उसे अभिलेखित नहीं किया गया है अनुवाद के सिद्धांतों पर स्पष्ट एवं अविरल चर्चा आधुनिक समय से शुरू हुई।"प्रक्रिया एवं सिद्धांत के विभिन्न विषयों के साथ अर्थ संबंधों को भी बरखा गया। शब्दार्थ परिभाषा प्रक्रिया एवं व्यवहार के स्तर पर जेम्स होम्स ने अनुवाद विज्ञान पर विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया है।"[6]

निष्कर्ष

बीसवीं शताब्दी अंतरराष्ट्रीय संस्कृति की है। इस कारण से इस अनुवाद की शताब्दी भी कही जाती हैं। अनुवाद आज सामाजिक मनुष्य की आवश्यकता बन गया है। सिमटते हुए संसार में संप्रेषण के मार्ग के रूप में अनुवाद की प्रक्रिया का निश्चित योगदान है। अनुवाद सिद्धांत कोई विशिष्ट विचारधारा पर निर्भर नहीं है। विभिन्न विचारकों ने अनुवाद के संबंध में जो सिद्धांत बनाए हैं वह अनुवाद के सिद्धांत कहलाते हैं। कोई भी अनुवाद सिद्धांत किसी न किसी भाषिक विश्लेषण पर आवश्य आधारित होता है। अनुवाद सिद्धांत के विभिन्न रूप भाषा के व्यवस्थित अध्ययन के परिणाम स्वरुप उभर कर सामने आए हैं। उनमें परस्पर विभेदन भाषा के प्रति भिन्न - भिन्न दृष्टिकोण और बदलते हुए सांस्कृतिक परिणामों का परिचायक है।

हिंदी भाषा-विज्ञान में अनुवाद की भूमिका केवल भाषिक संप्रेषण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सशक्त माध्यम बन चुका है जो हिंदी को वैश्विक संदर्भ में प्रतिस्थापित करने की क्षमता रखता है। अनुवादक आज के युग में श्मध्यस्थश नहीं, बल्कि 'संवाद-निर्माता' की भूमिका निभा रहा है। हालाँकि अनुवाद प्रक्रिया में कई व्यावहारिक, भाषिक और सांस्कृतिक चुनौतियाँ हैं, परंतु तकनीकी प्रगति और शोध इन बाधाओं को पार करने में सहायता कर रहे हैं। हमें आवश्यकता है एक बहुस्तरीय दृष्टिकोण की जिसमें भाषा-विज्ञान, अनुवाद शास्त्र, तकनीकी उपकरण और सांस्कृतिक समझ सभी का समावेश हो। तभी हिंदी अनुवाद को एक नई पहचान और समृद्धि मिल सकेगी।

संदर्भ

1. Chomsky,norm-Syntactic structure 1975:20
2. Spear,Edward Language :An introduction to the study of speech, 1910:15
3. Nair Radhika -samakalika sahithya sidhantham oru pada pusthakam 2001 :28
4. Bakhtin , Mikhal M-prpblems of destovskys poetics 2002:39.
5. Barths , Roland-Image,music,text 1977 : 147
6. Toury, Gideon-Encyclopidea of translation studies 1978:2

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

डॉ. निरंजन मिश्र की कृतियों में सौन्दर्यबोध

चिंकी कुमारी
शोध छात्रा
संस्कृत विभाग, कला संकाय विभागाध्यक्ष,
दयालबाग शिक्षण संस्थान, आगरा

डॉ. अनीता
शोध निर्देशिका
संस्कृत विभाग, कला संकाय
दयालबाग शिक्षण संस्थान, आगरा

साहित्य कला के संदर्भ में सौंदर्य का अर्थ अत्यंत व्यापक और विशद् है। वैदिक संहिताओं तथा उपनिषदों में सौन्दर्य शब्द अपने मौलिक रूप में प्रयुक्त न होकर सौंदर्य के वाचक अन्य पर्याय शब्दों में व्यहवत हुआ है यथा–चारु, रुचि, प्रिय, प्रशेष, अप्सु, श्रिय इत्यादि शब्द व्यहवत हुए हैं। ऋग्वेद में रूप शब्द का आकार-प्रकार के लिए हुआ है– विश्वा रूपाणी प्रतिमुञ्चते कविः।[1] सौन्दर्य का मुख्य आशय काव्यगत लालित्य विधान या रमणीयता है काव्य का मूलभूत तत्व रमणीयता ही सौन्दर्य तंत्र है सौन्दर्य एक विशेष मनोदशा है यथार्थ जीवन में जिसकी अनुभूति होती है। यह दृष्टा या विषयी द्वारा सहज संवेद्य है इससे चित्र वृत्ति का उन्मेष विकास और प्रधान होता है सौन्दर्य का अवबोध साधारणतरू तीन स्तरों पर अनुभव किया जाता है 1. प्रकृतिगत 2. लोकगत 3. कलागत।

सौन्दर्य शब्द की उत्पत्ति - सौन्दर्य सुंदर का ही भाववाचक रूप है। सुन्दर शब्द स्यञ् प्रत्यय करने पर सौन्दर्य शब्द निष्पन होता है **'सुन्दरस्य भावः सौन्दर्यम्'।**[2]

वाचस्पत्य कोश के अनुसार सु उपसर्ग पूर्वक उन्द धातु में अरन् प्रत्यय के सहयोग से सुंदर शब्द बनता है, जिसका अर्थ है चित्त को द्रवीभूत करने वाला।[3] अन्य व्युत्पत्ति - सुष्ठु उनन्ति आद्री करोति चित्तम् इति सुन्दरम् जो चित्र को अच्छी प्रकार से आर्द्र करता है वह वस्तु सुंदर है।[4]

आचार्य वामन शिवराम आप्टे - सुंदर शब्द के विषय में कहा है कि सुंदर शब्द 'सुन्द + अरः' अनुभव के माध्यम से की है जिसका प्रिय, मनोज, मनोहर इत्यादि अर्थ बताए हैं।[5]

अमरकोश के अंतर्गत सुंदर के 18 पर्याय शब्दों को श्लोकबद्ध रूप में प्रस्तुत किया गया है।

सुंदरं रुचिरं चारु सुषमं साधु शोभनम्।
कान्त मनोरमं रम्य मनोज्ञं मञ्ज मञ्जलम्।
अभीष्टमीप्सितरू हृयं दयितरू बल्लभं प्रियम्।।[6]

श्रीमद्भागवत पुराण में सौन्दर्य के विभिन्न पक्षों का उद्घाटन हुआ है। मानव सौंदर्य के साथ-साथ नृत्यगीतादि ललित कलाओं के सौंदर्य का मनोमग्धकारी वर्णन प्राप्त होता है। भागवत में सौंदर्य रूप का यह श्लोक दृष्टव्य है तदैव रम्यं रुचिरं नवं-नवं तदैव शाश्वन्मनसो महोत्सवम्।

तदैव शोकार्णव शेषणं नृणां यदुत्तम् श्लोक यशोनुगीतयते।।[7]

साहित्य में सौंदर्य पुरातन होते हुए चिरनवीन होता है महाकवि माघ ने शिशुपालवध महाकव्य में रमणीयता को परिभाषित करते हुए कहा है क्षणे- क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः।[8]

कविकुलगुरु महाकवि कालिदास ने लावण्य अभिज्ञानशाकुंतलम् में शकुंतला के रूप लावण्य का अद्भुत वर्णन किया है। जिसके दर्शन से नेत्र मोक्षत्व को प्राप्त होते है 'नेत्र लब्धं निर्वाणम्' ।[9] अन्य यत्र भी कालिदास ने सुंदर दिश के अंतर्गत कहा है–

"मानुषीषु कथं वा स्यादस्य रुपस्यसभवः न् प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्।।"[10]

आचार्य बलदेव उपाध्याय ने सौन्दर्य का साहित्य शास्त्रानुमोदित प्रतिनिधित्व शब्द लावण्य है।[11] भारतीय कवियों ने वसंत की ध्वन्यालोक की टीका लोचन में अभिनव गुप्त ने इस तत्त्व का उन्मूलन बड़ी सुंदरता से किया है।

प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्त्वस्तिवाणीषु महाकविनाम्।
यत् यत् प्रसिद्धावयवातिरिक्त विभाति लावण्यमिवाङ्नासु।।[12]

प्रतीयमान व्यंग्य अर्थ की सत्ता वाक्य अर्थ से भिन्न इस प्रकाशित होता है। जिस प्रकार रमणीय अंगों वाली ललनाओं में दृश्यमान लावण्य निखिल अवयवों से सर्वथा पृथक रूप से साहृदय के लोचन को आनंद देने वाला अमृत रूप विभिन्न तत्व ही है। वह अंग विशेष में अपनी सत्ता नहीं रखता है प्रतिनियुक्त उसमें पृथक वह साहित्य दर्शकों के नेत्रों को आनंदित करता है अंगों के साथ के संबंध का निर्देश अभिनव गुप्ता ने लोचन में मार्मिकता से कहा है–

'लावण्य हि नाम अवयव एवं संस्थानाभिव्यंग्याम् अवयवव्यक्ति रिक्तं धर्मान्तरमेव।'[13]

अर्थात् अवयव शरीर के अंगों की निर्दोषता न लावण्य होता है न वह अलंकार के योग में ही का अस्तित्व होता है लावण्य अवयवों के संस्थान के द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है। तथा अवयवों से व्यक्तिगत पृथक भूत होने वाला अन्य धर्म ही होता है। लावण्य किसी अंग विशेष में नहीं रहता बल्कि वह अंगों के सुंदर संस्थान के द्वारा अभिव्यक्त किया जाने वाला साधु हुए मां एक विशिष्ट धर्म ही होता है।

प्राकृतिक सौन्दर्य से डॉ. निरंजन मिश्र की कृतियों में सर्वत्र दर्शनीय है। उनके काव्य में प्रकृति का मानवीयकारण भी देखा जाता है। वैदिक ऋषियों ने प्रकृति के सौन्दर्य दर्शन की अभिव्यक्ति विभिन्न मंत्र व स्तुतियों के माध्यम से की है। जहां वह प्रातः कालीन उषा के रमणीय ने चित्रण को चक्षुपटल पर अंकित किया है। वही प्रकृति को यौवनांगी भी कहां है। देवी-देवताओं के विभिन्न रूप-स्वरूपों, अंग-प्रत्यंग का आभूषण इत्यादि का सौन्दर्य प्रदर्शित किया है। सौन्दर्यबोध रसानुभूति साहित्य का प्रयोजन है।

मधुमत्तकोकिलकाकलीरससिञ्चितं विपिनाङ्गनं
नवचन्द्रिकास्तरणे चरन्नलिनीसखीगणमण्डलम्।
कलहंसिनीकलनादकपटान्नूपुरारवदीपनं
सरसाम्नमधुमकरन्दगन्धसुगन्धिताम्बरमण्डलम्।। [14]

अर्थात् मधुमत्त कोयलों की मधुर काकली के रस से सम्पूर्ण विपिनाङ्गन सिञ्चित है। नई चन्द्रिका की चादर पर कमलिनियाँ अपनी सखियों के साथ समूह बनाकर घूम रही हैं। कलहंसिनी की सुमधुर आवाज के बहाने से मानो नूपुर की आवाज आ रही है। सरस आम के मधु मकरन्द के गन्ध से सम्पूर्ण आकाशमण्डल सुगन्धित हो रहा है।

कमलदलामलकोमलकान्तिकलाकलिते करुणानिलये!
शशिकरशुद्धसुधाधरधौतधरातलवासितवासरुचे!
हरिहरकीर्तिकथारसपानविमुग्धबुधाननतोषकरे!
जय जय हे भरताग्रजभूषणजीवनदर्शनदृष्टिधरे!।।[15]

अर्थात् कमल दल के समान मल रहित, तथा कोमल कान्ति की कला से परिपूर्ण! करुणा की आवासस्वरूपे! चन्द्रमा की किरणों की शुद्ध अमृत को धारण करने से पूर्ण धवल धरातल पर सुगन्धित निवास में रुचि रखनेवाली! हरि (विष्णु) तथा हर (महादेव) की कथा का रसपान करने से विमुग्ध विद्वानों के मुख का तोषण करनेवाली! भरत के अग्रजभूषण (भगवानामचन्द्र) के जीवनदर्शन रूप दृष्टि को धारण करनेवाली! आपकी जय हो।

नेत्रज्योतिरिदं दिव्यं दिव्या वाङ् मधुवर्षिणी।
दिव्यं तेजो बलं दिव्यं मूर्तिरूपाऽस्ति दिव्यता॥[16]

ईश्वर कृत संपूर्ण प्रकृतियों में भी सौन्दर्य का अभिर्भाव होता है। कवि ने प्रकृति का नख मुख इत्यादि का स्त्री के समान वर्णन करते हुए कहा है। यह नेत्र ज्योति दिव्य है, दिव्य वचन भी मधु वर्षण करने के दिव्य तेज है, दिव्य बल है, यह तो साक्षात् दिव्यता ही मूर्ति रूप में है।

शान्तिस्तु शीतलावण्या कीलितेवात्र धीरता।
ज्योत्स्ना शारदी धीरा तिष्ठत्याननमन्दिरे ॥[17]

यहाँ शीतलता रूप लावण्य वाली शान्ति है। धीरता तो यहाँ है। इस मुख मन्दिर पर शरद् ऋतु की चाँदनी धैर्यवती होकर स्थित होती है।

गता निशा सा जडता निलीना चौतन्यमादाय समागतेयम्।
उषोवधू रक्तिमशाटिकाया-मपूर्वसौन्दर्यमुदाहरन्ती ॥[18]

प्राकृतिक सौन्दर्य दर्शन की अभिव्यक्ति सृष्टि के प्रत्येक कण-कण में की जा सकती है सृष्टि का कण कण सौंदर्य से परिव्याप्त है। डॉ. निरंजन मिश्र ने महाकाव्य गंगापुत्रावदानम् सर्वत्र सौन्दर्य अवलोकन किया है। कवि उषा का वर्णन करते है धीरे धीरे रात्रि समाप्त हो गयी, वह जड़ता भी समाप्त हो गयी द्य तन्य लेकर यह उषा वधू लाल साड़ी में अपूर्व सौन्दर्य का उदाहरण प्रस्तुत करती हुई उपस्थित हुई।

अनङ्गलीलाललितालताभिः नखक्षतालंकृतपल्लवाभिः।
द्विरेफमालालुलिताञ्चलाभिःसौन्दर्यसारान्वितदेवभूमिः ॥[19]

अनङ्ग की लीलाओं से ललित है, नखक्षतों से अलंकृत जिनके पल्लव हैं, द्विरेफ की माला से जिसका आँचल लुलित है, ऐसी (लताओं) के सौन्दर्य से युक्त यह देवभूमि है।

निखिल ब्रह्मांड की वस्तुएं उसके मानस पटल पर अनेकानेक भाव जाग्रत करती हैं। उनका हृदय नवजात शिशु की ओर आकर्षित होता है तो, कभी नवयौवनांगी को देखकर कामवशी भूत होता हैं तो कभी प्रातः कालीन सूर्य की करने में खिले हुए हिमकणों से युक्ति रंग-बिरंगे पुष्पों को चित्र को देखकर लालायित होता है, तो कभी रात्रि में चांदनी युक्त चंद्रमा से अलौकिक सौन्दर्य मनमुग्ध होता है।

कर्पूरगौरा गिरिराजभित्तिः ज्योत्स्नाप्रवाहो नभसोऽतिदिव्यः।
अलोकसौन्दर्यनिपानमत्ताः तरङ्गिनीतीरगताश्चकोराः ॥[20]

कर्पूर के समान स्वच्छ गिरिराज की भित्तियाँ है। उस पर आकाश से चंद्रिका का अतिदिव्य प्रवाह आ रहा है। तरङ्गिणी (अलकनन्दा) के तीर पर स्थित चकोर इस अलौकिक सौन्दर्य को पीने से मस्त हो रहे हैं।

नेत्रं प्रसन्नं कुसुमप्रभाभि-घ्र र्णस्य तृप्तिर्मधुगन्धवाहैः।
गानैर्खगानां श्रवणस्य शान्तिः किमन्यदत्रास्ति विचिन्तनीयम्।।[21]

जहाँ पुष्पों की कान्ति से आँखें प्रसन्न हो जाती है। मधुरिम (सुगन्धित) पवनों से नासिका की तृप्ति होती है। पक्षियों के गानों से श्रवण को शान्ति होती है। इसके अतिरिक्त और क्या यहाँ पर चिन्तनीय है। अर्थात् कुछ भी नहीं, सब कुछ प्राप्त हो जाता है।

नारी सौन्दर्य - विश्व के समस्त साहित्य में प्रेम सौन्दर्य कवियों का प्रिय विषय रहा है। प्रकृति का द्वितीय सौन्दर्य का केंद्र नारी है। प्रकृति की सर्वाधिक रमणीय रचना नारी है। कवि ने बाह्य अन्तः दोनों ही रूपों का अनेक प्रकार से चित्रण किया है। संस्कृत हिंदी, आंग्ल भाषा इत्यादि भाषा साहित्य में कवियों ने अपनी पूर्णनिष्ठा से नारी सौंदर्य के प्रति शारदा सुमन अर्पित किए हैं। सौंदर्य के साथ प्रेम का मिश्रण होना स्वाभाविक है। सौन्दर्य की परिणिति प्रेम में होती है। संस्कृत साहित्य के प्रेणाताओं ने नारी सौंदर्य का चित्रण अत्यंत ही परिष्कृत माधुर्य शैली में है।

साहित्य का मानव जीवन से घनिष्ठ संबंध है। सुंदर और समरसता के साथ मानव मन पर गहरा प्रभाव डालता है। कवि ने अवश्य मानव एवं प्रकृति दोनों के वर्णन में ऋणी प्रतीत होता है। डॉ. निरंजन मिश्र की ने नारी सौन्दर्य की उपमा प्रकृति से की है वह नारी सौन्दर्य की स्तुति सरस्वती पार्वती लक्ष्मी तथा आधुनिक नारी एवं ग्रामीण नारी के सौन्दर्य को चित्रांकित किया है।

शशिशीतलकरनिर्झरिणीजलजातदलद्युतिवस्त्रवरे!
रविकिरणावलिकुंकुमविन्दुविभूषणभूषितभालतले!
सुरललनागणचितकुसुमावलिमालसुशोभितभव्यगले!
हर जड़तां भर भावविबोधमिहामलशारदचन्द्रकले!।। [22]

कवि माँ सरस्वती की वंदना करते हुए उनके सौन्दर्य प्रशंसा में कहते है कि हे चन्द्रमा की शीतलकिरण की निर्झरिणी में उत्पन्न कमल की कान्ति से युक्त श्रेष्ठ वस्त्र को धारण करनेवाली! सूर्य की किरणावली रूप कुंकुम की विन्दी रूप विभूषण से विभूषित ललाट वाली! सुरललनाओं के द्वारा चुने गये फूलों से बनी माला से सुशोभित कण्ठवाली! अमल शारदीय चन्द्रकलास्वरूपे! मेरी जड़ता का हरण करो और मेरे मानस में सद्भावज्ञान को भरो।

तव कण्ठगतं रुचिराभरणं सजले कलशे कुसुमस्रगिदं
कुसुमाश्रगपूजनपुण्यफलं दिशतीव विलोकय कालभवम्।
नवयौवनदत्तघटद्वयकम्पनमत्र करोति मनोहरणं
सरसामृतलुब्धमधुब्नतगुञ्जनमाविशति श्रवणे न कथम्?।।[23]

कवि नारी के कायांगों की सौन्दर्यता चित्रण करते हुए कहते है कि तुम्हारे कण्ठ का रुचिर आभरण मानो जल से भरे कलश पर फूलों की माला सजाई हुई है हो द्य इसे तुम स्वयं देखो, ऐसा प्रतीत होता है कि पुष्पवाण के पूजन का समय अनुकूल पुण्यफल है। नवयौवन द्वारा प्रदत्त इन दोनों घड़ों का कम्पन वस्तुतरू मन का हरण कर रहा है। पर सारस अमृत पर लुब्ध भौंरे का गुंजन तुम्हारे कानों में क्यों नहीं घुस रहा है।

भावगत सौन्दर्य

मनुष्य संवेदनशील प्राणी है। सौन्दर्य एक अनुभूति है यह आवश्यक नहीं की उसका अनुभव केवल मूर्त वस्तुओं में हो सौन्दर्य तो भाव से संबंधित होने के कारण अमूर्त तत्वों में भी हो सकता है। मनुष्य के हृदय की पवित्रता ही भाव सौन्दर्य विचारों में अनुस्यूत होता है।

न तद्गृहं यत्र न शम्भुपूजा न पूजनं तन्नहि यत्र भावः।
भावो न तत् यत्र समर्पणं न समर्पणेनैव हि सर्वसिद्धिः।।[24]

कवि ने समर्पण का महत्व बताते हुए कहा है कि वह घर घर नहीं है जहाँ शम्भु पूजन न होता हो द्य ऐसा पूजन पूजन नहीं जिसमें भाव न हो द्य वह भाव भाव नहीं जिसमें समर्पण न हो द्य समर्पण से ही सभी सिद्धियाँ मिलती हैं।

स्रोतस्विनीनां रमणीयलीला परस्परालिङ्गनजातहर्षा।
समर्पणे जीवनमस्ति पूर्णं किन्नात्र लोकान् दिशतीव भाति ॥[25]

संसार सम्मिल का रंग स्थल है जिस पर समस्त प्राणीजन सहयोगएवं समर्पण के माध्यम से इस जगत् रूपी यात्रा को तय करता है। डॉ. निरंजन मिश्र ने अपने काव्य कृतियों में समर्पण का अद्भुत दृश्य प्रस्तुत किया है। स्रोतस्विनियों की रमणीय लीला, जो परस्पर सम्मिलन से उत्पन्न खुशी वाली होती है, समर्पण में ही जीवन पूर्ण होता है, इस भाव को मानो लोगों को क्या नहीं बता रही है।

नन्दाकिनी नन्दति यत्र मुग्धा होकाकिनी शैलगृहे भ्रमन्ती।
कौबेरभूषामधिगत्य तुष्टा नन्दप्रयागे स्वरतिं तनोति ॥[26]

जहाँ नन्दाकिनी मुग्धा अकेली वनपर्वतों में घूमती हुई कुबेर की अलङ्करणभूता अलकनन्दा से मिलकर प्रसन्न होती हई नन्दप्रयाग में अपनी विशिष्ट प्रीति दिखाती है।

अतः परमात्मा की सम्पूर्ण सृष्टि सौन्दर्य से परिपूर्ण है। मनुष्य सौन्दर्य उपासक प्राणी है। वह अपने कार्यगतिविधियों को सौन्दर्यपूर्ण ढंग से निष्पन्न करने का प्रयत्न करता है। उसका यही प्रयास काव्य के क्षेत्र में भी प्रतिलक्षण होता है। सौन्दर्यबोध भारतवर्ष के प्राचीनकाल से आरंभ होकर और आर्वचन संस्कृत के काव्यों तक सर्वथा आवर्जक रूप में अनुस्यत होकर प्रभावित होती है। तथा डॉ. निरंजन मिश्र की काव्य कृतियां में सर्वत्र सौन्दर्यबोध करती सहृदय को आनंदित करती है। उनेके काव्यों में प्राकृतिक सौन्दर्य नारी सौन्दर्य भावगत सौन्दर्य की समता महाकवि कालिदास से की जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. महाकवि कालिदास रामशंकर तिवारी पृ. 278
2. वही
3. वाचस्पत्यम् पृ. 5314
4. शब्द कल्पद्रुम पृ. 373
5. संस्कृत हिन्दी शब्द कोश
6. अमर कोश पृ.3/52, 53
7. श्रीमद्भागवत पुराण
8. शिशुपालवध महाकव्य 4/17
9. महाकवि कालिदास
10. महाकवि कालिदास 1/24
11. संस्कृत आलोचना, आचार्य बलदेव उपाध्याय पृ. 31
12. ध्वन्यालोक 1 /4
13. लोचन टीका अभिनव गुप्ता
14. रमणीयादपि पृ. 92/3
15. रमणीयादपि पृ. 25 /4
16. गंगापुत्रावदानम् 7/14
17. गंगापुत्रावदानम् 8/75)
18. गंगापुत्रावदानम् 7/15
19. गंगापुत्रावदानम् 1/61
20. गंगापुत्रावदानम् 8/70
21. गंगापुत्रावदानम् 8/47
22. रमणीयादपि पृ.12/6
23. रमणीयादपि पृ. 54/3
24. ग्रंथिबंधनम् .3/17
25. गंगापुत्रावदानम् 8/49
26. गंगापुत्रावदानम् 8/48

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

कविराज अभिराज राजेंद्र मिश्र के कथा साहित्य में लोक संस्कृति

मोहन लाल खटीक
सहायक आचार्य संस्कृत
माणिक्य लाल वर्मा राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा (राज.)
दूरवाणी क्रमांक - 9667808389 Email Id- mlkhatik.mc@gmail.com

शोध सार

सम्पूर्ण वेदराशि विश्व की समस्त विद्याओं, संस्कृति एवं सभ्यताओं की आधारशिला है। इनमे ज्ञान-विज्ञान, धर्म-दर्शन, सदाचार, संस्कृति, योग, आयुर्वेद तथा धार्मिक-आर्थिक-सामाजिक-राजनातिक-दार्शनिक जीवन से सम्बन्धित सभी विषयों का समावेश प्राचीन समय से ही ऋषियों द्वारा कर दिया गया था, जो आज भी तद्वत् ही प्रासंगिक है।

वैदिक वाङ्मय (वेद-ब्राह्मण-आरण्यक-उपनिषद्) से प्राम्भ यह प्रवाह रामायणम्, महाभारतम्, महाकवि कालिदास, नाटककार भास, दण्डी, अश्वघोष, भवभूति, बाणभट्ट, भारवि, माघ, श्रीहर्ष, शूद्रक, विशाखदत्त, सोमदेव, भोज, हेमचन्द्र आदि कविजनों की काव्यधारा में निरन्तर अनुस्यूत होता हुआ आधुनिक काल के कवियों में भी तथैव प्रवाहमान है। अतरू प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से आधुनिक काल के कवियों में अग्रगण्य कविराज प्रोफ़ेसर अभिराज राजेन्द्र मिश्र के कथा साहित्य में वर्णित लोक संस्कृति एवं लोक जीवन का अनुशीलन अपेक्षित है।

मूल शब्द : लोक संस्कृति, लोक जीवन, वर्ण व्यवस्था, आश्रम, रीति-रिवाज, लोक-संगीत, नृत्य, खान-पान।

शोध-पत्र

मनुष्य सामाजिक प्राणी है, अतः समूह में रहना पसन्द करता है। समाज से ही वह अनुशासन, मर्यादा, आचरण, व्यवहार आदि की शिक्षा प्राप्त करता है। जिन परिस्थिति, वातावरण, सभ्यता, संस्कृति में मनुष्य जीवन-यापन करता है, साहित्यान्वेषण करता है, अनुकूल एवं प्रतिकूल घटनाओं का अवलोकन करता है, तदनुरूप दृष्टिकोण का चित्रण उसके सृजन में दिखाई देता है। प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र की कृतियों में भी तात्कालिक सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक जीवन का चित्रण प्राप्त होता है।

कविराज पं. अभिराज राजेंद्र मिश्र का जन्म उत्तर प्रदेश के जौनपुर जनपद के निकट सई नदी (जिसे वाल्मीकि रामायण में स्यन्दिका नदी कहा गया) के तट पर द्रोणिपुर नामक ग्राम में दिनांक 2 जनवरी 1943 (पौष कृष्ण पंचमी, शनिवार, सम्वत् 1999) को माता अभिराजी देवी मिश्र के गर्भ से हुआ। इनके पिता दुर्गा प्रसाद मिश्र जी ने पौरोहित्य, कृषिकार्य एवं भैषज्य-कर्म करते हुए आपका लालन- पालन किया। प्रो. मिश्र की राजकीय सेवा में प्रथम नियुक्ति इलाहाबाद विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में संस्कृत प्रोफ़ेसर के रूप में हुई। आप निरन्तर साहित्य साधना करते हुए सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

से कुलपति के पद से सेवानिवृत हुए।

मिश्र जी ने अपनी विद्वद्त्ता के द्वारा संस्कृत, हिन्दी एवं भोजपुरी तीनों भाषाओँ में साहित्य सृजन किया। अतः श्री आद्याप्रसाद मिश्र 'उन्मत्त' अवधी कवि ने कविराज मिश्र जी को 'संस्कृत हिंदी एवं भोजपुरी की त्रिवेणी' के नाम से सम्बोधित किया।

प्रोफेसर राजेंद्र मिश्र ने महाकाव्य, खण्डकाव्य, कथा, कविता नाटक, नाटिका, एकांकी, निबन्ध इत्यादि संस्कृत विधाओं में साहित्य सृजन किया, जो 'अभिराजवाङ्मय' में संकलित है। आपके द्वारा दो महाकाव्य (जानकीजीवनम् एवं वामनावतरणम्) तेरह खण्डकाव्य (आर्यान्योक्तिशतकम्, अभिराजसप्तशती, पराम्बाशतकम्, धर्मानन्दचरितम्, अभिराजसहस्त्रकम्, कस्मै देवाय हविषा विधेमरू, अरण्यानी, संस्कृतशतकम् इत्यादि), दो नाटक (लीलाभोजराजम् एवं प्रशान्तराघवम्), दो नाटिकाएँ (प्रमद्वरा तथा विद्योत्तमा), छ नवगीत संग्रह (वाग्वधूटी, मृद्वीका, श्रुतिम्भरा, मधुपर्णी, मत्तवारिणी आदि), सात एकांकी संग्रह जिनमे 42 एकांकी संकलित है, सात कथा संग्रह (इक्षुगंधा, कान्तार, अभिनवपञ्चतन्त्रम् आदि) तीन समीक्षा ग्रन्थ, निबंध संग्रह, कविताएँ (हिन्दी, संस्कृत एवं भोजपुरी भाषा में) तथा अनेक अप्रकाशित कृत्तियों का प्रणयन किया गया।

नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा से युक्त प्रो. मिश्र की मेधा शक्ति से अनुप्रेरित लेखनी से साहित्य की अविरलधारा निरन्तर बहती रहीं हैं। अतरू कवि मिश्र जी कालिदास सम्मान, वाल्मीकि पुरुस्कार, साहित्य अकादमी सम्मान, दिल्ली संस्कृत अकादमी सम्मान, राजस्थान संस्कृत अकादमी सम्मान, वाचस्पति सम्मान तथा राष्ट्रपति सम्मान इत्यादि अनेक सम्मान एवं पुरुस्कारों से विभूषित है। कविराज के वृहद् कृत्तित्व पर अब तक चालीस से अधिक शोधकार्य किये जा चुके है तथा कई शोध कार्य गतिमान है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है, अतरू कविगण इससे अछूते नहीं है। प्रायः सभी कवियों के द्वारा तत्समय की परिस्थिति, घटना, मूल्य, मानवीय गुण, रीति-रिवाज, खान-पान, व्रत-उत्सव, पर्व-त्योहार आदि के द्वारा तात्कालिक लोक जीवन एवं लोक संस्कृति का सूक्ष्म अथवा वृहद् रूप में प्रतिबिम्बन किया है।

लोक संस्कृति से तात्पर्य सामान्य जन समुदाय की पारम्परिक जीवन शैली, रीति-रिवाज, खान-पान, भाषा, कला, संगीत, नृत्य, धर्म, साहित्य, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक निरन्तर संचारित होती रहती है। यह स्थानीय परिवेश, पर्यावरण, जीवन शैली का प्रतिबिम्ब होती है, जिसमें परिस्थिति अनुसार परिवर्तन होते रहते है। प्रो. मिश्र के कथा साहित्य में तात्कालीन लोक संस्कृति के विहंगम दृश्य प्राप्त होते है, जिनका वर्णन दृष्टव्य है।

वर्ण व्यवस्था

वैदिक काल में कर्म-अनुसार मानव समाज को चार वर्गो में विभाजित किया गया था -ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शुद्र। कालान्तर में शास्त्रों में इनकी मनगढ़ंत व्याख्या कर इसे जन्माश्रित बना दिया गया जिसके कारण समाज में वैमनस्य, अव्यवस्था, वर्ग-संघर्ष इत्यादि का जन्म हुआ।

प्रो. मिश्र की कथाओं में तात्कालीन वर्ण व्यवस्था का खण्डन कर इसे कर्माश्रित माना है। "साक्ष्यम्" कथा के अनुसार नोखईराम नाम का हरिजन हलवाह वृत्ति से तथा उसकी पत्नी बकरीपालन (वैश्य कर्म) के द्वारा अपना जीवन निर्वाह करते है। इस प्रकार तत्समय में शास्त्र वर्णित वर्ण व्यवस्था के स्थान पर मिश्र वर्ण-व्यवस्था का चित्रण किया गया है।

"जात्या हरिजनों नोखईरामरू हलवाहवृत्त्या जीवनं यापयतिस्म। तस्य पत्नी कपूराऽपि छागीनामुदरपुरणार्थ मधुकाऽम्रादिनां पल्लवपर्णचयं सञ्चिन्वती दिवसमनैषीत।"[1]

आश्रम व्यवस्था

प्राचीन भारतीय सनातन परम्परा में मनुष्य के शतायु होने की कामना की गई है। साथ ही सौ वर्ष की दीर्घ आयु को व्यवस्थित करने हेतु इसे चार भागों में विभाजित कर दिया जिन्हें शास्त्रों में क्रमशः ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा सन्यास

आश्रम के नाम से जाना जाता है। पूर्व में यह व्यवस्था सुदृढ़ थी, अतरू समाज के सभी वर्ग इसका पूर्णतः पालन करते थे। किन्तु वर्तमान समय में यह व्यवस्था लगभग समाप्त हो चुकी है। लोग आडम्बरयुक्त होकर सन्यासी, ब्रह्मचारी होने का स्वांग करते है, जबकि मन-मस्तिष्क एवं शरीर से सांसारिक भोग लिप्सा में रत रहते है।

कविराज मिश्र "ऊर्ध्वरेता" कथा में एक ऐसे ही सन्यासी पात्र का वर्णन करते है जो लोगों के समक्ष स्त्री सम्पर्क से विरक्त (ऊर्ध्वरेता) होता है, किन्तु उसके द्वारा आश्रम में सेवा कार्य करने वाली एक सुशिक्षित युवती गर्भवती हो जाती है।

"कतिपयमासानन्तरमाश्रममुपेत्य मया काचिद्युवतिस्तत्र दृष्टा ममाशङ्का न वैतथ्यमुपजगाम यत्सा युवातिर्गर्भिणी सञ्जाता स्वामिकृपया।"[2]

'संस्कार'

भारतीय संस्कृति के अनुसार मनुष्य को सुसंस्कारित करने हेतु सोलह संस्कारों की व्यवस्था की गई थी, किन्तु वर्तमान युग में अनेक संस्कृतियों के मिश्रण से यह व्यवस्था अब शिथिल हो चुकी है। तदपि कुछ संस्कार आज भी पुर्ववत् या परिवर्तित रूप में भारतीय जनमानस में प्रचलित जैसे गर्भाधान, नामकरण, चूडाकर्म, विवाह, अन्त्येष्टि इत्यादि।

प्रो मिश्र के कथा साहित्य में तात्कालिक समय में प्रचलित संस्कारों की अभिव्यक्ति दर्शनीय है। 'साध्वसम्' कथा में अन्त्येष्टि संस्कार का वर्णन प्राप्त होता है। जिसमे एक पुत्र अपनी माताजी की मृत्यु हो जाने पर श्रद्धा पूर्वक दाह संस्कार उपरान्त ग्यारह दिवस तक माताश्री की ओर्ध्वदैहिक शान्ति हेतु व्रत करता है तथा कुल पुरोहित जी गरुड़ पुराण का वाचन करते है।

"सा खलु महच्छ्रदया तन्मयीभावेन च मातुरंत्येष्टिं सम्पादितवान्। एकादशदिनानि यावत्प्रवार्तिष्यमाणमौर्ध्वदैहिककृत्यजातमपि शास्त्र्सम्मतं सम्पादयितुकामोऽसौ जयेष्टपुत्रत्वाद् व्रतं जग्राह। दाहकर्मानन्तरमेव कुलपुरोहितो गरुड़पुराणस्य वाचनं प्रारब्धवान्।"[3]

नारी-चित्रण

सनातन संस्कृति में नारी सदैव पुरुष की अर्धांगिनी रही है। जिस प्रकार एक पहिये से रथ का सञ्चालन नहीं किया जा सकता तद्वत मनुष्य जीवन भी विना स्त्री के सम्भव नहीं है। भारतीय शास्त्रों के अनुसार बिना नारी के पुरुष द्वारा किया गया कोई कर्म देवताओं को स्वीकार्य नहीं है। अतरू रामायण महाकाव्य में स्वयं विष्णु अवतार भगवान राम अश्वमेध यज्ञ में भगवती सीता के अभाव में स्वर्णमयी सीता का साथ लेकर यज्ञ सम्पन्न करते है। अतरू भारतीय शास्त्रों में कहा गया है–

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।'[4]

किन्तु स्वतंत्रता के समय तक नारी की दशा अत्यधिक दयनीय हो गई थी। दहेज़, भ्रूण हत्या, शारीरिक प्रताड़ना, वैधव्य परिपालन इत्यादि प्रकार से नारी उत्पीडन किया जाता था। प्रो. मिश्र की कथाओं में तात्कालिक नारीगत समस्याओं का चित्रण प्राप्त होता है। कविराज "शतपर्विका" कथा में वर्णित करते है कि एक व्यक्ति पुत्र की चाह में सात पुत्रियों को जन्म देता है, किन्तु पुत्र की अभिलाषा से वह उन पुत्रियों से घृणा करता है, उनका तिरस्कार करता है। एक दिवस अपनी पुत्रियों के गुणों से प्रसन्न वह पुत्र-पुत्री के भेद से मुक्त हो जाता है।

"अभुतपूर्व दृश्यम्। अद्य प्रथमवारं रामलालः सन्ततिस्नेहसौख्यमनुभवतिस्म। सौभाग्यवति! शतपर्विका इव में तनूजा। यथा हरितवर्णा शतपर्विका गृहद्वारसुषमां संवर्धयति, आत्मारामतयाऽपोषिताऽपि अनभिषिक्ताऽपि अरक्षिताऽपि स्वादृष्टबलेनैव पुनर्नवतामुपैति नित्यहरिता च संलक्ष्यते तथैव पुत्र्योऽपि में वर्तन्ते।"[5]

सामाजिक जीवन

प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र का जन्म यद्यपि स्वतंत्रता से पूर्व हो चुका था तदपि उनका काव्य सृजन समय स्वातंत्र्योत्तर युग माना जाता है। तात्कालीन समय में भारत देश अंग्रेजी दासता से तो मुक्त हो चुका था किन्तु बेरोजगारी भ्रष्टाचार, दहेज़

प्रताड़ना, भ्रूण हत्या, इत्यादि स्थानीय विपदाओं से आतंकित था।

प्रो. मिश्र अपनी कथाओं के माध्यम से संयुक्त परिवार, वृद्धजनों की सेवा, टूटते-बिखरते परिवार, सम्पत्ति का बंटवारा आदि तात्कालीन समाज की स्थितियों का वर्णन कर उनके समाधान भी प्रस्तुत करते है। आपकी कथाओं में वात्सल्य, बन्धुता, मधुरता, सहिष्णुता, सहानुभूति आदि भावनाओं का मनोरम चित्रण प्राप्त होता है।

प्रो. मिश्र 'वन्ध्या' कथा में वर्णन करते है कि रामदत्त के संतानहीन होने के कारण उसके भाई उसकी सम्पति का बटवारा करना चाहते है। उसकी पत्नी को देवरानी जेठानी तरह तरह के उलाहने देकर अपमानित करती हैं। इस प्रकार यहाँ पर आधुनिक समाज में व्याप्त धन लोलुपता, स्वार्थ सिद्धि, अबंधुता आदि दुराचारों के द्वारा गिरते पारिवारिक मूल्यों पर कटाक्ष किया गया है। तदनन्तर एक दिवस रामदत्त के भाई बन्धु चकबन्दी कार्यालय पहुंचकर उसे सम्पत्ति का बटवारा करने हेतु विवश करते है, किन्तु रामदत्त कहता है कि उसकी पत्नी गर्भवती है, जिससे सम्पूर्ण परिवार अचम्भित हो जाता और उनका षड्यंत्र धराशायी हो जाता है

"श्रीमन् परमेश्वरस्याऽनुकम्पा जाता। भवत्प्रसन्नतायै हर्षवृत्तमिदमत्रैव प्रकाशये यद् धर्मपत्नी में सम्प्रति गर्भवती। मन्ये पञ्च मासान्तरं कुलदीपं कुलदीपिकां वां जनयिष्यति।"[6]

पर्व-त्योंहार

पर्व-त्योंहार-उत्सव आदि मनुष्य के मन में प्रसन्नता का संचार करने वाले होते है। प्राचीन समय से ही फसल पककर घर आने पर या अन्य कोई दैविक कार्य होने पर मानव अपनी प्रसन्नता को एक-दुसरे से के साथ ज्ञापित करने हेतु इनका आयोजन करता था। पर्व त्योंहार मानव मस्तिष्क में चल रहे गतिरोध को समाप्त कर प्रगति की ओर अग्रसर करते है।

प्रो. मिश्र की कथाओं में तात्कालीन पर्व-त्योंहार-उत्सव-व्रत आदि का वर्णन प्राप्त होता है।

'नर्तकी' कथा में विवाहोत्सव के मध्य द्वाराचार नामक रस्म का वर्णन प्राप्त होता है, जिसमे वर पक्ष के लोग सूर्यास्त के समय में वधु पक्ष के द्वार पर आते है तथा दोनों पक्ष के पुरोहित मन्त्रोच्चारण करते हुए गौरी-गणपति, नवग्रह इत्यादि की पूजा अर्चना करते है–

"ग्रामीणे वैवाहिककार्यक्रमे सर्वमग्रेसरति सोपानपरम्परया। सूर्यास्तवेलायामेव द्वारचाररू सञ्जायते। वरयात्रिणरू समायान्ति वधू द्वारे। उभयपक्षियौ पुरोहितौ गौरीगणपतिनवग्रहादि पूजनं कारयन्ति।"[7]

रीति-रिवाज

प्रो. मिश्र ने अपनी विद्वता के द्वारा न केवल भारत में अपितु अन्य विभिन्न देशों की यात्राएँ की। अतरू उनकी कृत्तियों में न केवल भारत वर्ष अपितु अन्य देशों में प्रचलित रीति रिवाजों का भी उल्लेख मिलता है। यथा - 'मृतभूपोज्जीवनकथा' में बालि द्वीप में भाई-बहिन ही पति पत्नी बनकर अपनी वंश परम्परा को आगे बढ़ाते थे, किन्तु कुछ ही समय पश्चात् यह परम्परा समाप्त हो गई।

"अथ प्रभूतकाले व्यतीते सती इन्द्रादिदेवारू नारिकेलपुष्प रक्षितमात्मानं यमजं कृतवन्तः। वर्धितौ तौ यमजावेव दम्पतिभूय बालीद्वीपाधिपत्यमुपजगाम। परन्तु सप्तमो यमजरू पुत्ररू स्वभागिनीं कुरुपां कृष्णवर्णाञ्च परिणेतुं नैच्छत्। ततः परम्परेयं छिन्ना।"[8]

खान-पान

प्रो. मिश्र के कथा साहित्य में खान-पान एवं भोजन को विशेष आदर दिया जाता था। भोजन के द्वारा अतिथि सम्मान एवं अनाहूत प्रविष्ठ अतिथि का अपमान भी होता था।

'वाग्दत्ता' कथा में भोजन को सर्वप्रथम एवं तदुपरान्त अन्य कार्य करने का उल्लेख किया गया है–

"जेनि! सर्वं विहाय भोक्तव्यम्। अनेनैतदुक्तं भवति यत्प्रथमं पश्चादन्यत्सर्वम्। शास्त्राऽदेशोऽयम्।"[9]

'एकहायनी' कथा के अनुसार अतिथि को जल से पूर्व मिष्ठान्न खिलाने का वर्णन प्राप्त होता है।

"तूर्णमेव शरावं किञ्चिद् गृहनिर्मितं मिष्ठान्नं निधाय समागच्छत् काष्ठफलकोपरि विन्यस्यन्ती चावदत् एतज्जनन्या गृह एव निर्मितम्। खादतु भवान्। अहं तावज्जलमानयामि।"[10]

'अनाख्याता बाणभट्टकथा' में कवि बाणभट्ट द्वारा अतिथि को भोजनोपरान्त लोंग, इलायची एवं बिल्व जूस का पान करने का उल्लेख है—

"बिल्वपाकं भवत्स्नुषया निर्मितं सुनन्दया चानीतम्। एलालवङ्गमचिचादिमिश्रितं बिल्वपाकं निपीय विचित्रैव कापि संस्फुर्तिर्मयाऽनुभुता।"[11]

साहित्य-संगीत-नृत्य

नृत्य, गीत, संगीत, साहित्य आदि मनुष्य के मनोरंजन के प्रमुख साधन माने जाते रहें हैं। मिश्र जी कथाओं में तत्समय में सामान्यजन की संगीत, नृत्य, आदि कलाओं में विशेष रुचि का चित्रण प्राप्त होता है—

"सुखशयितप्रच्छिका' में कथा की नायिका सुभद्रा स्नातक में संस्कृत, अंग्रेजी एवं संगीतशास्त्र का अध्ययन कराती है।

'ताम्बुलकरङ्कवाहिनी' कथा में राजकवि हस्तिमल्ल विविध शास्त्रों में निष्णात था।

कृष्ण के समय में यशोदा तथा वर्तमान समय में भी माताएं अपने पुत्र पुत्रियों को लोरी (शिशुनिद्रागीत) सुनाती रहीं हैं। अतः प्रो. मिश्र 'लयेरिका' कथा में लोरी को परिभाषित करते है—

"लयेन गीतरागेण ईरयति शिशुं निद्रातुं प्रेरयति इति।"[12]

वहीं अवसरानुकूल कविराज मिश्र जी ने स्वरचित गीतों का भी समावेश कथाओं में किया है।

'सङ्कल्प' कथा में नायिका (पत्नी-ममता) अपने पति के मनोविनोद हेतु गीत सुनाती है—

"प्रियस्मृतिरागता रुदितम्मयाऽलम्।
गतां शयनाय तत्र स्मृतिरवाप्ता।।"[13]

'रागङ्गा' कथा में प्रो. मिश्र बालिद्विप में प्रचलित विभिन्न नृत्यों के विषय में वर्णन करते है।

लेगांग कोमलाङ्गी कन्याओं द्वारा प्रस्तुत किया जाने वाला नृत्य जो लास्य का भेद है।

"अतिकोमल कोमलाङ्गिभिः कन्याभिः प्रस्तूयमानः लास्यः भेदः।"[14]

संघयाँघ - मन्दिर के पुरोहित द्वारा

"केवल मन्दिर पुरोहितभिः पलितचिकुराभिरवनतकपोलमण्डलाभिः प्रस्तूयमानो दैवतावेशमयो नृत्यभेदः।"[15]

बरीस- युद्धाह्वानात्मक नृत्य

"युद्धाह्वानात्मको नृत्यभेदः"[16]

निष्कर्ष

प्रो, कविराज अभिराज राजेंद्र मिश्र के कथा साहित्य में तात्कालीन सभ्यता, संस्कृति, सामाजिक संरचना एवं जीवन दर्शन का सहज एवं सम्यक बोध प्राप्त होता है। कविराज की कृतियों में लोक जीवन एवं लोक संस्कृति के अभिनव स्वरुप के दर्शन होते है। कविराज अपने साहित्य में जहाँ एक ओर सामाजिक कुरीतियों से परिचय करवाते है वहीं उन समस्याओं का समुचित निराकरण भी प्रस्तुत करते है। वस्तुतरू अभिराज राजेंद्र मिश्र के साहित्य जगत् में लोक चेतना एवं लोक दर्शन का प्रकाशन डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी के काव्यलक्षण 'काव्यं लोकानुवर्ततम्' का शत प्रतिशत अनुसरण करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अभिराज राजेंद्र मिश्र, साक्ष्यम् पृ. स. 26)
2. अभिराज राजेंद्र मिश्र, ऊर्ध्वरेता पृ. स. 65
3. अभिराज राजेंद्र मिश्र, साध्वसम्' पृ. स. 56
4. मनुस्मृति 3/56
5. अभिराज राजेंद्र मिश्र, शतपर्विका पृ. स. 96
6. अभिराज राजेंद्र मिश्र, वन्ध्या पृ. स. 108
7. अभिराज राजेंद्र मिश्र, 'नर्तकी' पृ.स.77
8. अभिराज राजेंद्र मिश्र, 'मृतभूपोज्जीवनकथा' पृ.स.7
9. अभिराज राजेंद्र मिश्र, 'वाग्दत्ता'. पृ.स.66
10. अभिराज राजेंद्र मिश्र, 'एकहायनी'. पृ.स.76
11. अभिराज राजेंद्र मिश्र, 'अनाख्याता बाणभट्टकथा'. पृ. स.138
12. अभिराज राजेंद्र मिश्र, 'लयेरिका'. पृ.स.39
13. अभिराज राजेंद्र मिश्र, 'सङ्कल्प' . पृ.स.53
14. अभिराज राजेंद्र मिश्र, 'रागङ्गा'. पृ.स.108
15. अभिराज राजेंद्र मिश्र, 'रागङ्गा'. पृ.स.108
16. अभिराज राजेंद्र मिश्र, 'रागङ्गा'. पृ.स.108

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

गिरधर शर्मा नवरत्न : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

डॉ. मनीलता पचानौत
सहायक आचार्य, संस्कृत,
राजकीय कन्या महाविद्यालय, बूंदी, राजस्थान।
मोबाइल नंबर 90791 87627, ईमेल आई डी latamani21@gmail.com

भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत साहित्य को गौरवान्वित करने वाले मनीषियों में कविवर गिरिधर शर्मा नवरत्न का नाम आदर के साथ लिया जाता है। इनका जन्म झालावाड़ मंडल के झालरापाटन नगर में ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी 2038 विक्रम संवत तदनुसार दिनांक 6 जून 1881 ई. रविवार को सिंह लग्न में हुआ था। इनके पिता झालावाड़ के राजगुरु श्री ब्रजेश्वर शर्मा थे। इनकी माता का नाम पन्ना देवी था।[1]

गिरधर शर्मा नवरत्न को प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा अपने पिता श्री बृजेश्वर शर्मा से प्राप्त हुई। तदन्तर इन्होंने जयपुर नगर में संस्कृत और हिंदी साहित्य का अध्ययन किया। गुजराती भाषा इनकी मातृभाषा थी इसलिए इन्होंने गुजराती को रुचिपूर्वक पढ़ा और गुजराती भाषा में लेखन कार्य भी किया। तत्पश्चात् ज्ञान पिपाशा की शांति के लिए ये काशी चले गए। वहां पर इन्होंने आयुर्वेद, संस्कृत, प्राकृत, हिंदी, फारसी, बंग्ला, उर्दू तथा अंग्रेजी का अध्ययन किया। वहां पंडित शिवकुमार शास्त्री, महामहिम गंगाधर शास्त्री के सानिध्य में अध्ययन कार्य संपन्न किया।

जब वे काशी में विद्या का अध्ययन कर रहे थे तभी उनके पिता श्री ब्रजेश्वर शर्मा का अचानक देहांत हो गया। पिता के दिवंगत होने के कारण उनके विद्या अध्ययन में अवरोध उत्पन्न हो गया। इसलिए वे काशी छोड़कर वापस अपने घर आ गए। यहां आने के बाद झालावाड़ नरेश श्री भवानी सिंह ने ब्रजेश्वर शर्मा के निधनोंपरान्त उनके पुत्र श्री गिरधर शर्मा नवरत्न को राजगुरु पद पर आसीन किया एवं श्री भवानी सिंह की सत् प्रेरणा से ही गिरधर शर्मा नवरत्न ने साहित्य आराधना प्रारंभ की। इन्हें अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन का वाचस्पति सम्मान भी प्राप्त हुआ। इन्होंने झालरापाटन नगर से विद्या भास्कर नामक हिंदी पत्र का संपादन भी किया। इनका कार्य क्षेत्र बहुत विस्तृत और बहुविध था किंतु देवीय प्रकोप से उनके जीवन का उत्तरार्ध भाग नेत्र ज्योति कमजोर होने के कारण अपने घर में ही व्यतीत हुआ। 1 जुलाई 1961 को श्री नवरत्न अपनी पार्थिव देह त्याग कर मृत्यु को प्राप्त हुए।[2]

कृतित्व

इन्होंने हिंदी, संस्कृत आदि विभिन्न भाषाओं में 30 से भी अधिक ग्रन्थों की रचना की है। इनमें से 12 ग्रंथ अभी भी प्रकाशन की प्रतीक्षा में है। आपकी प्रकाशित रचनाएं निम्न प्रकार हैं—

1.अमर सूक्ति सुधाकर 2. श्री भवानी सिंह कारकरत्न 3. श्री भवानी सिंह सद्वृत्त पुष्पगुच्छ 4. नवरत्न नीति 5. गिरधर सप्तसती 6. प्रेमपयोधि 7. अभेदरस 8. जापानविजय 9. ईश्वर प्रार्थना 10. योगी 11. न्यायवाक्य सुधा 12. सौरमंडल इनमें से ज्यादातर रचनाएं उपलब्ध हैं।

इनके प्रकाशित ग्रंथों की अपेक्षा अप्रकाशित ग्रन्थों की रचना अधिक है जैसे नागरतंत्र, करीमा, करूण प्रशस्ति, चाणक्य सूत्र कारिका, श्रमचतुः विंशति, आत्मनिवेदन, गीतांजलि, नक्षत्रमाला, प्रश्नोत्तरमाला, नीतिसौंदर्योद्यानम्, नवरत्नोपदेश, सूर्यशतक टीका, नवरत्न सुभाषितानि, भारतवंदना, राजस्थानवंदना, धारावंदना, कारकनवरत्नम्, गंगाष्टकम्, रत्नज्योत्स्नाष्टकम्, बालकृष्णाष्टक आदि के प्रकाशन के लिए पंडित गिरधर शर्मा नवरत्न की पुत्री शकुंतला कुमारी भी प्रयासरत रही है।[3]

नवरत्न जी गीतांजलि से अत्यंत प्रभावित थे। इन्होंने इसका हिंदी अनुवाद किया। ब्रज भाषा में नंददास विरचित भ्रमर गीत का उसी छंद में संस्कृत में रूपांतरण किया है। यह प्रेम पयोधि के नाम से प्रकाशित है। उमर खैयाम की रूबाइयों का भी इन्होंने संस्कृत में अनुवाद किया। यह अमर सूक्ति सुधाकर के नाम से प्रकाशित हुआ है।

इनकी रचनाओं में श्री कृष्णास्तवः, श्री बाल कृष्णस्तवः और श्री गंगा स्तवः जैसे स्रोत काव्य हैं। जापानविजय, अभेदरस, सौरमंडल, स्मृतिवेदना, स्वदेशाष्टकम्, समृद्धपुष्पगुच्छ, कारकरत्नम् आदि हैं। उनकी समग्र 700 रचनाओं का संकलन गिरधर सप्तशती के नाम से प्रकाशित हो चुका है।[4]

नवरत्न जी की 20 रचनाएं 20वीं सदी के पूर्वार्ध में निकलने वाली सभी प्रतिष्ठित संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं में छपी थी। संस्कृत चंद्रिका (शोलापुर महाराष्ट्र) संस्कृत रत्नाकर(जयपुर), सुप्रभातम्, (काशी) आदि पत्र इनकी रचनाएं बड़े आदर के साथ छापते थे। इनकी अनेक संस्कृत कृतियां अभी भी अप्रकाशित हैं। इनमें कुछ तो नीति के पद्य है, कुछ स्तुतियां हैं, और कुछ अनुवाद है, आत्म निवेदनम्, प्रश्नोत्तररत्नमाला, यायावाक्सुधा आदि अनेक ऐसी पांडुलिपियां प्रकाशन की प्रतीक्षा में है।[5]

पंडित गिरधर शर्मा नवरत्न की रचनाओं का संक्षिप्त विवरण

श्री नवरत्न महोदय की प्रारंभिक काव्य रचना का जयपुर से प्रकाशित साहित्यिक पत्र में उल्लेख मिलता है। डॉ. प्रभाकर शास्त्री महोदय ने स्वरमंगला पत्रिका में नवरत्न जन्मशती विशेषांक में उनकी रचनाओं का संग्रह किया है। कवि ने संस्कृत में गजलों की रचना भी की थी। इन कविताओं की रचना का समय 20वीं शताब्दी का प्रथम दशक माना जाता है। उनकी रचनाओं को निम्न बिंदुओं में विवेचित किया जा सकता है–

1. श्रीभवानीसिंहकारकरत्नम्-सन् 1924 में पंडित गिरधर शर्मा नवरत्न ने अपने आश्रयदाता झालावाड़ नरेश को प्रसन्न करने के लिए संस्कृत व्याकरण को आधार बनाकर कारक, विभक्ति, धातु आदि का वर्णन किया है। इस ग्रंथ में नवरत्न जी ने गद्य-पद्य दोनों ही विधाओं में व्याकरण ग्रन्थ की रचना की है। व्याख्या भाग में श्री गिरधर शर्मा नवरत्न का व्याकरण का पाण्डित्य प्रदर्शन किया है। प्रस्तुत कृति में झालावाड़ नरेश का गुणगान करते हुए संस्कृत व्याकरण के कारकों तथा विभक्तियों का व्यावहारिक प्रदर्शन भी किया है।[6]

2. अमर सूक्ति सुधाकर- 1922 में प्रकाशित यह काव्य विश्व प्रसिद्ध पारसी कवि उमर खैयाम की रचना रूबाइयों का संस्कृत श्लोकों का रूपांतरण है।

3. प्रेमपयोधि- पंडित गिरधर शर्मा ने ब्रजभाषा में नंददास रचित भ्रमर गीत का उसी छंद में रूपांतरण किया है। यह प्रेम पयोधि नाम से प्रकाशित है।

4. श्रीभवानीसिंह-सद्वृत्तपुष्पगुच्छ-1926 में प्रकाशित यह रचना छंद विषयक रचना है। 70 पद्यों में संस्कृत छंदों के लक्षणों का प्रतिपादन किया गया है।

5. करुणप्रशस्ति- आंग्लकवि रॉबर्टग्रेममहोदय एलिजी रिटन इन दि कंट्री चर्चयार्ड शोक गीति का संस्कृत अनुवाद किया। इसमें 32 श्लोक है, जिसमें स्त्रग्धरा छंद है।

6. गीतांजलि- विश्व प्रसिद्ध नोबेल पुरस्कार से सम्मानित वागीश कवि रवींद्र नाथ ठाकुर की अमर रचना गीतांजलि का संस्कृत भाषा में रूपांतरण श्री गिरधर शर्मा नवरत्न ने किया है।[7]

7. गिरधरसप्तशती- वि. सं. 2014 में प्रकाशित कृति नवरत्न महोदय की प्रमुख काव्य रचना है। सप्तशती परंपरा पर आधारित समग्र 700 रचनाओं का संकलन गिरिधर सप्तशती के नाम से प्रकाशित हो चुका है। यह काव्य नीतिपरक है। इसमें आर्या छंद का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत काव्य में कवि ने परिवार, समाज, राष्ट्र, व्यक्ति के जीवन के विविध प्रश्नों

और समस्या को अधिकृत करके सरस व सरल भाषा में अपने विचार व्यक्त किए गए हैं। इसमें उन्होंने संस्कृत के महत्व को इस प्रकार चित्रित किया है–

नाना देशे नाना भाषा रम्या प्रिय विराजन्ते।
किन्तु वदामस्यत्य स्वारस्य संस्कृतस्यायत।।[8]

विभिन्न देशों में अनेक अनेक सुंदर भाषण विद्यमान है पर हम सत्य कहते हैं की संस्कृत का अपना ही कुछ विलक्षण सौंदर्य है।

8. षोडशी-यह स्तुति परक काव्य है। प्रारंभ के आठ श्लोकों में बालकृष्ण के सात रूपों का सुंदर चित्रण किया गया है।

9. श्री वल्लभ- पुष्टिमार्गीय आचार्यों में अनंतश्री वल्लभाचार्यों की वंशावली का वर्णन है।[9]

10. चाणक्यसूत्रकारिका-इस ग्रंथ में आचार्य चाणक्य के सूत्रों को कारिका के रूप में प्रतिपादित किया गया है।

11. प्रश्नोत्तरमाला-इस ग्रंथ में प्रश्नोत्तरात्मक 150 पद्यों में आधुनिक भारत का चित्रण है।

12. रत्नज्योत्स्नाष्टकम्-नवरत्न जी के लिए यह रचना अपनी द्वितीय पत्नी रतनजोत को समर्पित की है। इनकी दो पत्नियां थी प्रथम पत्नी नोरती के नाम के आधार पर गिरधर ने अपना उपनाम नवरत्न रखा। प्रथम पत्नी के दिवंगत हो जाने पर रतनजोत को द्वितीय पत्नी के रूप में स्वीकार किया। प्रस्तुत काव्य के आठ पद्यों में नवरत्न जी ने अपनी द्वितीय पत्नी रतनजोत के लिए अपनी भावों को प्रकट किया है।

13. श्रीभक्तामरम्-यह समस्या पूर्ति परक काव्य है, यहां नवरत्न जी ने प्रारंभिक तीन चरणों में समाधान प्रस्तुत कर चतुर्थ चरण को समस्या के रूप में प्रस्तुत किया है।

14. नीतिसौंदर्योद्यानम्-यह कृति फारसी कवि शेखसादी की गुलिस्तां नामक रचना का संस्कृत अनुवाद है। इसमें 25 नीतिकथाओं का संस्कृत अनुवाद किया गया है।

15. श्रीगंगाष्टकम्-यह गंगा नदी की अष्टश्लोकों की स्तुति है।

16. नवरत्नोपदेशः-इस काव्य में 27 नीतिपरक पद्य हैं।

17. नागरतंत्रम्-यह काव्य रचना नागरिक शास्त्र पर आधारित है।[10]

श्री गिरधर शर्मा के काव्यों की काव्यगत विशेषताएं

नवरत्न मूलतः मुक्तक कवि थे। उनके काव्य की मुख्य विशेषता नीति वर्णन है। इन्होंने अपने युग की सामाजिक परिस्थितियों को देखकर नीति तत्वों में नवीनता का समावेश किया है। इनकी काव्यगत विशेषताओं को निम्न बिंदुओं में वर्णित किया जा सकता है–

1. आदर्श नृप गुणस्तुति- झालावाड़ नरेश श्री भवानी सिंह सद्गुणी, सद्वृत्ति, स्नेहशील भावना वाले थे। झालावाड़ नरेश के गुणों का वर्णन तीन कृतियों में विशेष रूप से वर्णित है। क्रमशः श्री भवानी सिंह कारक रत्न, श्री भवानी सिंह सद्वृत्तपुष्पगुच्छ, न्याय वाक्सुधा। श्री गिरधर शर्मा के मतानुसार भवानी सिंह न केवल आश्रयदाता थे बल्कि आदर्श प्रजापालक और शासक भी थे। उनके शौर्य, पराक्रम, लोक कल्याण की भावना, सहृदयता, प्रजावात्सल्य आदि गुणों की कवि ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। स्तुति करते हुए कहा है कि–

त्वं कर्ता विदुषां हितस्य जगति त्वं कर्म वीरोन्नतः
शुद्धं ते करणं बुधैरभिमतं त्वत्संप्रदानं महत्।
नापादानमना जनाधिकरणप्रेमा भवानी-विभो
त्वं तत्तवां कविकिंकरो गिरिधरोऽसौ वक्ति सत्कारम्।[11]

2. राष्ट्रीय भावना- भारत वंदना के लिए कवि ने चार पद्यों का एक लघु काव्य मातृभूमि के लिए सर्वस्व समर्पण

की भावना प्रकट करने एवं राष्ट्र की अनेक प्रकार से सेवा करने के लिए लिखा है। वे राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत थे। उनकी राष्ट्रीय भावना का यह पद्य दृष्टव्य है—

देहों दृढो में प्रबलं च चेतः,
दिव्यानि कर्माणि विचारितानि।
विज्ञाननिष्ठा श्रुतजातमेतत
स्यादपितं भारतभूमि भूत्यै।।[12]

मातृभूमि वंदना कविता में कवि ने मातृभूमि के सांस्कृतिक स्वरूप को बताते हुए भावना पूर्ण वंदना की है। राजस्थान वंदना में कवि ने राजस्थान के भौगोलिक एवं प्राकृतिक स्वरूप का वर्णन किया है। राजस्थान के विभिन्न मंडलों का परिचय दिया है। वहां की शौर्यपरंपरा, युद्ध परंपरा तथा जनता के जीने की कला आदि का भावपूर्ण वर्णन किया है।

3. गरीबों के प्रति चेतना- कवि ने गरीबों के उत्थान के लिए अनेक कविताओं के माध्यम से देश की जनता को नव संदेश दिया है उन्होंने कहा है कि सबल पुरुष को निर्बल का शोषण नहीं करना चाहिए। उदाहरण दृष्टव्य है—

मूष्यो बिलानि विदधति तेषु भुजंगा वसन्ति शक्तिभृतः।
निर्बल-कृत-श्रम-फलं बलवन्तो भुञ्जते नितराम्।।[13]

4. नीति वर्णन- पंडित गिरिधर शर्मा नवरत्न मूलतः नीति पूर्ण कविताओं में निपुण कवि हैं। उनके काव्य में नीति के समक्ष सभी पक्ष गौण हैं। संस्कृत साहित्य में नीति पूर्ण विषयों को अधिक महत्व दिया गया है। पंडित गिरधर शर्मा नवरत्न का भी काव्य नीति पूर्ण है उन्होंने कवि जीवन का विवेक, समाज, दर्शन आदि का वर्णन किया है। प्रस्तुत उदाहरण में बताया गया है कि किस प्रकार दुर्जन व्यक्ति से भी सज्जनता का व्यवहार करना चाहिए-

गालीं ददाति चेत्ते कश्चिन्मा भूः कदापि खिन्नत्वम्।
गाली तस्यैव यशो विनाशयिष्यति, न ते कीर्तिम्।।[14]

नवरत्न जी की नीति विषयक रचनाओं में आर्योपदेशरत्नमाला, नक्षत्र माला, श्रमचतुर्विंशतिः, प्रश्नोत्तरमाला, गिरधर सप्तशती मुख्य है। यह सारी रचनाए मुक्त काव्य हैं। कवि ने प्रत्येक पद्य में नीतिरत कथनों, कहावतों का संग्रह किया है। नवरत्न जी की नीति विषयक रचनाओं में गिरिधरसप्तशती एवं नक्षत्र माला श्रेष्ठ हैं।

5. दार्शनिकता और भक्ति भावना-पंडित गिरधर शर्मा नवरत्न धार्मिक विश्वास की दृष्टि से वैष्णव मार्ग का अनुसरण करने वाले व्यक्ति थे। षोडशी कविता में कवि ने भगवान श्री कृष्ण की स्तुति का हृदय स्पर्शी वर्णन किया है।

श्रीनाथमानन्दमयं रसेशं
सर्वात्मकं श्रीनवनीतलालम्।
माधुर्यमूर्ति श्रीमथुरेशमीड्यं
नित्यं नमामः सततं नमामः।।[15]

6. अर्थ गौरव और आर्या छंद- अर्थगौरवं पंडित गिरधर शर्मा नवरत्न के काव्य की अमूल्य धरोहर है। उनके काव्यों का वैशिष्ट्य है। कवि ने छोटे-छोटे श्लोकों में गूढ़ अर्थ का प्रतिपादन किया है अर्थात् गागर में सागर भरा है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि श्री गिरधर शर्मा नवरत्न के काव्यों ने समाज के सभी पक्षों पर प्रकाश डाला है। यह अपने समय के सामाजिक, राजनीतिक परिवेश के निपुण पर्यवेक्षक थे। वस्तुतः उनके काव्य जीवन काव्य है उनके काव्य में धार्मिक निष्ठा, प्रजापालक, परोपकार एवं त्यागमय जैसी भावना का वर्णन हुआ है। झालावाड़ राज्य के उच्च कोटि के प्राचीन साहित्यकारों में पंडित गिरधर शर्मा नवरत्न का नाम परम आदर के साथ लिया जाता है।

संदर्भ सूची

1. पंडित गिरधर शर्मा नवरत्नरू व्यक्तित्व और कृतित्व, नंद चतुर्वेदी, शकुंतला रेणु, परिचय स्मृति यात्रा, पृष्ठ संख्या 5

2. राजस्थान के संस्कृत कृतिकार, शंकर लाल शास्त्री, पृष्ठ संख्या 103
3. राजस्थान के संस्कृत कृतिकार, शंकर लाल शास्त्री, पृष्ठ संख्या 105
4. राजस्थान के संस्कृत कृतिकार, शंकर लाल शास्त्री, पृष्ठ संख्या 105
5. पंडित गिरधर शर्मा नवरत्न रूव्यक्तित्व और कृतित्व, पृष्ठ संख्या 152-153
6. राजस्थान के संस्कृत कृतिकार, शंकर लाल शास्त्री, पृष्ठ संख्या 105-106
7. राजस्थान के संस्कृत कृतिकार, शंकर लाल शास्त्री, पृष्ठ संख्या 107, 108, 109
8. गिरधर सप्तशती, गिरधर शर्मा नवरत्न, 697
9. राजस्थान के संस्कृत कृतिकार, शंकर लाल शास्त्री, पृष्ठ संख्या 109
10. राजस्थान के प्रमुख संस्कृत मनीषी, डॉ मधुबाला शर्मा, पृष्ठ संख्या 27, 28, 29
11. राजस्थान के संस्कृत कृतिकार, शंकर लाल शास्त्री, पृष्ठ संख्या 110
12. राजस्थान के संस्कृत कृतिकार, शंकर लाल शास्त्री, पृष्ठ संख्या 110
13. राजस्थान के संस्कृत कृतिकार, शंकर लाल शास्त्री, पृष्ठ संख्या 112
14. राजस्थान के संस्कृत कृतिकार, शंकर लाल शास्त्री, पृष्ठ संख्या 112
15. राजस्थान के संस्कृत कृतिकार, शंकर लाल शास्त्री पृष्ठ संख्या 114

Rising Cybercrime in Chhattisgarh

Anju Mahobia D/o Vishwanath Mahobia
Department of Sociology
Govt. Gajanan Madhav Muktibodh college sahaspur lohara district kabirdham (C.G.)
Mobile No-7898556916
Email I'd -anjumahobia13@gmail.com

Cyber Crime refers to criminal activities carried out using computers, the internet, or other digital devices. These crimes often involve unauthorized access, data theft, online fraud, or causing harm through digital means.Cyber Crime is any criminal activity that involves computers, digital devices, or networks. It includes crimes where a computer is the target, such as hacking, and those where it is used as a tool, like spreading malware or committing fraud online

Types of Cyber Crime:

1. Hacking: Illegally accessing a computer system or network.
2. Phishing: Using fake emails or websites to steal sensitive information like passwords or credit card numbers.
3. Identity Theft: Stealing someone's personal data to impersonate them.
4. Cyber Bullying: Harassing someone through online platforms.
5. Online Fraud: Scamming people to steal money through fake online schemes or shopping websites.
6. Ransomware Attacks: Encrypting someone's data and demanding payment for its release.
7. Cyber Terrorism: Using technology to threaten or harm national security or spreate

Main Causes of Cyber Crime:

1. Increased Use of the Internet:

   Nowadays, almost everyone uses the internet, providing criminals with more opportunities to commit crimes.
2. Lack of Technical Knowledge:

   Many people are not aware of cyber security, making them easy targets for scams and fraud.
3. Weak Passwords and Security Measures:

   If people do not use strong passwords or two-factor authentication, hackers can easily

breach systems.

4. Lack of Government Surveillance:

   Often, the necessary resources and surveillance systems to catch cyber criminals are not adequate.

5. Use of the Dark Web:

   The dark web allows criminals to hide illegal activities, making it easier for them to evade detection.

6. Greed for Money or Gain:

   Cyber criminals typically steal personal information to make money or gain something.

7. Misuse of Social Media:

   People often share personal information on social media, which criminals can exploit.

8. Weak Cyber Laws Enforcement:

   In many countries, there are inadequate laws or enforcement mechanisms to prevent and tackle cyber crimes effectively.

Prevention Tips:

- Use strong, unique passwords and change them regularly.
- Enable two-factor authentication (2FA) wherever possible.
- Install and regularly update antivirus and anti-malware software.
- Avoid clicking on suspicious links or downloading unknown attachments.
- Be cautious while sharing personal or financial information online.

(A) Here are the key measures taken by the police to prevent cybercrime.

1. Establishment of Cyber Cells: Dedicated cyber cells are set up within police departments to investigate and handle cybercrime cases.
2. Technical Training: Police personnel are regularly trained in the latest digital technologies, tools, and techniques to trace and prevent cybercrimes.
3. Cyber Awareness Campaigns: Public awareness programs are conducted in schools, colleges, and online platforms to educate people about cyber threats and safe practices.
4. Cyber Forensic Labs: Advanced forensic labs are established to analyze digital evidence related to cybercrimes.
5. Helplines and Online Portals: Services like www.cybercrime.gov.in and helpline number 1930 are provided to report cybercrimes easily and quickly.
6. Collaboration with Other Agencies: Police collaborate with national and international agencies like CERT-In and Interpol for better coordination in cyber investigations.
7. Data Monitoring and Intelligence Gathering: Monitoring of internet activity, dark web, and social media platforms is done to detect suspicious behavior.

8. Strict Legal Enforcement: Strong legal action is taken under the IT Act and related cybercrime laws to deter offenders.

(B) The Government to prevent cybercrime:

1. Formation and Enforcement of Cyber Laws:

   The Government of India has enacted the Information Technology Act, 2000, which provides legal provisions and penalties for various cybercrimes. Amendments are made periodically to keep it updated.

2. Establishment of Cyber Crime Cells:

   Cyber Crime Cells have been established at both central and state levels to handle cybercrime cases effectively.

3. National Cyber Crime Reporting Portal:

   The government launched www.cybercrime.gov.in, where citizens can file online complaints related to cybercrimes.

4. Awareness Campaigns:

   The government conducts "Cyber Awareness" campaigns to educate the public through social media, schools, colleges, and public events.

5. Digital Security Education:

   Educational institutions and government programs now include topics on digital safety and cyber ethics.

6. Special Training and Technology:

   Law enforcement agencies are provided with advanced training and tools to investigate and combat cybercrimes.

7. CERT-In (Computer Emergency Response Team – India):

   CERT-In monitors cyber threats in the country and provides real-time responses to tackle them.

8. International Cooperation:

   India collaborates with other countries to share resources and intelligence to combat global cybercrime threats.

Cybercrime can affect people's lives in several ways, some of which include:

1. **Financial Loss**: Cybercrimes like online scams, credit card fraud, and bank account hacking can lead to significant financial losses for individuals. Victims can lose a substantial amount of money, which can take a long time to recover.
2. **Breach of Privacy**: Cybercrimes often involve hackers stealing personal information, such as identity details, passwords, or bank account information. This leads to a Breach of privacy, and sensitive data may be exposed or misused.
3. **Mental Stress and Anxiety**: Being a victim of cybercrime can cause mental stress, anxiety, and fear. Especially when personal data or crucial information is stolen, individuals can

experience a sense of insecurity and helplessness.

4. **Damage to Reputation**: Online fraud or the spreading of false information can damage an individual's or organization's reputation. This can negatively affect a person's career or personal life.
5. **Social and Family Issues**: Victims of cybercrime may face challenges in their social and family life, particularly when they become victims of fraud or their data is stolen, leading to trust issues or strained relationships.
6. **Legal Problems**: Cybercrimes can also lead to legal complications. Victims may have to deal with legal action, such as fraud investigations or data breaches, which can be time-consuming and costly.

Modulation Of Cerebellar Extracellular Matrix And Developmental Defects Induced By Perinatal Protein Malnutrition And Lps Exposure

Shatruhan
Research Scholars
Vikrant University Gwalior(MP) Department Of Zoology
Mo. No. 9131956176
Email- shatruhanr5@gmail.com

Dr. Vivek Kumar
Guide

Abstract :- The extracellular matrix (ECM) is a Energetic network of proteins and polysaccharides that provides structural and biochemical support to attached cells. Modulation of ECM is a important mechanism in regulating cell behavior, differentiation and apoptosis, this modulation occurs through multiple pathway, including enzymatic degradation of ECM components by matrix metalloproteinase. Post translation modification of ECM proteins. An interaction with sale surface receptor such a integrin's. Imbalance of ECM remodeling is implicated in numerous pathological conditions. Including cancer metastasis and cardiovascular disease. ECM composition and structure therapy improving disease outcomes and tissue regeneration. this review discussed the key regulatory mechanism of ECM modulation. The impact of ECM dynamics on cellular functions. And potential Therapeutic approaches to target ECM modify in disease context.

INTRODUCTION

Background

The cerebellum plays a critical role in motor coordination, cognitive processes, and learning, with its development depending on intricate and highly regulated mechanisms during the perinatal period. A central aspect of this development is the extracellular matrix (ECM), a complex network of proteins and signaling molecules that guide neuronal migration, differentiation, and synaptic connectivity. Any disturbance to the ECM during the critical stages of development can lead to significant impairments in cerebellar structure and function. Perinatal protein malnutrition and exposure to lipopolysaccharides (LPS), a bacterial endotoxin, are two such disturbances known to modulate the ECM adversely, resulting in developmental defects with far-reaching implications. Protein malnutrition during the perinatal period disrupts the synthesis and regulation of essential ECM components such as laminas, integrin's, and collagens. These molecules form the structural scaffold that supports neuronal migration and alignment in the cerebellum. Malnutrition reduces the production of matrix metalloproteinase (MMPs), enzymes necessary for ECM remodeling, impairing the flexibility and adaptability of this system. This disruption can interfere with critical processes such as the migration

of granule cells and the alignment of Purkinje cells, which are foundational to the proper functioning of cerebellar circuits. The resultant structural defects in the cerebellum can lead to motor and cognitive impairments that persist into adulthood.

Exposure to LPS during the perinatal period adds another layer of complexity by triggering neuron inflammation. LPS, derived from the outer membrane of Gram-negative bacteria, induces an immune response characterized by the release of pro-inflammatory cytokines such as interleukin-6 (IL-6 and tumor necrosis factor-alpha (TNF-á). These cytokines disrupt the composition and balance of the ECM, further impairing its ability to support cerebellar development. LPS exposure also elevates oxidative stress, which damages ECM proteins and exacerbates neuronal dysfunction. The inflammatory environment created by LPS can disrupt synaptic formation and neuronal migration, leading to structural anomalies in the cerebellum that contribute to deficits in motor coordination and learning abilities. When protein malnutrition and LPS exposure occur together during the perinatal period, their combined effects can be particularly severe. Malnutrition weakens the ECM's structural foundation, while LPS-induced inflammation accelerates its degradation. This combination disrupts critical signaling pathways such as integrin and reelin-mediated signaling, which are essential for the alignment and connectivity of cerebellar neurons. Furthermore, the interplay of these stressors alters neurotrophic factors, such as brain-derived neuron trophic factor (BDNF), which play a pivotal role in neuronal growth and plasticity. The cumulative effect of these disturbances leads to profound developmental defects in the cerebellum, with long-term implications for motor and cognitive functions.

These structural and functional deficits in the cerebellum manifest as observable behavioral impairments. Animal studies have demonstrated that subjects exposed to perinatal protein malnutrition and LPS exhibit poor motor coordination, deficits in spatial learning, and memory impairments. Such outcomes highlight the cerebellum's vulnerability during its critical periods of development and underscore the importance of preserving ECM integrity to ensure optimal neuronal organization and circuit formation. Molecular investigations into these developmental impairments reveal significant disruptions in key signaling pathways. For instance, the Want/â-catenin pathway, vital for cerebellar growth and differentiation, is adversely affected by both protein malnutrition and inflammatory responses induced by LPS. Additionally, the activation of microglia, the brain's resident immune cells, by LPS leads to the release of enzymes that degrade ECM components. These insights suggest that the interactions between nutritional and inflammatory factors create a hostile environment for cerebellar development, amplifying the risks of structural abnormalities and functional deficits.

Efforts to mitigate these developmental challenges require targeted interventions. Nutritional strategies, such as protein supplementation during pregnancy and lactation, can help preserve the integrity of the ECM and support normal cerebellar development. Anti-inflammatory therapies, particularly those aimed at modulating cytokine activity, may reduce the neuron inflammatory effects of LPS exposure. Emerging approaches, including the use of synthetic ECM scaffolds or ECM-modulating biomaterials, hold potential for restoring balance in cases of disrupted development. These interventions, when implemented early, could mitigate the adverse effects of perinatal stressors and improve outcomes for individuals at risk of neurodevelopmental disorders. Future research should prioritize understanding the complex interplay between nutritional deficiencies and inflammatory stimuli in shaping cerebellar development. Long-term studies investigating the behavioral and cognitive

impacts of these stressors are essential for identifying potential therapeutic windows. Moreover, advancements in imaging and molecular techniques could provide a deeper understanding of ECM dynamics and their role in neurodevelopmental processes. By unraveling these mechanisms, researchers can develop more effective strategies to address the developmental defects associated with perinatal protein malnutrition and LPS exposure.

LITERATURE REVIEW

Franco, Patsy et al., (2021) This study tested the theory that a poor intrauterine environment due to maternal under nutrition (MUN) programmed mild hypoxic-ischemic (HI) injury susceptibility and long-term functional changes in the neonatal cerebrovasculature via corticosteroid-dependent and -independent pathways. The rats in the MUN and MUN-metyrapone (MUN-MET) groups were given a diet that was 50% of what a pair-fed control group ate from day 10 of gestation until term. Additionally, from gestational day 11 until term, the rats in the MUN-MET groups were given water that contained MET (0.5 mg/mL), an inhibitor of corticosteroid synthesis. Unilateral carotid ligation was performed on P9/P10 pups, and 1.5 hours later, they were treated with 8% oxygen (HI). This procedure was repeated 24 hours later. The variations in circulation levels of corticosterone generated by MUN, MET, and HI were measured using an ELISA. T2 MRI showed increased vasogenic edema formation in P11/P12 pups, confocal microscopy confirmed contractile differentiation in cerebrovascular smooth muscle, cerebral artery myography revealed modulated calcium-dependent contractility, and neurobehavior was worsened. By revealing changes in calcium-dependent contractility and the enhancement of contractile differentiation, MUN revealed that HI improved open-field locomotion and edema clearance. In sum, MUN had many interrelated impacts on neurobehavior, flow-metabolism coupling, edema formation, contractility, and cerebrovascular smooth muscle differentiation via pathways that were reliant and independent of gestational corticosteroids. This study highlights the possible increased risk of newborn cerebral edema and sensorimotor abnormalities in infants delivered to malnourished mothers, which could be caused by programmed changes in neonatal cerebrovascular function. This finding is relevant to the increasing patterns of food insecurity around the world.

RESEARCH METHODOLOGY

Environmental stresses have the potential to significantly impact brain development throughout the early life period, a vulnerable period that can have long-lasting negative impacts. Changes in brain anatomy, physiology, and connection are telltale signs of these effects. The purpose of this research is to learn how the cerebellum reacts to a combination of two early life stresses, namely protein malnutrition (PMN) and a bacterial infection caused by lipopolysaccharide (LPS). We looked at how these stresses affected astroglial activation, neuronal architecture, synaptic activity, and synaptic plasticity, and how they cumulatively affected specific extracellular matrix (ECM) components like Reelin, chondroitin sulfate proteoglycans (CSPGs), and perineuronal nets (PNNs). This research also delves into the ways in which maternal PMN impacts the immune system development of newborns, making them more vulnerable to bacterial infections.

In 2022, India ranked 107th out of 121 nations on the Global Hunger Index, highlighting the continued urgency of the global problem of malnutrition. More often and more severely, infections, slower

recovery, and even preterm birth are all associated with protein deficiencies. The immunological activation response was the goal of this study's simulation of bacterial infection in the early postnatal period using gram-negative bacterial endotoxin (LPS). Although studies on the effects of PMN or LPS stress on brain development have been conducted on an individual basis, the cumulative impact of these stressors is still poorly understood. The idea of early life double-hit stress, when PMN and LPS-induced bacterial infection work together, is becoming an important focus of research because of the compounded negative consequences on the central nervous system.

The ECM is an intricate network that is crucial for the development, regulation, and survival of neurons; it also plays an important role in preserving the structure and function of the central nervous system. Many neurodegenerative diseases are characterized by pathogenic alterations that are worsened by changes in ECM distribution. The effects of bacterial infection with PMN and LPS on cerebellar extracellular matrix components such CSPGs, PNNs, and Reelin are not previously investigated, however this study fills that gap. The female Wistar albino rats were bred with either a low-protein (8% protein) or control (control) diet, and the resulting pups were categorized into two groups: PMN and control. On the ninth postnatal day, certain groups were given an intraperitoneal injection of LPS, making them either control+LPS or LP+LPS. P-21, three months, and six months of age were the points in time at which these animals were examined.

The main focus was on astral activation, which showed dramatic morphological changes and elevated astrocyte populations in groups that were subjected to double-hit stress. Fragmentation and disarray of the Bergmann glial fibers were observed in stressed mice, with the most severe effects being observed in LP+LPS animals. Astrogliosis and compact scar formation were caused by persistent astroglial activation and changes to reactive states. Hypertrophied astrocytes expressed large quantities of CSPGs, and immunofluorescence tests revealed increased CSPG expression overall, but especially in focal lesions of LP+LPS mice. The double-hit stressed groups showed a more significant increase in this gene expression compared to the single-hit or control groups.

Researchers looked at how it affected PNNs and Reelin gene expression as well. Under stress, immunohistochemistry revealed a dramatic decrease in PNN matrices and Reelin-positive neurons, especially in LP+LPS mice. According to these results, synapse structure and plasticity are severely impaired. Animals subjected to double-hit stress also showed downregulation of synaptic plasticity markers such Egr1 and Arc, as well as the post-synaptic density protein PSD-95, which is associated with impaired synaptic architecture. In mice that were subjected to double-hit stress, histological examination uncovered significant degenerative alterations, including as pyknotic nuclei, decreased dendritic arborization, and disordered Purkinje cell layers.

Result

(1) To evaluate the Effects of perinatal Protein Malnutrition (PMN) and Lipopolysaccharide (LPS) Exposure on Granule Cell Formation, Migration, and Maturation in the Cerebellum" may yield the following results:

1. Granule Cell Formation: Perinatal protein malnutrition can lead to disruptions in granule cell formation, resulting in a reduced number of these cells. Protein deficiency can delay developmental processes, impairing the production of granule cells.

- LPS exposure may induce inflammation, which can negatively impact granule cell formation.

The inflammatory response triggered by LPS can reduce the production of granule cells, especially if the immune response is excessive.

2. Cell Migration:

- Reproductive protein malnutrition can hinder normal cell migration. Granule cells may fail to reach their correct location, which can impair the functioning of the nervous system.

2. The investigation of the influence of PMN (Polymorph nuclear neutrophils) and LPS (Lipopolysaccharides) exposure on the morphogenesis and synaptogenesis of Purkinje neurons, focusing on structural and functional alterations, would likely involve the following outcomes and findings:

1. Structural Alterations in Purkinje Neurons:

- Morphogenesis Changes: Exposure to PMN and LPS might result in disruptions in the normal development of Purkinje neurons. The dendritic arborization and cell body morphology might be altered due to inflammatory responses caused by these stimuli.
- Synaptic Structure Disruption: The normal formation of synapses in Purkinje neurons may be impaired, possibly leading to a reduction in synaptic density or altered synaptic morphology due to the inflammatory mediators released during PMN and LPS exposure.
- Loss of Spines: Dendritic spines, crucial for synaptic connections, could show structural changes, including loss or abnormal formation, resulting in weakened neuronal communication.

2. Functional Changes:

- Electrophysiological Dysfunction: Purkinje neurons may exhibit altered firing patterns or reduced excitability due to the disruptions in synaptic signaling and dendritic morphology.
- Impaired Synaptic Transmission: Alterations in synaptic development might lead to inefficient neurotransmission, which could impair motor coordination and other cerebellar functions associated with Purkinje neurons.
- Increased Inflammation: Both PMN and LPS exposure could elevate the production of pro-inflammatory cytokines, which might further affect neuronal function, leading to a decline in cognitive and motor performance.

Discussion

The modulation of the cerebellar extracellular matrix (ECM) and the developmental defects induced by perinatal protein malnutrition and lipopolysaccharide (LPS) exposure are significant areas of study in neurodevelopmental research. Both protein malnutrition and LPS exposure, particularly during critical developmental windows, have been shown to negatively impact the structure and function of the brain, including the cerebellum.

Conclusion

The modulation of the cerebellar extracellular matrix (ECM) in response to parental protein malnutrition and lipopolysaccharide (LPS) exposure can significantly impact neurodevelopmental processes,

leading to developmental defects. These factors disrupt the delicate balance of ECM components, affecting cellular signaling, neuronal migration, and synaptic plasticity during cerebellar development.

REFERENCES

Montanha-Rojas, E & Ferreira, AA & Tenório, Frank & Barradas, Penha. (2005). Myelin basic protein accumulation is impaired in a model of protein deficiency during development. Nutritional neuroscience. 8. 49-56. 10.1080/10284150500049886.

Oliveira-Junior, Markley & P.L, Pereira & Amorim, Vanessa & Reis, Luã & Nascimento, Ravena & Silva, Victor Diogenes & Costa, Silvia. (2019). Lupeol inhibits LPS-induced neuroinflammation in cerebellar cultures and induces neuroprotection associated to the modulation of astrocyte response and expression of neurotrophic and inflammatory factors. International Immunopharmacology. 70. 302-312. 10.1016/j.intimp.2019.02.055.

Franco, Patsy & Durrant, Lara & Doan, Coleen & Carreon, Desirelys & Beltran, Alejandra & Jullienne, Amandine & Obenaus, Andre & Pearce, William. (2021). Maternal Undernutrition Modulates Neonatal Rat Cerebrovascular Structure, Function, and Vulnerability to Mild Hypoxic-Ischemic Injury via Corticosteroid-Dependent and -Independent Mechanisms. International Journal of Molecular Sciences. 22. 680. 10.3390/ijms22020680.

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

Traditional Techniques and Diet to Eliminate Anemia among Women in Sahaspur Lohara, Kabirdham District

Shatruhan
Research scholar Vikrant University MP
Department of Zoology
Mobile number - 9131956176
Email ID- shatruhanr5@gmail

Palsingh
Department of Zoology
Mobile number - 340114989
Email ID- markampalsingh@gmail

- Anemia is a condition in which there is a deficiency of red blood cells in the body, leading to a reduced capacity to carry oxygen to various organs. This can cause fatigue, weakness, and other health problems. Anemia is especially common in women, particularly during pregnancy, due to increased nutritional demands. In the region of Sahaspur Lohara, anemia is commonly observed among women. The primary cause is a lack of iron-rich foods in their diet, leading to iron-In sahaspur Lohara most cases of anemia in men are genetic in nature, and no deficiency in blood levels has been observed.

  Anemia is a medical condition in which the number of red blood cells (RBCs) or the amount of hemoglobin in the blood is lower than normal. Hemoglobin is the protein in red blood cells that carries oxygen throughout the body. When it's low, the body doesn't get enough oxygen,

Why women are more prone to anemia than men:

1. **Menstruation:** Women lose blood every month during their menstrual cycle. Heavy periods can lead to significant iron loss, increasing the risk of anemia.
2. **Pregnancy:** During pregnancy, a woman's body needs more iron to support both her own increased blood volume and the growing fetus. If these needs aren't met, anemia can develop.
3. **Blood loss during childbirth:** Women can lose a significant amount of blood during delivery, which can lead to or worsen anemia.
4. **Poor nutrition:** In many cases, women—especially in rural or economically weaker areas—do not get a balanced diet rich in iron, folic acid, and vitamin B12, leading to deficiencies.
5. **Social and cultural factors:** In some societies, women may eat less or after the men in the family, receiving fewer nutrients. This contributes to higher rates of anemia.

which can cause symptoms like:-

The symptoms of anemia may include:

1. Fatigue and Weakness – Due to low hemoglobin levels, the body may lack energy, leading

to tiredness.

2. Dizziness or Lightheadedness – A lack of oxygen in the body can cause dizziness or fainting.
3. Pale Skin – Reduced blood circulation can cause the skin to appear paler.
4. Shortness of Breath – Difficulty breathing during physical activities due to insufficient oxygen.
5. Rapid Heartbeat – The heart works harder to supply oxygen to the body's cells, causing it to beat faster.
6. Headaches – Lack of oxygen to the brain can lead to headaches.
7. Cold Hands and Feet – Reduced blood flow can make the hands and feet feel cold.
8. Brittle or Changing Nails – Nails may become weak, break easily, or change shape due to anemia.
9. Loss of Appetite – Some forms of anemia can reduce appetite.

Some image Anemia Diseases

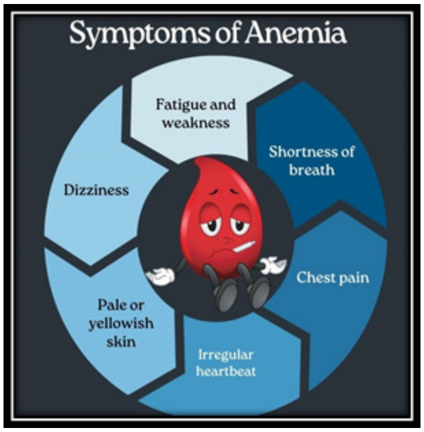

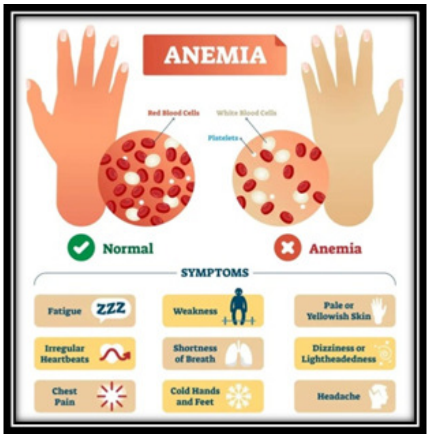

ANEMIA

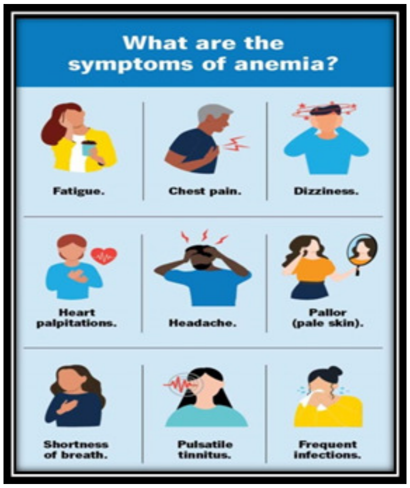

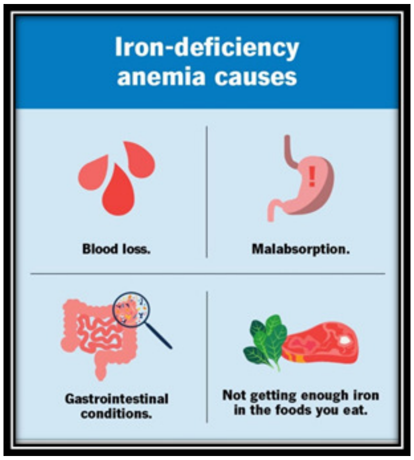

Types of Anemia include:

1. Iron Deficiency Anemia – Caused by a lack of iron, often due to poor diet, blood loss, or absorption issues.
2. Vitamin Deficiency Anemia – Caused by lack of vitamin B12 or folate.
3. Anemia of Chronic Disease – Related to long-term illnesses like kidney disease or cancer.
4. Thalassemia – A genetic disorder affecting hemoglobin production.
5. Sickle Cell Anemia – A hereditary form where red blood cells become sickle-shaped and break down early.

To address anemia using traditional technology and food, the following measures can be adopted:

1) Iron-rich foods are necessary because iron deficiency causes anemia. Iron-rich foods include spinach, beans, lentils, and meat.
2) Vitamin C-rich foods help in the absorption of iron. Therefore, it is important to consume foods rich in Vitamin C, such as oranges, lemons, and guavas.
3) Folic acid-rich foods help in the production of red blood cells. Therefore, it is important to consume folic acid-rich foods like green vegetables, lentils, and whole grains.
4) Traditional Ayurvedic medicines include several remedies that help in overcoming anemia. These include Ashwagandha, Shatavari, and Punarnava.
5) Regular exercise increases the production of red blood cells in the body, which helps in overcoming anemia.

- It is important to keep the following points in mind to overcome anemia through traditional techniques and foods:

- Regularly consuming iron-rich food
- Consuming foods rich in vitamin C and folic acid.
- Consuming traditional Ayurvedic medicines
- To help combat anemia, the following measures can be taken through regular health check-ups:

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

‘दयानंददिग्विजयम् महाकाव्यम्’ में राष्ट्रिय चारित्र्य निर्मिती

प्रो. डॉ. शुचिता ला.दलाल
विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग
राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज विद्यापीठ, नागपुर
Email: shuchitald4742@gmail.com
Mob- No-:9860818644

संबंधीत शब्द-समाज, राष्ट्रीय चारित्र्य, संस्कार, वेद, उद्धार, आर्यसमाज, मूर्तिपूजा, श्राद्ध व्यष्टि से समष्टि में परिवतीत होते हुए स्वामी दयानंद राष्ट्रीय चारित्र्य निर्मिती में समाविष्ट हो गये। कविवर्य अखिलानंद शर्मा जी के दयानंददिग्विजयम् महाकाव्य में स्वामीजी राष्ट्रीय एवं वैयक्तिक तथा सामाजिक चारित्र्य से चरमोत्कर्षक होते है। यही कारण है की राष्ट्रीय चारित्र्य निर्मिती हेतु दयानंद स्वामीजी ने समाज तथा धर्म के अनिष्ठ कृत्य का खण्डन अत्यंत सुंदर श्लोकों से परिचित किए है।

पावित्र्य, करुणा, क्षमा, त्याग, ज्ञान, संतोष, सारल्य, शौर्य, धैर्य, समता, धैर्य, तेज, नम्रता, शील, साहस, बळ, गांभीर्य, सत्य, कांति, कीर्ती आदि गुण से ही स्वामीजी का ओजस्व मुखपर प्रफुल्लित होता है। गुरुसेवा, निरहंकारीता, निरभिमानिता, परोपकाररता, सहिष्णुता, दानशीलता आदि गुण चारित्र्य निर्मिती के पोषक है। मानसिक, वाचिक तथा कायिक वेग अवरुद्ध हुए। चारित्र्य की निर्मिती के लिए स्वामी दयानंदजी का योगदान अपने काव्यरूपी कौशल्य से प्रस्तुत किया है। चरित्रगत गुणो में सुकृत तथा सदगुण अंर्तभूत होती है।

राष्ट्रहितार्थ भूमी, धर्म, संस्कृती इत्यादि घटक प्रमुख है। वैयक्तिक तथा सामाजिक चारित्र्य के आश्रय से ही राष्ट्र का रक्षण होता है। विविघ साधनाओं के द्वारा भी राष्ट्रीय चारित्र्य की निर्मिती हीोती है।

दयानंददिग्विजयम् महाकाव्य में कविरत्न अखिलानंद शर्मा स्वामीजी ने ‘दिग्विजयम्’ प्रस्तुत किया हैं। ‘दिग्विजयम्’ में दिक् याने सभी दिशाएं आती है। अर्थात् दयानंदजी ने अपने गुणों से ही विजय प्राप्त किया था। समस्त भारत का भ्रमण करते हुए शास्त्रार्थ चर्चा करके स्वामी दयानंदजी को विजय प्राप्त हुआ था।

दयानंददिग्विजयम् महाकाव्य में कविरत्न अखिलानंद शर्मा जी नें एकबिस सर्ग समाविष्ट किए है। जिसप्रकारसे आदित्य सभी को प्रकाशमान करता है, उसी प्रकार स्वामी दयानंदजी पृथ्वीपर अवतरण करते हुए सभी को उपकारीत किया है।

स्वामी दयानंदजी ने इन्द्रियोपर जित प्राप्त कि थी। उपनयनादि संस्कार के बाद यौवन में मदन को आश्रय नहीं दिया। विवाह विधी को स्थान नही दिया। नैष्ठिक ब्रह्मचर्यव्रत का स्वीकार किया।

जितेन्द्रियत्वमायातमवनन्नयनयोरयम्।
पुरस्तान्नोररीचक्रे विधीं वैवाहिकं ऋषिः।। 2.67

ब्रह्मचर्यव्रत का स्वीकार करने के बाद चारो ही वेदों का अध्ययन के लिए गृहत्याग किया।

इष्ट सिद्धि प्राप्यर्थ अपना समस्त जीवन समर्पित किया।
ततः स विद्याध्ययनाय विस्तृतं विहाय सर्वं सपरिच्छदं गृहम्।

जगाम देशानतरमिष्टसिद्धये न गेहभाजां प्रभवन्ति भूतयः।। 3.1

स्वामी दयानंदजी एक अलग व्यक्तिमत्व थे। नयी चीजे आत्मसात करनेका उनका प्रयास रहता था। स्वयं कि उन्नती हेतु वे विविध कलाओं को आत्मसात करते थे।

वेद, व्याकरण, योगाादि दर्शन का अध्ययन के बाद 'चरैवेति' सदृश्य भ्रमण करते रहे। तिसवि वर्ष तक भ्रमण करते हुए वे 'वाङ्मयोदधीके[1] पर तट पर आरूढ हुए।'

कविवर्य अखिलानंद शर्मा जी के दयानंददिग्विजयम् महाकाव्य में राष्ट्रीय चारित्र्य की निर्मिती के लिए प्रथम स्वामी दयानंदजी वैचारिक उन्नती का विवरण करते हुए 'न सर्वलोकःकिल सर्वविद्भवति'[2] इस दृष्टान्त के अनुसार अन्य कलाओं को आत्मसात किया। क्योंकि सामाजिक उन्नती के लिए वह अत्यंत आवश्यक था।

अतः स्वामी दयानंदजी ने जितेन्द्रियत्व, विद्याध्ययन हेतु गृहत्याग, योगदर्शन का अध्ययन, संन्यास की दीक्षा इ.परोपकार तथा सामाजिक वैचारिक क्रांति की मानो घटनाएँ थी।

परंपरागत आनेवाली पुराणकथाओं का निराकरण की निश्चिती स्वामी दयानंद जी ने ठान ली थी। वैदिकधर्म का प्रचार करने के लिए सर्वप्रथम पुराणकथाओं का निराकरण और खण्डन करना आवश्यक था। स्वामी दयानंदजी के मतानुसार समाज के दिनाश का कारण पुराणकथाओं की कपोलकल्पित कथाएँ थी।

उनके अनुसार चारही वेदों में मृतक के श्राद्ध का वर्णन प्राप्त नहीं होता है। अतः उसका खण्डन किया गया।

अखिलानंद शर्मा जी का यह वर्णन इसप्रकार किया है—

न लिखिता किल वेदचतुष्टये मृतकदेहनिमित्तपरा क्रिया।
इयमतोपि कथं परिदर्शयेज्जगति सन्निगमोदितकल्पनाम्।। 4.7

मूर्तिपूजा, जल के द्वारा तीर्थ देना, आदि क्रियाए वेद में प्राप्त नहीं है। अतः समाज को प्रथम इन परंपरागत कार्य को परावृत्त करना चाहिए। सामाजिक उन्नती हेतु अन्य साधनों का विचार वे करने लगे। 'बहुगुणा वैदिक सरणी' ही 'तरणीसम' है, यही स्वतंत्र नयी सोंच ने आर्य मार्ग से प्रचार किया। यही नौका ने समाज को परंपरा बाह्य पारंगत किया। अखिलानंद शर्मा जी कहते है, आजतक किसीने वेद मार्ग में पाव नहीं रख है। दयानंदजी ने वेदों का सांगोपांग अध्ययन करके पुराणकथाओं का निरसन किया हैं। दयानंद सरस्वती जी ने पशुओंकी हिंसा की अनिष्ठ प्रथा का विरोध किया। पशुमारण वेद में लिखा नहीं है।

'मिलति किल न हिंसा वेदमन्येशु लोकें'

उसी प्रकार श्राद्धक्रियादि का निरसन उन्होंने किया है। मृत्युपुर्व मातापिता का आदर न करके मरणोत्तर श्राद्धक्रिया करना योग्य नहीं है, ऐसा उनका मत था।

असमये मरणं बलहीनता गुणपराङ्मुखता धनशून्यता।
विषीयता विधवाजनविस्तृतिःसकलमस्ति पुराणविचेश्टितम्।। 4.50

अकाली मरण, बलहीनता, धनषून्यता यह सब पुराणों काही फ़ल है, यह बात कविवर्य अखिलानंद शर्मा जी के इस श्लोक से स्पश्ट होती है। पुराणकालीन मतों का खण्डन करने के उपरान्त वे पुनः लोकोपकारार्थ आत्मिक बलसे विश्व में भ्रमण करने लगे।[3]

दयानंद सरस्वती जी के विचार पर जनमानस जागृत हुआ। 'समस्तदुःखानि जगत्ययंजनो विनाषयिश्यत्यतिसाहसोदयात।' दयानंद सरस्वतीजी के प्रभाव के कारण लोगों ने जडपूजा का त्याग किया। लोक अपने माता पिता तथा गुरू की सेवा करने लगे। मुर्तिपूजा[4] का वि,वास उछल पडा। गले का रूद्राक्ष, माला उतार दी। वेदों से यज्ञशाला शुरू की।

इस प्रकार छळेसर[5] कानपूर, पाटणा इ.गांव, शहरों ने पाषाणमूर्ति कों नदीयों में अर्पण किया। वेदों को न माननेवाले आस्तिक हो गये। इसप्रकार दयानंदस्वामी के धर्मोपदेशके कारण जनमानसपर प्रत्यक्ष परिणाम हुआ। कर्मकाण्ड की कुछ झूठी कल्पना वर्जित हुई। समस्त जनता जागृत हुई, यही दयानंद स्वामी दयानंददिग्विजयम् का उचित फ़ल था, यह कहना अनुचित

नहीं है।

दयानंद स्वामी स्वकर्तव्यमान थे। स्वामी को मूर्तिपूजा खण्डन करना छोड़ देने का प्रयास अनेक लोगा ने किया। अखिलानंद शर्मा जी ने पंजाब स्थित मनफूल नामक पंडित का एक उदाहरण दिया। वे कहते, 'यदि आप मूर्तिपूजा खण्डन करना छोड़ देगे तो अनेक लोग आप से मैत्री करेंगे तथा नगर में विरोध की शांती होगी।' किन्तु दयानंद स्वामी स्वकर्तव्यमान होने के कारण उत्तर दिया, 'वेदलिखित ईश्वर की आज्ञा का मैं उल्लंघन नहीं करूंगा।'

अखिलानंद शर्मा जीने हरीद्वार के उस वक्त के असि. कमिश्नर श्री बिहारीलाल का एक उदाहरण दिया। अगर आप मूर्तिपूजा खण्डन करना छोड देंगे तो जनता आपकी स्तुती करेगे।' इसपर स्वामीजी ने प्रत्युत्तर दिया, 'वेदों की आज्ञा के अनुसार चलना ही मेरा प्रथम कर्तव्य है, न ही मेरी प्रशंसा करना। बल्कि ये मार्ग पर लोगों को चलाना, मेरा दूसरा कर्तव्य है।'

अखिलानंद शर्मा जी कहते है–

'वेदोदितषुभमार्गे नितरां गमनं ममास्ति कर्तव्यम्।
मनुजानामपि तस्मिन्नियन्त्रणं नाम तत्परं कृत्यम्।।12.16

उपरोक्त उदाहरण से यह स्पष्ट होता है की, स्वामीजी खुद की स्तुती तथा प्रसिद्धि के लिए वेद का प्रचार नहीं करते थे।

स्वामीजी का एक अन्य गुण है, वे एक शीघ्रकवि थे। तिलहरस्थित यज्ञदत्त नामक व्यक्ति ने कहा, 'पुराण का खण्डन करना कोई बड़ी बात नहीं है किन्तु उसकी रचना करना कठिन है।'

उशानत्पादुके कृत्वा प्रश्नोत्तरपरायणे, क्रियते पद्यरचना मया लिखतु तां भवान्।।[5]

स्वामीजी शीघ्रतया पद्यरचना करने लगे। मैं पादुका तथा चप्पल की कल्पित संवाद की पद्यरचना करता हूं, आप लिखिए। उनकी रचना देखकर यज्ञदत्त लज्जित हुए। 7.30

स्वामीजी ने अपनी प्रतिभाशक्ति का उपयोग समाजार्थ के लिए किया। सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदभाश्यभूमिका, यजुर्वेदभाष्य, वेदांगप्रकाश इ. ग्रंथों की रचना उन्होने की। उसके अलावा समस्त भारतवर्ष के उपकार के लिए 'पंचमहायज्ञविधी' नामक ग्रन्थही भी रचना की। अतिथिपूजन, देवपूजन, हवन, तर्पण इ.का सविस्तर वर्णन इस ग्रंथ मे किया है।[6] संस्कारविधी नामक ग्रंथ प्रख्यात है। यह ग्रंथ विष्वकल्याण के लिए नित्य, नैमित्तिक क्रिया का सन्मार्ग दर्शाता है।

जनिं न यायाद् यदि लोकमण्डले। भवेत्कथंमर्हि तमिस्त्रभञ्जनम्।। 8.72

समाजोद्धारके लिए अनेक कार्य स्वामीजीने किए थे। इन्होने छलेसर, गंगातट इ. स्थानों पर पाठशालाओं को स्थापित किए। वहां अध्यापन किया। तथा वैदिक धर्मप्रचार का कार्य किया।

वैदिक धर्मप्रचारार्थ उन्होने आर्यसमाज मंदिर की स्थापना की। समाज का उद्धार, उत्कर्ष करना ही उसका प्रमुख उद्देष था। भैरवधट, हुगळी, वृन्दावन, लाहोर, जौनपूर, झेलम इ. स्थानोंपर उन्होंने आर्यसमाज मंदिर की स्थापना की।[7]

सत्यासत्य का विवेक करते हुए धर्म का कार्य करना तथा सभी से प्रेमपूर्वक वर्तन करना, यही उनका हेतु था।

अखिलानंद शर्मा जी ने दयानंद स्वामीजीने स्त्रियों के प्रति किए हुए कार्य का विवेचन किया हैं। विधवाओंका उद्धार होने हेतु काषीनाथ लिखित 'शीघ्रबोघ' पुस्तक का खण्डन किया। बालिकाओं के लिए शाला खुलवाई। कन्याविक्री का विरोध करके ऐसे लोगों को ना पुण्य प्राप्त होगा ना सद्गती मिलेगी।

अनाथों का पालनपोषण करना तथा शिक्षणार्थ धन का दान देना, यह स्वामी जी का उद्देश्य था। भूतदया उनके गोरक्षण कार्य से स्पष्ट होता है।

इसप्रकार स्वामीजीने सामाजिक उत्कर्ष तथा वैदिक धर्मप्रचार आर्यसमाज मंदिर से करते थे।

अखिलानंद शर्मा जी लिखते है–

अनाथदीनार्तदशानिवारणं विधाय कन्यासुतपाठनालयम्।
पुरेपुरे यः स्वपरिश्रमैरलं-चकार सामाजिकमनिदराण्यपि।।

विवाहितामक्षतयोनिमुत्तमां नियोगमार्गेण नियोज्य सत्पतौ।
भुवस्तले मन्दजनोद्गतां कृति ंनिनाय नाशंव्यभिचारितां च यः।।
अधर्मपाखण्डविवादवर्धनात्समुत्थनानामतवादवीरदान्।
विधूनयत्यो जगतीतले नवं ततान वेदोदितधर्ममुत्तमम्।।

इस प्रकार स्वामीजीने अनेक कार्य करके परमान्दित होते हुए ईश्वर के गुणवर्णन में रत हो गए।

यज्ञशाला गवांशालाः पाठशालाश्च सत्वरम्।
विषये कल्पयामास निजे धर्मपरायण।। 7.163

स्वामीजी के भक्तिवर्ग स्वामीके गुण अवर्णनीय कहते है।

अतीतलोकत्रितयो गुणस्तु ते विभाति भूमण्डलरत्नवत्परः।।

इस तरह दयानंददिग्विजयम् महाकाव्य में अखिलानंद शर्माजी ने राष्ट्रीय चारित्र्य निर्मिती हेतु दयानंद स्वामीजीने समाज तथा धर्म के अनिष्ठ कृत्य का खण्डन अत्यंत सुंदर श्लोकों से परिचित किए है।

संदर्भ :

1. अखिलानंद शर्माकृत दयानंददिग्विजयम् अध्याय 3.37
2. अखिलानंद शर्माकृत दयानंददिग्विजयम् अध्याय 3.34
3. अखिलानंद शर्माकृत दयानंददिग्विजयम् अध्याय 4.15
4. मूर्जिपूजननिराकरणेच्छा सर्वथैव सफला व्यतनिष्ठ। अखिलानंद शर्माकृत दयानंददिग्विजयम् अध्याय 5.25
5. अखिलानंद शर्माकृत दयानंददिग्विजयम् अध्याय 7.27
6. अखिलानंद शर्माकृत दयानंददिग्विजयम् अध्याय 8.12
7. अखिलानंद शर्माकृत दयानंददिग्विजयम् अध्याय 10.19

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

वैदिकपरम्परायाः प्रभावः - अरुणाचलप्रदेशस्य सन्दर्भे

डॉ. राधेश्याममिश्रः
सहायकाचार्यः संस्कृतविभागे
केन्द्रियहिमालयीसंस्कृति शिक्षणसंस्थान- दाहुंग
अरुणाचलप्रदेशः

संक्षेपिका

पूर्वोत्तरभारते वैदिकपरम्परा,परञ्च वैदिकपरम्परायाःप्रभावःअरूणाचलप्रदेशस्य सन्दर्भे, विषयः वर्तते पूर्वोत्तरभारतं तु अष्टप्रदेशेन विहितो वर्तते।येष्वरूणाचलप्रदेशोऽप्येकः वर्तते।अस्य प्रदेशस्य नाम एव अरूणाचलप्रदेशः,अरूणस्य अंचलः अचलो वा अरूणांचलः अरूणाचलो वा वर्तते,अरूणःसूर्यः विद्यते,सूर्यस्य गाथा सर्वेषु वेदेषु वर्णनं कृतं वर्तते यथा–

ओंऽम् तेजोऽसि तेजो मयि धेहि।

वीर्यमसि वीर्यं मयि देहि।

बलमसि बलं मयि देहि।

सहोऽसि सहो मयि धेहि।

अर्थात् वैदिककपरम्परायाःये ऋषयःवर्तन्ते ते सर्वे ऋषयः अरूणादेव प्रार्थनां कुर्वन्ति,त्वं तेजो असि मयि तेजो धेहि,त्वं वीर्यमसि,मयि वीर्यं देहि,त्वं बलमसि मयि बलं देहि,सहो असि त्वं सहो मयि देहि।अनेन ज्ञायते सूर्यःएव सर्वाषां शक्तीनामाधारःअस्ति,शक्तयःसर्वाःसूर्ये एव तिष्ठन्ति यदि सूर्ये एव तिष्ठति तदा शक्तयः सर्वाः कुत्र तिष्ठेरन् अनेन निश्चीयते यत् सूर्यः एव आत्मा,सूर्यः एव प्राणाः सूर्यःएव चित्तं सूर्यः/अरूणः एव सर्वाःशक्तयःसन्ति यदि सूर्यमविचिन्त्य कार्यं कुर्याम् तदा तु न क्वचिद् स्थातुं शक्नुयाम्।अतः मम दृष्ट्या सर्वाधिका वैदिकपरम्परा यदि पूवोत्तरभारते दृश्यते तत्तु अरूणाचलप्रदेशे एव,यतोहि नाम्ना एव अरूणाचलःवर्तते। सूर्यस्य वर्णनं वेदे यथा–

समाववर्ति विष्ठितो जिगीषुर्विश्वेषां कामश्चरतामाभूत्।

शश्वाँ अपो विकृतो हितव्यागाद् व्रतं सवितुर्दैव्यस्य।।[1]

सोऽयमर्यमा स वरूणः स रूद्रः महादेवः।

[1] –ऋक्–2/3826

सोऽग्निः स उ सूर्यः स एव महायमः ।।[2]अथर्व-१३/४/४-५

अस्मिन्प्रदेशे प्रकृतेः प्रार्थना सर्वाधिका वर्तते,अत्र प्रकृतेःपूजा सर्वा प्राचीना, सर्वत्र ये मूलारूणाचलीयाः वर्तन्ते ते तु सूर्यस्य चन्द्रस्य एव (धोनी-पोलो) नाम्ना उच्यते सर्वे तौ पूज्यन्ते अतः वैदिकपरम्परायाः यदि पूर्वोत्तरभारते प्रभावः तत्तु मया दृष्ट्या अरूणाचलप्रदेशेऽपि ।

टिप्पणी-सूर्यः,चन्द्रः,प्रकृतिः,प्रकृतेःसमाजोपरि प्रभावः इत्यादयः ।

परिचयः- यदा वैदिकपरम्परायाः प्रभावः-अरुणाचलप्रदेशसन्दर्भे वर्तते तर्हि पूर्वं अरुणाचलस्य परिचयो पूर्वं समीचीनतया अपेक्ष्यते।अरुणाचलप्रदेशं पूर्वं पूर्वोत्तरसीमांत-एजेंसी(नार्थ-ईस्ट-फ्रंटियर-एजेंसी)नेफा नाम्ना ज्ञायते स्म। अस्य राज्यस्य पश्चिमे,उत्तरपूर्वे क्रमशः भूटान-तिब्बत-चीन-म्यामार देशानामन्ताराष्ट्रिया सीमाः सन्ति।अरुणाचलप्रदेशस्य सीमा नागालैण्ड-असमप्रदेशेन सम्बद्धा वर्तते।अस्मिन् राज्ये पर्वतानामर्धपर्वतानां भागाः सन्ति।अस्य पर्वतस्य निम्नभागांशः असमप्रदेशं प्रति पतनमस्ति।कमेंग,सुबनसिरी,सिमोना,लोहितेत्यादयः नद्याःपृथक् पृथक् घाटी-रुपेण विभजते।अत्रत्यः इतिहासःलिखितरुपेणाविद्यमानमस्ति।मौखिकपरम्परया वा स्वल्पेतिहासमुपलभ्यते।अस्य प्रदेशस्येतिहासोऽस्ति।अस्य प्रदेशस्येतिहासः २४ फरवरी १८२६ मंडाबुसन्धेरनन्तरं असमप्रदेशे ब्रिटिशशासनानन्तरमुपलभ्यते।१९६२वर्षात् पूर्वं नेफेत्युच्यते स्म। संवैधानिकरुपेणायम् असमप्रदेशस्यैवांशःआसीत् परञ्च सामरिकदृष्ट्या महत्वेन १९६५वर्षं यावत् अत्रत्यःप्रशासनस्य सुरक्षा विदेशमन्त्रालयोऽधीनोऽसीत् ततः असमप्रदेशस्य राज्यपालेन प्रचाल्यते स्म।१९७२वर्षे अयं प्रदेशः केन्द्रशासितमभवत्।अस्य नाम अरुणाचलप्रदेशोऽभवत्।अरुणाचलप्रदेशे २०११ वर्षस्य भारतीयजनगणनानुसारेण अरुणाचलप्रदेशे विभिन्नधर्मानुसारेण जनसंख्यायाः सूचिका निम्नरुपेण विद्यते।

हिन्दवः-चतुर्त्रिंशत्बिन्दुषड्-३४.६ प्रतिशतं।(अधिकाः दोनी-पोलो अनुयायिनां संख्या-त्रिंशत्बिंदुसप्त-३०.७प्रतिशतं)

ईशाईजनसंख्याः-अष्टादशबिन्दुसप्त-१८.७प्रतिशतं ।

बौद्धाः-त्रयोदश-१३ प्रतिशतं ।

सिक्खाः-शून्योत्तरमेक-०/१ प्रतिशतं ।

जैनाः-तथैवेते-०.१प्रतिशतं ।

---

[2] –अथर्व–13/4/4–5

दोनी-पोलो सूर्यस्य चन्द्रस्यापरं द्वितीयो वा नाम वर्तते।अनयोः वेदे सर्वत्रैवोल्लेखः विद्यते अतः मया दृष्ट्या तेनैव सन्दर्भं स्वीकृत्य स्वलेखं विहितम्।सूर्यः एव जगतः आधारः,जगत् सूर्ये एव तिष्ठति यदा जगत् एव सूर्ये तिष्ठति तदा वैदिकपरम्परायाःप्रभावः अरुणाचलप्रदेशे अस्ति नास्ति वा सर्वथैव नोचितं वक्तुम्। यतोहि जगति एव अरुणाचलप्रदेशः जनपदो, उपजनपदो वा तत्रैव सर्वे निवसन्ति।यथा-सूर्योपनिषदि-सूर्याद्वै खल्विमानि भूतानि जायन्ते सूर्याद्यज्ञःपर्जन्योऽन्नमात्मा त्वमेवप्रत्यक्षं कर्मकर्ताऽसि त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि त्वमेव प्रत्यक्षं विष्णुरसि त्वमेव रुद्रोऽसि। सर्वे देवाःखलु अस्मात् सूर्यात् एव निर्गताःसन्ति ब्रह्मा,विष्णु,रुद्रः प्रादुर्भूताःयथा वर्णितं वर्तते।तत्रैव लिखितं वर्तते-आदित्याद्वायुर्जायते,आदित्याद्भूमिर्जायते,आदित्याद्वापो जायन्ते ,आदित्याद्वेदाः जायन्ते,आदित्यो वा एव एतन्मण्डलं तपति,आदित्योऽन्तःकरणमनोबुद्धिचित्ताहंकाराः,आदित्यो वै व्यानःसमानोदानऽपानःप्राणः,आदित्यो वै श्रोत्रत्वक्श्चक्षुरसनघ्राणाः,आदित्यो वै शब्दस्पर्शरुपरसगन्धाः,आदित्यो वै वचनादानागमनविसर्गानन्दाः आनन्दमयो ज्ञानमयो विज्ञानमय आदित्यः।सूर्योपनिषदि वर्णनं प्राप्यते-सूर्याद्भवन्ति भूतानि सूर्येण पालितानि वै।सूर्ये लयं प्राप्नुवन्ति यःसूर्यः सोऽहमेव च।चक्षुर्नो देवःसविता चक्षुर्न उत पर्वतःचक्षुर्धाता दधातु नः।तत्रैव वर्णितमस्ति-सविता पश्चात्सवितापुरस्तात्सविताधरस्तात।सविता नःसुवतु सर्वतातिं सविता नो रासतां दीर्घमायुः।

ईशावस्योपनिषदःषोडशमन्त्रे यथा वर्णनं कृतमस्ति-पूषन्नेकषे मम सूर्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन्समूहः।तेजो यत्ते रुपं कल्याणलयं तत्ते पश्यामि योऽसावसौ पुरुषः सोहमस्मि।

तैत्तिरीयोपनिषदि-आदित्येन वावं सर्वे लोका महीयतो इति।

तैत्तिरीयोपनिषदि-शं नो मह इत्यादित्यो न इतराणि।

छान्दोग्योपनिषदि द्वितीयप्रपाठके- यथा सूर्यस्य विषये वर्णनं कृतं वर्तते। तस्या आदित्याश्च विश्वे च देवास्तृतीयं सवनं प्रयच्छति एष एवं यज्ञस्य मात्रां वेद य एवं वेद य एवं वेद।

तत्रैव द्वितीयप्रपाठकस्य चतुर्विंशस्य खण्डे प्रथममन्त्रे ब्रह्मवादिनो वन्दन्ति यद्वसूनां प्रथमं सवनं रुद्राणां माध्यन्दिनसवनमादित्यानां च विश्वेषां च देवानां तृतीयसवनात्।।

तत्रैव-अथ खल्वमुमादित्यं सप्तविधं सामोपासीत्, सर्वदा समस्तेन साम मां प्रतीति सर्वेण समस्तेन् ----------सप्तविधं सामोपासते।

चन्द्रः-चन्द्रस्य पूजा अरुणाचलीयैः क्रियते यथा वेदे चन्द्रस्य विषये नाना छन्देषु प्राप्यते।[3]यथा-हैनमन्वाहार्यवचनोऽनुशशापो दिशो नक्षत्राणि इति य एष चन्द्रमसि पुरुषो दृश्यते सहिमस्मि एवाहमस्मि।

च

तत्रैव -[4]चन्द्रस्य विषये प्राप्यते-मासेभ्यः संवत्सरं संवत्सरादित्यश्चन्द्रमसं चन्द्रमसो विद्युतं तत्पुरुषोऽमानवः।

चन्द्रस्य विषये तत्रैव -[5]व्याने तृप्यति श्रोत्रे तृप्यति चन्द्रमास्तृप्यति-------ब्रह्मवर्चसेनेति।

चन्द्रस्य विषये तत्रैव वर्णनं प्राप्यते-[6]यच्चन्द्रमसो रोहितं रुपं तेजसस्तद्रूपं यच्छुक्लं तदपां यत्कृष्णं---------रुपाणीत्येव सत्यम्।चन्द्रस्य पूजा कृते सति प्रतीयते यत् एतेऽपि वैदिकपरम्परायाःसेविनः सन्ति यदि अस्याःपरम्परायाः सेविनो न अभविष्यन् तर्हि तस्य परम्परायां पूज्यमाणानां देवानां पूजां कथं अकरिष्यन्।

प्रकृतिः-प्रकृतान्तर्गति सर्वस्य वर्णनं जातं वर्तति यथा- आपो,तेजो आकाशो,अन्नं वनस्पतीन् च ।सर्वाषां प्रकृतीनामुपभोगम् अत्रत्यैः जनैः स्वच्छन्देन क्रियते नास्ति कश्चित् सन्देहः अस्मिन्-यथा आपो विषये प्राप्यते-[7]आपो वावान्नाद्भूयस्यतस्माद्यदा सुवृष्टिर्न भवति व्याधीयन्ते प्राया अन्नं कनीयो भविष्यतीत्यथ यदा सुवृष्टिभवत्यानन्दिनःप्राप्य भवत्यन्नं बहु भविष्यतीत्याप एवेमा मूर्ता येयं "थिर्व"यदन्तरिक्षं यद् द्यौर्यत्पर्वता यद्देव मनुष्या यत्पशवश्च वयांसि च तृणवनस्पतयः---आ उपास्व।

तेजसो विषये यथा-[8]तेजो वावद्भ्यो भूयस्तदा एतद्वायुमागृह्याकाशमभितपति निपतति वर्मिष्यति वा इति तेजस्वतत्पूर्वं दर्शयित्वाऽथापःसृजते तदेतदूर्ध्वाभिश्च तिरश्चीभिश्च-----तेज उपास्वेति।

[3] -छान्दोग्योपनि-12/1
[4] -छा-15/5
[5] -छा-20/12
[6] -छा-6/4/3
[7] -छा-10 खण्डः
[8] -छा-11 खण्ड5

आकाशस्य विषये यथा–[9]आकाशो वाव तेजसो भूयानाकाशे वै सूर्याच्चन्द्रमसावुभौ विद्युन्नक्षत्राण्यग्निराकाशेनाह्वयत्याकाशेन श्रृणोत्याकाशेन प्रतिश्रृणोत्याकाशे रमते आकाशेन रमत आकाशे जायत आकाशमभिजायत आकाशमुपास्वेति।

एतेषां सर्वेषां समाजोपरि अतिप्रभाव: वर्तते।अतएव पूर्वतने काले समग्रतया वैदिकपरम्पराया: आश्रयाधीनो आसन्।अद्यापि सा एव परम्परा स्वीक्रियते,दोनी–पोलो अनयो: अरुणालीयै: पूजा क्रियते,दोनी–पोलो अत्रत्या:प्रकृते: प्रमुखं संरक्षणं ,मुख्यं विषयम् आसीत्।पूजाया: प्रसंगे अत्रत्या:नद्या: पर्वतस्य,वनस्य,वृक्षस्य संरक्षणं प्रामुख्यं विषयम् आसीत्।तदुद्देश्यं दृष्ट्वा पूजा आराधना वा कुर्वन्ति स्म।

उपसंहार:–यथा वैदिकपरम्पराया: प्रभाव: सनातनावलम्बिनामुपरि वर्तते तथैव अरुणाचलप्रदेशीयानां जनानामुपरि अस्ति।भेद: वर्तते भाषाया:,वयं सर्वे संस्कृतमाश्रित्य यज्ञादीनां प्रयोगं कुर्म:।जीवने यथा कथंचित् पूजापाठादीनां प्रयोगं कुर्म: परं च तेऽपि स्वभाषया प्रकृतिम् आश्रयन्ति,प्रकृतिम् आराधयन्ति सेवन्ते च।प्रकृतिं विहाय तेभ्य: न किमपि क्रियते प्रकृतिं कदापि न नश्यन्ति।केचन जनजातय: सन्ति ये बौद्धधर्मावलम्बिन: तेऽपि यथाकथञ्चित् वैदिकपरम्परानुयायिन: सन्ति यतोहि बौद्धधर्मोऽपि उपनिषद: वाक्यस्य असत: सज्जायते इति मन्त्रमनुसृत्य स्वशास्त्रं स्वमतं स्वधर्मं प्रवर्धन्ते आचरन्ति च।शब्द: न स्वीक्रियते परञ्चार्थं स्वीकुर्वन्ति एव।

सन्दर्भ:–

१–ऋग्वेद–:विश्वविद्यालयप्रकाशन वाराणसी।

२–ईशाद्यष्टोत्तरशतोनिषद:–व्यासप्रकाशनवाराणसी।

३–द हार्डवकिंग न्यिशी ओमैन आफ अरुणाचलप्रदेश–मिनोति वर्थोकर।

४–ड्रैगन्स शेडो ओवर अरुणाचल–आर.डी.प्रधान

[9] –छा–12 खण्ड:

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

भारतीयज्योतिषे युगविचारः

डॉ. आकाश

वैदिककालादेव कालमानस्य द्योतकः युगशब्दः आसीत् ऋग्वेदेऽपि केषुचित्स्थानेषु युगशब्दस्य प्रयोगः काल-कल्पादीनां गणनायाः कृते क्रियते। ऋग्वेदे युगस्य सम्बन्धे कथितम्।

"तदूचुषे मानुषेमा युगानि कीर्तेन्यं मघवा नाम विभ्रत्।

उपप्रमंदस्यु हत्याय वज्री युद्धः सूनुः श्रवसे नाम दधे॥"[1]

अस्य मन्त्रस्य व्याख्या सायणाचार्येण निम्नप्रकारेण कृतमस्ति यत्-"मनुष्याणां सम्बन्धीनि इमानि दृश्यमानानि युगानि अहोरात्रसंघनिष्पाद्यानि कृतत्रेतादीनि सूर्यात्मना निष्पादतीति शेषः" सतयुगत्रेतादिगयुगशब्देन ग्रहणं क्रियते। अनेन स्पष्टमस्ति यद्वेदानां निर्माणकाले सत्ययुग-त्रेतादीनां प्रचारः आसीत्। ऋग्वेदस्य निम्नमन्त्रे युगस्य सम्बन्धे एकः नूतनः प्रकाशः लभ्यते।

"दीर्घतमा मामेतयो जुजुर्वान् दशमे युगे।

अपामर्थं यतीनां ब्रह्मा भवति सारथिः॥[2] ऋ सं 1/158/6

सम्पूर्णाख्यायिका एवम्प्रकारेणास्ति यत् ममतायाः पुत्रः दीर्घतमनाम्नः महर्षिणः अश्विनस्य प्रभावेन स्वदुःखेभ्यः परित्यज्य स्त्रीपुत्रादिकुटुम्बिभिः सह दशयुगपर्यन्तं सुखपूरकं जीवितं भवेत्।

अत्र दशयुगशब्दः विचारणीयः अस्ति यदि पञ्चवर्षाणां युगः मन्येत यथा आदिकाले प्रचलितमासीत्, तदा ऋषेः आयुः 50 वर्षस्य भवति। यः बहुकिञ्चित् प्रतीयते। यदि दशवर्षस्य युगं मन्येत तर्हि शतवर्षस्य आयुः जायते। वैदिककालस्य अनुसारम् अयम् आयुरपि सम्भवं न प्रतीयते। अन्या वार्ता दशवर्षकरणम् उचितं न प्रतीयते।

अस्याः समस्यायाः समाधानं सायणाचार्येण अनेन प्रकारेण कृतम् ।"दशयुगपर्यन्तं जीवन् उत्तरूपेण पुरूषार्थसाधकोऽभवत् अथवा जीवत् उत्तररूपेण पुरूषार्थसाधकोऽभवत्"॥ अस्य प्रकारस्य व्याख्या कृता अनया व्याख्यया युगप्रमाणस्य समस्या सरलतया सुलभ्यते। दीर्घतमेन अश्विनः प्रभावेन दुःखात् त्यागं सम्प्राप्य जीवनस्य अवशिष्टदशयुगाः 50वर्षसुखेन व्यतीतं कुरुते। अतएव अस्याः आख्यायिकया स्पष्टं जायते यदुदयकाले युगस्य मानं पञ्चवर्षं स्वीकृतम्। ऋग्वेदस्य अन्यमन्त्रैः युगशब्दस्य अर्थः कालः अहोरात्रश्चापि सिद्ध्यते।

"नहुषा युगा मन्हारजांसि दीयघः ।[3]

---

[1] ऋ.सं १/१०३/४

[2] ऋ.सं १/१५८/६

अस्मिन् पदे युगशब्दस्यार्थोऽस्ति **"युघोपलक्षितान् कालान् प्रसरादिसवनान् अहोरात्रादिकालान् वा"** अस्य तात्पर्यमस्ति युगशब्दस्य अर्थः अहोरात्रादिविशिष्टकालस्य रूपेऽपि कृता।

"युगे युगे विदघ्यं" [4]एतद् युगे-युगे पदस्य अर्थमेव काले-काले कृतम्। वाजसनेयीसंहितायां " **दैव्य मानुषा युगा"**[5] एतत्पदम् आगतम्। अनेन सिद्ध्यति यत् तस्मिन् काले देवयुगं मनुष्ययुगं व स्युः युगानां प्रचलनमासीत्। तैत्तिरीयसंहितायाः अनेन मन्त्रेण सिद्ध्यति यत् देवयुगः प्रचलितोऽऽसीत्।" या जाता ओ वधयो देवेभ्यास्त्रियुगं पुरा" याजुषज्यौतिषेपञ्चसम्वत्सरात्मकस्य युगस्य वर्णनं विद्यते। यथा-

"पञ्चसंवत्सरमयं युगाध्यक्षं प्रजापतिम्।

दिनर्त्त्वयनमासाङ्ग प्रणम्य शिरसा शुचिः॥[6]"

अत्र पञ्चसंवत्सरात्मकस्य युगस्य वर्णनं विद्यते यस्याध्यक्षः प्रजापतिः कथ्यते। पञ्चसंवत्सराणां नामानि- 1.संवत्सरः,

2.अनुवत्सरः,

3. परिवत्सरः,

4. इदावत्सरः,

5. इत्थवत्सरादीनां रूपे निरूपितं कृतम्।

ठाणांगेऽपि पञ्चवर्षाणाम् एकयुगं वर्णितम्। जैनानाम् एतेषु ग्रन्थेषु ज्योतिषस्य दृष्ट्या युगानां सम्यक् मीमांसा कृता।

पञ्चसंवच्छरा प.तं. णक्खत्तसंवच्छरे, जुगसंवच्छरे, पमाणसंवच्छरे, लक्खसंवच्छरे, सणिचरसंवच्छरे। जुगसंवच्छरे, पञ्चविहे प.तं. चंदे चंदे, अभिवड्दिए चंदे अभिवडदिए चैव। पमाणसंवच्छरे पञ्चविहे प.तं. णक्खते, चंदे उऊ अइच्चे, अभिवड्दिए।।[7]

---

[3] ऋ.स.-५/७३/३

[4] ऋ.सं.६/९/४

[5]वाजसनेयीसंहितायाम्-कण्डिकायाम्-१२/११

[6]**याजुषज्यौतिषम्- लगधज्योतिषःश्लोक-१पृष्ठसंख्या-१०१**

[7] ठाणांग-.५ उ.३, सूत्र. १०

पञ्चसंवत्सरत्मकयुगस्य ५ पञ्चभेदाः सन्ति, नक्षत्र-युग-प्रमाण-लक्षण-शनयश्च। युगानामपि पञ्चभेदाः वर्णिताः। चन्द्र-चन्द्र-अभिवर्द्धित-चन्द्र-अभिवर्द्धिताः समवायांगे युगस्य सम्बन्धे बहुस्पष्ट-सुन्दररीत्या वर्णितम्।

पञ्च संवच्छरियस्सणं जुगस्स रिउमासेणं मिज्जमाणस्य एगसट्ठिं उऊमासा प.।[8]

पञ्चवर्षात्मकः एकः युगः भवति। अस्य युगस्य पञ्चवर्षाणां नाम चन्द्र-चन्द्राभिवर्द्धित-चन्द्राभिवर्द्धिताः विनिर्मिताः। पञ्चवर्षात्मकयुगे 61 ऋतुमासाः भवन्ति।

लगधाचार्येण याजुषज्यौतिषे युगं पञ्चसंवत्सरात्मकं कथितम्। यस्मिन् युगस्य मानं 19वर्षाणां कथितम्। लोकमान्यबालगङ्गाधरतिलकेन एकयुगस्य मानं पञ्चवर्षात्मकं कथितम्। युगशब्दः युजिर् धातौ घञ्प्रत्ययं संयोज्य निष्पद्यते। युजिर् धातु योजनस्य अर्थे प्रयुक्तो भवति घञ् प्रत्ययः संज्ञार्थकमस्ति। अनेन प्रकारेण युगस्य यद्युज्यते तद्युगं अर्थः संजातः।[9]यथा दिनं रात्र्या सह संयोजितमस्ति तथा रात्रिः दिनेन सह संयोजितम् अतः ऋग्वेदे युगशब्दस्य प्रयोगः दिन-रात्र्योः योगस्य रूपे सञ्जातः।"माघशुक्लप्रपन्नस्य पौषकृष्णसमापिनः।युगस्यपञ्चवर्षस्य कालज्ञानं प्रचक्षते॥"[10] युगस्य आरम्भः माघशुक्लप्रतिपदातः आरम्भं भूत्वा पौषकृष्णपक्षस्य अमावस्यापर्यन्तं भवति। यस्य गणना सौर-चन्द्र-सावन-नाक्षत्रादिकालगणनाभिः क्रियते।

यदा चन्द्र-सूर्यौ एतत्रं भूत्वा वासवे(धनिष्ठानक्षत्रे) आकाशे आक्रमणं कुरुतः। तस्मिन् समये युगस्य आरम्भः माघमासः तपसृतुः उत्तरायणात् भवति।

देवतानाम् असुराणाम् अहोरात्रं (दिनं रात्रिः ब) एकस्मात् द्वितीयस्य विपरीतं भवति। यदा देवतानां दिनं तदा दैत्यानां रात्रिः तथा यदा दैत्यानां दिनं तदा देवानां रात्रिश्च भवति। षड्भिः गुणितेन षष्ठ्यहोरात्राणां तुल्यं देवानां तथा दैत्यानां वर्षमेकं भवति ।

अर्थात् 6×60=360 सौरवर्षाणां एकं दिव्यदिनं भवति।

देवतानाम् असुराणां 12000 दिव्यवर्षाणां महायुगमेकं भवति। सौरमानेन 10000गुणितेन 4320000 वर्षाणामेकं महायुगं भवति। 360 सावनदिनानि= 1वर्षः = 1 दिव्यदिनम्, 360 दिव्यदिनैः 12000 गुणितेन (360*12000 = 4320000) सौरमानम् ।

अधुना कृतादिप्रत्येकयुगानां सन्ध्या-सन्ध्यांशैःयुक्तं चतुर्युगस्य मानं कथ्यते। कृत-त्रेता-द्वापर-कलियुगानां पादव्यवस्था (1200दिव्यवर्षाः) धर्मपादानुसारमस्ति।

---

[8] समवायांग- 6/सूत्र- 1

[9] Tilak,B.G.-the Orion,p.13

[10] लगध-ज्योतिषःश्लोक-५-पृष्ठसंख्या-१३७

"युगस्य दशमो भागश्चतुस्त्रिद्वेकसंगुणः।

क्रमात् कृतयुगादीनां षष्ठांशः सन्ध्ययोः स्वकः॥ [11]

महायुगे 12000दिव्यवर्षाणां दशमांशं क्रमेण 4,3,2,1इत्यनेन गुणनकरणे क्रमेण कृत-त्रेता-द्वापर-कलियुगानां मानं भवति। युगस्य षष्ठंशतुल्यं द्वौ सन्ध्यौ भवतः।

1महायुगः (चतुर्युगः) = 12000दिव्यवर्षाणि

12000×1/10 =1200 दिव्यवर्षमहायुगस्य दशांशः = सौरवर्षम्

1200×4 = 4800 दिव्यवर्षाणि, कृत(सत्य)युगः = 1728000

1200×3 = 3600 दिव्यवर्षाणि, त्रेतायुगः = 1296000

1200×2 = 2400 दिव्यवर्षाणि द्वापरयुगः = 864000

1200×1 = 1200 दिव्यवर्षाणां कलियुगः = 432000

सन्धिकालः =

कृतयुगः 4800*1/6 = 800 दिव्यवर्षसन्धयः यस्मिन् 400प्रथमसन्धिः+400द्वितीयसन्धिः

---

[11] सूर्यसिद्धान्तः मध्यमाधिकारः-श्लोक-१७

त्रेतायुगः 3600*1/6 = 600 दिव्यवर्षसन्धयः यस्मिन् 300प्रथमसन्धिः+300द्वितीयसन्धिः

द्वापरयुगः 2400*1/6 = 400 दिव्यवर्षसन्धयः यस्मिन् 200प्रथमसन्धिः+200द्वितीयसन्धिः

त्रेतायुगः 1200*1/6 = 200 दिव्यवर्षसन्धयः यस्मिन् 100प्रथमसन्धिः+100द्वितीयसन्धिः

सन्ध्या-सन्ध्यांशैः रहितयुगानां मानम्-

द्विव्यवर्षः	**सौरवर्षः**
4800-800 = 4000	कृतयुगः 1440000
3600-600 = 3000	त्रेतायुगः 1080000
2400-400 = 2000	द्वापरयुगः 720000
1200-200 = 1000	कलियुगः 360000

71 महायुगानां मन्वन्तरैकं भवति। अनेन प्रकारेण कालज्ञानाय अनेकप्रकारस्य समयविभागः प्रचलितः आसीत्। [12]

Dr. Akash
Phalit Jyotish Vibhag,
Shri Lal Bahadur Shastri national Sanskrit university New Delhi
drsav1008@gmail.com
Mob. : 8010288454.

[12] सूर्यसिद्धान्तः

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

डॉ. बी. आर. भद्री
सहायक प्राध्यापक- हिन्दी,
राजकीय महाविद्यालय पौखाल
टिहरी गढ़वाल उत्तराखंड।
मो. नं. 7895720630

वर्तमान काव्यधारा के लोकप्रिय कवि मैथिलीशरण गुप्त जी जीवन के प्रथम चरण से ही काव्य रचना में प्रवृत्त रहे। देश प्रेम के उन्होंने लगभग 40 काव्य ग्रन्थों की रचना की है। वे स्वाभिमान की भावना से परिपूर्ण गांधीवादी राष्ट्रीय कवि थे। वे जन भावना के प्रतीक हैं। गुप्त जी के साहित्य में कहीं भी वासना के दर्शन नहीं होते हैं। उनका साहित्य मानवीय संवेदना एवं करुणा से युक्त है। उन्होंने अपनी रचनाओं में तत्कालीन समाज की मान्यताओं और समस्याओं का प्रतिनिधित्व किया उनके काव्य में राष्ट्रीय विचारों के सौंदर्य की झलक व सामाजिक जीवन के लक्ष्यों का निरुपण देखने को मिलता है वे नवजागरण काल के कवि हैं। इसलिए उन्होंने भारतीय समाज के इतिहास और परम्परा से कथा और चरित्र लेकर उन्हें इस रुप में रचा कि वर्तमान में समाज को जागरण और उत्थान कुछ प्रेरणा दे सके। उन्होंने अपने कर्म को स्वाधीनता आंदोलन से जोड़ा है। उनके राष्ट् बोध में एक सीधी सरल आत्मीयता थी।

गुप्त जी विनयशील सात्विक तथा स्वाभिमान की भावना से परिपूर्ण गांधीवादी राष्ट्रीय कवि थे। वे जन भावना कै प्रतीक हैं। जन-जन के प्रति मुखरित उनकी भावना मानवता के तत्वों से युक्त तथा सात्विकता से परिपूर्ण है व साहित्य मानवीय संवेदना एवं करुणा युक्त है। उन्होंने हिंदी काव्य को श्रृंगार रस की दलदल से निकालकर उसमें राष्ट्रीय भावों की पुनीत गंगा बहायी है। गांधी जी ने उनकी राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत रचनाओं के आधार पर उन्हें राष्ट्रपिता की उपाधि से सम्मानित किया है।[1]

गुप्त जी गांधीवाद से प्रभावित थे। उन्होंने अपने काव्य में यथास्थान सत्याग्रह, सत्य और अहिंसा आदि का वर्णन किया है। साकेत में उन्होंने राम के वनवास के समय अयोध्या की जनता से सत्याग्रह कराया है–

राजा हमने राम तुम्हीं को है चुना
करो ना तुम यों हाय! लोकमत आ सुना।
जाओ यदि जा सके रौंद हमको यहां
यों कह पथ में लेट गए बहुजन वहां। [2]

गुप्त जी द्वारा रचित भारत भारती में देश प्रेम की भावना कूट-कूट-कर भरी हुई है अंग्रेजी शासन के विरोध में होने के कारण यह पुस्तक कुछ समय के लिए प्रतिबंधित कर दी गई थी इसमें उन्होंने अतीत गौरव की भव्य झांकी प्रस्तुत की है। भारतवर्ष की दुर्दशा पर दुख प्रकट करते हुए उन्होंने लिखा है–

हम कौन थे क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी,
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएं सभी। [3]

स्त्री जाति के दुखी होने पर उन्होंने कहा है—

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी,
आंचल में है दूध, और आंखों में है पानी। [4]

मैथिलीशरण गुप्त की कविता में गांधीव युग है और गांधीवाद भी उनकी कविता में जहां गांधी युग है वहां स्वतंत्रता आंदोलन की चेतना भी है और जहां गांधीवाद है वही प्रार्थनाभाव, समन्वयवाद और सुधार भी हैं। वे समय की पुकार वाले कवि तथा राष्ट्रीय स्वाधीनता और सामाजिक उत्थान के संदर्भ में नारी मुक्ति की भावना मर्यादावाद और आदर्शवाद से अनुशासित हैं। [5] गुप्त जी ने मानव जीवन की प्रायः सभी अवस्थाओं का वर्णन अपने कब्य में किया है। यद्यपि वे राम भक्त थे, परंतु उनकी कविता का मूल स्वर राष्ट्रीय सांस्कृतिक रहा है। वे दूसरों के प्रति दया की भावना दिखाना ही सहानुभूति मानते हैं किसी के कष्ट में उदारता दिखाना सहानुभूति कहलाती है वे कहते हैं—

सहानुभूति चाहिए महाविभूति है यही,
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही। [6]

सहानुभूति संसार में सबसे पवित्र और पुण्य का कार्य है। हर व्यक्ति सहानुभूति की दूसरों से अपेक्षा रखता है इसी कारण उन्होंने इसे महाविभूति कहा है। यद्यपि मैथिलीशरण गुप्त जी के काव्य से कई लोगों को भ्रम हुआ है कि वे वृत्ति से कट्टर धार्मिक है इसलिए वे विचारधारा से अनिवार्यता सांप्रदायिक थे उनके राष्ट्रीयता के स्वरूप पर यह प्रश्न बन रहा था। इस प्रसंग में भारत भारती का पहले ही चर्चित यह उद्धरण प्रर्याप्त होना चाहिए उसे भ्रम का निवारण करने के लिए वर्तमान खंड में भारत की गाथा जो परंपरागत हिंदू धर्म की थी बड़ी सबल प्रतीक रही है मुसलमान को सीधे संबोधित करके कहती है—

हिंदू तथा तुम सब चढ़े हो एक नौका पर यहां,
जो एक का होगा अहित तो दूसरे का हित कहां?
सप्रेम हिल मिलकर चलो यात्रा सुखद होगी तभी,
पीछे हुआ सो हो गया अब सामने देखो सभी। [7]

गुप्त जी ने भारत भारती में प्राचीन भारत के गौरव के साथ-साथ वर्तमान समाज की दुर्दशा की ओर ध्यान आकर्षित करने की साथ-साथ गुलामी की जंजीरों को तोड़ने का आह्वान भी किया है। 8 उन्होंने भारतवासियों को भारत के गौरवमयी इतिहास की याद दिलाते हुए उन्हें राष्ट्र के प्रति समर्पित होने के लिए प्रेरित किया है यथा—

देखो हमारा विश्व में कोई नहीं उपमान था,
नरदेव थे हम और भारत देव लोक सामान था। [9]

उन्होंने भारतवासियों से विदेशी वस्तुओं का त्याग व स्वदेशी वस्तुओं का इस्तेमाल करने का आह्वान किया है। उन्होंने लिखा है कि—

तुम सभ्य हो, मार्केट जिनके सात सागर पर है।
पर ग्राम की वह वाट ही उनका बड़ा-बड़ा बाजार है।
तुम हो विदेशों से ही मांगते माल लाखों का यहां,
पर वह अकिंचन नमक गुड ही मोल लेते हैं वहां। [10]

गुप्त जी समय की पुकार सुनने वाले कवि थे। उन्होंने स्वाधीनता एवं सामाजिक उत्थान व नारी मुक्ति के महत्व को समझा। उन्होंने अपने काव्य में पराधीनता का संत्रास नारी की विवशता गरीबों का शोषण तथा स्वाधीनता के स्वागत का वर्णन किया है। उनकी कविताएं देशभक्ति और भारतीय संस्कृति से भरी हुई है।

भारत भारती ने अनेक लोगों के स्वाधीनता पाने के लिए प्रेरित किया। वे सच्चे अर्थों में राष्ट्रभक्त थे उनकी रचनाओं में देश के प्रति अटूट प्रेम और बलिदान की प्रेरणा मिलती है। इतिहास और संस्कृति का गौरव वर्णन जन जागरण और स्वतंत्रता संग्राम का समर्थन आदि देखने को मिलता है। उन्होंने ब्रिटिश शासन की आलोचना करते हुए भारतवासियों में स्वतंत्रता की

भावना जगाई। अपनी कविताओं के माध्यम से जनमानस को जागृत किया व भारतीय महापुरुषों जैसे स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण परमहंस, बुद्ध आदि के चरित्रों को प्रस्तुत कर राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक विरासत को बल दिया। राष्ट्रीय चेतना उनके काव्य की आत्मा है। उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से भारतवासियों के मन में नहीं ऊर्जा का संचार कर राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने में अहम भूमिका निभाई है।

अतः हम कह सकते हैं कि गुप्त जी हिंदी के एक महान साधक थे उन्होंने अपनी रचनाओं में वर्तमान युग की समस्त मान्यताओं और समस्याओं का प्रतिनिधित्व किया उनके काव्य में सामाजिक जीवन के लक्ष्य व राष्ट्रीय जीवन की झलक देखने को मिलती है। उनके राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत काव्य को हिंदी साहित्य में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है। उनकी रचना भारत भारती राष्ट्र के लिए समर्पित है। जिसके माध्यम से उन्होंने भारतवासियों में सामाजिक कुरीतियों का विरोध कर सांप्रदायिक भेदभावों को छोड़कर देश के लिए सर्वस्व बलिदान व आपस में मिल जुलकर रहने तथा प्रेम की भावना विकसित की है। साथ ही उन्होंने स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग व विदेशी वस्तुओं को त्यागने पर जोर दिया व अतीत के दर्शन के साथ भविष्य की कल्पना भी की है। उन्होंने अपनी कविताओं में भारत को एक मजबूत विकसित और स्वतंत्र राष्ट्र बनाने का सपना देखा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, हिन्दी सौरभ, चित्रा प्रकाशन, दिल्ली पृ. सं. 271
2. मैथिलीशरण गुप्त, साकेत
3. मैथिलीशरण गुप्त, भारत भारती (अतीत खण्ड) दशम संस्करण, साहित्य झांसी, पृ. सं. 27
4. मैथिलीशरण गुप्त, यशोधरा
5. मैनेजर पांडेय, हिन्दी कविता का अतीत और वर्तमान, वाणी प्रकाशन, पृ.सं. 78
6. मैथिलीशरण गुप्त, मनुष्यता
7. मैथिलीशरण गुप्त, भारत-भारती
8. प्रतियोगिता साहित्य, पृ. सं. 71
9. मैथिलीशरण गुप्त, भारत- भारती अतीत खण्ड।
10. मैथिलीशरण गुप्त, भारत भारती, अतीत खण्ड।

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

'सुशीला टाकभौरे के नाटकों में' दलित एवं स्त्री चेतना के ज्वलंत प्रश्न

डॉ. योजना कालिया
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
विवेकानंद कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
मोबाइल : 9540932431
Email ID: yojnakalia73@gmail.com

साहित्य की विविध विधाएं समाज का दर्पण बनने की अपनी प्रकृति को अपने-अपने ढंग से निभाती हैं। कविता, कहानी, उपन्यास, रेखाचित्र सभी की अपनी-अपनी प्रकृति हैं, जो वास्तव में उनकी पहचान भी है। परन्तु उद्देश्य लगभग सभी का एक ही है, लेखक द्वारा आत्मानुभावों की अभिव्यक्ति, जिससे उसके पाठक वर्ग को न केवल रस की प्राप्ति हो वरन् उन स्थितियों का भास भी हो जो उसके स्वयं के जीवन में तो नहीं घटित हुई परन्तु उनसे उसका सरोकार अवश्य है। शेष सभी विधाएं अपने इस संभावित लक्ष्य के लिये खुलकर सामने नहीं आती, नाटक ही एक ऐसी विधा है जो यह साहस दिखाती है। भारतेन्दु युग से लेकर आज तक यदि हम नाट्य-यात्रा को सरसरी दृष्टि से भी देखें तो पायेंगे कि समाज की प्रत्येक समस्या को समयानुसार नाटककारों ने न केवल चुना है, बल्कि उन समस्याओं के उपाय खोजने में भी महत्वपूर्ण भाग-दौड़ की है। परतंत्र भारत का लेखा-जोखा 'भारत दुर्दशा', 'अंधेर नगरी' जैसे नाटकों से इत्र तत्कालीन किसी और विधा में इतनी स्पष्टता से हमें दिखाई नहीं देता। नाटक ही एक ऐसी विधा है जो अपने संवादों की शक्ति से, दृश्यात्मकता की ताकत से उन सामाजिक वर्गों तक अपनी पहुँच बना लेता है जिन तक शेष सभी विधाएं नहीं बना पातीं। निरक्षर व्यक्ति भी नाटक का रस ग्रहण करने तथा उसके संदेश को प्राप्त करने में सक्षम है। यही कारण है कि राष्ट्रीय एकता के उद्देश्य और स्वतंत्रता प्राप्ति के उद्देश्य से रचे गए भारतेन्दु जी के नाटक उस समय अत्यधिक सफल हुए और आज भी उनकी सार्थकता बनी हुई है। प्रसाद जी के नाटक भी इसी महत् उद्देश्य की पूर्ति करते हैं। यद्यपि प्रसाद जी ने ऐतिहासिक नाटकों की अधिक रचना की, परन्तु उसके पीछे भी उनका उद्देश्य अपनी उज्जवल संस्कृति की याद दिलाकर परतंत्र भारत के नागरिक के हृदय में उत्साह के संचार का था ताकि निराशा के उस दौर से बाहर निकल, अपने इतिहास को पहचानकर प्रत्येक भारतवासी वीर की भूमिका में उतर सके। नाटकों में अपने गीतों के माध्यम से जयशंकर प्रसाद ने इस लक्ष्य को खूबसूरती से प्राप्त किया। भारतेन्दु और प्रसाद के नाटकों का ऊपरी रूप यद्यपि अलग-अलग हो सकते हैं, परन्तु उद्देश्य एक ही है। भारतेन्दु जी ने यथास्थिति को अभिव्यक्त किया जबकि प्रसाद जी ने सांस्कृतिक धरोहर के दर्शन करवाकर भारत के अस्तित्व के संघर्ष को गति दी।

स्वतंत्रता के बाद की बदलती परिस्थितियों को भी नाटकों के माध्यम से विविध नाटककारों द्वारा रचा गया है। धर्मवीर भारतीकृत 'अन्धा युग' जहाँ स्वतंत्र भारत की राजनीतिक स्थितियों की मिथकीय अभिव्यक्त है, जोकि व्यवस्था के अंधेपन की विवशता से पाठक/दर्शक को अवगत कराता है, वहीं लक्ष्मीनारायण लाल का 'मिस्टर अभिमन्यु' नाटक व्यवस्था के चक्रव्यूह में फंसे उस अभिमन्यु की कथा है जो कि चाहते हुए भी उस व्यवस्था के दबाव से मुक्त नहीं हो पाता। वर्तमान परिवेश में

प्रत्येक व्यक्ति इस सत्य को अनुभव करता है जो कि व्यवस्था का अंग बनता है। मोहन राकेश के नाटक स्त्री-पुरूष संबंधों में आधुनिक परिस्थितियों के परिणामस्वरूप आने वाले बदलावों तथा मानसिक द्वंदो को विषय बनाकर समाज के उस अधूरेपन को चित्रित करते हैं प्रत्येक मनुष्य अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ता दिखाई पड़ता है। सर्वेश्वर जी का 'बकरी' नाटक हो या भीष्म साहनी के 'माध्वी' तथा 'कबिरा खडा बाजार में', सभी अपने-अपने लक्ष्य पर सीधे प्रहार करते हैं।

विमर्शो के इस वर्तमान काल में जब दुनिया चाँद पर पहुँचने का दावा कर रही है। ईश्वरीय रचना के समक्ष रोबर्ट बना लिये गये हैं जो कि हर वह काम करने में सक्षम हैं जो कि मानवीय शक्ति से संभव था। इस हद तक विकसित समाज के उज्जवल चित्र का एक दूसरा पक्ष भी है जो कि गहन अंधकार से भरा है। भारतीय संस्कृति में वर्ण-व्यवस्था और स्त्री का समाज में स्थान यह दोनों ऐसे विकराल प्रश्न बनकर चर्चा के केन्द्र में आ चुके हैं कि आज उनका उत्तर खोजना अनिवार्य हो गया है। शिक्षा के उजाले में नगरीय जीवन काफी कुछ परिवर्तित होता हुआ महसूस होता है। परन्तु यह महसूस होना कहीं किसी भ्रम की रचना तो नहीं है। इस भ्रम को तोड़ने वाले नाटकों में सुशीला टाकभौरे के नाटक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अपने नाटकों का उद्देश्य बताते हुए लेखिका ने 'मनोगत' में लिखा है कि "नाटक लिखने का मेरा उद्देश्य है, दलितों और सम्पूर्ण स्त्री वर्ग के जीवन की समस्याओं को समाज तक पहुँचाया जाये, ताकि इन पर चिंतन-मनन और विचार विमर्श किया जाये।"

सुशीला टाकभौरे के नाटक-संग्रह का शीर्षक हैं 'रंग और व्यंग्य', जिसमें 'रंग और व्यंग्य' के अतिरिक्त अन्य चार नाटक भी हैं। यह पांचों नाटक दलित स्त्री को या यूं कह लें कि दलित और स्त्री को प्रेरणा देना का ऐसा प्रयास हैं कि जिसके प्रभाव से वह अपने वर्षो के बंधन से मुक्त होने के योग्य बन सके। डॉ0 सतीश पावडे ने टाकभौरे के इन नाटकों के विषय में लिखा है कि "विविध आंदोलन तथा बुद्धिवादी, बुद्धिजीवी वर्ग के परिवेश में ये कृतियां केवल नाटक नहीं रह जातीं, बल्कि वे विचार बन जाती है। हम उन्हें वैचारिक नाट्य कृतियां भी कह सकते है।"

'रंग और व्यंग्य' नाटक में छब्बों ऐसी नायिका के रूप में चित्रित है जो कि स्वाभिमानी दलित महिला है और अपने अधिकारों के प्रति सजग है। वह अपनी पुत्री को भी शिक्षित कर सभ्य नागरिक बनाना चाहती है। वह हर उस अधिकार के लिए तथाकथित उच्च वर्ग का डटकर सामना करती है जो कि उसे और उसके परिवार को स्वाभाविक रूप से मिलना चाहिए पर समाज के अंधविश्वास उस मार्ग में बाधा डालते रहते है। इसी क्रम में वह उन मानवीय प्रवृत्तियों पर भी कटाक्ष करती है जिनके चलते सामर्थ्यवान होते ही इसी जाति के लोग (विरोधस्वरूप ही सही) दिखावे के शिकार हो जाते हैं। वे भी अपनी शक्ति का प्रयोग अपने नाम को बढाने के लिये करते हैं न कि अपनी जाति के उद्धार के लिये। छब्बों इस कार्य को धन का दुरूपयोग बताकर इसी धन से अपनी जाति के उद्धार के पक्ष में है।

तारा को घूंघट से आजादी दिलवाना, शालू और मालती को उन लोगों का विरोध करने के लिये प्रेरित करना जो प्यास लगने पर भी अपने कुएं से पानी पीने का अधिकार नहीं देते, अपनी पुत्री को तथा अन्य लड़कियों को शिक्षित एवं स्वतंत्र जीवन के लिये प्रेरित करना, ठाकुर अथवा पटेल (सामन्त) का खुले रूप में विरोध कर उसे झुकने को मजबूर कर देना, यह सब कार्य कर छब्बों अपनी जाति और स्त्री जाति के पक्ष में कार्य करती दिखती है। इस नाटक के माध्यम से समाज का वह कुरूप चेहरा लेखिका ने उजागर किया है जिसकी जड़ों में घृणा पैदा करने वाला व्यवहार है। उदाहरणस्वरूप पटेल का यह संवाद दृष्टव्य है–

"क्या कहा? हमारे घर के पकवान तू अपने जानवरों को खिलाएगी? शुद्ध घी में बने पकवान........ पूरी, हलवा, लड्डू, मिठाई......... इतने कीमती पकवानों की झूठन क्या जानवरों के लिये है? नहीं ऐसो नहीं हो सके है.....।"

इसी झूठन को पटेल अपनी गाय-भैंसों को भी नहीं खिलाना चाहता क्योंकि "अपनी गाय-भैंस को जूठन खिला देंगे, तो फिर हम उनका दूध कैसे पीयेंगे? जूठन खाने से उनका दूध जूठा नहीं होगा क्या?"

तीन अंकों का यह नाटक जिसमें पहले दो अंकों में तीन-तीन दृश्य हैं और अंतिम अंक में एक दृश्य हैं, अपने भीतर पांच-छः कहानियों को समेटे हुए है– छब्बो तथा पटेल की कहानी (विरोधात्मक), राम सनेही, सीताराम, रामशरण आदि के

माध्यम से स्वयं को श्रेष्ठ समझने वालों की मानसिकता की कथा, छब्बों की मां के मंदिर निर्माण की कथा, शालू (छब्बों की पुत्री) का प्रतिभा संपन्न होते हुए भी मित्र की मां द्वारा अपमान की मर्मान्तक कथा, मालती तथा शालू द्वारा कुएं से पानी पी लेने को अपराध घोषित करने की कथा एवं तारा द्वारा पहले अपनी पुत्री को कोसने और फिर छब्बों की प्रेरणा से उस अंधकारमय जीवन से बाहर आने की कथा। सब मिलकर एक नये युग का, बदलते युग का सूत्रपात करते जान पड़ते हैं। साथ ही साथ उस सत्य को भी उजागर करते हैं जो कि आज भी समाज में विद्यमान है।

इसके पश्चात् के सभी नाटक स्त्री को दलित और शोषित रूप में अभिव्यक्त करते हुए उसे उसके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सजग करते हैं। 'जीवन के रंग' में गीता अपने बच्चों को पढाना चाहती है, परन्तु शराबी पति कभी भी परिवार के प्रति अपने कर्तव्य को नहीं समझ पाता। गीता अपने कर्तव्यों की पूर्ति के लिये निरंतर काम करती है, परन्तु बढते खर्चों को पूरा न कर पाने के कारण निराश हो जाती है और परिणामस्वरूप स्वयं ही अपने बच्चों को जहर देकर मारने पर मजबूर हो जाती है। सौभाग्यवश जिसे वह जहर समझती है वह नशे की दवाई होने के कारण उसके बच्चे बच जाते हैं। निरंतर संघर्षशील रहने पर भविष्य में उसके बच्चे डॉक्टर, इंजीनियर और साहित्यकार बन जाते हैं और पति भी उसकी कर्मठता से प्रेरित होकर बदलने को मजबूर हो जाता है। यह सारे परिवर्तन को अति-नाटकीय कहकर खारिज किया जा सकता है, परन्तु यह सब उसे इतनी आसानी से प्राप्त नहीं हुआ है। सीता द्वारा बच्चों को जीवित करने के लिये सत्यनारायण की कथा करवाने के लिये दबाव, बच्चों को बड़े-बड़े पदों पर देखने की इच्छा का मजाक बनाना, पूजा न करवाने को लेकर अंधविश्वास ग्रस्त करना, भिक्षुक का स्वार्थवश अज्ञानी होते हुए भी अपने लिए तमाम वस्तुओं की मांग करना, सीता का निःसंतान होते हुए भी बच्चा गोद लेने से इंकार करना यह सभी वास्तविक स्थितियाँ है जिनसे हमारा यह स्वयं को विकसित कहलाने वाला समाज ग्रस्त है।

चश्मा और व्हील चेयर नाटक भी स्त्री को उसके अपाहिज मनः स्थिति से बाहर लाने वाले नाटक हैं। वह स्त्री जो पति की सेवा में ही अपने जीवन की सार्थकता समझकर पूरा जीवन पति की ठोकरों का, दुर्व्यवहार का शिकार होती है। अंततः शिक्षित होकर वह स्वावलंबी बनने को प्रेरित होती है। इतना तो सामान्य रूप से समझा जा सकता है, परन्तु लेखिका यहीं नहीं रूकी है, उन्होने उस सत्य को भी अभिव्यक्त किया है जो कि यह दर्शाता है कि जब किसी एक के हाथ में शक्ति आती है, तो वह दूसरे पक्ष को कुंठित करने लगता है। पत्नी यहाँ जब स्वावलंबी हुई तो पति व्हील चेयर पर दिखाई देने लगा। यहाँ लेखिका ने बहुत ही गहराई से वर्तमान परिस्थिति को पहचाना है। स्त्री-उद्धार का अर्थ यह कदापि नहीं कि अब स्त्री पुरूष को शोषित कर उसे अपाहिज बना डाले। बल्कि आवश्यकता है कि दोनों समभाव से एक दूसरे की सहारा बनते हुए समाज के विकास में अपनी-अपनी भूमिकाएं निभाएं।

'चश्मा' नाटक में इसी इच्छा से पत्न्नी पति के चश्में से दुनिया को देखने की इच्छा व्यक्त करती है और अपने चश्मे से पति को संसार देखने के लिए कहती है। यहाँ चश्मा दृष्टि का प्रतीक है। इस सफल प्रयोग से लेखिका ने यह स्पष्ट कर दिया है कि यदि पत्न्नि की मानसिक अवस्था को उसकी दृष्टि से समझ ले तो वह भी भई उसके साथ असमानता का व्यवहार नहीं करेगा।

'समर्पित जीवन' में एक आदर्शवादी शिक्षक की त्रासदी लेखिका ने अभिव्यक्त की है। समाज में बढ़ती अनीति, बिखराव, भौतिकतावाद आदि ने जीवन के आदर्शों को पूर्णतः ध्वस्त कर दिया है। एक शिक्षक इन परिस्थितियों से किस प्रकार प्रभावित होता है, यह इसी की कथा है। इन सभी नाटकों के विषय में डॉ. सतीश लिखते हैः-

"ये सभी नाट्यकृत्तियां केवल तात्कालिक नहीं, बल्कि मूल प्रश्ध्नों के साथ जुड़े भयावह वर्तमान को भी नंगा करती है, क्योंकि इसके पीछे नाट्ककार की सजग दृष्टि है, समाजिक दायित्व की भूमिका है, विद्रोह के साथ सकारात्मक परिवर्तन का विचार है। केवल नाट्यविधा का प्रयोगिक स्तर पर यह एक प्रयास नहीं है बल्कि समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व के साथ नारी मुक्ति का विचार इन नाट्यकृत्तियों का आधार है।"

इन नाटकों की सफलता का अनुमान इनके बार-बार मंचित किए जाने से लगाया जा सकता है। 'भारतीय दलित

साहित्य अकादमी' द्वारा, जून 2012 में, दो दिवसीय दलित नाट्य उत्सव में 'रंग और व्यंग्य' का मंचन तथा विविध भाषाओं में इसका अनुवाद इन नाटकों की सार्थकता की ओर संकेत करता है।

यहाँ तक 'रंगमूल्यों' के आधार पर इन नाटकों को कसौटी पर कसने का प्रश्ध्न उठता है तब नाट्य विद्वान हृषिकेश सुलभ की मान्यता हमें मार्ग दिखाती है कि केवल रंगमूल्यों के आधार पर नाटक की रचना नहीं हो सकती जीवन की संवेदनाओं की गहनता और मानवीय प्रवृत्तियों, अन्तर्दृन्दों और जगत के लिए नवीन विचारों के बिना नाटक की रचना सम्भव नहीं, और इसे नाटक बिना साहित्यिक मूल्यों के अर्जित नहीं कर सकता।"

इस दृष्टि से देखने पर कवि, कथाकार तथा वैचारिक लेखक के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी सुशीला जी के ये नाटक सहित्य की सफल कृत्तियां हैं।

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

इंसानियत की ज़मीर के रखवाले : श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी

(श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी के 350वें शहीदी वर्ष पर्व पर विशेष)

डॉ. रणजीत सिंह 'अर्श'
सदनिका क्रमांक 5, अवन्तिका रेजीडेंसी,
58/59, सोमवार पेठ, नागेश्वर मंदिर रोड,
पुणे-411011 (महाराष्ट्र)
मो. 9096222223, 9371010244
ईमेल : arshpune18@gmail.com

सतिगुर प्रसादि ॥

1. प्रस्तावना

सिख धर्म को आज समस्त विश्व में सबसे आधुनिक, जीवंत और मानवतावादी धर्म के रूप में स्वीकार किया गया है। गुरु पंथ खालसा से संबंधित सिखों ने सेवा, सिमरन, त्याग, इंसानियत और देशभक्ति के अद्वितीय मूल्यों को आत्मसात कर एक ऐसी प्रभावशाली उपस्थिति विश्व पटल पर स्थापित की है, जिसने मानवीय गरिमा को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है।

वर्तमान वर्ष 2025 ई. इस दृष्टि से विशेष ऐतिहासिक महत्व रखता है क्योंकि यह 'श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी' के 350वें शहीदी वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि हाल ही में 2021 ई. में संपूर्ण संगत द्वारा गुरु जी का 400वां प्रकाश पर्व वर्ष श्रद्धा, स्मृति और जन-जागरण के साथ मनाया गया। इस वर्ष मनाए जाने वाले शहीदी वर्ष की यह स्मृति आगे चलकर विश्व मानवता के लिए एक प्रेरक संदर्भ बनकर उभरेगी।

2. ऐतिहासिक संदर्भ एवं भ्रमणशीलता

जहाँ प्रथम पातशाही 'श्री गुरु नानक देव साहिब जी' ने चार उदासियों के माध्यम से लगभग 36000 मील की पदयात्रा कर धर्म और करुणा का संदेश प्रसारित किया, वहीं नवम पातशाह 'श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी' ने भी मानवता के कल्याण हेतु सिख इतिहास में सबसे अधिक भ्रमण किया।

गुरुवाणी इस तथ्य को इस प्रकार अंकित करती है
जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरु सो थानु सुहावा राम राजै॥

(अंग क्रमांक 450)

अर्थात जिस स्थान पर सतगुरु जी के चरण पड़ते हैं, वह स्थान अकाल पुरख की कृपा से स्वर्ग के समान पावन हो जाता है।

3. प्रकाश पर्व एवं जन्म

चौथी पातशाही 'श्री गुरु रामदास साहिब जी' की वाणी में सिख गुरुओं के प्रकाश स्थल और उनके दर्शन मात्र से उपजे आत्मिक उत्थान का उल्लेख इस प्रकार किया गया है–

सा धरती भई हरिआवली जिथै मेरा सतिगुरु बैठा आइ॥
से जंत भए हरीआवले जिनी मेरा सतिगुरु देखिआ जाइ॥
धनु धंनु पिता धनु धंनु कुलु धनु धनु सु जननी जिनि गुरू जणिआ माइ॥

(अंग क्रमांक 310)

यह वाणी संकेत देती है उस दिव्य दिवस की ओर, जब 1 अप्रैल सन् 1621 ई. रविवार, 5 बैसाख संवत 1678 ई. को अमृत वेले (ब्रह्म मुहूर्त) में नवम पातशाही 'श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी' का प्रकाश हुआ।

गुरमत साहित्य में इसे सृजनात्मक रूप में इस प्रकार निरूपित किया गया है

प्रकट भए गुरु तेग बहादुर सकल सृष्टि पर ढापी चादर॥

4. बाल्यकाल एवं नामकरण

गुरु जी के जन्म के समय, उनके पिता छठे गुरु 'श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी' ने उन्हें गोद में उठाकर भाव-विभोर होकर भाई बिधि चंद जी से कहा–

''यह बालक असाधारण है। भविष्य में यह 'दिन का रक्षक' होगा, संकटों का नाश करेगा, और निर्भय होकर अत्याचारियों का उन्मूलन करेगा।''

इस भाव को गुरबाणी में इस प्रकार से अभिव्यक्त किया गया है–

दिन रथ संकट हरै॥ एह निरभै जर तुरक उखेरी॥

तदुपरांत, छठे गुरु साहिब जी ने उनका नाम "तेग बहादुर" रखा। यह नाम फारसी भाषा से प्रेरित है। गुरुवाणी में इस भाव को इस प्रकार अभिव्यक्त किया गया है–

जा तुधु भावै तेज वगावहि सिर मुंडी कटि जावहि॥

(अंग क्रमांक 145)

'तेग' का अर्थ होता है खड़्ग या कृपाण। तेग बहादुर अर्थात ''वह जो तेजस्वी तलवारधारी होते हुए भी करुणामय हैं।"

देग तेग जग में दो चलें॥
"ਦੇਗ ਤੇਗ ਜਗ ਵਿੱਚ ਦੋ ਚਲੈ॥"

5. बाल लीलाएं

गुरु जी के बचपन में उन्हें अत्यधिक स्नेह मिला। उनकी बहन बीबी वीरो जी उन्हें विशेष स्नेह करती थीं। आश्चर्य का विषय यह है कि बालक तेग बहादुर ने कभी भी रोकर दूध नहीं माँगा। उनकी बाल लीलाओं ने परिवार और संगत के हृदय को आकृष्ट कर लिया था। एक दिन जब वे खेलते-खेलते 'श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी' की गोद में जा बैठे, तो उन्होंने पीरी वाले गातरे (कृपाण को धारण करने वाला कपड़ा-पट्टा) को जोर से पकड़ लिया। जब गुरु जी ने उसे छुड़ाने का प्रयास किया, तो बालक तेग बहादुर ने उस पट्टे को और कसकर पकड़ लिया।

इस पर 'श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी' ने भावुक होकर कहा

'पुत्र जी, अभी समय नहीं आया है, जब समय आएगा तो आपको तेग चलाना भी पड़ेगी और खाना भी पड़ेगी।'

6. शिक्षा-दीक्षा एवं बहुआयामी प्रतिभा

एकांतप्रिय बालक 'श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी' का जीवन आरम्भ से ही त्याग, करुणा और आध्यात्मिक सौम्यता का प्रारूप रहा। जब आप अपने अग्रज भ्राता भाई गुरदित्ता जी के विवाह-संस्कार में सम्मिलित हुए, तब आपने अपने दिव्य वस्त्रों और बहुमूल्य आभूषणों को एक निर्धन बालक को सहज भाव से अर्पित कर दिया था। यह दृश्य न केवल आपके करुणामय हृदय का साक्षी था, अपितु भविष्य के उस महान तपस्वी की झलक भी देता था, जो परोपकार और बलिदान की प्रतिमूर्ति बना।

'श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी' की प्रारंभिक शिक्षा श्री रमदास नामक स्थान पर बाबा बुड्ढा जी के संरक्षण में सम्पन्न हुई। आप ने वहाँ गुरमुखी, संस्कृत एवं फारसी भाषाओं का गहन अध्ययन किया तथा छः वर्षों तक गुरुवाणी का पठन-पाठन कर उसे कंठस्थ किया। इसी क्रम में पूज्य भाई गुरदास जी से भी आपने शिक्षा प्राप्त की, जिनसे आपने ब्रजभाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओं तथा साहित्यिक शैलियों का भी अभ्यास किया। उनके मार्गदर्शन में ही आपने घुड़सवारी, शस्त्र-विद्या तथा युद्ध-नीति का भी व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया और इन कलाओं में प्रवीणता अर्जित की।

संगीत की दृष्टि से भी 'श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी' अत्यंत प्रतिभाशाली थे। गुरु-परंपरा के विख्यात रबाबी भाई बाबक जी से आपने गुरमत संगीत का गहन अध्ययन किया। आपको मृदंग वादन में अद्भुत निपुणता प्राप्त थी तथा आपने गुरमत संगीत के 30 रागों का विधिवत अभ्यास किया। संगीत-साधना के इस उत्कर्ष में आपने 'राग जैजैवंती' का आविष्कार कर उसे गुरमत संगीत में स्थान दिया, जो आपकी संगीतात्मक प्रखर प्रज्ञा और नवाचार का विलक्षण प्रमाण है।

7. वियोग, वैराग्य एवं जीवन-दृष्टि

बाल्यावस्था में ही 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' ने करुण और वियोग की गंभीर श्रृंखला का सामना किया। पहले भ्राता बाबा अटल जी अकाल-चलाना कर गये; लगभग उसी समय दादी माता गंगा जी का भी स्वर्गवास हुआ। आठवें वर्ष में (13 जनवरी 1629 ई.) 'श्री गुरु नानक देव साहिब जी' के ज्येष्ठ सुपुत्र बाबा श्री चंद जी ज्योति-जोत समा गये, 135 वर्ष से अधिक की आयु में बाल्य स्वरूप धारण रखने वाले इस महापुरुष से बाल तेग बहादुर का असीम स्नेह था और वह उनका विशेष आदर-सत्कार करते थे। दो वर्ष बाद, दसवें वर्ष में (17 नवंबर 1631 ई.) बाबा बुड्ढा जी के निर्वाण ने सिख संगत को विषाद में डुबो दिया; दरबार साहिब, अमृतसर के प्रथम हेड ग्रंथि रहे बाबा बुड्ढा जी सिख इतिहास में अप्रतिम सम्मान के पात्र थे। इन क्रमिक वियोग-प्रसंगों ने त्याग की मूर्ति बाल तेग बहादुर के मन में वैराग्य का बीज गहरा रोप दिया। आगे चलकर उनकी स्वयं-रचित वाणी उसी गहन वैराग-भाव से सिंचित हुई. एक ऐसी वाणी, जो विस्मय-बोध से ओतप्रोत होकर सांसारिक नश्वरता का साक्षात्कार कराती है—

चिंता ता की कीजिऐ जो अनहोनी होइ।
इहु मारगु संसार को नानक थिरु नहीं कोइ।

(अंग क्रमांक 1429)

8. युद्ध-कौशल और 'तेग बहादुर' की सार्थकता

मात्र 14 वर्ष की आयु में करतारपुर के युद्ध (मुग़ल सेना के विरुद्ध) में अद्भुत शौर्य दिखाया। इस वीरता के आधार पर तेग के धनी 'तेग बहादुर' नाम की सार्थकता सर्वमान्य हो गई।

9. गुरता-गद्दी एवं मक्खन शाह लुबाना का प्रमाण

दिनांक 11 अगस्त सन 1664 ईस्वी को 'श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी' को विधिवत रूप से गुरता गद्दी पर विराजमान किया गया। यह ऐतिहासिक अवसर सिख परंपरा की महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में आज भी स्मरणीय है। तथापि, उस कालखंड

में गुरता गद्दी के उत्तराधिकार को लेकर कुछ मतभिन्नताएँ और विवाद उत्पन्न हुए, जिनसे संगत को असमंजस की स्थिति का सामना करना पड़ा। ऐसे जटिल समय में गुरु साहिब के परम भक्त, धर्मनिष्ठ व्यापारी और दूरदशी सेवक मक्खन शाह लुबाना ने अपने आध्यात्मिक विवेक और निष्ठा के बल पर संपूर्ण संगत के समक्ष स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत कर दिया कि सच्चे गुरु वही हैं जो ईश्वर की कृपा से अंतर्ज्ञान द्वारा भक्त की मुराद पहचान लेते हैं। उन्होंने न केवल 'श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी' के हक में संगत का मार्गदर्शन किया, अपितु धर्म की उस शाश्वत परंपरा को भी सुरक्षित रखा, जो गुरमत सिद्धांतों की आत्मा है।

10. लोक-कल्याणकारी यात्राएँ

22 नवंबर 1664 ई. को 'श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी' ने बाबा-बकाला से लोक-कल्याण एवं धर्म-प्रचार की महायात्राओं का शुभारम्भ किया। आपने देश के विविध प्रांतों-विशेषतः सूबा पंजाब तथा हरियाणा का विस्तृत भ्रमण कर सिक्खी के अंकुर को पल्लवित-पुष्पित किया। बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड से होते हुए असम तक की पदयात्रा, तथा उड़ीसा, दिल्ली व हरियाणा की परिक्रमा के पश्चात गुरु साहिब जी पुनः पंजाब पधारे। इन समस्त यात्राओं का उद्देश्य केवल धर्म-प्रसार ही नहीं था, वरन् आध्यात्मिक, सामाजिक एवं आर्थिक उन्नयन द्वारा मानव-कल्याण को साकार रूप देना भी था। यात्राओं के प्रसंग में आपने अंधविश्वास एवं रूढ़ियों का प्रखर खण्डन कर नवीन आदर्श स्थापित किए; असंख्य रोगियों को वैद्यक.कौशल से आरोग्य-लाभ कराया कारण गुरु साहिब उत्कृष्ट आयुर्वेदाचार्य भी थे। जहाँ-जहाँ गुरु साहिब जी के चरण पड़े, वहाँ धर्मशालाएँ निर्मित करवाईं, स्वच्छ पेय-जल हेतु कुएँ खुदवाए और परोपकार के विविध आयाम स्पन्दित किए। वास्तु-शिल्प की विलक्षण दृष्टि से 19 जून 1665 ई. को ग्राम सहोटा के निकट ऊँचे टीले पर मोहरी-गड्ड (नींव-पत्थर) रखकर चक नानकी अर्थात् आज का श्री आनंदपुर साहिब नगर बसाया, जिसकी अभिनव नगर-रचना उस युग का अद्भुत वास्तुशिल्पीय चमत्कार सिद्ध हुई।

11. औरंगज़ेब का अत्याचार तथा कश्मीरी ब्राह्मणों की विनती

उस काल में सत्तारूढ़ जालिम बादशाह औरंगजेब की कठोर हठधर्मिता इस स्तर की थी कि वह अपने मत के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म का अस्तित्व सहन न करता। उसने समस्त प्रजा को इस्लाम स्वीकार करने का कठोर आदेश सुना दिया था अर्थात "इस्लाम अपनाओ, अथवा मृत्यु वरण करो।" उसकी दमनकारी नीति का पालन करने हेतु तलवार की धार पर लोगों का धर्म परिवर्तन किया जा रहा था, जिससे विविध धर्मावलंबियों का जीवन अत्यंत दुष्कर हो उठा। समूचे देश में उसके अत्याचार से त्राहि-त्राहि मच गई। ऐसी विकट परिस्थिति में कश्मीर के ब्राह्मण पंडित कृपाराम जी के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल के रूप में बाबा-बकाला नामक स्थान पर आकर गुरु जी से विनम्र याचना करने लगे कि जालिम औरंगजेब से उनकी रक्षा की जाए।

गुरु साहिब ने आश्वासन दिया कि "यदि कोई महापुरुष शहादत दे, तो हिंदू धर्म सुरक्षित रह सकता है।" तभी निकट खड़े बाल गोविंद राय (आयु : 9 वर्ष 6 मास) ने द्रवित स्वर में सूचित किया "पिताजी, आपसे बड़ा महापुरुष कौन हो सकता है?" इस पर गुरु जी ने कश्मीरी पंडितों के हाथों औरंगजेब को यह संदेश भिजवाया कि "यदि 'श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी' इस्लाम स्वीकार कर लें, तो हम सब भी धर्म परिवर्तन कर लेंगे।"

औरंगज़ेब ने तत्काल गुरु जी की गिरफ्तारी का हुक्म जारी किया; किन्तु गुरु साहिब स्वयं कुछ चुनिंदा सेवक-साथियों सहित निडर होकर दिल्ली की ओर प्रस्थान कर गए।

12. गिरफ्तारी, यातनाएँ और दिल्ली-प्रस्थान

औरंगज़ेब ने गुरु जी की गिरफ्तारी का आदेश दिया; गुरु जी स्वयं चुनिंदा सेवक-साथियों संग दिल्ली के लिए प्रस्थान कर गए। मुग़ल सैनिकों ने गुरु जी तथा साथियों- भाई सती दास जी, भाई मती दास जी, भाई दयाला जी को बंदी बना कर

अमानुषिक यातनाएं दीं।

13. शहीद साथियों का अमर बलिदान

9 नवंबर 1675 ई. को दिल्ली के चाँदनी चौक में, धर्मातरण के दमन चक्र का सामना करते हुए, परम भक्त भाई सती दास जी ने इस्लाम स्वीकार करने से स्पष्ट इनकार किया। क्रूर मुगल सिपाहियों ने उन्हें रूई में लपेटकर जीवित अग्नि में झोंक दिया, परन्तु उन्होंने करुणामयी मुस्कराहट के साथ शहादत का जाम ग्रहण किया। अगले ही दिवस, 10 नवंबर 1675 ई. , भाई मती दास जी को भी उसी धर्म-परित्याग की माँग ठुकराने के कारण स्तम्भ से बाँधकर आरों से देह के मध्य से चीरा गया; वह अंतिम क्षण तक निभीक भाव से जपुजी साहिब का पाठ करते रहे और हँसते-हँसते शहादत को स्वीकार किया। इसी दिन मुगल सैनिकों ने भाई दयाला जी को विशाल देग में जल उबालकर यातना पुर्वक शहीद कर दिया।

भाई सती दास जी और भाई मती दास जी सगे भ्राता थे, तथा उनके साथ भाई दयाला जी, ये तीनों 'श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी' के परम श्रद्दालु, निकटवती सेवक और संगति-सहचर थे। उनका साहस पूर्ववती पारिवारिक विरासत का प्रतीक था, इन दोनों भाइयों के परदादा, वीर सेनापति भाई परागा जी, छठे पातशाह 'श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी' की फौज में अग्रणी रहे और मुग़ल अत्याचार के विरुद्ध मातृभूमि की रक्षा करते हुए शहीद हुए थे। इस प्रकार, 9-10 नवंबर सन 1675 ई. की यह अमर बलिदान-गाथाएँ सिख इतिहास में आत्मोत्सर्ग, अटल आस्था एवं मानवीय गरिमा की चिरस्मरणीय मिसाल बन गईं, उन्होंने "धर्म की खातिर सिर दिया, सर न दिया" इस प्रकार से उन्होनें धर्म की परम्परा को शाश्वत सत्य में रूपांतरित किया।

14. दिल्ली दरबार की तीन शर्ते (11 नवंबर 1675 ई.)

चाँदनी चौक, दिल्ली में औरंगजेब के प्रतिनिधियों ने नौवें गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' के सम्मुख तीन विकल्प रखे–

1. कोई चमत्कार प्रस्तुत करें,
2. इस्लाम धर्म स्वीकार करें,
3. अन्यथा मृत्यु के लिए तैयार रहें।

समस्त देश की निगाहें गुरु जी के निर्णय पर टिकी थीं। उन्होंने इंसानियत की ज़मीर बचाने हेतु तीसरा मार्ग स्वैच्छिक शहादत को स्वीकार किया। सर्व-कला-सम्पन्न गुरु जी चाहें तो चमत्कार दिखा सकते थे; परंतु उन्होंने अपनी शहादत से अत्याचार-विरोध और धार्मिक स्वतंत्रता का शाश्वत संदेश रचा।

15. विश्व इतिहास में अनुपम उदाहरण

दूसरे धर्म की रक्षा के लिए स्वयं प्राण अर्पित करने का ऐसा अद्भुत उदाहरण विश्व-इतिहास में अद्वितीय है। गुरु जी ने अपनी शहादत की "चादर" से मानवीय अंतरात्मा को ढक लिया। जिसे एक कवि ने इस तरह से शब्दांकित किया है–

तेग बहादुर के चलत भयो जगत में शोक॥
है है है सब जग भयो जै जै जै सुर लोक॥

धरती पर शोक, देव-लोक में जय-जयकार, निश्चित ही यह घटना शहादत और मानवाधिकार दोनों की महिमा का प्रतीक बन गई।

16. पावन धड़ का संस्कार : गुरुद्वारा रकाबगंज

गुरु जी के परम भक्त भाई लक्खी शाह बंजारे ने गुरु.दर्शन के उपरान्त धड़ को सम्मान पूर्वक शहादत वाले स्थान से उठाकर, अपने घर को अग्नि.समर्पित कर अन्तिम संस्कार किया। आज वह स्थल दिल्ली में विलोभनीय इमारत के रूप में

गुरुद्वारा रकाबगंज गुरु साहिब जी की पावन स्मृति में सुशोभित है।

17. श्री आनंदपुर साहिब तक शीश की यात्रा

भाई जैता जी ने मुगल पहरे को छलते हुए गुरु जी का शीश श्री आनंदपुर साहिब पहुँचाया। वहाँ दशम पिता 'श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी' ने भाई जैता जी को संबोधित कर, आनन्दोल्लास से घोषणा की—

"रंगरेटा, गुरु का बेटा!"

यह सम्मान शहीद-परम्परा का गौरव-सूत्र बन गया।

18. गुरु-संदेश की आज्ञा : अमन व शांति

गुरु जी ने स्पष्ट कर दिया कि सत्ता का अहंकार और ज़ोर-जुल्म चिरस्थायी नहीं।
केवल दया, धर्म और न्याय के मार्ग पर चलकर ही विश्व-शांति संभव है।

19. शहीदी-वर्ष को समर्पित काव्य-संवेदना

तिमिर घना होगा तमा लंबी होगी,
पर तमस से विहान रुका है क्या?
ज्ञान के विहान का विधान रुका है क्या?
इंसानियत की ज़मीर का पहरेदार रुका है क्या?
बाहुबल के दम पर धर्म का अवसान हुआ है क्या?
मिट गए मिटाने वाले गुरुओं के ज्ञान के सम्मुख,
शमशीर के वार से धर्म का विहान रुका है क्या?

इन पंक्तियों में छिपा प्रतिबिंब उद्घोष करता है कि शस्त्र-बल क्षणभंगुर है, परंतु गुरु जी की शहादत शाश्वत है।

20. निष्कर्ष

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी ने

- बहुआयामी शिक्षण, संगीत और युद्ध-कला का समन्वय प्रस्तुत किया।
- लोक-कल्याणकारी यात्राओं द्वारा सामाजिक-धार्मिक पुनर्जागरण किया।
- अत्याचार-विरोधी शहादत से धर्मनिरपेक्षता और मानवाधिकार का अमर घोष रच दिया।

इस प्रकार वे वास्तव में "श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी इंसानियत की ज़मीर के रखवाले" के स्वरूप में सम्मानित हुए। उनकी 350 वीं शहादत-वर्ष की स्मृति समस्त मानवता को—

धर्म-स्वातंत्र्य, सहिष्णुता एवं सेवाभाव का प्रकाश-स्रोत प्रदान करती रहेगी।

इंसानियत की ज़मीर के रखवाले 'श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी' को कोटिशः नमन!

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

छायावाद की सशक्त हस्ताक्षर : महादेवी वर्मा

सुनील कुमार
शोधार्थी - (हिन्दी अध्यापक)
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय, टीकरी कलां (दिल्ली)
पता - House No- 374, Sector - 2, Bahadurgarh,
Distt. Jhajjar (Haryana - 124507)
ईमेल - sunilkumar121110@gmail.com
मोबाइल - 9050774978

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र हिंदी साहित्य के छायावादी युग की प्रमुख स्तंभ, कवयित्री महादेवी वर्मा के साहित्यिक योगदान और उनके काव्य में निहित विभिन्न पहलुओं पर केंद्रित है। इस पत्र में महादेवी वर्मा के जीवन, उनकी रचनाओं की प्रमुख विशेषताओं, नारी चेतना, वेदनाभूति, आध्यात्मिकता और रहस्यवाद के तत्वों तथा हिंदी साहित्य में उनके अद्वितीय स्थान का विश्लेषण किया गया है। यह शोध उनकी कविताओं के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं, प्रकृति प्रेम और दार्शनिक विचारों के चित्रण को भी उजागर करेगा।

महादेवी वर्मा को छायावाद युग के सबसे प्रमुख रचनाकारों में गिना जाता है। छायावाद हिन्दी साहित्य का वह युग है जब प्रेम, प्रकृति और आत्मसात रचनायें अपने समय का प्रतिनिधित्व कर रहीं थीं। महादेवी वर्मा की रचनाओं में भी छायावाद एक अव्यक्त प्रेम की तरह अन्तर्निहित दिखाई पड़ता है। रचनाकार होने के साथ साथ एक नारी का प्रेम के प्रति दृष्टिकोण भी बहुत स्पष्ट रुप से दिखाई देता है। किन्तु नारी का जीवन हर आयु में अलग चरित्रों को निभाते हुए बीतता है। कभी वह बेटी है, कभी सखी, कभी प्रेमिका है और कभी माँ। परंतु इन सब जिम्मेदारियों को निभाते हुए वह एक दीप की भाँति जलती है जो प्रकाशित करती है उन सबका जीवन, जो उसके सम्पर्क में आते हैं।

प्रस्तावना

महादेवी वर्मा (1907-1987) हिंदी साहित्य के उस स्वर्णिम काल की प्रतिनिधि कवयित्री हैं जिसे 'छायावाद' के नाम से जाना जाता है। छायावाद, बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में विकसित एक ऐसा साहित्यिक आंदोलन था जिसने कविता को रूढ़ियों से मुक्त कर कल्पना, भावना और व्यक्तिपरकता का नया आयाम दिया। जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और सुमित्रानंदन पंत के साथ महादेवी वर्मा को 'छायावाद के चार स्तंभ' में से एक माना जाता है। उनकी कविताएं न केवल अपनी भावुकता और मार्मिकता के लिए प्रसिद्ध हैं, बल्कि उनमें गहन दार्शनिक चिंतन और सामाजिक चेतना का भी समावेश है।

महादेवी वर्मा : जीवन परिचय और साहित्यिक यात्रा

संक्षिप्त परिचय : महादेवी वर्मा, जिन्हें आधुनिक मीरा के नाम से भी जाना जाता है, हिंदी साहित्य की एक महान कवयित्री थीं। उनका जन्म 26 मार्च 1907 को फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ था। उन्होंने छायावादी काव्यधारा में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

जन्म और परिवार : महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च 1907 को उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद में हुआ था। उनके पिता का नाम गोविंद प्रसाद वर्मा था, जो भागलपुर के एक कॉलेज में प्राध्यापक थे। उनकी माता का नाम हेम रानी देवी था, जो एक धार्मिक महिला थीं और संगीत में गहरी रुचि रखती थीं।

शिक्षा : महादेवी वर्मा ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा इंदौर में प्राप्त की। इसके बाद, उन्होंने प्रयाग महिला विद्यापीठ में पढ़ाई की, जहां वे प्रधानाचार्य भी रहीं। उन्होंने संस्कृत में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की।

साहित्यिक जीवन : महादेवी वर्मा ने सात वर्ष की आयु से ही कविता लिखना शुरू कर दिया था। 1925 में, जब उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की, तब तक वे एक प्रसिद्ध कवयित्री के रूप में जानी जाने लगी थीं।

प्रमुख रचनाएँ : काव्य : नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, सप्तपर्णा, यामा, अग्निरेखा, आत्मिका, दीपगीत

गद्य : अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएं, श्रृंखला की कड़ियाँ, मेरा परिवार, क्षणदा।

पुरस्कार और सम्मान

1942 में, 'स्मृति की रेखाएं' के लिए द्विवेदी पदक।

1943 में, मंगलाप्रसाद पारितोषिक और भारत भारती पुरस्कार।

1952 में, उत्तर प्रदेश विधान परिषद की सदस्या मनोनीत।

1956 में, पद्म भूषण।

1971 में, साहित्य अकादमी की सदस्यता।

1988 में, मरणोपरांत पद्म विभूषण।

ज्ञानपीठ पुरस्कार (यामा के लिए)।

निधनरू महादेवी वर्मा का निधन 11 सितंबर 1987 को हुआ।

महादेवी वर्मा के काव्य की विशेषताएं :

महादेवी वर्मा छायावाद की कवयित्री है। उनके के काव्य में रहस्यवाद दिखाई देता है इसलिए महादेवी वर्मा को आधुनिक मीरा कहा जाता है। अतः उनके काव्य में आत्मा परमात्मा के मिलन, विरह तथा प्रकृति के कार्यव्यापारों की छाया स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। वेदना और पीड़ा महादेवी के काव्य के प्राण रहे। महादेवी का समस्त काव्य पीड़ा भरा है। महादेवी वर्मा को पीडवाद और रहस्यवाद की कवयित्री कहा जाता है। वह स्वयं लिखती है, "दुख मेरे जीवन निकट का ऐसा काव्य है, जिसमें सारे संसार को एकसुत्र में बांधने की अपूर्व क्षमता है। मीरा के काव्य में वर्णित वेदना लौकिक वेदना से अलग अध्यात्मिक वेदना है। उसी लिए सहज और सवेज्ञ हो सकती है, जिसमें उस अनुभूति क्षेत्र में प्रवेश किया हो। वैसे महादेव वर्मा उस वेदना को,उस दुख की संज्ञा देती है, जो सारे संसार को एक सूत्र में बांधने की क्षमता रखता हो।" किंतु विश्व को एक सूत्र में बांधने वाला दुःख सामान्यतः लौकिक दुःख ही होता है जो भारतीय साहित्य की परंपरा में करुणरस का स्थायीभाव होता है। महादेवी वर्मा ने इस दुःख को नहीं अपनाया है। वह कहती है, "मुझे दोनों ही दुःख के रूप प्रिय है,एक वह जो मनुष्य के संवेदनशील मन को सारे संसार से एक अविच्छिन्न बंधनों में बांध देता है,और दूसरा वह जो काल और सीमा के बंधन में पड़े हुए असीम चेतना का कृदंत है।" महादेवी के काव्य में पहले प्रकार का नहीं दूसरे प्रकार का कृदंत ही अभिव्यक्त हुआ है। संभवतः इसलिए रामचंद्र शुक्ल ने उनकी सच्चाई में ही संदेह व्यक्त करते हुए लिखा है, "इस वेदना को लेकर उन्होंने रद्द है कि ऐसी अनुभूतियां

सामने रखी जो लोकोत्तर है, कहां तक वे वास्तविक अनुभूतियां है और कहां तक अनुभूतियों की रमणीय कल्पना यह नहीं कहा जा सकता।" इसी आध्यात्मिक वेदना की दिशा में प्रारंभ से अंत तक महादेवी के काव्य की सुख और विस्तृत भाव अनुभूतियों का विकास और प्रसार दिखाई पड़ता है। डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी तो उनके काव्य की पीड़ा को मीरा की काव्य पीड़ा से भी बढ़कर मानते हैं।

महादेवी वर्मा समस्त मानव जीवन को निराशा और व्यथा से परिपूर्ण रूप में देखती थी। वह अपने को नीर भरी दुख की बदली कहती थी, "मैं नीर भरी दुख की बदली, विस्तृत नभ का कोई कोना, मेरा न कभी अपना होना, परिचय इतना इतिहास यही, उमड़ी थी कल मिट आज चली।"

महादेवी वर्मा का आधुनिक कविताओं में औरों से भिन्न अपना एक विशिष्ट और निराला स्थान है। इस विशिष्टता के दो कारण हैं, एक तो उनका कोमल ह्रदय नारी होना और दूसरा अंग्रेजी और बंगाला के रोमांटिक और रहस्यवादी काव्य से प्रभावित होना। इन दोनों कारणों से एक और उन्हें अपने आध्यात्मिक प्रियतम को पुरुष मानकर स्वाभाविक रूप में अपना स्त्री जीवन चित्र अनुभूतियों को निवेदित करने की सुविधा मिली। दूसरी ओर प्राचीन भारतीय साहित्य और दर्शन तथा संत युग के रहस्यवादी काव्य के अध्ययन और अपने पूर्ववती तथा समकालीन छायावादी कवियों के काव्य से निकट का परिचय होने के फलस्वरूप उनकी काव्य अभिव्यंजना और बौद्धिक चेतना शत प्रतिशत भारतीय परंपरा के अनुरूप बनी रही। इस तरह उनके काव्य में जहां कृष्णभक्ति काव्य की भावना गोपियों के माध्यम से नहीं सीधे अपनी आध्यात्मिक अनुभूति की अभिव्यक्ति के रूप में प्रकाशित हुई है, वही सूफी पुरुष कवियों की भांति उन्हें परमात्मा को नारी के प्रतीक में प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता नहीं पड़ी है। महादेवी वर्मा के काव्य में निम्नलिखित विशेषताएँ दिखाई देती है।

प्रकृति चित्रण - अन्य रहस्यवादी और छायावादी कवियों के समान महादेवी जी ने भी अपने काव्य में प्रकृति के सुंदर चित्र प्रस्तुत किए हैं। उन्हें प्रकृति में अपने प्रिय का आभास मिलता है और उससे उनके भावों को चेतना प्राप्त होती है। वे अपने प्रिय को रिझाने के लिए प्रकृति के उपकरणों से अपना श्रृंगार करती हुई कहती है–

"शशि के दर्पण में देख देख मैंने सुलझाएं तिमिर केश,
गूथे चुन तारक पारिजात अवगुंठन कर किरणें अशेष।"

छायावाद और प्रकृति का अन्योन्याश्रित संबंध रहा है। महादेवी जी के अनुसार छायावाद की प्रकृति घटक उपाधि से भरे जल की एकरूपता के समान अनेक रूपों से प्रकट एक महाप्राण बन गई। स्वयं चित्रकार होने के कारण उन्होंने प्रकृति के अनेक भव्य तथा आकर्षक चित्र साकार किए हैं। महादेवी वर्मा जी की कविता के दो कोन है, एक तो उन्होंने चेतना में प्रकृति का स्वतंत्र विश्लेषण किया है। वह कहती है–

"कनक से दिन मोती सी रात सुनहरी सांग गुलाबी,
प्राप्त मिटाता रंगता बारंबार कुंजक्का वह चित्र आधार?" अथवा
"तारक में बंधन शीशफूल पर शशि की नूतन रश्मि वाला,
सीट आवंटन धीरे धीरे उतर क्षितिज से वसंत रजनी!"

दूसरा प्रकृति को भाव जगत का अंग मानकर उन्होंने मुख्यतः रहस्य साधना का चित्रण किया है। कवयीत्री को अनंत के दर्शन के लिए क्षितिज के दूसरे छोर को देखने की जिज्ञासा है। उन्होंने समस्त भावनाओं और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति प्रकृति के माध्यम से की है। 'शांति गीत ' में वे अपने जीवन की तुलना चांद, गगन से करती है और वह कहती है–

"चांद गगन मेरा जीवन यह क्षितिज बना धुंधला विराग
नवम अरुण मेरा सुहाग छाया सी काया वितराग।"

भावना, कल्पना और पीड़ा

महादेवी वर्मा की सृजन प्रक्रिया विशुद्ध भावात्मक रही है। उनकी धारणाओं को योग के विभिन्न वाद परिवर्तित नहीं

कर सके हैं। उन्होंने किसी एक दर्शन को केंद्र नहीं बनाया। जीवन अथवा समाज के लिए उपयुक्त समझा, उसे आत्मसात कर लिया। महादेवी जी विशुद्ध रूप से भारतीय संस्कृति की पोषक होने के कारण उनकी समस्त काव्य कृतियों में उनका प्रभाव परिलक्षित होता है। वह छायावाद का मूल दर्शन सर्वात्मवाद को मानती है और प्रकृति को उसका साधन मानती है। छायावाद ने मनुष्य और प्रकृति के इस संबंध में प्राण डाल दिए, जो प्राचीन काल से बिंब प्रतिबिंब के रूप में चला आ रहा था। जिसके कारण मनुष्य को प्रकृति अपने दुख में उदास और दुख में पुलकित जान पड़ती थी,उन्होंने छायावाद का विवेचन करते हुए प्रकृति के साथ रागात्मक संबंध का प्रतिपादन विशेष रूप से किया है। उनके साथ ही उन्होंने सूक्ष्म या अंतर की सौंदर्य वृद्धि के उद्घाटन पर बल दिया है। महादेवी की कविता अनुभूति से परिपूर्ण है। सुमित्रानंदन पंत और सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की कविताएं दार्शनिकता के बोझ से दब सी गई है, किंतु महादेवी वर्मा के काव्य में ऐसी बात नहीं उसमें दार्शनिकता होते हुए भी वह सर्वत्र भावना प्रधान है। महादेवी वर्मा के काव्य में संगीतात्मकता का विशेष गुण है। वह गीत लेखिका है, गीतों की लहरों पर उनका अद्भुत अधिकार हर जगह दिखाई देता है। वह महादेवी माधुरी भाव की उपासिका है। ब्रह्मा को उन्होंने प्रियतम के रूप में देखा है। अपने प्रेम पात्र के लिए उन्होंने प्रिय संबोधन दिया है। उनके गीत उज्जवल प्रेम के गीत है।उनके द्वारा अपने अंदर की जिस सात्विकता का उन्होंने परिचय दिया है, वह उनकी काव्य गरिमा का आधार स्तंभ है। जब जीवन में दिव्य प्रेम की मधुर संगीत के रागिनी झंकृत हुई तब कवयीत्री के मन में उसने अपने सपनों को जन्म दिया वह कहती है,

''इस ललचाए आंखों पर पहरा था जब व्रीडा का,
साम्राज्य मुझे दे डाला उस चितवन ने पीड़ा का"

चीर तृषित आत्मा युग से सर्व विश्वव्यापी परमात्मा से मिलने के लिए व्याकुल हो रही है। महादेवी वर्मा की वेदना अनुभूति संकलन आत्मानुभूति की सहज अभिव्यक्ति है। 'मिलन का मत नाम लो मैं बिरहा में चीर हूं ' कह कर वह इसी विरह को जीवन की साधना मानती है। उन्होंने पीड़ा की महत्ता ही घोषित नहीं कि उसका सुखद पक्ष भी स्पष्ट किया है। उनके सुख का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। जब दुःख अपनी अंतिम सीमा तक पहुंच जाता है, तब वही दुःख सुख का रूप धारण कर लेता है। इसलिए महादेवी वर्मा कहती है, ''श्रद्धेय यही जलने का ठंडी विभूति हो जाना है पीड़ा की सीमा यह दुख का चीर सुख हो जाना।"

महादेवी वर्मा दुःख को जीवन की पूर्ति तथा प्रेरणा तत्व मानती है। उनकी दृष्टि में वेदना का महत्व तीन कारणों से है ,वह अंत करण को शुद्ध करती है, प्रिय को अधिक निकट लाती है, और प्रियतम की शोभा भी उसी पर आधारित है। अतः उनके काव्य में दुःख के तीन रूप मिलते हैं, वर्णनात्मक, करुनात्मक और साधनात्मक। महादेवी वर्मा राष्ट्रवाद को स्वीकार नहीं करती। उन्होंने दुःख को मधुर्भाव के रूप में स्वीकार किया है,जिसमें वह अलौकिक प्रिय के लिए दीप बनकर जलना चाहती है। महादेवी वर्मा कहती है, ''मधुर मधुर मेरे दीपक जल युग युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल प्रियतम का पथ आलोकित कर।"

महादेवी वर्मा के अनुसार दुःख जीवन का ऐसा काव्य है, जो समस्त विश्व को एक सूत्र में बांधने की क्षमता रखता है। उनका दुःख यष्टि परखना होकर समझती पर रख रहा है उन्होंने कहा है कि ''व्यक्तिगत सुख विश्व वेदना में खुलकर जीवन को सार्थकता प्रदान करता है और व्यक्तिगत दुःख विश्व सुख में खुलकर जीवन को अमरत्व प्रदान करता है।'' उनका मानना है कि,

''मेरे हंसते अधर नहीं जग की आंसू लड़ियां देखो,
मेरे गीले पलक छुओ मत मुरझाई कलियां देखो।"

महादेवी वर्मा का रहस्यवाद

छायावादी काव्य में एक अध्यात्मिक आवरण तथा छाया रही है। अतः रहस्यवाद छायावादी कविता के प्रवृत्ति विशेष के लिए प्रयुक्त किया गया है। महादेवी जी के अनुसार रहस्य का अर्थ वहां से होता है जहां धर्म की इति है, रहस्य का उपासक

ह्रदय में सामंजस्य मूलक परम तत्व की अनुभूति करता है और वह अनुभूति पर्दे के भीतर रखते हुए दीपक के समान अपने प्रशांत आभास से उसके व्यवहार को स्निग्धा देती है। महादेवी वर्मा की रुचि सांसारिक भोग की अपेक्षा आध्यात्मिकता की ओर अधिक दर्शित होती है। ऋषि अनुभूति की पांच अवस्थाएं उनके काव्य में लक्षित होती है। जिज्ञासा, आस्था, अद्वैत, भावना, प्रयानुभूति,विरहानुभूति महादेवी जी ने उस परम तत्व को देखने की, जानने की निरंतर जिज्ञासा रही है। वह कुतूहल से पूछती है,'' कौन तुम मेरे ह्दय में कौन मेरी कसक में नीत मधुरता भरता अलक्षित" आत्मा और परमात्मा के अद्वैत तत्व के लिए बीन और रागिनी का प्रतीक उनकी अभिनव कल्पना एक सुंदर उदाहरण है। उनकी यह भावना कोरे दार्शनिक ज्ञान या तत्व चिंतन पर आधारित नहीं है,अपितु उनमें राधे का भावात्मक योग भी लक्षित होता है।

छायावादी कहे जाने वाले कवियों में महादेवी जी ही रहस्यवाद के भीतर रही है। उस अज्ञात प्रियतम के लिए वेदना ही उनके ह्दय का भाव केंद्र है, जिससे अनेक प्रकार की भावनाएं टूट टूट कर झलक मारती रही है। वेदना से उन्होंने अपना स्वाभाविक प्रेम व्यक्त किया है। उसी के साथ में रहना चाहती है, उसके आगे मिलन सुख को भी वे कुछ नहीं मानती। वह कहती है कि, ''मिलन का मत नाम ले इस वेदना को लेकर उन्होंने ह्दय की ऐसी अनुभूति सामने रखी है, जो लोकोत्तर है। कहां तक वे वास्तविक अनुभूतियां है और कहां तक अनुभूतियों की रमणीय कल्पना है यह नहीं कहा जा सकता। एक पक्ष में अनंत सुषमा दूसरे पक्ष में अपार वेदना महादेवी के काव्य में दिखाई देती है, जिनके बीच उसकी अभिव्यक्ति होती है। यह दोनों दो और एक ही संस्कृति की चित्र पट्टी है।"[4]

महादेवी वर्मा के काव्य की भाषा शैली - महादेवी वर्मा की कुछ प्रासंगिक कविताएं ब्रजभाषा में है किंतु बाद का संपूर्ण रचना संसार खड़ी बोली हिंदी में है। महादेवी वर्मा की खड़ी बोली संस्कृत मिश्रित है। वह मधुर कोमल और प्रवाह पूर्ण है। उसमें कहीं भी निरसता और कर्कसता नहीं है। वैसे महादेवी वर्मा की भाषा सरल है किंतु सूक्ष्म भावनाओं के चित्रण में वह संकेतात्मक होने के कारण कहीं-कहीं अस्पष्ट सी भी हो गई है। शब्द चयन अत्यंत सुंदर है किंतु भाषा में कोमलता और मधुरता लाने के लिए कहीं कहीं शब्दों का अंग भंग आवश्यक मिलता है। जैसे आधार का आधार अभिलाषाओं का अभिलाषी आदि। महादेवी वर्मा की शैली में निरंतर विकास होता रहा है। 'निहार' काव्य संग्रह में उनकी शैली प्रारंभिक अवस्था में है। इस प्रारंभिक अवस्था की शैली में भाव कम है शब्द अधिक। 'निर्जा ' काव्य संग्रह की शैली में भाव और भाषा की समानता है। 'दीपशिखा' काव्य संग्रह में उनकी शैली पूर्ण हो गई है और थोड़े शब्दों में बहुत कुछ कहने की क्षमता आ गई है। भावों को मूर्त रूप देने में महादेवी जी अत्यंत कुशल थी। उन्होंने अपनी कविताओं में प्रतीकों और संकेतों का असर अधिक लिया है। अतः उनकी शैली कहीं कहीं कुछ जटिल और दूर हो गई है और पाठक को कविता का अर्थ समझने में कुछ परिश्रम करना पड़ता है।

रस, छंद, अलंकार, शिल्प और प्रतीक - महादेवी की कविता वियोग शृंगार प्रधान है। वियोग के जैसे रहस्यमयी चित्र उन्होंने अंकित किए हैं, वैसे अत्यंत दुर्लभ है। करुण रस की अभिव्यंजना भी उनके काव्य में हुई है। उनके काव्य में सभी छंद मात्रिक है और वे अपने आप में पूर्ण हैं। उनमें संगीत और लय का विशेष रूप से समावेश है। अलंकार योजना अत्यंत स्वाभाविक है और अलंकारों का प्रयोग भाव की तीव्रता प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुई है। उपमा रूपक अलंकारों की अधिकता है। शब्दालंकारों की ओर महादेवी वर्मा की विशेष रूचि प्रतीत होती, फिर भी उनके गीत उनकी व्यवस्था साहित्य साधना के परिणाम है। उनके काव्य में छायावादी कविता के सिर्फ विधान का सफल रूप दिखाई देता है। गीतिकाव्य के तत्व अनुभूतिप्रणवता अध्यक्ष अध्यक्ष आत्मा भी व्यक्ति संक्षिप्त का भवन विविधता आदि उनके काव्य में पूर्णतरू दर्शित होते हैं। उन्होंने स्वयं कहा है सुख-दुख की भावावेशमयी अवस्था का विशेष गिने-चुने शब्दों में वर्णन करना ही गीत है। अभिव्यक्ति की कलात्मकता लाक्षणिकता स्थूल के स्थान पर सूक्ष्म मानव का ग्रहण कोमलकांत पदावली, कल्पना का वैभव, चित्रात्मक प्रतीक विधान, बिम्ब योजना आदि कला तत्वों का उनकी अष्मिता में पूर्ण अभिनिवेश है। उनकी शिल्प प्रतिभा अनुपम है। उनके अंतस का कलाकार कला के प्रति सर्वदा सचित्र रहा है। उदाहरण के लिए, ''निशा को धो देता राकेश चांदनी में जब अलके खोल, कली से कहता हूं मधुमास बता दो मधु मदिरा का मोल।"

मानवेत्तर प्राणियों के प्रति प्रेम भावनाः महादेवी जी केवल मनुष्यों से ही प्रेम नहीं करती थीं अपितु अन्य मानवेत्तर प्राणियों से भी उनका गहरा लगाव था। उन्होंने अपने घर में भी कुते, बिल्ली, गाय, नेवला आदि को पाला हुआ था। इनके रेखाचित्रों एवं संस्मरणों में इन मानवेतर प्राणियों के प्रति इनका गहन प्रेम और संवेदना प्रकट होता है।

गद्य साहित्य में वात्सल्य भावना का अनूठा चित्रण हुआ है। उनको मानव ही नहीं मानवेतर प्राणियों से भी वत्सल प्रेम था वे अपने घर में पाले हुए कुत्ते, बिल्लियों, नेवला, गाय आदि प्राणियों की एक मां के सेवा करती यही सेवा भावना उनके रेखाचित्र और संस्मरणों में भी अभिव्यक्त हुई है। इसी भाव के मानस हिरणी की मृत्यु की घटना के बाद उन्होंने फिर कभी किसी अन्य हिरण-हिरणी को न पालने का निश्चय किया था।

समाज सुधार की भावना

समाज सेवा भावना से ओत प्रोत महिला थी। उनके जीवन पर बुद्ध, विवेकानंद आदि विचारकों का प्रभाव पड़ा जिसके कारण उनकी वृत्ति समाज सेवा की और उन्मुख हो गई थी। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से से समाज में फैली कुरीतियों, विसंगतियों, विडम्बनाओं आदि को उखाड़ने के मन्त्रपूर प्रयास किए हैं। इन्होंने अपने गद्य साहित्य में नारी शिक्षा का भरपूर समर्थन किया है तथा नारी शोषण, बाल विवाह आदि का विरोध किया। उनके समाज सुधार संबंधी विचार उनके प्रायः सभी संस्मरणों में बिखरे पड़े हैं।

आधुनिक मीरा : महादेवी जी को हिंदी की सबसे सशक्त कवयित्री होने के कारण आधुनिक मीरा के नाम से भी जाना जाता है। भक्ति काल में जो स्थान भगवान श्रीकृष्ण की परम भक्त मीरा को प्राप्त हुआ है आधुनिक काल में वह स्थान महादेवी वर्मा को मिला है। जिस तरह से मीरा अपने गिरवर गोपाल के प्रति तन-मन-धन से समर्पित रही उसी तरह से महादेवी जी ने साहित्य साधना को अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया।

मीरा का प्रियतम सगुण, साकार गिरधर गोपाल है जिसके प्रति वे समर्पित रही, तो दूसरी ओर महादेवी के प्रियतम असीम निर्गुण निराकार (ब्रह्म) हैं और उसके प्रति वे समर्पित हैं। महादेवी अपने आप में एक जीवन गाथा हैं। महादेवी का प्रसिद्ध गीत, 'मैं नीर भरी दुःख की बदली' इस बात का परिचायक है कि उनका यह जीवन दर्शन है जो मीराबाई जैसा ही है।

निष्कर्ष

महादेवी वर्मा हिंदी साहित्य की एक ऐसी विभूति हैं जिनकी काव्य यात्रा वेदना, प्रेम, रहस्य और दर्शन का संगम है। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं को एक नया आयाम दिया और नारी चेतना को सशक्त बनाया। उनकी साहित्यिक विरासत आज भी प्रासंगिक है और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी। उनका अद्वितीय योगदान हिंदी साहित्य के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है।

महादेवी के गद्य साहित्य में दलित और पीड़ित समुदाय के प्रति सहानुभूति, समवेदना और उनके शोषण के खिलाफ आक्रोश की अभिव्यक्ति हुई है। रेखाचित्र हो या निबंध, सर्वत्र उन्होंने उपेक्षित वर्ग और नारी समुदाय के कष्टों को प्रकाशित किया है।उनके साहित्य में केवल वेदना का हाहाकार ही नहीं है बल्कि नवनिर्माण का स्वर भी है। यह नवनिर्माण अतीत और वर्तमान के सुंदर और संतुलित मेल से ही संभव होगा। समाज के रूढ़ और जर्जर मान्यताओं को इसके लिए उखाड़ फेंकना जरूरी है।

महादेवी ने अपने वास्तविक जीवन में समाज के बने बनाए बंधनों और नियमों को तोड़ा, जिसकी झलक उनके साहित्य में भी मिलती है। उन्होंने हमेशा नारी-स्वातंत्र्य की वकालत की और नारी को शोषण और परतंत्रता की बेड़ी से मुक्त करने का प्रयास किया। उनकी अपने जीवन की वेदना आम जनता की वेदना से जुड़ गई है, जिससे उनका साहित्य संवेदना और मार्मिकता से संपृक्त हो गया है। महादेवी वर्मा ने संस्मरण और रेखाचित्र की अद्‌भुत मिली-जुली विधा विकसित की। उनके संबंध में कहा गया है कि छायावाद ने उन्हें जन्म दिया था और उन्होंने छायावाद को जीवन दिया।

संदर्भ सूची

1) छायावाद - नामवर सिंह
2) हिन्दी साहित्य का इतिहास - रामचंद्र शुक्ल
3) Hindwi.com
4) पत्र - पत्रिकाएं
5) NCERT Books
6) इसके अतिरिक्त यह आलेख महादेवी वर्मा की कहानियों, संस्मरणों, निबंधों, एवं कविताओं का अध्ययन करके एवं स्वयं के मौलिक विचारों से लिखा गया है।

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

CYBER CRIMES AGAINST WOMEN AND LAWS IN INDIA: ISSUES AND CHALLENGES

Dr. Mukta Verma
Assistant Professor, Faculty of Law,
University of Allahabad, Prayagraj, U.P.
mktverm6@gmail.com

ABSTRACT

Computers, information technology, and artificial intelligence have revolutionized human life in both positive and negative ways. There are various examples when computer science, machine learning, and artificial intelligence have become a boon to the entire human race, and on the other hand it has provided a platform to cyber criminals to commit cyber crimes. Cyber criminals may belong to any corner of the world and in the same way victim may come across the globe. Women are the soft target of cyber criminals as they are supposed to be emotional, caring, and supportive by nature. The cyber world is full of information, and anyone can get information about another person easily if they have not followed privacy settings to protect their data. Information Technology Act, 2000, IT Amended Act, 2008 and Bhartiya Nyaya Sanhita (BNS), Bhartiya Sakshya Adhinium etc. have provisions for punishment. There are various provisions in IT Act, 2000 and IT Act, 2008 and B.N.S to curb the cyber crimes against women but due to lack of implementation of laws in true manner there are various instances when women have been victim of cyber crimes and suffered mental and physical trauma.

Keywords: Cyber Crimes, women, IT Act, BNS, BNSS.

INTRODUCTION

Cybercrimes against women are the new types of crimes that are committed in the virtual world. Online defamation, cyber stalking, blackmailing, video voyeurism, etc., are a few of the types of cybercrimes against women. The impact of cyber crimes on women victims may be huge in terms of social, economic, psychological, and political etc. Teenage girls, women and many other innocent women may be the soft target of cyber criminals.

DIFFERENT TYPES OF CYBER CRIMES AGAINST WOMEN COMMITTED IN CYBERSPACE

1. **Cyber stalking**
2. **Morphing**

3. **Cyber Extortion**
4. **Defamation**

TOOLS AND TECHNIQUES USED TO EXTRACT, ACCESS AND THEFT THE DATA

1. "Virus
2. Trozan horse
3. Spam
4. Spim
5. Logic bomb
6. Threatening email
7. Phishing
8. Hacking
9. Email spoofing
10. Data theft
11. Logic bomb
12. Email and list serves
13. Signing up on Internet services
14. Cache
15. Plugin
16. Spyware, adware or malware
17. Blogging
18. Liking on unauthorised websites or apps
19. Third party app which are restricted to use and not safe on play store
20. Web bugs
21. Direct marketing"[1]

DIFFERENT PROVISIONS OF BHARTITA NYAYA SANHITA TO CURB CYBER CRIMES

1. **"Section 294 of BNS**

   It has a provision for punishment for the publication and transmission of obscene material in offline and online modes. There is a provision of punishment that includes imprisonment and fines and harsher penalties for repeating the offenses.

1 National Cyber Crime Reporting Portal, Online Safety Tips, retrieved from https://cybercrime.gov.in/Webform/Crime_OnlineSafetyTips.aspx visited on 17 August 2021.

2. **Section 77 of BNS**

It makes punishment for the acts of capturing or publishing pictures of the private parts of any person or acts of a woman without her consent, and may be known as voyeurism.

3. **Section 303 of BNS**

This section specifically addresses theft related to mobile phones, data, or computer hardware/software. It offers a legal framework to prosecute individuals engaged in cyber theft activities. However, the applicability of special laws like the IT Act takes precedence in cases where they are attracted.

4. **Section 78 of BNS**

It has provisions for the punishment of stalking in the real as well as in virtual world.

5. **Section 317 of BNS**

It has provisions for the punishment of receiving a stolen or theft mobile phone, computer, or data. It also provides punishment even on possession of such property by any third party.

6. **Section 318 of BNS**

It provides punishment for committing cyber frauds such as password theft, creating bogus websites. It has provisions of varying degrees of imprisonment and fines based on the gravity and nature of the offense."[2]

7. **"Section 336 of BNS**

This section has provisions for punishment for offenses like email spoofing, online forgery. It prescribes imprisonment, fines, or both based on the severity of the crime. If forgery harms to reputation of a person, it also prescribes punishment."[3]

8. **"Section 356 of BNS**

It has provision for punishment of Penalization on defamation, including sending defamatory data through email. It imposes imprisonment and fines on the gravity of the crime."[4]

DIFFERENT PROVISIONS OF INFORMATION TECHNOLOGY ACT, 2000 AND INFORMATION TECHNOLOGY (AMENDED ACT), 2008

1. "Section-43- Penalty for damage to computer, Computer Source code and Computer system.
2. Section-65- Tampering with Computer Source Code.
3. Section-66- Hacking with Computer System.
4. Section-66 B- Receiving a stolen Computer Resource.
5. Section-66 C-Identity Theft.
6. Section-66 D- Cheating by Personation.

---

2 Cyber crime punishments under BNS (Bharatiya Nyaya Sanhita).

3 Cyber crime punishments under BNS (Bharatiya Nyaya Sanhita).

4 Id.

7. Section-66-Violation of Privacy.
8. Section-66 F- Cyber Terrorism.
9. Section-67- Publishing of obscene information.
10. Section-67 A- Publishing material containing sexually explicit content.
11. Section-67 B- Child Pornography.
12. Section-69-Central Government can intercept, monitor or intercept or decrypt the data.
13. Section-69 A- Blocking of objectionable website in India.
14. Section-79-Liability on Intermediaries.
15. Section-84 B Abetment to Commit an Offence.
16. Section-84C-Attempt to Commit an Offence."[5]

"Information Technology (Intermediary Guidelines and Digital Media Ethics Code) Rules, 2021

To prevent fake news and regulation of media these rules have been framed. Various cases have been reported on media which has affected the law and order in society. These Rules are pending to passed from Parliament."[6]

PROVISION OF INFORMATION TECHNOLOGY ACT, 2000 AND INFORMATION TECHNOLOGY ACT (AMENDED), 2008 TO ENSURE PRIVACY IN ONLINE MEDIUM

1. "Seciton-43 of Information Technology Act defines Hacking.
2. Section-66E prevents MMS attack, publishing of image of private area of any person without knowledge or consent of that person.
3. Section-67 of Information Technology Act prohibits publishing of pornographic material in electronic form.
4. Section-67 A prohibits publishing or transmitting any material containing sexually explicit act in electronic form.
5. Section-67B prohibits child pornography.
6. Section-72, Breach of confidentiality to protect data."[7]

---

5 Anirudh Rastogi, Cyber Law, Law of Information Technology and Internet. Lexis Nexis, Gurgaon, 2014, 2.

6 Bhavya Kaundal, CYBERCRIME: ARE THE LAWS OUTDATED?, SUPREMOAMICUS, ISSN 2456-9704, VOLUME 9 retrieved from
http://www.manupatrafast.com.allduniv.remotexs.in/articles/ArticleSearch.aspx?c=3 visited on 17 August 2021.

7 Bhavya Kaundal, CYBERCRIME: ARE THE LAWS OUTDATED?, SUPREMOAMICUS, ISSN 2456-9704, VOLUME 9 retrieved from
http://www.manupatrafast.com.allduniv.remotexs.in/articles/ArticleSearch.aspx?c=3 visited on 17 August 2021.

PROVISION OF INFORMATION TECHNOLOGY ACT TO ENSURE RIGHT TO PRIVACY: ROLE OF GOVERNMENT TO MONITOR, DECRYPT AND STORE THE DATA

1. "Section-69 of IT Act: Power to issue directions for interception or monitoring or decryption of any Information through any computer resource.
2. Section-69 A of IT Act: Power to issue directions for blocking access of any information through any computer resource.
3. Section-69 B of IT Act: Power to authorize to monitor and collect traffic data or information through any computer resource for cyber security."[8]

"ROLE OF THE INDECENT REPRESENTATION OF WOMEN (PROHIBITION) ACT, 1986

The Indecent Representation of Women (Prohibition) Act, 1986, controls and prevents the inappropriate showing of women in advertisements, books, and other types of media. Section 2 defines this display as any image that damages public morals. The Rajya Sabha introduced the Indecent Representation of Women (Prohibition) Bill in 2012, with the goal of extending its scope to audio-visual media and digital content, including material shared online and the way women are represented on the internet. However, the bill was eventually taken back."[9]

GOVERNMENT INITIATIVES

"There are several Government programs to stop cybercrimes and to raise awareness about them, which include Policing and Public Order. These are managed by the states according to the Seventh Schedule of the Constitution of India. States and union territories have the main duty to prevent, find, investigate, and charge crimes, including cybercrimes, through their Law Enforcement Agencies (LEAs). These agencies can take legal action against wrongdoers under various laws. The Central Government supports state efforts with advice and financial help through different ongoing programs to improve their capabilities. Under the Ministry of Home Affairs (MHA), financial support has been provided to all states and UTs through the Cyber Crime Prevention against Women & Children (CCPWC) scheme to handle cybercrimes thoroughly and effectively."[10]

"This support aims to help set up cyber forensic and training labs, provide training, and hire junior cyber experts. Cyber forensic and training labs have been created in 28 States."[11]

"Components of the CCPWC Scheme are as follows:

---

8 Id.

9 Cyber Crimes against women in India, Ms. Nikki, IJCRT2404234 International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT) retrieved from www.ijcrt.org c138 www.ijcrt.org © 2024 IJCRT | Volume 12, Issue 4 April 2024 | ISSN: 2320-2882, retrieved from IJCRT2404234.pdf, visited on 12 May 2025.

10 Cyber Crimes against women in India, Ms. Nikki, IJCRT2404234 International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT) www.ijcrt.org c138 www.ijcrt.org © 2024 IJCRT | Volume 12, Issue 4 April 2024 | ISSN: 2320-2882, retrieved from IJCRT2404234.pdf, visited on 12 May 2025.

11 Id.

- Online Cybercrime Reporting Unit
- Forensic Unit
- Capacity Building Unit
- Research & Development Unit
- Awareness Creation Unit"[12]

"The Central Government also aims to raise awareness about cybercrimes by issuing alerts and providing training for law enforcement staff, prosecutors, and judicial officers, as well as improving cyber forensic resources. The Government has created the Indian Cyber Crime Coordination Centre (I4C) to develop a framework and system for LEAs to effectively and systematically deal with cybercrimes. Joint Cyber Coordination Teams have been set up in seven areas: Mewat, Jamtara, Ahmedabad, Hyderabad, Chandigarh, Vishakhapatnam, and Guwahati under the I4C to manage the challenges of jurisdiction based on areas known for cybercrime, involving all states/UTs to give a strong coordination system to the LEAs. The Government has also launched the National Cyber Crime Reporting Portal (www.cybercrime.gov.in) to allow the public to report cases of all types of cybercrimes, especially those against women and children. This portal enables anonymous reporting for women and children related crimes."[13]

"Only Child Pornography (CP) - Child Sexual Abuse Material (CSAM), Rape Gang Rape (RGR) - Sexually Abusive Content and Sexually Explicit Content related complaints can be reported through this option. The National Cyber Crime Reporting Portal can be used to report issues related to online child pornography, child sexual abuse material, sexually explicit content like rape/gang rape content, mobile crimes, online and social media crimes, online financial fraud, ransomware, hacking, cryptocurrency crimes, and online human trafficking."[14]

"A toll-free number 1930 has been created to assist in submitting online cyber complaints. Also, the Citizen Financial Cyber Fraud Reporting and Management System module has been launched for fast reporting of financial fraud and to prevent the stealing of money by criminals. The National Commission for Women (NCW) has many programs to raise awareness about cybercrimes."[15]

1. Digital Shakti: Launched in 2018, this program assists women in learning about online safety tips, how to report issues, data privacy, and using technology. As of November 2022, over 300,000 women throughout India have taken part in the program. Its latest version, Digital Shakti 4.0, is a nationwide project designed to help women and girls become skilled and aware in the digital world."[16]

2. "The campaign was started in November 2022 by the National Commission for Women (NCW) in partnership with Meta and the Cyber Peace Foundation. The campaign's aims include:

---

12 Id.

13 Cyber Crimes against women in India, Ms. Nikki, IJCRT2404234 International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT) retrieved from www.ijcrt.org c138 www.ijcrt.org © 2024 IJCRT | Volume 12, Issue 4 April 2024 | ISSN: 2320-2882, retrieved from IJCRT2404234.pdf, visited on 12 May 2025.

14 Id.

15 Id.

16 Id.

● Helping women and girls safely and confidently explore the online world.

● Creating safe online spaces for women and girls.

● Making women skilled and aware so they can stand up against any illegal or inappropriate actions online.

● Helping women increase their awareness about digital matters."[17]

"Digital Literacy and Online Safety Programme

This program strives to train 60,000 women in universities across India on how to use the internet, social media, and email safely. The program also helps women tell the difference between reliable and unreliable information online. During 2020-21, the Commission, along with universities and colleges, conducted research studies on "Cyber Security and threats in Cyber Space faced by Women." The Commission has also been working on raising awareness about cybercrimes by including it in various Legal Awareness Programs. The Commission also set up a webinar on Online Misogyny and the Social Responsibility of social media on June 23rd, 2021. It focused on internet manners, gender equality rules, and the community guidelines of social media platforms. In case of any complaints received by the Commission related to cybercrime against women, the issue is promptly addressed with the relevant authorities, including police Cyber cells of the MHA for appropriate action. The Commission has started an awareness campaign by creating a video on cybercrime safety and is sharing information through social media platforms."[18]

RECOMMENDATIONS

1. Women awareness program, rules should be followed at every level to fight cybercrime by giving knowledge about cyber laws and information technology laws.
2. Police, citizens, and computer forensic experts should be current and skilled in investigating and preventing cyber criminals.
3. There should be helpline or cyber victim redressed cell to concell cyber crime victim.
4. Social norms should be strengthen, from tender age children should believe in morality and natural law.
5. Parents, brother, husband and each every person , young person should dog watch on such crime and do not like and share any post of degrading women dignity.
6. There should be strict rules, regulation and punishment to offenders of cyber crime so that there will be a deterrence in society to do not commit such crimes against any one just because of fun or intentionally to degrade dignity.

CONCLUSION

Information Technology Act 2000, Information Technology Amendment Act 2008, BNS, BNSS, and

---

17 Cyber Crimes against women in India, Nikki, IJCRT2404234 International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT) retrieved at www.ijcrt.org c138 www.ijcrt.org © 2024 IJCRT | Volume 12, Issue 4 April 2024 | ISSN: 2320-2882, IJCRT2404234.pdf, visited on 12 May 2025.

18 Id.

BSA are working to curb cyber cybercrime menace in society. Cybercrime can be prevented by proper awareness, knowledge of privacy settings of online data protection, prompt action of police and a cyber forensic expert. Still, there is a need for the proper implementation of cyber laws as so many cases cannot come to light because of the degradation of dignity. Men can play a crucial role in preventing cybercrime, along with the awareness of society and the policies of the government.

REFERENCES

1. Singh Yatindra J., Cyber Laws, New Delhi Universal, Publ. 2013 Print.
2. Mishra J.P. Dr., An Introduction to cyber laws, Allahabad, central law publications, 2012.
3. Verma Amita Dr., Cybercrimes and cyber law, Allahabad, Central Law Publication, 2012.
4. Malik Pal Krishna Dr., Computer and Information Technology Law, Faridabad, Allahabad Law Agency, 2012
5. http://www.cyberlawtimes.com/articl/115.html
6. Halder D.(2012)," Gang raped'' in the assembly, 10 february,2012, published in http://debaraticyberspace.blogspot.com/.
7. http://debaraticcyberspace.blogspot.in/search/label/centre%20for%20cyber%20% victim%20%councelling.
8. Cyber crime punishments under BNS (Bharatiya Nyaya Sanhita)
9. IJCRT2404234.pdf .
10. USER MANUAL FOR NATIONAL CYBERCRIME REPORTING PORTAL
11. https://cybercrime.gov.in/6
12. NCW website http://ncw.nic.in/
13. NCW website http://ncw.nic.in/

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

धर्म बनाम जाति : पसमांदा मुसलमानों की सामाजिक विडंबना

Dr. Kahkashan
University of Delhi
Email : kahkashan.hansraj@live.com

भूमिका

"सब मुसलमान बराबर हैं" यह बात बचपन से सुनी, मदरसों में पढ़ी और मस्जिदों में सुनी जाती रही। लेकिन जब एक पसमांदा बच्चा अपने दोस्त के साथ उसी मस्जिद में नमाज़ के लिए खड़ा होता है, तो उसे दबी ज़ुबान में टोक दिया जाता है "तू पीछे से खड़ा हो जा।" तब धर्म और जाति के फर्क का पहला अनुभव वह मासूम करता है। यह लेख ऐसे ही अनुभवों से जन्मी उस गहरी सामाजिक विडंबना को सामने लाता है, जो मुसलमान समाज के भीतर जातिगत भेदभाव के रूप में मौजूद है।

धार्मिक समता बनाम सामाजिक विषमता

इस्लाम धर्म की बुनियाद बराबरी, इंसाफ और भाईचारे पर रखी गई है। कुरान और हदीस में कहीं भी जाति के आधार पर ऊँच-नीच की बात नहीं की गई। हज़रत बिलाल (र.अ.), जो एक अफ्रीकी गुलाम थे, उन्हें पैग़म्बर मोहम्मद (स.अ.) ने अज़ान देने का सम्मान दिया यह इस बात का प्रतीक है कि इस्लाम में नस्ल या वर्ग के आधार पर भेदभाव की कोई जगह नहीं।

लेकिन भारत जैसे जातिपरस्त समाज में जब इस्लाम पहुंचा, तो वह अपने साथ एक आदर्श व्यवस्था लाया, पर वह यहाँ की स्थानीय सामाजिक जटिलताओं से अछूता नहीं रह सका।

(संदर्भ : असगर अली इंजीनियर, 'इस्लाम एंड सोशल जस्टिस')

मुस्लिम समाज में 'अशराफ' और 'अजलाफ-अरजाल' का वर्गीकरण इस बात का प्रमाण है कि जातीय संरचना ने इस्लाम की समता को भी बाँट दिया। मस्जिदों, कब्रिस्तानों, शादी-ब्याह और यहां तक कि धार्मिक शिक्षण संस्थानों में भी जातिगत भेदभाव देखने को मिलता है।

मस्जिद और कब्रिस्तान में जातिगत भेदभाव

आज भी भारत के कई हिस्सों में मस्जिदों और कब्रिस्तानों में जाति के आधार पर भेदभाव किया जाता है। निम्नजातीय मुसलमानों को अलग पंक्ति में नमाज़ पढ़ने को कहा जाता है या उन्हें धार्मिक जिम्मेदारियाँ नहीं दी जातीं। आज़मगढ़ और

जयपुर जैसे क्षेत्रों में कई घटनाएं रिपोर्ट की गई हैं जहाँ पसमांदा मुसलमानों को कब्रिस्तान में दफ़नाने से भी रोका गया।

(संदर्भ : The Print, Awaz the Voice)

पसमांदा मुसलमानों की सामाजिक स्थिति

'पसमांदा' शब्द फ़ारसी मूल का है जिसका अर्थ है 'जो पीछे छूट गया'। यह केवल आर्थिक पिछड़ेपन का संकेत नहीं देता, बल्कि सामाजिक, शैक्षणिक और राजनीतिक उपेक्षा का प्रत्यक्ष द्योतक है। अली अनवर ने जब 'पसमांदा' शब्द को सामाजिक शब्दावली में सक्रिय किया, तो यह एक चेतना का रूप ले गया।

भारतीय मुस्लिम समाज में ऐसे सैकड़ों जातियाँ है : जैसे बुनकर, कसाई, दर्जी, नाई, माली, मल्लाह, हलालखोर जिन्हें मुसलमान तो माना गया, लेकिन उनका सामाजिक स्थान द्वितीय श्रेणी का बना रहा। बहुत से पसमांदा मुसलमान आज भी सफाई कर्मचारी, खेतिहर मज़दूर या अनौपचारिक क्षेत्र में कम मज़दूरी पर काम कर रहे हैं।

सबसे बड़ा सवाल यह है कि जब एक समाज अपने भीतर की पहचान से ही अनभिज्ञ हो, तो वह अपने अधिकारों की लड़ाई कैसे लड़ेगा? पसमांदा समाज की सबसे बड़ी त्रासदी यही रही है कि उसे कभी अपने वजूद को स्वतंत्रता से देखने का अवसर नहीं मिला।

फैयाज़ अहमद फैज़ी की चेतावनी

डॉ. फैयाज़ अहमद फैज़ी ने अपने साक्षात्कारों में स्पष्ट कहा :

"मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के प्रकाशन में 'कुफ़ू' की बात करते हुए यह साफ हो जाता है कि मुस्लिम समाज में जाति को एक व्यवस्थित रूप में स्वीकारा गया है।"

वे आगे कहते हैं :

"अशराफ समुदाय ने मुस्लिम समाज के सभी संसाधनों पर कब्ज़ा जमा लिया है, जिससे पसमांदा तबक़ा दशकों से वंचित रहा।"

(स्रोत : The Print, Sangam Talks, Awaz the Voice)

धार्मिक नेतृत्व और सत्ता में वर्चस्व

चाहे वह मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड हो, बड़े-बड़े मदरसे हों या उलेमा की जमातें इन सभी में ज़्यादातर पदों पर अशराफ तबके का वर्चस्व रहा है। पसमांदा मुसलमानों को केवल धर्म के नाम पर वोट बःक की तरह प्रयोग किया गया, लेकिन उन्हें नेतृत्व देने या मंच पर स्थान देने से लगातार वंचित रखा गया।

राजनीतिक विमर्श में पसमांदा की अनुपस्थिति

राजनीति में 'मुस्लिम' शब्द को एक समान और एकरूप मानकर चलने की प्रवृत्ति रही है, जिसमें पसमांदा की विशिष्ट स्थिति को नज़रअंदाज़ किया गया। यह विडंबना है कि कोई पाटी 'मुस्लिम आरक्षण' की बात करती है, पर यह नहीं बताती कि वह आरक्षण किन तबकों को मिलेगा।

निष्कर्ष

पसमांदा केवल पिछड़ा वर्ग नहीं यह एक आंदोलन है, एक असहमति है, एक नई पहचान की घोषणा है। लेकिन यह लड़ाई तब तक अधूरी है जब तक पसमांदा स्वयं अपनी पहचान को ठीक से समझ नहीं पाता। पहचान का बोध ही पहला क़दम है सम्मान की ओर, समानता की ओर, और स्वतंत्रता की ओर।

इस समय सबसे ज़रूरी बात यह है कि पसमांदा समाज अब सिर्फ नारों से नहीं, बल्कि ज़मीनी और वैचारिक काम से आगे बढ़े। जब तक शोध, शिक्षा, आर्थिक सशक्तिकरण और नेतृत्व में भागीदारी नहीं होगी, तब तक नारा भी अधूरा रहेगा।

संदर्भ

1. अली अनवर : मसावात की जंग, वाणी प्रकाशन, 2001
2. डॉ. फैयाज़ अहमद फैज़ी : The Print, Sangam Talks, Awaz the Voice
3. कुरान शरीफ : सूरह हुजुरात (49:13)
4. असगर अली इंजीनियर : इस्लाम एंड सोशल जस्टिस, 2002

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन की वर्तमान में प्रासंगिकता

डॉ. कामना शर्मा
सहायक आचार्य
रा. शि. प्र .वि. शाहपुरा बाग जयपुर

प्रस्तावना

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का व्यक्तित्व और कृतित्व आदर्शवादी रहा है। उनका आचरण प्रयोजनवादी विचारधारा से ओतप्रोत था। संसार के अधिकांश लोग उन्हें महान राजनीतिज्ञ एवं समाज सुधारक के रूप में जानते हैं। पर उनका यह मानना था कि सामाजिक उन्नति हेतु शिक्षा का एक मत्वपूर्ण योगदान होता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का व्यक्तित्व और कृतित्व आदर्शवादी रहा है। महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन भारतीय समाज के विकास के लिए एक स्वदेशी, समग्र और मानवीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। उनका यह दर्शन शिक्षा को न केवल ज्ञान का साधन मानता है, बल्कि इसे आत्मनिर्भरता, सामाजिक न्याय और नैतिकता का आधार बनाता है उनका मानना था कि बच्चों को 3H की शिक्षा अर्थात् head hand heart की शिक्षा दी जाए। शिक्षा उन्हें स्वावलंबी बनाये और वे देश को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे। शिक्षा नीति 2020, जो भारत की नवीनतम और व्यापक शिक्षा नीति है, गांधीजी के विचारों के कई पहलुओं को पुनः अपनाने का प्रयास करती है। यह लेख महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन की वर्तमान में प्रासंगिकता और शिक्षा नीति 2020 के साथ उसकी संगति का विश्लेषण करता है।

गांधीजी का शिक्षा दर्शन

महात्मा गांधी ने शिक्षा को केवल साक्षरता या किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास का माध्यम माना। उनका यह दर्शन उनके "नयी तालीम" (बेसिक एजुकेशन) मॉडल के रूप में सामने आया। उनके शिक्षा दर्शन के मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं :

1. कार्य पर आधारित शिक्षा (Work-based Education)

गांधीजी का मानना था कि शिक्षा में हाथ से काम करने को अनिवार्य रूप से शामिल करना चाहिए। यह न केवल आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देता है, बल्कि बच्चों को व्यावसायिक कौशल भी सिखाता है

2. सत्य और अहिंसा के सिद्धांत

गांधीजी का शिक्षा दर्शन सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों पर आधारित था। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य न केवल व्यक्ति को अच्छा नागरिक बनाना है, बल्कि उसे नैतिक और आध्यात्मिक रूप से भी समृद्ध करना है।

3. मातृभाषा में शिक्षण

मातृभाषा में शिक्षण का अर्थ है कि मातृभाषा में शिक्षा से बच्चों को विषयों की गहरी समझ और आत्मविश्वास मिलता है।

4. सामाजिक समानता

गांधीजी ने शिक्षा को सामाजिक असमानता को दूर करने का साधन माना। उनके अनुसार, शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो जाति, धर्म और लिंग के भेदभाव को समाप्त कर समाज में समानता लाए।

5. शारीरिक और मानसिक विकास का संतुलन

गांधीजी ने शिक्षा में शारीरिक श्रम को शामिल कर शारीरिक और मानसिक विकास का संतुलन स्थापित करने पर बल दिया।

शिक्षा नीति 2020 : मुख्य विशेषताएं

शिक्षा नीति 2020 (National Education Policy 2020) भारत में शिक्षा के पुनर्गठन का एक क्रांतिकारी प्रयास है। इस नीति के कुछ मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं :

1. संपूर्ण शिक्षा दृष्टिकोण

नीति में समग्र और बहु-विषयक शिक्षा पर जोर दिया गया है, जिसमें विज्ञान, कला, व्यावसायिक शिक्षा और जीवन कौशल को एकीकृत किया गया है।

2. मातृभाषा में शिक्षा

शिक्षा नीति 2020 ने कक्षा 5 तक मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा प्रदान करने की सिफारिश की है, जो गांधीजी के विचारों के अनुरूप है।

3. व्यावसायिक शिक्षा का समावेश

इस नीति में व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा में शामिल किया गया है, ताकि छात्र शिक्षा के साथ-साथ रोजगार के लिए तैयार हो सकें।

4. सामाजिक समावेश

नीति में वंचित वर्गों, जैसे अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और महिलाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया है।

5. नैतिक और व्यावहारिक शिक्षा

शिक्षा नीति 2020 ने नैतिक और व्यावहारिक शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया है और इसे पाठ्यक्रम में शामिल करने का प्रस्ताव दिया है।

शिक्षा नीति 2020 और गांधीजी के शिक्षा दर्शन की संगति

1. मातृभाषा में शिक्षा

गांधीजी ने मातृभाषा में शिक्षा को बाल विकास के लिए अनिवार्य माना था। शिक्षा नीति 2020 में भी यह प्रावधान किया गया है कि कक्षा 5 तक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो। यह बच्चों के भाषा कौशल और विषय की समझ को मजबूत बनाता है।

2. कार्य पर आधारित शिक्षा

गांधीजी ने शिक्षा में श्रम आधारित प्रशिक्षण को अनिवार्य करने की बात कही थी। शिक्षा नीति 2020 में व्यावसायिक शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। छात्रों को स्कूली शिक्षा के दौरान ही व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करने का प्रावधान गांधीजी

के इस विचार को पुनर्जीवित करता है।

3. समग्र शिक्षा दृष्टिकोण

गांधीजी का शिक्षा दर्शन बालक के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास पर केंद्रित था। शिक्षा नीति 2020 ने भी इस समग्र दृष्टिकोण को अपनाया है। यह केवल अकादमिक प्रदर्शन पर केंद्रित न होकर नैतिकता, रचनात्मकता और जीवन कौशल के विकास पर बल देती है।

4. सामाजिक समानता और समावेश

गांधीजी के विचारों में शिक्षा एक ऐसा साधन था, जो समाज में समानता स्थापित कर सके। शिक्षा नीति 2020 भी वंचित वर्गों के लिए समान अवसर प्रदान करने की बात करती है। इसमें महिला शिक्षा, दिव्यांग छात्रों और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए विशेष योजनाएं शामिल हैं।

5. नैतिक और नैतिक शिक्षा

गांधीजी ने शिक्षा को नैतिक मूल्यों का आधार माना। शिक्षा नीति 2020 में छात्रों को नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जागरूक करने के लिए प्रयास किए गए हैं।

गांधीजी के शिक्षा दर्शन की वर्तमान चुनौतियाँ

1. आधुनिक तकनीक का प्रभाव

गांधीजी का शिक्षा दर्शन श्रम और आत्मनिर्भरता पर आधारित था, लेकिन आज का समाज तकनीकी विकास और डिजिटल शिक्षा की ओर अग्रसर है। इस बदलाव के कारण गांधीजी के दर्शन को लागू करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

2. वैश्विककरण का प्रभाव

वैश्विक शिक्षा मानकों के बढ़ते दबाव के कारण गांधीजी के स्थानीय और स्वदेशी शिक्षा मॉडल को अपनाना कठिन हो सकता है।

3. शहरी और ग्रामीण असमानता

गांधीजी का शिक्षा दर्शन ग्रामीण भारत के लिए अधिक प्रासंगिक था। हालांकि, वर्तमान में शहरी और ग्रामीण शिक्षा के बीच गहरी खाई है, जिसे पाटना आवश्यक है।

समाधान और भविष्य की दिशा

1. शिक्षा में व्यावहारिकता

शिक्षा को अधिक व्यावहारिक और रोजगारपरक बनाने के लिए गांधीजी के कार्य आधारित शिक्षा मॉडल को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

2. स्थानीय और वैश्विक दृष्टिकोण का संतुलन

शिक्षा में गांधीजी के स्वदेशी दृष्टिकोण को वैश्विक शिक्षा के साथ संतुलित किया जा सकता है।

3. मूल्य आधारित शिक्षा का पुनर्संस्कार

शिक्षा में नैतिकता, सत्य, और अहिंसा के मूल्यों को पुनः शामिल करने के लिए विशेष पाठ्यक्रम विकसित किए जा सकते हैं

निष्कर्ष

महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना कि उनके समय में था। शिक्षा नीति 2020 में गांधीजी के विचारों को आधुनिक संदर्भ में पुनः प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। हालांकि, वैश्विक और तकनीकी परिवर्तनों के चलते इसे पूरी तरह से लागू करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। इसके बावजूद, यदि शिक्षा नीति 2020 को प्रभावी

रूप से कार्यान्वित किया जाए, तो यह गांधीजी के शिक्षा दर्शन के मूल्यों को वर्तमान युग में पुनर्जीवित कर सकती है। इस प्रकार, गांधीजी का शिक्षा दर्शन न केवल एक समृद्ध और समावेशी समाज की नींव रख सकता है, बल्कि आत्मनिर्भर भारत की ओर भी मार्गदर्शन कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. महात्मा गांधी, "नयी तालीम"।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारत सरकार।
3. गांधीजी के शैक्षिक दृष्टिकोण पर आधारित शोध-पत्र।
4. संबंधित शैक्षिक अध्ययन और रिपोर्ट।

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

वर्तमान जीवन की त्रासदी में स्त्री की स्थिति

डॉ. कविता देवी
एम.ए. (हिन्दी), एम.फिल (हिंदी), बी.एड., पीएच.डी. (हिंदी)
हिन्दी विभाग, डी.एस.बी. परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

शोध सार

आजादी के बाद समूचे हिन्दी -साहित्य का केन्द्रिय विषय एक ही रहा है- परम्परागत मूल्य भ्रमों से मुक्ति। हर सम्भव प्रयासों के बावजूद भी जनमानस भयानक अंतर्विरोध का शिकार हो रहा है और स्वयं को 'आधुनिक' नहीं बना पा रहा है। घर-परिवार टूट रहे हैं। परम्परागत मूल्यों भ्रमों से मुक्त या फिर मुक्ति की छटपटाहट में भारतीय स्त्री वर्तमान जीवन की त्रासद स्थितियों के बीच जीने-मरने के लिए विवश हो गई है। आज की नारी चाहती है कि सभी परंपरागत मूल्य स्त्री-पुरुष दोनों के लिए समान हो। अब स्त्री विवाह को दो स्वतंत्र व्यक्तियों के बीच एक पारस्परिक समझौते से उत्पन्न सम्बन्ध स्वीकारती है, यदि इस सम्बन्ध से उसको सुख नहीं मिलता तो वह स्वतंत्र रहना ज्यादा बेहतर समझती है। इस तरह की अवधारणाओं, सोच से पारिवारिक सम्बन्धों में बिखराव आ रहा है। नए युग में पुरुष से समान स्तर पर आकर नारी ने प्रेम के परम्परागत मूल्यों को भी बदल डाला है। प्रेम को अपना सम्पूर्ण अस्तित्व मानने वाली नारी अब उस ऊंचाई पर पहुंच गई है जहां पहुंचकर उसे विवाहेतर शारीरिक सम्बन्ध न अपनी मजबूरी का परिणाम लगता है न अपराध बोध जगाता है और न ही पति के प्रति विश्वासघात प्रतीत होता है। प्रथम प्रेम ही सच्चा होता है, या प्रेम की असफलता मानव अस्तित्व को समाप्त कर देती है जैसी धारणाएं आज भ्रामक सिद्ध हो रही हैं। लेकिन प्रेम एक उदात् भावना है जो अनुकूल आधार भूमि मिलने पर अपनी भव्यता प्राप्त करता है।

बीज शब्द - स्त्री-पुरुष समानता, आर्थिक स्वावलंबन, पारिवारिक विघटन, नारी -अस्मिता।

मूल आलेख

अतीत और वर्तमान पर नजर दौड़ायी जाए तो स्त्री की हैसियत एक पुल की तरह प्रतीत होती है। जिसे रौंद कर सब अपने गंतव्य स्थान पर पहुँचते हैं। वह हमेशा दूसरों के लिए जीती है और इस बात को मान्यता तक नहीं दी जाती।

सामाजिक व्यवस्था ने पुरुष मनोवृत्ति को इस तरह जकड़ा है कि वह चाहता है कि स्त्रियाँ हमेशा उनसे हीन ही रहें, स्त्री का स्वाभिमानी और स्वतंत्र स्वभाव उसे अखरने लगता है। वह स्त्री के कहे सच को, विचारों को, इच्छाओं और अभिलाषाओं को मानने से इंकार कर देता है। स्त्री के फैसले के सामने झुकना उसे अपना अपमान करने सा प्रतीत होता है।

मृदुला गर्ग, प्रभा खेतान मैत्रेयी पुष्पा और कुंदनिका कापड़ीआ का कहना है "मर्द न हमारा दुश्मन है सहरीफ -वह हमारी तरह इंसान है औरत की जिन्दगी के सारे करीबी व जजबाती रिश्ते मर्द से ही होते हैं। बाप, भाई, शौहर, महबूब, बेटा जैसी अहमियत को नकार कर औरत कहां जाएगी?"[1] ये लेखिकाएं वास्तव में इस बुनियादी सच्चाई को रेखांकित करना चाहती

हैं कि परस्पर सहयोग और पूरकता के बिना चूंकि कोई भी साझा मिशन संभव नहीं, अतः जरूरी है कि पुरुष और स्त्री के बीच आपस में कोई भेद-भाव, ऊँच-नीच न हो। दोनों एक दूसरे का सम्मान करें। क्योंकि आदर्श मनुष्य व आदर्श सम्बन्ध तभी संभव है जब स्वतंत्रता और दायित्व बोध व्यक्ति के पास दोनों हों।और दोनों प्रेमपूर्वक जीवन यापन करें। परन्तु सामाजिक व्यवस्था ने पुरुष मनोवृति को इस तरह जकड़ा है कि वह चाहता है कि स्त्रियाँ हमेशा उनसे हीन ही रहें, स्त्री का स्वाभिमानी और स्वतंत्र स्वभाव उसे अखरने लगता है। वह स्त्री के कहे सच को, विचारों को, इच्छाओं और अभिलाषाओं को मानने से इंकार कर देता है। स्त्री के फैसले के सामने झुकना उसे अपना अपमान करने सा प्रतीत होता है।

अक्सर औरतें जो काम करती हैं वे अनदेखे किये जाते हैं। क्योंकी स्त्रियों को इसकी कोई तनख्वाह नहीं मिलती है। वह अपने घर के काम का पूरा बोझ भी उठाये हुए है, जबकि कामगार पुरुष पर सिर्फ एक तरह के काम का बोझ है। स्त्री को समानता का अधिकार मिलना चाहिए, पुरुष के समान कार्य करने पर उसे पैसा भी पुरुष के बराबर मिलना चाहिए। स्त्री हर स्थिति में अपने को ढालने की कोशिश करती है। इस दृष्टि से स्त्रियाँ विशिष्ट हैं कि कोई काम उनके लिए छोटा या ओछा नहीं। वे हर तरह का काम कर लेती हैं।

"हमारी लडाई अपने से संघर्ष की लड़ाई है, यानी भूमिगत, अपने अन्दर अपने को समझने और मजबूत बनाने की-हमें मर्द नहीं बनना है, न ही मर्द को औरत बनाना है। एक दूसरे का लबादा पहनने की यह ललक ही मुसीबत बन रही है। जरूरत है अपनी-अपनी जगह खड़े होकर अपने आप को समझने और दूसरे को समझाने की।"[2]

आखिर क्यों स्त्री को हमेशा पुरुषों की गुलामी का शिकार होना पड़ता है? स्त्री को वही दरजा, और निर्णय क्षमता, समानता, स्वतंत्रता मिलनी चाहिए जो पुरुषों को घर और बाहर बिन माँगे प्राप्त है।

मृणाल पाण्डे लिखती हैं कि- "स्त्रियों के काम'' की सही पहचान और परिभाषा बनाना और उसके महत्व का राष्ट्र स्तर पर प्रचार आज सभी स्त्रियों के दीर्घकालिक हितों के लिए बहुत जरूरी हो गया है और इसके साथ-साथ गृहस्थी के काम की भी सही परिभाषा करनी होगी।"[3]

स्त्री के विकास के लिए उसका आर्थिक स्वावलंबन जरूरी है। स्त्री का कार्यक्षेत्र सिमट कर सिर्फ घर तक रह जाता है। अनामिका लिखती है- कि स्त्री नौकरी नहीं करती तभी तो बाहर की दुनिया से और भी ज्यादा डरती है और माँ-बाप का यह दर्शन बार-बार उनके मन में कौंधता है। (सड़क पर अकेले चलते) कि हजार भेड़ियों के बीच रहने से तो अच्छा है कि एक के साथ जिन्दगी काट लेना नौकरी करती हैं औरतें तो भी 'घर' चलाने में सारे पैसे फुक जाते हैं सकभी इतने पैसे जुट नहीं पाते कि वे अपना कोई निजी कोना बना सके जिसे बर्जीनिया वूल्फ, अ रूम ऑफ वन्स 'ओन' कहती है।''[4] इस प्रकार स्त्री का पूरा जीवन अनन्त क्षमायाचना है।

जो वर्ष कैरिअर निर्माण की दृष्टि से महत्वपूर्ण होते हैं वे ही वर्ष स्त्री के बच्चे पालने में व्यतीत होते हैं। अतः कैरिअर की दृष्टि से वह पिछड जाती है और वह परिवार में फालतू हो जाती है परिवार के साथ रहते हुए स्त्री के लिए यह संभव नहीं रह जाता है कि वह कैरिअर के क्षेत्र में अपनी महत्वाकांक्षाएँ पूरी करे। उसके टेलेन्ट, उसकी खूबियाँ, उसकी महत्वाकांक्षाओं के लिए कोई जगह नहीं। कार्य के वे क्षेत्र जो अधिक समय की माँग करते हैं पारिवारिक स्त्री के लिए अभी भी वर्जित हैं। एक स्त्री चाहे वह कितनी ही बुद्धिमान और प्रतिभावान क्यों न हो, परंतु सामाजिक वर्जनाओं और दबावों की वजह से अधिकतर रचनाधर्मी स्त्रियाँ पुरुषों की दुनिया में आगे कदम रखने की इच्छा तथा क्षमता को लेकर पुरुषों के सामने एक तरह की डर और ग्लानि-भावना से पीडित रहती है। मृणाल पाण्डे इसका उदाहरण देते हुए कहती है- "बस में सवारी करने वाली या रात को देर तक नाइट शिफ्ट में काम करने वाली किसी भी युवा पढ़ी-लिखी दिखने वाली स्त्री से पूछिए, कि वह कितनी शारीरिक-मानसिक वेदनाओं से घर से, दफ्तर या कॉलेज पहुँचते गुजरती है। इसके संदर्भ में प्रायः तर्क दिया जाता है कि वे जरूर श्छेड़े जाने योग्य कपड़ों में होंगी, क्योंकि वह घर से जो बाहर निकली है। इसलिए पुरुष समाज उस पर ताने कसता है। उससे कहा जाता है कि यदि वह घर से निकले भी तो दबी-ढकी या भाईयों-पड़ोसियों के संरक्षण में।''[5]

आज के युग में नारी जब आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होकर स्वतंत्र हुई तो जहां एक ओर उसमें आत्मविश्वास आया,

वहीं दूसरी ओर इस आर्थिक आत्मनिर्भरता ने उसके ऊपर वह दायित्व भी डाल दिये जो पहले केवल पुरुषों के थे। इन दायित्वों को निभाते निभाते वह कहीं श्क्षयश ग्रस्त भी हुई है। आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने पर भी मानसिक रूप से पुरुष के अधीन होने के कारण उसका दोहरा शोषण भी हुआ है। अर्थात् आर्थिक आत्मनिर्भरता ने कहीं दोहरे शोषण की त्रासदी दी, और कहीं अपना जीवन आत्मसम्मान के साथ जीने, क्षमता भी दी।

पारिवारिक विघटन

आज भारतीय परिवारों के सामने न तो रामायण का आदर्श है न ही महाभारत का। सच तो यह है कि भारतीय परिवार भी अन्य देशों के समान ही एक अजीब कशमकश, घुटन, अलगाव के दौर से गुजर रहा है। नारी का परिवार के साथ घनिष्ट सम्बन्ध होता है। नारी के बिना परिवार अधूरा होता है। आज घर-परिवार में नारी परम्परागत मूल्यों को मानने के लिए तैयार नहीं है। पारिवारिक प्रतिमानों की अवहेलना करना सम्बन्धों में कलह का वातावरण पैदा करना है, जिससे पारिवारिक विघटन की स्थिति पैदा होती है। आज परिवार टूट रहे हैं। आपसी सम्बन्धों में टकराव हो रहे हैं। इसका कारण क्या है? पुरुष की दमनकारी तथा शासन करने की प्रवृति से पारिवारिक जीवन टूटते हैं। और स्त्री के दम्भपूर्ण व्यवहार, अविश्वास, आडम्बर, प्रदर्शन से भी परिवार टूटते हैं। आर्थिक समस्या के कारण भी पारिवारिक विघटन हो रहे है। और स्त्री-पुरुष सम्बन्धों में तनाव का कारण भी आर्थिक समस्या ही है। नारी के स्वामिमान तथा पुरुष के अहं की टकराहट ने पारिवारिक विघटन को जन्म दिया है। मन्नू भंडारी अपने जीवन का उदाहरण देती हैं कि जब एक स्त्री अपने बारे में निर्णय लेती है तो पुरुष के अहम को कितनी ठेस लगती है। राजेन्द्र जी से जब इन्होंने कहा कि 'अलग रहेंगे तो आप भी ज्यादा स्वतंत्र रहेंगे और मैं भी ज्यादा तनावमुक्त!' इसके बारे में मन्नू जी लिखती है कि मेरी इस बात से राजेन्द्र के अहं को ठेस लगी होगी राजेन्द्र ही क्या कोई भी पुरुष होता तो उसे भी लगती। पुरुषों को इस बात का अनुभव तो है कि वे अपनी पत्नियों को घर से निकाल बाहर करें या बहुत हुआ तो ऐसा निर्णय दोनों की सहमति से हो। केवल पत्नी अपनी इच्छा और पहल पर ऐसा निर्णय ले ले और पुरुष उसे सहज भाव से स्वीकार कर ले यह तो स्त्रियों की बराबरी का दावा करने वाले....उनके अधिकारों का डंका पीटने वालों के लिए भी संभव नहीं था (यह बात मैं केवल अपनी पीढ़ी के पुरुषों के लिए लिख रही हूं।''[6]

आज नारी अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व के लिए मौन होकर अत्याचारों को नहीं सहती है। भले ही उसका पारिवारिक जीवन बिखर जाए। नारी अपनी अस्मिता के लिए सजग हैं, परन्तु वहीं स्वतंत्र वैयक्तिकता के आवेश में अकेले और कुंठित भी है। हमारे समाज में स्त्री सदैव एक रक्षिता बन कर ही रही है। वह पुरुष के संरक्षण में रहती है। उबाऊ, थकाऊ, घरेलू श्रम में स्त्री अपनी जिन्दगी खत्म कर देती है। जिसका न कोई मूल्य दिया जाता है और न आंका जाता है। इसलिए स्त्री जब परिवार से बाहर पैसा कमाने निकलती भी है तब दोहरे कार्यभार से दबी-कुचली सी। पुरुष जब कमाने निकलता है तो घरेलू-श्रम से मुक्त होता है। स्त्री को इस अपराध बोध से बाँध दिया जाता है कि परिवार और बच्चे छोड़कर काम पर जाती स्त्री अपने दायित्वों से मुँह मोड़ती है।

नासिरा शर्मा पितृसत्ता का विरोध करती हैं, पुरुष का नहीं। "मेरी नजर में सही नारी मुक्ति और स्वतंत्र समाज की सोच और स्त्री की स्थिति को बदलने में है। बाहर निकलों या घर में रहो, हर स्थान पर पुरुष तुमसे टकराएगा। तलाक लेना समस्या का समाधान नहीं है। स्त्री-पुरुष के सम्बंधों की सामाजिक परिकल्पना को ही बदलना है।''[7]

आन्दोलन, प्रतिशोध, पीड़ित नहीं है।
स्त्री आन्दोलन की समर्थक स्त्रियाँ पुरुष नहीं बनना चाहतीं।
स्त्री और पुरुष के बीच की लड़ाई में हित निकाय अलग-अलग नहीं होते।
दोनों का हित निकाय एक ही होता है, परिवार।''[8]

परिवार में सभी सदस्य चाहे वह पुरुष हो चाहे स्त्री। सभी के कार्यो की अपनी-अपनी भूमिका हो तथा महत्व हो।

परिवार में रहते हुए स्त्री के आर्थिक स्वावलंबन के प्रयासों ने पारंपरिक परिवार के ढाँचे से छेडछाड की है। परिणामतः

परिवार और कार्यक्षेत्र दोनों के साथ न्याय न करती स्त्री नट की तरह इस ओर से उस और तक झूलती रही हैस स्त्री अपने विवाह के बारे में पुनर्विचार करने लगी है। अपनी पहचान के लिए उसे अपनी संपत्ति का महत्व समझ में आया है। इसलिए उच्च व्यवसायी परिवार की कुल वधु कहलाने के स्थान पर उसने छिन्नमस्ता बन अपना व्यवसाय करना चाहा है। अब उसे पैसा चाहिए, यश चाहिए, नाम चाहिए और सच कहें तो अपना आत्म चाहिए। अपने आत्म के लिए उसने परिवार से बाहर विकल्प तलाशे हैं।

अपने आत्म की पहचान के लिए उसे मालूम हो गया है कि बाहर निकलना जरूरी है। यह बाहर निकलना वापिस लौटने के लिए नहीं है। परिवार और कॅरिअर में यदि एक ही चुनने का उसे अधिकार है तो परिवार में यदि गुंजाइश बनती है, पति बदलता है तो ठीक है अन्यथा परिवार छोड़कर वह अपने लिए भी सोचना चाहती है।

अगर "पुरुष यह समझ लें कि पति और पत्नी जीवन रथ के दो पहिये होते हैं, जिन्हें मंजिल तक पहुँचने के लिए एक साथ, एक ही समान गति से, एक ही दिशा में आगे बढ़ना हैस तभी परिवार नामक संस्था फल-फूल सकती है। वरना जिस घर की धुरी, स्त्री ही संतप्त-प्रताड़ित होगी, उस घर का शीर्ष पुरुष कब तक उस तपन से बच पाएगा।"[9]

निष्कर्ष स्वरूप 'परिवार' में स्त्री और पुरुष दोनों का समान महत्व हो, और दोनों का अस्तित्व समान रूप से मूल्यवान बना रहे, तभी परिवार बच सकता है और तभी उसका महत्व है।

क्या औरत को हमेशा संबंधों और सम्पत्ति के समीकरणों में ही पहचाना जाएगा? उसकी न अपनी कोई पहचान है और न कोई स्वतंत्र निर्णय। लेकिन अब समय के साथ स्त्री भी जानती है कि अतीत में जहाँ वह अपनी अज्ञानतावश भूखों मरती थी, आत्महत्या करती थी, वहीं आज वह अपने होने और जीने के नए-नए रास्ते खोलती जा रही है। यह तो उसने सिद्ध कर दिया है कि गुलामी की जिंदगी वह नहीं जिएगी और इस चुनौतीपूर्ण रवैये के सामने पितृसत्ता को आज नहीं तो कल भविष्य में सिर झुकाना होगा।

निष्कर्ष

अपनी अस्मिता के लिए स्त्री समाज में प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष के समान अधिकार चाहती है। उसका मूल उददेश्य पुरुष से हर क्षेत्र में बराबरी करने का नहीं है क्योंकि यह जानती हैं पुरुष के साथ बराबरी करने की होड़ की सोच से नारी न तो पुरुष की जगह ले पाएगी, न अपने नारीत्व गुणों को ही सुरक्षित रख पाएगी। वह सिर्फ समाज में अपनी जगह बनाना चाहती है। जिस पर पुरुष कब्जा जमाए हुए है।

परन्तु इक्कीसवीं सदी के इस युग में स्त्री अबला, असहाय, बेबस, कमजोर जैसे विशेषणों से मुक्ति की अभिलाषा लिए अपने अधिकारों के प्रति अधिक सचेत और मुखरित हुई है। अपने प्रति अन्याय एवं शोषण के विरूद्ध आवाज उठाने लगी है। वर्तमान परिवेश में स्त्रियां अपने पति की मृत्यु पर सती नहीं होती बल्कि अपने पुत्र, पति या पिता का अंतिम संस्कार भी करने लगी है। शोषण से मुक्ति के लिए स्त्रियों को शिक्षा, समान अवसर देने होंगें। इसे देश ही हानि नहीं बल्कि उन्नति होगी। अब समय आ गया है कि स्त्रियाँ मांगना छोड़ दें, स्त्री को आवश्यकता है वह अपना दृष्टिकोण बदल दें। आखिर कब तक वह अपने अस्तित्व और सम्मान रक्षा की ठेकेदारी पुरुष समाज को सौंपती रहेंगी। स्त्री प्रत्येक क्षेत्र में अपनी सशक्त उपस्थिति रेखांकित करें। वह अपने पैरों पर खड़ी हो, आत्मरक्षा में समर्थ हो और इस संसार में अपना मार्ग स्वयं तलाशने तराशने की क्षमता रखती हों। स्त्री की दृष्टि को ही नहीं युग दृष्टि को भी बदलना होगा।

सन्दर्भ

1. रोहिणी अग्रवाल, समकालीन कथा साहित्य : सरहदें और सरोकार, पृष्ठ 155
2. वही, पृष्ठ 150

3. मृणाल पाण्डे, स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीति तक, पृष्ठ 96
4. अनामिका, एक ठो शहरः एक गो लडकी, पृष्ठ-154
5. वही पृष्ठ 46
6. मन्नू भण्डारी, एक कहानी यह भी, पृष्ठ 172
7. डॉ. एम. फिरोज, वाङमय, प्रो. वी. के. अब्दुल जलील, स्त्री विमर्शः समकालीन हिन्दी कथा साहित्य के संदर्भ में, पृष्ठ -84
8. सं. डॉ. एम. फिरोज अहमद, वाङमय, डॉ. हरेराम पाठक, स्त्रीवादी लेखनः स्वरूप और संभावनाएँ पृष्ठ-76
9. सं अरविन्द जैन, स्त्रीः मुक्ति का सपना, पृष्ठ 58

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी और सामाजिक परिवर्तन : एक अध्ययन

डॉ. पंडितराव चन्द्रशेखर धरेनवर
एसोसिएट प्रोफैसर
पोस्ट ग्रेजुऐट सरकारी कॉलेज, सैक्टर-46, चण्डीगढ़।
मोबाईल : 9988351695
ई-मेल : raju_herro@yahoo.com

की-वर्डस - श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, सामाजिक परिर्वतन, गुरवाणी, श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अंगद देव जी, भगत नामदेव जी, श्री गुरु अर्जुन देव जी, मानवीयता, अंग, आधुनिक काल, जातिवाद, वातावरण, नशा, किरत करो, वंड छको, नाम जपो।

प्रस्तावना : श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की विचारधारा को अगर सही ढंग से पालन किया जाये तो बहुत बड़ा सामाजिक परिर्वतन लाया जा सकता है क्योंकि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में दर्ज की गई गुरुवाणी एक गुरु या संत की नहीं है बल्कि अलग अलग संतों, फकीरों और गुरुओं की वाणियों को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में दर्ज किया गया है।

अलग-अलग प्रांत के संत, फकीर अपनी वाणी के द्वारा समाज में बदलाव बहुत किया है, जिस कारण अगर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी को समझ गये तो पूरे समाज में परिवर्तन लाया जा सकता है। रविदास जी का सामाजिक बराबरी का संदेश से लेके परमात्म का गुणगान करने वाले नामदेव जी का संदेश श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में शामिल है जो सामाजिक बराबरी की बात करते हैं, औरत को अधिकार, वातावरण का संदेश, नशे, नैतिकता, जातिवाद के खिलाफ सख्त रूप में अपने विचार प्रगट करने के कारण श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी सामाजिक परिवर्ततन लाने की संपूर्ण शक्ति रखता है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के विचार हर भाषा में अगर अनुवाद हो जाये तो ओर भी ज्यादा सामाजिक परिवर्तन लाया जा सकता है।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के बारे में जानकारी अगर पूरी दुनिया ने हासिल की तो पूरी दुनिया में परिवर्तन आ सकता है क्योंकि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में दर्ज हर एक गुरवाणी पूरी दुनिया पर लागू होती है जिसकी हर एक गुरवाणी सामाजिक परिवर्तन का साधन बन सकता है। किसी तरह श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की गुरवाणी सामाजिक परिवर्तन ला सकती है, ये समझने से पहले श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के बारे में ज्ञान हासिल करना बहुत जरूरी है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की महत्ता और सामाजिक परिवर्तन

जुगो जुग अटल, अखर के मालिक श्री गुरु ग्रंथ साहिब एक ऐसा पवित्र ग्रंथ है जो पूरे मानवीयता की समाज को एक करती है। यह आदि ग्रंथ न सिर्फ एक समुदाय को सीमित है बल्कि पूरी दुनियां के लोगों के लिए प्रासंगिक है क्योंकि हर एक जाति-धर्म के संत की वाणी को इस ग्रंथ में शामिल किया गया है। एकोएक परमात्मा की सिफत करके मानवीयता के संदेश देने वाले श्री गुरु ग्रंथ साहिब ने 6 गुरु ग्रंथ साहिबा की वाणी, 15 भगतों की वाणी 11 बट और तीन गुरु सिखों की

वाणी मिला के कुल 35 वाणीकारों की वाणी दर्ज की गई है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब एक ऐसा रूहानियत का खजाना है जो एकोएक परमात्मा की महानता का वर्णन करता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की संपादना शांति के पुंज श्री गुरु अर्जुन देव जी ने किया था जो मानवीयता को बचाने के लिए तती तवी पर बैठ के भी 'तेरा किया मीठा लागू, हर नाम पदारथ नानक मांगे' शब्दों को प्रकट किया था। श्री अमृतसर साहिब के रामसर जगह पर बैठ कर पूरा सम्पादन कर महान काम करने वाले श्री गुरु अर्जुन देव जी, भाई गुरुदास जी से लिखवाए थे। 1404 ई. में यह पवित्र काम पूरा होने के बाद श्री हरमिंदर साहिब में पहली बार प्रकाश करके बाबा बुढ़ढा जी पहले ग्रंथी बनाए थे। पवित्र श्री गुरु ग्रंथ साहिब कुल 1430 पन्ने में होने के कारण एक विषाल सम्पूर्ण ज्ञान का सागर है जो 31 रागों में रचना किया गया है। पन्ना नम्बर एक से लेकर 13 तक नितनीम की बाणी दर्ज है जिसमें 'जप' राग रहित है बल्कि 'सो दर' और 'सोहाला' शब्द के राग में है। पन्ने नम्बर 14 से 1352 तक का बहुत बड़ा हिस्सा रागव है। इस हिस्से को श्री गुरु अर्जुन देव जी 30 रागों में बांट दिया था पर बाद में श्री गुरु गोबिंद सिंह जी, श्री गुरु तेग बहादुर जी की पवित्र वाणी को जैजवंती राग में दर्ज करके रागों की गिनती 31 कर दी। अदयात्मक बुलंदियों तक पहुंचान वाली श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पन्ने नम्बर 1353 से लेकर 1430 तक भगत कबीर की वाणी , बाबा फरीद की वाणी, बट्टो की वाणी, गुरु सिखों की वाणी दर्ज की गई है।

अनोखे रूप में सम्पादन किये गये इस पवित्र ग्रंथ श्री गुरु नानक देव जी के श्री जपजी साहिब से शुरूआत होके एकोएक परमात्मा की सिफत करने वाले बट्ट और गुरु सिखों की वाणी से हरेक इंसान का बेयंत भगती के बैकुंठ तक ले जाती है। उस रचनाकार के वर्णन करने वाले अलग अलग संतों की वाणी इस पवित्र गुरु ग्रंथ साहिब में गुरुमुखी लिपि में लिख कर पुरी गुरुमुखी लिपि को पवित्र और अमीर बना दिया गया है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जगत गुरु श्री गुरु नानक देव जी के 977 शब्द 20 रागों में, श्री खडूर साहिब में गुरुमुखी सिखाने वाले श्री गुरु अंगद देव जी के 63 श्लोक, निमाणियों को मान देने वाले श्री गुरु अमरदास जी के 903 शब्द, 17 रागों में, भक्तिलीन श्री रामदास जी के 679 शब्द, 30 रागों में, शांति के पुंज श्री गुरु अर्जुन देव जी के 2312 शब्द, श्री गुरु तेग बहादुर जी के 116 शब्द, 15 रागों में शामिल है।

इसके अलावा बनारस के भगत कबीर जी के 229 शब्द, 17 रागों में और 243 श्लोक, बनारस के भगत रविदास जी के 40 जोड, 16 रागों में, महाराष्ट्र के जिला सतारा के भगत नामदेव जी के 61 जोड़, 18 रागों में, पश्चिम बंगाल पिंड केंदली के जै देव जी के 2 शब्द, 2 रागों में, उत्तर प्रदेश प्रयाग के भगत राम चन्द जी के 1 शब्द , बसंत राग में, मध्यप्रदेश के पिंड आसनी के भगत बेणी जी के 3 शब्द, 3 रागों में, महाराष्ट्र के सोलापुर के भगत तिरलोचन जी के 4 शब्द, 3 रागों में, राजस्थान के शूआन नगर के भगत धन्ना जी के 4 शब्द, 2 रागों में, मध्यप्रदेश के बाध्वगढ़ के भगत सैण जी के एक शब्द, ध्नासरी राग में, राजस्थान के गगरोन गढ़ के भगत पीपा जी के एक शब्द, ध्नासरी राग में, उत्तर प्रदेश के पिड काकोरी के भगत भीखन जी के 2 शब्द, सोरठी राग में, पाकिस्तान के सहबान प्रांत के भगत सध्ना जी के 1 शब्द, बिलावल राग में, महाराष्ट्र कनौज के भगत परमानन्द जी के 1 शब्द, सांरग राग में, उत्तर प्रदेश के काशी के भगत सूरदास जी के 1 शब्द सांरग राग में, पाकिस्तान के पिंड खोतवाल मुल्तान के शेख फरीद जी के 4 शब्द, 2 राग में, और 112 श्लोक शामिल है।

इसके अलावा भट्टो की बाणी को शामिल किया है। भट कलसहार के जोड़ 34, भट जालप जी के जोड़ 5, भट कीरत जी के जोड़ 8, भट भिखा जी के जोड़ 2, भट सल जी के जोड़ 3, भट भाल जी के जोड़ 1, भट हरिबंस जी के जोड़ 2, भट नल जी के जोड़ 16, भट गयंद जी के जोड़ 13, भट मथुरा जी के जोड़ 14, भट बल्ल जी जो जोड़ 5 शामिल है। इस पवित्र ग्रंथ में उस गुरु सिखों की वाणी को शामिल किया गया है जो श्री गुरु अर्जुन देव जी के काल में सच्चा मन नाल मानवीयता की सेवा की थी उसमें बाबा सुंदर जी की एक बाणी, भाई बलवण्ड जी जोड़ 1 और भाई सता जी के जोड 1 शामिल है। श्री गुरु ग्रंथ जी सर्वकालिक, सर्वव्यापी और सदा सत्य रहने वाले एक ऐसे सिद्ध है जिसने पूरी दुनियां एक जुट हो सकती है।

आधुनिक काल में मानव माया के जाल में फंस के मानवीयता के मूल्य को ही खत्म कर रहा है। चाहे मानव कितने

भी आधुनिक तरक्की करे एक दिन उस मानव को शब्दों का मालिक श्री गुरु ग्रंथ साहिब, श्री भगवत गीता, कुरान शरीफ, बाइबल के चरणों में आना ही होगा। शब्द गुरु, गुरु शब्द, का सिद्धांत सर्वकालिक सत्य होगा। इसलिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पवित्र ग्रंथों को दुनियां की हरेक भाषा में अनुवाद करना चाहिए ताकि अलग अलग रूप रंग प्रांत के लोगों को एकजुट होकर मानवीयता का सुंदर मंदिर बना सके।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में औरत, जातिवाद, वातावरण, नषा, कीरत करो, वंड छको और नाम जपो के बारे की गई गुरवाणी को सिर्फ समाज के लोग ठीक समझ के अपनाये तो समाज में बहुत कुछ परिर्वतन आ सकता है।

औरत

औरत जननी है जन्म देन वाली औरत को समाज में जलील किया जाता है। औरत को कमजोर समझा जाता है। मगर गुरु नानक देव जी ने औरत का सम्मान करने के लिए कहते हुए गुरवाणी उच्चारण किया–

क्यों मंदा आखिये जिस जमया राजन, मतलब औरत को कमजोर कैसे कह सकते है जिस औरत ने राजा को भी पैदा करती है। यह गुरवाणी अगर समाज के लोग समझ गये तो कोई भी मर्द औरत को कमजोर नहीं कह सकते हैं।

आधुनिक काल में औरत को कमजोर साबित करने का ढ़ग बनाये गये हैं। मल्टीनेशनल कम्पनी में औरत को जटिल काम दिया जाता है। औरत को देने वाली तनख्वाह पुरूष से कम होती है। लड़कियों को सरकारी स्कूल में और लड़कों को प्राईवेट स्कूल में पढ़ाने वाले मां बाप आजकल के समाज में बहुत मिलते है। अगर गुरु नानक देव जी की दी हुई गुरवाणी लोग समझे तो इस तरह का भेदभाव कभीी नहीं हो सकता।

जातिवाद

जातिवाद पहले भी बहुत बड़ी समाजिक समस्या थी और आजकल भी जातिवाद बहुत बड़ी सामाजिक समस्या बनी हुई है। इस जातिवाद को समाज में मिटाने के लिए कई साधु संतों ने अपने विचार दिये पर फिर भी जातिवाद मिटा नहीं। 15वीं शताब्दी में गुरु नानक देव जी ने लंगर प्रथा शुरू करके सबको नीचे बैठ कर खाना खाने के लिए कहा। ये सोच औरों से अलग थी इसलिए समाज में गुरु नानक देव जी ज्यादा प्रभावित इसलिए थे क्योंकि गुरु नानक देव जी गुरवाणी विचारन करके लोगो को समझाते। उनके सारे विचार श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के अनुसार–

अवल अल्हा नूर उपाया कुदरत के सब बन्दे
इक नूर से सब जग उपज्या, कौन भले कौन मंदे

- अंग 1349 भगत कबीर जी

यह पवित्र गुरवाणी अगर लोग समझे तो समाज में बहुत बड़ा परिवर्तन आ सकता है। दुर्भाग्य ये है कि जाति के आधार पर गुरुद्वारे से लेकर शमषान घाट बने हैं। जाति केआधार पर अभी भी लोगो को समाज से बाहर रखा जाता है। श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी पंज प्यारे बनाये थे जिसमें हर जाति के लोगो को शामिल किया था। पर श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के सिद्धांतों पर चलने वाले ही जातिवाद के जाल में फंसे हुए है। जाति के आधार पर डेरे बने हुए है जो लोगो को जाति के आधार पर बांट चुके हैं।

वातावरण

आधुनिक काल में इंसान इतना स्वार्थी हो चुका है कि अपनी तरक्की के लिए कुदरत की सुंदरता का भी सत्यानाश कर रहा है। पेड़ काट कर नगर बनाने वाले इंसान बड़ी-बड़ी इंडस्ट्री खोल कर ना सिर्फ हवा प्रदूषण कर रहे हैं बल्कि जल और थल भी प्रदूषित कर रहे हैं। इन्सान, हवा, पानी, धरती को हर दिन बिगाड़ रहा है। इसलिए समाज के लोगो को श्री

गु ग्रंथ साहिब जी के संदेश को समझना जरूरी हो गया है क्योंकि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी कहते हैं—

''पवन गुरु पानी पिता माता धरत महत''

मतलब हवा गुरु है, पानी पिता है और धरती माता है।

अगर हर इन्सान श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी इस पवित्र गुरवाणी को समझ ले तो कोई भी वातावरण का विनाश नहीं करेगा।

नशा

समाज के नौजवान नशे में अपनी जिंदगी खराब कर रहे हैं। नशे में प्यासे हुए नौजवान ना सिर्फ अपनी जिंदगी खराब कर रहे हैं बल्कि अपने परिवार और रिश्तेदारों की भी जिंदगी खराब कर रहे हैं। इस तरह पूरा समाज ही इस संकट से गुजरता है। इसलिए एक नशा करने वाला व्यक्ति पूरे परिवार को खराब करता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज किए गए गुरवाणी लोग समझे तो समाज में बहुत बड़ा परिवर्तन हो सकता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी कहते हैं—

''बाबा होरू खाना खुसी खुआरू।।
जितू खाधे तन पीडीए मन महि चलहि विकार।।

मतलब इन्सान कोई भी ऐसी चीज का सेवन नहीं करना चाहिए जिसको खाकर शरीर को हानि पहुंचे और मन में गलत ख्याल आये।

दारू पीने के बाद गुर्दे खराब होने की जानकारी के बाद भी लोग दारू पीते हैं। ड्रग्स खाने के बाद में मन में चलने वाले गलत विचार का बुरा असर की जानकारी के बावजूद लोग ड्रग्स खाते हैं। अगर लोग श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का संदेष समझे तो समाज में नषा खत्म हो सकता है।

कीरत करों वंड छको, नाम जपोः

आज कल के समाज में लोग इतने स्वाथी हो चुके हैं कि बांट कर खाने की आदत भूल चुके हैं। मेहनत करके कमाने खाने की आदत आदमी खो बैठा है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी कहते हैं—

घलि खाई किछु हथहु देई।।
नानक राहु पछानहि सेई।।

मतलब कमा के खाने वाले अगर कुछ हिस्सा बांट के खाता है तो वहीं इन्सान सही रास्ता जानते हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की ये गुरवाणी अगर लोग समझे तो जरूर बांट कर खाने की आदत लोगो में बढ़ेगी। बिना काम करते हुए तनख्वाह का इंतजार करने वाला सरकारी नौकर अगर इस गुरवाणी को ठीक से समझ ले जो सरकार के हर विभाग में सही ढ़ग से काम चलेगा।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी समाजिक परिवर्तन के लिये मद्दगार साबित हो सकता है पर दुर्भाग्य यह है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को समझने के लिए कोशिश नहीं की जाती है। सारे सर झुका के, मथा टेक के, लंगर खा के घर वापिस आने वाले लोग एक घंटे तक गुरवाणी कीर्तन नहीं सुनते हैं।

सरकारी और गैर सरकारी दफ्तरों में कम से कम 30 मिनट तक अगर गुरवाणी का अर्थ समझ जाये तो बहुत कुछ परिवर्तन आ सकता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का अनुवान हर भाषा में अनुवाद करके हर राज्य में अगर पहुंचाया जाए तो समाज में सम्पूर्ण क्रांति आ सकती हैं।

सारांश

इसमें कोई शक नहीं है कि अगर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की विचारधारा को सही ढंग से पालन किया जाये तो बहुत

बड़ा सामाजिक परिर्वतन लाया जा सकता है क्योंकि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में दर्ज की गई गुरुवाणी एक गुरु या संत की नहीं है बल्कि अलग-अलग संतों, फकीरों और गुरुओं की वाणियों को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में दर्ज किया गया है।

हमारे देश में अलग अलग प्रांत के संत, फकीर अपनी वाणी के द्वारा समाज में बदलाव बहुत किया है, जिस कारण अगर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी को समझ गये तो पूरे समाज में परिवर्तन लाया जा सकता है। रविदास जी का सामाजिक बराबरी का संदेश से लेके परमात्म का गुणगान करने वाले नामदेव जी का संदेश श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में शामिल है जो सामाजिक बराबरी की बात करते हैं, औरत को अधिकार, वातावरण का संदेश, नशे, नैतिकता, जातिवाद के खिलाफ सख्त रूप में अपने विचार प्रगट करने के कारण श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी सामाजिक परिवर्ततन लाने की संपूर्ण शक्ति रखता है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के विचार हर भाषा में अगर अनुवाद हो जाये तो ओर भी ज्यादा सामाजिक परिवर्तन लाया जा सकता है।

अगर पूरी दुनिया ने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के बारे में जानकारी हासिल की तो पूरी दुनिया में परिवर्तन आ सकता है क्योंकि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में दर्ज हर एक गुरवाणी पूरी दुनिया पर लागू होती है जिसकी हर एक गुरवाणी सामाजिक परिवर्तन का साधन बन सकता है। किसी तरह श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की गुरवाणी सामाजिक परिवर्तन ला सकती है, ये समझने से पहले श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के बारे में ज्ञान हासिल करना बहुत जरूरी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सिंह साहिब, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी।
2. सिंह खुशवंत, 1960, रिव्यू ऑफ गुरु नानक एंड सिख रिलीजीयन।
3. हैल्थ, ए. (1981) सोशल मोबाईलीटी गलासगो फोनटाना।
4. फुलेर, सी.जे. (1996), कास्ट टूडे, दिल्ली, ऑसफोर्ड युनिवर्सिटी प्रैस।
5. रिचर्डसन, सी.जे. (1977) कंटमपरैरी सोशल मोबाईलीटी, एन.वाई., निकोलस पब. कं.।
6. श्रीनिवास, एम.एन. (1996), कास्ट, इटस टवंटीथ सैंन्चुरी अवतार, न्यू दिल्ली, विकिंग।

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು ತಂದ ಸಾಮಾಜಿಕ ಪರಿವರ್ತನೆ : ವರ್ತಮಾನ ಕಾಲದಲ್ಲಿಯೂ ಪರಿವರ್ತನೆಯ ಸಾಧ್ಯತೆ

-ಪ್ರೊ|| ಪಂಡಿತರಾವ ಚಂದ್ರಶೇಖರ ಧರೆನ್ನವರ

ಸಹಾಯಕ ಪ್ರಾಧ್ಯಾಪಕರು, ಸಮಾಜ ಶಾಸ್ತ್ರ,

ಸರಕಾರಿ ಕಾಲೇಜು, ಸೆಕ್ಟರ್ ನಂ.೪೬, ಚಂಡೀಗಢ (ಪಂಜಾಬ್)

ಮೊ.: ೯೯೮೮೩ ೫೧೬೯೫

Abstract : 1699 ವೈಸಾಖಿ ದಿನವಾದ ಎಪ್ರಿಲ್ ೧೩ ರಂದು ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಅವರು `ಖಾಲ್ಸಾ ಪಂಥ'ದ ಸ್ಥಾಪನೆ ಮಾಡಿದ್ದರು. ಸಮಾಜದಲ್ಲಿದ್ದ ಅಸಮಾನತೆಯನ್ನು ದೂರು ಮಾಡಲು ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಅವರು ಖಾಲ್ಸಾ ಪಂಥ ಸ್ಥಾಪನೆ ಮಾಡಿದ್ದರು. ಆ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಆಗುತ್ತಿರುವ ಅನ್ಯಾಯಗಳ ವಿರುದ್ಧ ಸಿಡಿದೆದ್ದ ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು ತಂದ ಸಾಮಾಜಿಕ ಪರಿವರ್ತನೆ ಐತಿಹಾಸಿಕವಾಗಿವೆ. ಆದರೆ ಆ ಪರಿವರ್ತನೆಗಳು ಈಗಿನ ಕಾಲದಲ್ಲಿಯೂ ವಾಸ್ತವಿಕವಾಗಿವೆ.

ಜಾತಿಯತೆಯನ್ನು ಸಮಾಜದಿಂದ ದೂರ ಮಾಡಲು ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು ಪಂಜ ಪ್ಯಾರೆ ಸಿದ್ಧಾಂತ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದರು. ಪಂಜ ಪ್ಯಾರೆ ಎಲ್ಲಾ ಜಾತಿ, ಧರ್ಮದಿಂದ ಸೇರಿದ ಐದು ಜನರ ಸಮೂಹವಾಗಿತ್ತು.

ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು `ಕಕಾರ' ಪದ್ಧತಿ ಆರಂಭಿಸಿದರು. ಕಕಾರ ಪದ್ಧತಿಯಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲಾ ಸಿಖ್ಖ ಜನರು ಕಕಾರ ಧರಿಸಬೇಕಾಗಿತ್ತು. ಎಲ್ಲಾ ಸಿಖ್ ಜನರೆಂದರೆ ಖಾಲ್ಸಾ ಪಂಥವನ್ನು ಪಾಲನೆ ಮಾಡುವವರು. ಎಲ್ಲಾ ಸಿಖ್ಖ ಜನರೆಂದರೆ `ಅಮೃತ' ಸೇವನೆ ಮಾಡಿ ಸತ್ಯ, ನಿಷ್ಠೆ, ಸಮರ್ಪಣೆ ಭಾವನೆಯಿಂದ ಜೀವನ ನಡೆಸುವವರಾಗಿದ್ದರು.

ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು ಜನರಲ್ಲಿ ಪ್ರೀತಿ ಮತ್ತು ತ್ಯಾಗ ಬಲಿದಾನದ ಭಾವನೆಯನ್ನು ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ತುಂಬಾ ಪರಿವರ್ತನೆ ತಂದಿದ್ದರು. ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು ತಂದ ಮತ್ತೊಂದು ಸಾಮಾಜಿಕ ಪರಿವರ್ತನೆ ಏನೆಂದರೆ, ಜನರಲ್ಲಿ ಸಾಹಿತ್ಯ ಮತ್ತು ಜ್ಞಾನದ ಪ್ರತಿ ಪ್ರೀತಿ ತಂದಿದ್ದು ಆಗಿದೆ.

ಆ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು ತಂದ ಈ ಎಲ್ಲಾ ಸಾಮಾಜಿಕ ಪರಿವರ್ತನೆ ಈ ಕಾಲದಲ್ಲಿಯೂ ದೊಡ್ಡ ಪ್ರಮಾಣದಲ್ಲಿ ಪರಿವರ್ತನೆ ತರಬಹುದು. ಈ ಶೋಧ ಪತ್ರದಲ್ಲಿ ಈ ಅಂಶಗಳ ಬಗ್ಗೆ ಶೋಧನೆ ಮಾಡಲಾಗುವದು.

೧) ಖಾಲ್ಸಾ ಪಂಥ :

ಸಿಖ್ಖ ಧರ್ಮದ ಹತ್ತನೆಯ ಗುರು ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು ೧೬೯೯ರಲ್ಲಿ `ಖಾಲ್ಸಾ ಪಂಥ'ದ ಸ್ಥಾಪನೆ ಮಾಡಿದ್ದರು. ಖಾಲ್ಸಾ ಎಂದರೆ ಪವಿತ್ರ ಮತ್ತು ಪಂಥ ಎಂದರೆ ಜನರ ಸಮೂಹ. ಹೀಗಾಗಿ ಖಾಲ್ಸಾ ಪಂಥ ಎಂದರೆ ಪವಿತ್ರ ಜನರ ಸಮೂಹವಾಗಿದೆ. ಪವಿತ್ರ ಜನರೆಂದರೆ ಮಾನವೀಯತೆ, ಸತ್ಯ ಮತ್ತು ಸೇವಾ ಭಾವನೆಯಲ್ಲಿ ವಿಶ್ವಾಸ ಇಡುವವರು. ಅಂತಹ ಜನರ ಸಮೂಹ ಮಾಡಿದ ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು ಜಗತ್ತಿನ ಉದ್ಧಾರ, ಜನರ ಸೇವೆಗಾಗಿ ಖಾಲ್ಸಾ ಪಂಥ ಸ್ಥಾಪನೆ ಮಾಡಿದ್ದರು.

ಈ ಖಾಲ್ಸಾ ಪಂಥ ಕೇವಲ ಪಂಜಾಬ ರಾಜ್ಯದವರೆಗೆ ಮಾತ್ರ ಸೀಮಿತವಾಗಿರಲಿಲ್ಲ. ವಿಶಾಲವಾದ ಖಾಲ್ಸಾ ಪಂಥದ ವಿಚಾರಧಾರೆ ಜಗತ್ತಿನ ಎಲ್ಲಾ ಜನರಿಗೋಸ್ಕರವಾಗಿತ್ತು. ಈ ಖಾಲ್ಸಾ ಪಂಥ ಸ್ಥಾಪನೆ ಮಾಡಿದ ನಂತರ ಮೊಗಲ್ ರಾಜ್ಯದ ತಳಹದಿಯನ್ನೇ ನಡುಗಿಸಿತ್ತು. ಈ ಖಾಲ್ಸಾ ಪಂಥ ಸ್ಥಾಪನೆಯ ನಂತರ ಸಾಮಾನ್ಯ ಜನರೂ ಸಹಿತ ತಮ್ಮ ಹಕ್ಕುಗಳ ಬಗ್ಗೆ ಜಾಗ್ರುತರಾಗಿದ್ದರು. ಮೊಗಲ್‌ರ ವಿರುದ್ಧ ಹೋರಾಡುವ ಶಕ್ತಿ ಎಲ್ಲಾ ಜನರಲ್ಲಿ ಬಂದಿತ್ತು. ಜನರು ಔರಂಗಜೇಬ್‌ನ ಅನ್ಯಾಯದ ವಿರುದ್ಧ ಹೋರಾಡುವ ಪಣ ತೊಟ್ಟು ಎಲ್ಲರನ್ನು ಮುಸಲ್ಮಾನ ಮಾಡುವ ಔರಂಗಜೇಬ್‌ನ ಕನಸನ್ನು ನನಸು ಮಾಡಲು ಯಾವದೇ ಅವಕಾಶ ನೀಡಲು ಜನರು ತಮ್ಮ ಜೀವನ ಸಹ ನೀಡಲು ತಯಾರಾಗಿದ್ದರು.

ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರ ಖಾಲ್ಸಾ ಪಂಥ ದೇಶಪ್ರೇಮ ಮತ್ತು ಧರ್ಮ ಪ್ರೇಮವನ್ನೂ ಸಹಿತ ಪ್ರಬಲಗೊಳಿಸಿತ್ತು. ಅದಕ್ಕಾಗಿಯೇ ಜನರು ಪಂಜಾಬಕ್ಕಾಗಿ ಮತ್ತು ತಮ್ಮ ದೇಶಕ್ಕಾಗಿ ಹೋರಾಡಿದ ಯುದ್ಧಗಳೂ ಸಹಿತ ನಡೆದವು. ಸಿಖ್ಖ ಜನರು ತಮ್ಮ ತಲೆ ಕತ್ತರಿಸಿಕೊಂಡರೂ ಸಹಿತ ತಮ್ಮ ಧಾರ್ಮಿಕ ಅಧಿಕಾರ ಕಳೆದುಕೊಳ್ಳಲಿಲ್ಲ.

೨) ಪಂಜ ಪ್ಯಾರೆ :

ಪಂಜ ಪ್ಯಾರೆ ಅಂದರೆ ಐದು ಜನರ ಸಮೂಹವಾಗಿದೆ. ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು ಖಾಲ್ಸಾ ಪಂಥ ಸ್ಥಾಪನೆ ಮಾಡಿದಾಗ `ಪಂಜ ಪ್ಯಾರೆ' ಸಿದ್ಧಾಂತ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದರು. ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರ ಪ್ರಕಾರ ಈ ಐದು ಜನರು ಧಾರ್ಮಿಕ ಪ್ರಕ್ರಿಯೆಗಳ ಮುಖಂಡರಾಗಿದ್ದರು. ಈ ಪಂಜ ಪ್ಯಾರೆ ಹೇಳಿದ ಮಾತೇ ಸತ್ಯ. ಈ ಪಂಜ ಪ್ಯಾರೆ ನೀಡಿದ ಆದೇಶ ಎಲ್ಲರೂ ಪಾಲನೆ ಮಾಡಲೇಬೇಕು. ಇತಿಹಾಸದ ಪ್ರಕಾರ ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು ಸ್ವತಃ ಪಂಜ ಪ್ಯಾರೆ ಅವರ ಆದೇಶದ ಪಾಲನೆ ಮಾಡುತ್ತಾ ಶ್ರೀ ಆನಂದಪುರ ಸಾಹೇಬ ಖಾಲಿ ಮಾಡಿ ಹೊರ ಬಂದಿದ್ದರು.

ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರ ದೂರದೃಷ್ಟಿ ಎಷ್ಟಿತ್ತೆಂದರೆ ಈ ಪಂಜ ಪ್ಯಾರೆ ಸಮೂಹದಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲಾ ಜಾತಿ ಧರ್ಮದಿಂದ ಬಂದ ಜನರನ್ನು ಸೇರಿದ್ದರು. ಇಷ್ಟೇ ಅಲ್ಲದೆ ಈ ಪಂಜ ಪ್ಯಾರೆ ಸಮೂಹದಲ್ಲಿ ದೇಶದ ವಿವಿಧ ಪ್ರಾಂತ್ಯದಿAದ ಬಂದ ಜನರನ್ನು ಸೇರಿಸಲಾಗಿತ್ತು. ಈ ಪಂಚ ಪ್ಯಾರೆಯ ಐದು ಜನರಲ್ಲಿ ನಮ್ಮ ಕರ್ನಾಟಕದ ಬೀದರಿನ ಭಾಯಿ ಸಾಹೇಬ ಸಿಂಗ್ ಸಹಿತ ಒಬ್ಬರಾಗಿದ್ದಾರೆ. ಅದಕ್ಕಾಗಿ ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರ `ಪಂಜ ಪ್ಯಾರೆ' ಸಿದ್ಧಾಂತ ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ದೊಡ್ಡ ಪ್ರಮಾಣದಲ್ಲಿ ಸಾಮಾಜಿಕ ಪರಿವರ್ತನೆ ತಂದಿತ್ತು.

೩) ಕಕಾರ :

ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು `ಕಕಾರ' ವ್ಯವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಸಹಿತ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದರು. ಕಕಾರ ಎಂದರೆ `ಅಮೃತ' ಸೇವಿಸಿ ಸಿಖ್ಖ ಆದ ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬರು ಧರಿಸಬೇಕಾದ ಐದು ಪವಿತ್ರ ವಸ್ತುಗಳು. ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯದಾಗಿ ಕೇಶ, ಕಂಗಾ, ಕಛೆ ್ಹರಾ, ಕಡಾ, ಕಿರಪಾನ. ಕೇಶ ಅಂದರೆ ಕೂದಲು, ಕಂಗಾ ಅಂದರೆ ಹಣಿಗೆ, ಕಛೆ ್ಹರಾ ಅಂದರೆ ಒಳವಸ್ತ್ರವಾದ ಚಡ್ಡಿ, ಕಡಾ ಅಂದರೆ ಕೈಯಲ್ಲಿ ಧರಿಸುವ ಲೋಹದ ಬಳೆ, ಕಿರಪಾನ ಅಂದರೆ ಚಿಕ್ಕ ಪ್ರಮಾಣದ ಖಡ್ಗ.

ಈ ಎಲ್ಲ ಐದು ವಸ್ತುಗಳಿಗೆ ಕಕಾರ ಎನ್ನುತ್ತಾರೆ. ಈ ಕಕಾರ ಧರಿಸುವದರಿಂದ ಪಂಚ ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ನಿಯಂತ್ರಣದಲ್ಲಿ ಇಡಬಹುದು. ಈ ಕಾರಣದಿಂದಲೇ ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು ಕಕಾರ ಪದ್ಧತಿ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದರು. ಇದರಿಂದಾಗಿ ಪಂಜಾಬದಲ್ಲಿ ಕೋಟ್ಯಾಂತರ ಜನರು ಈ ಸಿದ್ಧಾಂತದ ಪಾಲನೆ ಮಾಡಿ ತಮ್ಮ ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ನಿಯಂತ್ರಣದಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊAಡು ಸಫಲ ಜೀವ ನಡೆಸುತ್ತಿದ್ದಾರೆ.

೪) ಪ್ರೀತಿ ಮತ್ತು ತ್ಯಾಗ ಬಲಿದಾನ :

ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ಪ್ರೀತಿ ಮತ್ತು ತ್ಯಾಗ ಬಲಿದಾನದ ಭಾವನೆ ತುಂಬಿಸಿದ್ದರು. ಜನರಲ್ಲಿ ಸಮಾಜದ ಪ್ರೀತಿಯ ಭಾವನೆ ತುಂಬಿಸಿದ ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು ಸಮಾಜಕ್ಕಾಗಿ ಸೇವೆ ಮಾಡಲು ಜನರಲ್ಲಿ ದೇವರತ್ತ ಧ್ಯಾನ ಮಾಡಲು ಪ್ರೇರೇಪಿಸಿದರು. `ಸಮಾಜದ ಸೇವೆಯೇ ದೇವರ ಸೇವೆ' ಎಂದು ತಿಳಿಹೇಳಿದ ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು ಜನರಲ್ಲಿ ಪ್ರೀತಿಯ ಭಾವನೆ ಹುಟ್ಟಿಸಿದರು.

ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರಂತಹ ತ್ಯಾಗಮಯಿ ಇತಿಹಾಸದಲ್ಲಿಯೇ ಹುಟ್ಟಿಲ್ಲ ಮತ್ತು ಮುಂದೆAದೂ ಹುಟ್ಟುವದಿಲ್ಲ ಎನ್ನುವದಕ್ಕೆ ಅನೇಕ ಉದಾಹರಣೆಗಳಿವೆ. ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು ಮಾನವೀಯತೆಯನ್ನು ಉಳಿಸುವದಕ್ಕಾಗಿ ಮತ್ತು ಹಿಂದೂ ಧರ್ಮವನ್ನು ಉಳಿಸುವದಕ್ಕಾಗಿ ತಮ್ಮ ತಂದೆ ಮತ್ತು ತಮ್ಮ ನಾಲ್ಕು ಮಕ್ಕಳನ್ನೇ ಕಳೆದುಕೊಂಡಿದ್ದರು. ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರ ತಂದೆಯಾದ ಶ್ರೀ ಗುರು ತೇಗ್ ಬಹದ್ದೂರ ಅವರು ಹಿಂದೂ

ಧರ್ಮ ಉಳಿಸುವದಕ್ಕಾಗಿ ದೆಹಲಿಯ ಚಾಂದನಿ ಚೌಕಿನಲ್ಲಿ ತಮ್ಮ ಕುತ್ತಿಗೆ ಕಡಿಸಿಕೊಂಡಿದ್ದರು. ಆದರೆ ಔರಂಗಜೇಬ್‌ನ ಅನ್ಯಾಯದ ವಿರುದ್ಧ ತಲೆಬಾಗಿಸಿರಲಿಲ್ಲ.

ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರ ಚಿಕ್ಕಮಕ್ಕಳೂ ಸಹಿತ ಮೊಗಲ್‌ರ ಅನ್ಯಾಯದ ವಿರುದ್ಧ ಹೋರಾಡುತ್ತ ತಮ್ಮ ಜೀವನ ಕಳೆದುಕೊಂಡಿದ್ದರು. ಇದೆಲ್ಲವನ್ನು ನೋಡಿ ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರ ತಾಯಿ ಮತ್ತು ಹೆಂಡತಿ ಸಹಿತ ತಮ್ಮ ಜೀವನ ತ್ಯಾಗ ಮಾಡಿದ್ದರು. ಇದೆಷ್ಟೆಲ್ಲಾ ಕಳೆದುಕೊಂಡರೂ ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು ಪರಮಾತ್ಮನ ಲೀಲೆಯನ್ನು ಕೊಂಡಾಡುತ್ತಾ `ಜಫರನಾಮಾ' ಬರೆದು ಔರಂಗಜೇಬ್‌ನಿಗೆ ಕೊಟ್ಟು ಕಳಿಸುತ್ತಾರೆ. ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರ ಈ ದೊಡ್ಡ ಹೃದಯದ ನಡತೆ ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ಪರಿವರ್ತನೆಯೇನೋ ತಂದಿತ್ತು.

೫) ಸಾಹಿತ್ಯ ಮತ್ತು ಜ್ಞಾನ :

ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು ಸಾಹಿತ್ಯ ಪ್ರೇಮಿಯಾಗಿದ್ದು, ಅವರು ಬರೆದ ಅನೇಕ ಧಾರ್ಮಿಕ ದಸ್ತಾವೇಜುಗಳಲ್ಲಿ ಕಂಡುಬರುತ್ತದೆ. ಸಾಹಿತ್ಯ ಮತ್ತು ಜ್ಞಾನವನ್ನು ಅತೀ ಗೌರವದಿದ ನೋಡುತ್ತಿದ್ದ ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು ತಮ್ಮ ಆಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ೫೨ ಕವಿಗಳನ್ನು ಅತೀ ಗೌರವದಿಂದ ನೋಡಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿದ್ದರು. ಶ್ರೀ ಗುರ ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು ಸ್ವತಃ ಕವಿಯಾಗಿದ್ದರಿಂದ ಕವಿಗಳಿಗೆ ಸನ್ಮಾನ ನೀಡುತ್ತಿದ್ದರು. ಸಿಖ್ಖ ಜನಾಂಗಕ್ಕೆ ಓದಿ ಜ್ಞಾನ ಪಡೆಯಲು ಆಶೀರ್ವದಿಸಿದ ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು ಪಂಜಾಬಿ ಭಾಷೆಗೆ ಪ್ರೋತ್ಸಾಹ ನೀಡಿದ್ದರು. ಶ್ರೀ ಗುರು ಗ್ರಂಥ ಸಾಹೇಬ್‌ದಲ್ಲಿನ ಜ್ಞಾನ ಸರ್ವರಿಗೂ ಸಿಗಲೆಂದು ಶ್ರೀ ಗುರು ಗ್ರಂಥ ಸಾಹೇಬವೇ ಮುಂದಿನ ಗುರು ಎಂದು ಘೋಷಿಸಿದ ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು ಜ್ಞಾನವೇ ದೇವರು ಎಂಬ ಸಂದೇಶ ನೀಡಿದ್ದರು. ಆದಕ್ಕಾಗಿಯೇ ಇಂದಿನವರೆಗೆ ಶ್ರೀ ಗುರು ಗ್ರಂಥ ಸಾಹೇಬವನ್ನೇ ತಮ್ಮ ಗುರುವೆಂದು ಸಿಖ್ಖ ಜನರು ನಂಬಿ ಜೀವನ ಮಾಡುತ್ತಾರೆ. ಮೂರ್ತಿ ಪೂಜೆಯಿಂದ ದೂರ ಮಾಡಿ ಜ್ಞಾನವೇ ದೇವರೆಂದು ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ದೊಡ್ಡ ಪ್ರಮಾಣದಲ್ಲಿ ಪರಿವರ್ತನೆ ತಂದಿದ್ದರು.

ಸಾರಾAಶ :- ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು ತಂದ ಸಾಮಾಜಿಕ ಪರಿವರ್ತನೆ ಐದು ಅಂಶಗಳಲ್ಲಿ ಈ ಶೋಧ ಪತ್ರದಲ್ಲಿ ವಿವರಿಸಲಾಗಿದೆ. ಈ ಶೋಧ ಪತ್ರದಲ್ಲಿ ಈ ವಿಚಾರಧಾರೆಯನ್ನು ಸಿದ್ಧಮಾಡಲಾಗಿದೆ. ಏನೆಂದರೆ, ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು `ಖಾಲ್ಸಾ ಪಂಥ' ಸ್ಥಾಪನೆ ಮಾಡದೇ ಹೋಗಿದ್ದರೆ ಸಾಮಾನ್ಯ ಜನರಲ್ಲಿ ಅನ್ಯಾಯದ ವಿರುದ್ಧ ಹೋರಾಡುವ ಶಕ್ತಿ ಹುಟ್ಟುತ್ತಿರಲಿಲ್ಲ. ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು ಏನಾದರೂ `ಕಕಾರ' ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಪ್ರಾರಂಭಿಸದೇ ಇದ್ದಿದ್ದರೆ ಜನರನ್ನು ಪಂಚ ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ನಿಯಂತ್ರಣದಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವ ಶಕ್ತಿ ಬರುತ್ತಿರಲಿಲ್ಲ. ಈ ಶೋಧ ಪತ್ರದಲ್ಲಿ ಈ ವಿಚಾರದ ಬಗ್ಗೆ ಚರ್ಚೆ ಮಾಡಲಾಗಿದೆ. ಏನೆಂದರೆ ಜನರಲ್ಲಿ ಪ್ರೀತಿ, ತ್ಯಾಗ ಬಲಿದಾನದ ಸ್ವಭಾವ ತರುವದರಿಂದ ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ಪರಿವರ್ತನೆ ತರಬಹುದೆಂದು ಈ ಶೋಧ ಪತ್ರದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀ ಗುರು ಗ್ರಂಥ ಸಾಹೇಬವನ್ನು ಯಾವ

ರೀತಿಯಾಗಿ ಜ್ಞಾನದ ಸಂಕೇತ ಮೂಡಿ ಜನರನ್ನು ಮೂರ್ತಿ ಪೂಜೆಯಿಂದ ಜ್ಞಾನವೇ ದೇವರೆಂದು ನಂಬಲು ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು ಪ್ರಯತ್ನಿಸಿದ್ದರೆಂದು ಸಿದ್ಧಮಾಡಲಾಗಿದೆ. ಶ್ರೀ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ ಅವರು ಮಾಡಿದ ಈ ಎಲ್ಲಾ ಪ್ರಯತ್ನಗಳಿಂದ ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ಸಾಮಾಜಿಕ ಪರಿವರ್ತನೆಯಾಗಿ ಸಮಾಜ ಒಳ್ಳೆಯ ಸಮಾಜದತ್ತ ಸಾಗಿದೆ.

ಬಿಬಿಲೋಗ್ರಾಫಿ :

೧) ಡಾಲಲ್ ರೈ : ಸಾಹೇಬ್ ಕಮಾಲ ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ಜೀ, ಗುರುಮತ ಸಾಹಿತ್ಯ ಚಾರಿಟೇಬಲ್ ಟ್ರಸ್ಟ್, ಶ್ರೀ ಅಮೃತಸರ; ೧೦೭೯

೨) ಸಿದ್ದು ಜಿ. ಎಸ್. : ಕಾನಸೆಪ್ಟ್ಸ| ಆಫ್ ಸಿಖ್ಖ ರಿಲಿಜಿಯನ್, ಗುರು ನಾನಕ ಚಾರಿಟೇಬಲ್ ಟ್ರಸ್ಟ್, ಲೂಧಿಯಾನಾ, ಪಂಜಾಬ; ೨೦೦೭

೩) ಚೌಹಾಣ ಜಿ. ಎಸ್. : ಬಾನಿ ಆಫ್ ಭಗತ್ಸ ಆಲ್ ಇಂಡಿಯಾ ಪಿಂಗಲವಾಡಾ ಚಾರಿಟೇಬಲ್ ಟ್ರಸ್ಟ್ (ಅಮೃತಸರ); ೨೦೧೪

೪) ಜಗಜೀತ ಮುಕಲ್ಸರ : ಕಲಿಯುಗ ಕೆ ಅವತಾರ, ವಾರೀಫ್ ಶಾ ಫೌಂಡೇಶನ್; ೨೦೧೪

೫) ಸಿಂಗ್ ರೂಪ : ಪಂಥ ಸೇವಕ ಶಿರೋಮಣಿ ಗುರುದ್ವಾರ, ಪ್ರಬಂಧಕ ಕಮೀಟಿ, ಶ್ರೀ ಅಮೃತಸರ ಸಾಹೇಬ; ೨೦೧೦

*****

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

ਸਿੱਖੀ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਦੇ ਵਿੱਚ ਕਕਾਰ : ਸਾਮਾਜਿਕ ਪਰਿਵਰਤਨ ਅਤੇ ਪਹਿਚਾਣ।

ਡਾ. ਪੰਡਿਤਰਾਓ ਚੰਦਰਸ਼ੇਖਰ ਧਰੇਨਵਰ
ਐਸੋਸਿਏਟ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ
ਪੋਸਟ ਗ੍ਰੇਜੂਏਟ ਗੋਰਮਿੰਟ ਕਾੱਲਜ, ਸੈਕਟਰ-46, ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ
ਮੋਬਾਇਲ : 9988351695
ਈਮੇਲ : raju_herro@yahoo.com

ਕੀ ਵਰਡਸ (ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਸ਼ਬਦ) — ਕਕਾਰ, ਸਮਾਜਿਕ ਪਰਿਵਰਤਨ, ਪਹਿਚਾਣ, ਸਿੱਖੀ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ, ਕੰਘਾ,ਕੇਸ਼, ਕੜਾ, ਕਛਹਿਰਾ, ਕ੍ਰਿਪਾਨ, ਗਾਤਰਾ, ਪੰਜਾਬ, ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ, ਵੈਸ਼ਾਖੀ, ਖਾਲਸਾ ਪੰਥ, ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ, ਨਿਹੰਗ ਸਿੱਖ, ਹੰਕਾਰ, ਮੋਹ।

ਅਬਸਟਰੈਕਟ

ਸਿੱਖੀ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਦੇ ਵਿੱਚ ਕਕਾਰ ਦਾ ਦਰਜਾ ਸਭ ਤੋਂ ਉਪਰ ਹੈ। ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਵੱਲੋਂ ਦਿੱਤੀ ਗਈ ਬਖਸ਼ੀਸ਼ ਕਕਾਰ ਹੈ। ਇਹ ਕਕਾਰ ਨਾ ਸਿਰਫ ਪੰਜਾਬੀ ਲੋਕਾਂ ਲਈ ਬਖਸ਼ੀਸ਼ ਹੈ ਬਲਕਿ ਪੂਰੀ ਦੁਨਿਆਂ ਲਈ ਬਖਸ਼ੀਸ਼ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਕਕਾਰ ਦੇ ਵਿੱਚ ਜ਼ੋ ਕੰਘਾ,ਕੇਸ਼, ਕੜਾ, ਕਛਹਿਰਾ, ਕ੍ਰਿਪਾਨ ਸ਼ਾਮਿਲ ਹਨ ਦੁਨਿਆਂ ਦਾ ਹਰੇਕ ਇੰਨਸਾਨ ਧਾਰਨ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ ਜੋ ਇਨਸਾਨਿਅਤ, ਇਮਾਨਦਾਰੀ, ਸੱਚਾਈ ਦੇ ਵਿੱਚ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਰਖਦਾ ਹੈ। ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨੇ ਖਾਲਸਾ ਪੰਥ ਦੀ ਸਥਾਪਨਾ ਸਿਰਫ ਪੰਜਾਬ ਲੋਕਾਂ ਲਈ ਸਥਾਪਿਤ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ ਸੀ ਬਲਕਿ ਖਾਲਸਾ ਪੰਥ ਦੀ ਸਥਾਪਣਾ ਤਾਂ ਪੂਰੀ ਦੁਨਿਆਂ ਲਈ ਹੋਈ ਸੀ। ਕਕਾਰ ਨੂੰ ਧਾਰਨ ਕਰਨ ਲਈ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਕਿਹਾ ਤਾਂ ਕਿ ਇਨਸਾਨ ਪੰਜ ਇੰਦਰੀਆਂ ਤੇ ਕਾਬੂ ਕਰ ਸਕੇ। ਇਸ ਖੋਜ਼ ਪੱਤਰ ਦੇ ਵਿੱਚ ਇਹ ਖੋਜਣ ਲਈ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇਗੀ ਕਿ ਕਿਵੇਂ ਕਕਾਰ ਇਨਸਾਨ ਨੂੰ ਚੰਗੇ ਇਨਸਾਨ ਬਣਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਖੋਜ਼ ਪੱਤਰ ਦੇ ਵਿੱਚ ਇਹ ਖੋਜ਼ਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇਗੀ ਕਿ ਕਿਵੇਂ ਆਧੁਨਿਕ ਕਾਲ ਦੇ ਵਿੱਚ ਕਕਾਰ ਦੀ ਬੇਇੱਜਤੀ ਅਤੇ ਬੇਅਦਬੀ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ। ਆਧੁਨਿਕ ਕਾਲ ਦੇ ਵਿੱਚ ਕਕਾਰ ਦੀ ਮਹੱਤਤਾ ਬਾਰੇ ਇਸ ਖੋਜ਼ ਪੱਤਰ ਦੇ ਵਿੱਚ ਖੋਜਿਆ ਜਾਵੇਗਾ। ਵੱਖ ਵੱਖ ਗੁਰਬਾਣੀਆਂ ਦਾ ਸਹਾਰਾ ਲੈ ਕੇ ਕਕਾਰ ਦੇ ਸਿਧਾਂਤ ਨੂੰ ਵਿਗਿਆਨਿਕ ਰੂਪ ਦੇ ਵਿੱਚ ਕਿਵੇਂ ਪ੍ਰਭਾਵਸ਼ਾਲੀ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ ਇਸ ਖੋਜ਼ ਪੱਤਰ ਵਿੱਚ ਖੋਜ਼ਿਆ ਜਾਵੇਗਾ।

ਕਕਾਰ ਅਤੇ ਗੁਰਬਾਣੀ:—

ਇਸ ਵਿਕਾਰ ਦਾ ਸਹੀ ਰੂਪ ਬੱਚੇ ਬੱਚੀ ਦੇ ਜਵਾਨ ਹੋਣ ਤੇ ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਯੋਗ ਵਰ ਲੱਭ ਕੇ ਵਿਆਹ ਦੇ ਬੰਧਨ ਵਿਚ ਬੰਨ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਵਿਆਹ ਦੇ ਬੰਧਨ ਨੂੰ ਸਿੱਖ ਪੰਥ ਨੇ ਅਨੰਦ ਕਾਰਜ ਦਾ ਨਾਮ ਦਿੱਤਾ ਹੈ। ਜਿਹੜਾ ਅਨੰਦ ਦਾ ਕਾਰਜ ਹੈ ਉਹ ਵਿਕਾਰ ਨਹੀਂ ਇਸ ਤੋਂ ਬਾਦ ਬੱਚੇ ਬੱਚੀ ਦਾ ਗ੍ਰਿਹਸਤ ਜੀਵਨ ਸ਼ੁਰੂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਗ੍ਰਿਹਸਤ ਜੀਵਨ ਬਾਰੇ ਸੁਖਮਨੀ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਦਾ ਫੁਰਮਾਨ :—

ਰਾਜ ਮਹਿ ਰਾਜ ਜੋਗ ਮਹਿ ਜੋਗੀ॥
ਤਪ ਮਹਿ ਤਪੀਸਰੁ ਗ੍ਰਿਹਸਤ ਮਹਿ ਭੋਗੀ।।28 ਅਸ਼ਟਪਦੀ 16,

ਭਾਵ ਗ੍ਰਿਹਸਤ ਨੂੰ ਭੋਗਣਾ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਹੀ ਸ੍ਰਿਸਟੀ ਦੀ ਰਚਨਾ ਅੱਗੇ ਚਲਈ ਹੈ। ਬੱਚਿਆਂ ਨੇ ਜਨਮ ਲੈਣਾ ਹੈ। ਬਹੁਤ ਨੇੜੇ ਦੇ ਸਬਦ ਗ੍ਰਿਹਸਤੀ—ਸ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਪਸ਼ੂ ਪੰਛੀ ਮਨੁੱਖ ਤੇ ਇੱਥੋ ਤੱਕ ਕੀ ਬਨਸਪਤੀ ਵੀ ਇਸੇ ਤੋਂ ਅੱਗੇ ਵਧਦੀ ਹੈ। ਭਾਵ ਉਪਜਦੀ ਹੈ:—

ਬੀਉ ਬੀਜੀ ਪਤਿ ਲੈ ਗਏ ਅਬ ਕਿਉ ਉਗਵੈ ਦਾਲਿ॥

ਜੇ ਇਕੁ ਹੋਇ ਤ ਉਗਵੈ ਰੁਤੀ ਹੂ ਰੁਤਿ ਹੋਇ ॥ ਆਸਾ ਮ:1 ਅੰਗ 468

ਜਦੋਂ ਅਸੀਂ ਬੀਜ ਧਰਤੀ ਦੀ ਹਿਕ ਵਿੱਚ ਦਬਦੇ ਹਾਂ। ਤਾਂ ਹੀ ਖੇਤੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਜੇ ਬੀਜ ਉਪਰੋ ਛਿਲਕਾ ਉਤਾਰ ਦੇਈਏ ਤੇ ਦਾਲ ਬਣ ਜਾਵੇਗੀ। ਉਹ ਨਹੀਂ ਉਗੇਗੀ। ਜਦੋਂ ਅਸੀਂ ਬੀਜ ਨੂੰ ਖੋਲਦੇ ਹਾਂ ਤਾਂ ਧਿਆਨ ਨਾਲ ਦੇਖਣ ਤੇ ਪਤਾ ਚਲਦਾ ਹੈ। ਦਾਲ ਦਾ ਇੱਕ ਹਿੱਸਾ ਨਰ ਹੈ ਤੇ ਦੂਜਾ ਮਾਦਾ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਬਨਸਪਤੀ ਵਿੱਚ ਵੀ ਗ੍ਰਿਰਹਸਤੀ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਪਤਾ ਲਗਦਾ ਹੈ ਕੀ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਦੀ ਰਚਨਾ ਦਾ ਅੱਗੇ ਤੁਰਨ ਦਾ ਸਾਧਨ ਗ੍ਰਿਹਸਤੀ ਹੈ। ਗ੍ਰਿਹਸਤੀ ਜੀਵਨ ਵਿਕਾਰੀ ਜੀਵਨ ਨਹੀਂ ਜਦੋਂ ਬੱਚੇ ਬੱਚੀ ਦਾ ਅਨੰਦ ਕਾਰਜ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਸੀਂ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਹਾਰ ਸ਼ਿਗਾਰ, ਇੱਕਠੇ ਬੈਠਣ ਤੇ ਇੱਕਠੇ ਆਣ—ਜਾਣ ਦੀ ਖੁੱਲ ਦੇ ਦਿੰਦੇ ਹਾਂ। ਤੇ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਦੇਖ ਕੇ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਮਾਪੇ ਤੇ ਸੰਸਾਰ ਖੁਸ਼ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਬਾਰੇ ਬਾਈ ਦੇ ਬੋਲ ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿੱਚ ਸੰਪੂਰਨ ਹਨ:—

ਜਿਨ ਕੇ ਚੋਲੇ ਰਤੜੇ ਪਿਆਰੇ ਕੰਤੁ ਤਿਨਾ ਕੈ ਪਾਸਿ ॥

ਧੂੜਿ ਤਿਨਾ ਕੀ ਜੇ ਮਿਲੈ ਜੀ ਕਹੁ ਨਾਨਕ ਕੀ ਅਰਦਾਸ। ਤਿਲੰਗ ਮ. 1 ਅੰਗ 721

ਗ੍ਰਿਹਸਤੀ ਤੋਂ ਗਿਰਨਾ – ਕਾਮੀ — ਗ੍ਰਿਹਸਤੀ ਤੋਂ ਜਦੋਂ ਇਨਸਾਨ ਡਿਗਦਾ ਹੈ। ਤੇ ਕਾਮ ਵਿੱਚ ਫਸ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਗ੍ਰਿਹਸਤ ਜੀਵਨ ਲਈ ਅਸੀਂ ਆਪਣੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਆਪ ਪੜਦਾ ਦਿੰਦੇ ਹਾਂ। ਕਾਮੀ ਵੀ ਪੜਦੇ ਅੰਦਰ ਵਿਕਾਰ ਵਿੱਚ ਫਸਦਾ ਹੈ ਤੇ ਆਪ ਪੜਦਾ ਕਰਦਾ ਹੈ:—

ਦੇਇ ਕਿਵਾੜ ਅਨਿਕ ਪੜਦੇ ਮਹਿ ਪਰ ਦਾਰਾ ਸੰਗ ਫਾਕੈ॥

ਚਿਤ੍ਰ ਗੁਪਤ ਜਬ ਲੇਖਾ ਮਾਗਹਿ ਤਬ ਕਉਣੁ ਪੜਦਾ ਤੇਰਾ ਢਾਕੈ ॥ 3 ॥

ਸੋਰਠਿ ਮ. 5 ਅੰਗ 616 ॥

ਘਰ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ ਦਾ ਹਾਮੀ ਹੋਣ ਤੇ ਹੀ ਪਹਿਲੇ ਵਿਕਾਰ ਕਾਮ ਵਿੱਚ ਫਸਦਾ ਹੈ। ਪਹਿਲੇ ਗਿਰਨ ਤੇ ਬਾਣੀ ਦਾ ਫ਼ੁਰਮਾਨ ਹੈ:—

ਜੈਸੇ ਸੰਗ ਬਿਸੀਅਰ ਸਿਉ ਹੈ ਰੇ ਤੈਸੋ ਹੀ ਇਹੁ ਪਰ ਗ੍ਰਿਹੁ।।2।। ਅੰਗ 403 ਆਸਾ ਮ. 5

ਜਿਸ ਵਕਤ ਪਹਿਲੇ ਵਿਕਾਰ ਵਿੱਚ ਫੱਸ ਗਿਆ ਉਸ ਵਕਤ ਬਾਣੀ ਦਾ ਫ਼ੁਰਮਾਨ ਹੈ:—

ਨਿਮਖ ਕਾਮ ਸੁਆਦ ਕਾਰਣਿ ਕੋਟਿ ਦਿਨਸ ਦੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ॥

ਘਰੀ ਮੁਹਤ ਰੰਗ ਮਾਣਹਿ ਫਿਰਿ ਬਹੁਰਿ ਬਹੁਰਿ ਪਛੁਤਾਵਹਿ॥

ਅੰਧੇ ਚੇਤਿ ਹਰਿ ਹਰਿ ਰਾਇਆ॥

ਤੇਰਾ ਸੋ ਦਿਨੁ ਨੇੜੈ ਆਇਆ। ਆਸਾ ਮ. 5 ਅੰਗ 403

ਕਾਮੀ ਤੋਂ ਥਲੇ ਜਾ ਕੇ ਬਲਾਤਕਾਰੀ ਬਣ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਬਲਾਤਕਾਰੀ ਜਬਰਦਸਤੀ ਸਬੰਧ ਬਣਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਬਲਾਤਕਾਰੀ ਹੋ ਕੇ ਵੀ ਪੂਰਤੀ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ ਤਾਂ ਫਿਰ ਮਹਾਂ ਬਲਾਤਕਾਰੀ ਬਣ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਮਹਾਂ ਬਲਾਤਕਾਰੀ ਨਾਬਾਲਿਗ ਕਰਦਾ ਹੈ ਇਥੋ ਤੱਕ ਕੀ ਦੋ—ਦੋ ਚਾਰ—ਚਾਰ ਸਾਲ ਦੀਆਂ ਬੱਚੀਆਂ ਦੇ ਰੇਪ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।

ਉਦੋਂ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਵੱਲੋਂ ਦਿੱਤੇ ਕਕਾਰ ਕਛਹਿਰੇ ਤੇ ਹੱਥ ਜਾਏ ਤਾਂ ਗੁਰੂ ਚੇਤੇ ਆਵੇ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਗੁਰੂ ਦੀ ਬਾਈ ਇਤਿਹਾਸ ਤੇ ਕਕਾਰ ਰੂਪੀ ਕਛਹਿਰਾ ਸਾਨੂੰ ਪਹਿਲੇ ਵਿਕਾਰ ਤੋਂ ਬਚਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਗ੍ਰਿਹਸਤੀ ਤੋਂ ਗਿਰਿਆ ਕਾਮੀ ਤੇ ਗ੍ਰਿਹਸਤੀ ਤੋਂ ਉੱਪਰ ਉੱਠਿਆ ਨਾਮੀ (ਨਾਮ ਜਪਣ ਵਾਲਾ)। ਬਹੁਤ ਨੇੜੇ ਦੇ ਅੱਖਰ ਹਨ ਕਾਮੀ ਤੇ ਨਾਮੀ। ਪਰ ਅਰਥਾਂ ਵਿੱਚ ਜਮੀਨ ਅਸਮਾਨ ਜਿੰਨਾ ਫਰਕ ਹੈ।

ਵਿਕਾਰ ਕ੍ਰੋਧ ਕਕਾਰ ਕ੍ਰਿਪਾਨ

ਫਰੀਦਾ ਬੁਰੇ ਦਾ ਭਲਾ ਕਰਿ ਗੁਸਾ ਮਨਿ ਨ ਹਢਾਇ।।
ਦੇਹੀ ਰੋਗੁ ਨ ਲਗਈ । ਪਲੈ ਸਭ ਕਿਛੁ ਪਾਇ॥ 78॥॥

ਸਲੋਕ ਸੇਖ ਫਰੀਦ ॥ 1381 ॥

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਕਾਇਆ ਕਉ ਗਾਲੈ॥ ਜਿਉ ਕੰਚਨ ਸੋਹਾਗਾ ਢਾਲੈ॥ ਰਾਮਕਲੀ ਮ. 1.ਅੰਗ 929॥
ਦਸਮ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਨੇ ਕ੍ਰੋਧ ਨੂੰ ਕਾਬੂ ਰੱਖਣ ਲਈ ਕ੍ਰਿਪਾਨ ਕਕਾਰ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਬਖਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ।

ਕ੍ਰਿਪਾਨ ਜੋ ਕੀ ਛੇਵੇਂ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਦੇ ਸਮੇਂ ਪੰਚਮ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਦੀ ਸ਼ਹਾਦਤ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਆਈ। ਸ਼ਸਤਰ ਧਾਰੀ ਨੂੰ ਪਤਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਜੇ ਮੈ ਕ੍ਰੋਧ ਕੀਤਾ ਤੇ ਮੇਰਾ ਹੱਥ ਸ਼ਸਤਰ ਤੇ ਗਿਆ ਤਾਂ ਮੇਰਾ ਜਾਣਾ ਕੁਝ ਨਹੀਂ ਤੇ ਅੱਗਲੇ ਦਾ ਰਹਿਣਾ ਕੁੱਝ ਨਹੀਂ। ਇਸ ਕਰਕੇ ਸ਼ਸਤਰਧਾਰੀ ਖਾਲਸਾ ਕ੍ਰੋਧ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਕਾਬੂ ਵਿੱਚ ਰੱਖਦਾ ਹੈ। ਸ਼ਸਤਰ ਨੂੰ ਬਣਾਉਣ ਦੀ ਵਿਧੀ ਨੂੰ ਦੇਖੀਏ ਤਾ ਪਤਾ ਲਗਦਾ ਹੈ। ਪਹਿਲਾ ਲੋਹੇ ਦਾ ਟੁਕੜਾ ਲੋਹਾਰ ਲੈਂਦਾ ਹੈ। ਉਸ ਨੂੰ ਅੱਗ ਵਿੱਚ ਸੁੱਟ ਕੇ ਪੂਰਾ ਲਾਲ ਹੋਣ ਤੱਕ ਗਰਮ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਭੱਠੀ ਵਿੱਚੋਂ ਕੱਢ ਕੇ ਉਸ ਤੇ ਹਥੋੜੇ ਮਾਰਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਪ੍ਰਕ੍ਰਿਆ ਉਦੋਂ ਤਕ ਚਲਦੀ ਹੈ ਜਦੋਂ ਤਕ ਉਹ ਸ਼ਸਤਰ ਦਾ ਰੂਪ ਧਾਰਨ ਨਹੀਂ ਕਰ ਲੈਂਦਾ। ਫਿਰ ਉਸ ਦੀ ਧਾਰ ਲਗਾਈ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਉਸ ਤੋਂ ਬਾਦ ਮੁਠਾ ਤੇ ਫਿਰ ਮਿਆਨ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸ਼ਸਤਰ ਤਿਆਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

ਮਸ਼ਹੂਰ ਸਿੱਖ ਬੁੱਧੀਜੀਵੀ ਅਤੇ ਲੇਖਕ ਸ੍ਰੀ ਮੋਹਨ ਸਿੰਘ ਜੀ ਲਿਖਦੇ ਹਨ ਕਿ ਸਿੱਖੀ ਦੇ ਸ਼ਸਤਰ ਦਾ ਫਲਾਸਫੀ ਸਿੱਖੀ ਦੇ ਸ਼ਸਤਰ ਦਾ ਲੋਹਾ ਪੰਚਮ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਦੀ ਤੱਤੀ ਤੱਵੀਂ ਦਾ ਹੈ। ਤਵੀਂ ਨੂੰ ਉਸੇ ਤਰਾਂ ਲਾਲ ਹੋਣ ਤਕ ਗਰਮ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਲੋਹਾਰ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਉਸ ਤਵੀਂ ਤੇ ਪੰਚਮ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਨੇ ਬੈਠ ਕੇ ਸਬਰ (ਸ਼ਾਤੀ) ਵਿੱਚ ਰਹਿ ਕੇ ਹਥੋੜੇ ਮਾਰੇ, ਹਥੋੜੇ ਮਾਰਕੇ ਸ਼ਸਤਰ ਬਣਨ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਉਸ ਵਿੱਚੋ ਜੁਲਮ ਕੱਢ ਦਿੱਤਾ।

ਇਸੇ ਤਵੀ ਦੇ ਲੋਹੇ ਤੋਂ ਛੇਵੇਂ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਦੀਆਂ ਮੀਰੀ ਪੀਰੀ ਦੀਆਂ ਤਲਵਾਰਾ ਬਈਆ। ਇਹਨਾ ਮਿਰੀ ਪਿਰੀ ਦੀਆਂ ਤਲਵਾਰਾਂ ਤੋਂ ਖੰਡਾ ਤਿਆਰ ਹੋਇਆ। ਇਸ ਖੰਡੇ ਦੀ ਇਕ ਧਾਰ ਮੀਰੀ ਹੈ ਇਕ ਪੀਰੀ ਦੀ ਹੈ। ਇਸੇ ਤੋ ਦਸਮ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਨੇ ਅਮ੍ਰਿਤ ਛਕਾਣ ਤੋਂ ਬਾਦ ਖਾਲਸੇ ਨੂੰ ਕਕਾਰ ਰੂਪ ਵਿਚ ਮੀਰੀ ਦੀ ਕ੍ਰਿਪਾਨ ਬਖੱਸ਼ੀ ਕ੍ਰਿਪਾਨ ਦੇ ਕੇ ਖਾਲਸੇ ਨੂੰ ਸੰਤ ਸਿਪਾਹੀ ਬਣਾ ਦਿੱਤਾ। ਇੱਕਲੇ ਸੰਤ ਨੂੰ ਲੁਟ ਕੇ ਲੈ ਜਾਂਦੇ ਸਨ। ਇਕਲਾ ਸਿਪਾਹੀ ਜੁਲਮੀ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਸੀ।

ਗਾਤਰਾ

ਕੁੱਤੇ ਦੇ ਗਲ ਵਿਚ ਪਟਾ ਦੇਖ ਕੇ ਪਤਾ ਲੱਗਦਾ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਦਾ ਕੋਈ ਮਾਲਕ ਹੈ। ਅਮ੍ਰਿਤਧਾਰੀ ਦੇ ਗਾਤਰੇ ਵਾਲੀ ਕ੍ਰਿਪਾਨ ਦੇ ਗਾਤਰੇ ਤੋਂ ਪਤਾ ਲੱਗਦਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਦਸਮੇਸ਼ ਪਿਤਾ ਜੀ ਦਾ ਪੁੱਤਰ ਹੈ। ਦਸਮੇਸ਼ ਪਿਤਾ ਨੇ ਪੰਜ ਸੀਸ ਮੰਗ ਕੇ ਖਾਲਸੇ ਦੇ ਅੰਦਰੋਂ ਮੌਤ ਦਾ ਡਰ ਕੱਢ ਦਿੱਤਾ। ਕਿਉਂਕਿ ਡਰ ਦੇ ਨਾਲ ਤੇ ਬੀਰ ਰਸ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਸ਼ਸਤਰ ਦਾ ਕੋਈ ਮਤਲਬ ਨਹੀਂ। ਖਾਲਸਾ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਦੀ ਫੌਜ ਹੈ। ਫੌਜ ਹਮੇਸ਼ਾ ਸ਼ਸਤਰ ਧਾਰੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਅਸ ਕ੍ਰਿਪਾਨ ਖੰਡੋ ਖੜਗ ਤੁਪਕ ਤਬਰ ਅਰੁ ਤੀਰ।
ਸੈਫ ਸਰੋਹੀ ਸੈਹਥੀ ਯਹੈ ਹਮਾਰੈ ਪੀਰ ਸ਼ਸਤਰ ਨਾਮ ਮਾਲਾ॥ ੩॥

ਕ੍ਰਿਪਾਨ ਪਹਿਨਣਾ ਔਰਤ ਅਤੇ ਸ਼ੂਦਰ ਲਈ ਇਕ ਸੁਫਨਾ ਸੀ। ਕ੍ਰਿਪਾਨ ਦੇ ਕੇ ਔਰਤ ਅਤੇ ਸ਼ੂਦਰ ਉਪਕਾਰ ਕੀਤਾ।। ਸਿੱਖ ਦਾ ਸ਼ਸਤਰ ਔਰਤ, ਬੱਚੇ, ਭੱਜੇ ਜਾਂਦੇ ਦੇ ਪਿੱਛੇ, ਸਰਣ ਵਿਚ ਆਏ ਬਿਮਾਰ ਤੇ ਵਾਰ ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ:—

ਵਾਰ ਕਦੇ ਕਰਦਾ—ਚੁ ਕਾਰ ਅਜ਼ ਹਮਹ ਹੀਲਤੇ ਦਰ ਗੁਜ਼ਸ਼ਤ।
ਹਲਾਲ ਅਸਤ ਬੁਰਦਨ ਬ ਸ਼ਸਸੀਰ ਦਸਤ।।22।।

ਇਸ ਤਰਾਂ ਦਸਮੇਸ਼ ਪਿਤਾ ਜੀ ਨੇ ਖਾਲਸੇ ਨੂੰ ਕ੍ਰਿਪਾਨ ਬਖਸ਼ ਤੇ ਸਾਨੂੰ ਦੂਜੇ ਵਿਕਾਰ ਕ੍ਰੋਧ ਤੋਂ ਬਚਾ ਲਿਆ ॥

ਵਿਕਾਰ ਲੋਭ ਕਕਾਰ ਕੜਾ

ਜੋ ਸਾਰੇ ਵਿਕਾਰਾ ਦੀ ਜੜ੍ਹ ਹੈ।

ਬਿਨਾ ਸੰਤੋਖ ਨਹੀਂ ਕੋਊ ਰਾਜੈ ॥

ਸੁਪਨ ਮਨੋਰਥ ਬ੍ਰਿਥੇ ਸਭ ਕਾਜੈ ।

ਸੁਖਮਨੀ ਸਾਹਿਬ ਅੰਗ 278

(ਜੇ ਸਬਰ, ਸੰਤੁਸ਼ਟੀ ਅਤੇ ਸੰਤੋਖ ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਲੋਭ ਜਨਮ ਲੈਂਦਾ ਹੈ।)

ਮਨੁ ਹਾਲੀ ਕਿਰਸਾਈ ਕਰਨੀ ਸਰਮੁ ਪਾਈ ਤਨੁ ਖੇਤੁ॥

ਨਾਮੁ ਬੀਜੁ ਸੰਤੋਖ ਸੁਹਾਗਾ ਰਖ ਗਰੀਬੀ ਵੇਸੁ॥ ਸੋਰਠ ਮਹਲਾ 1 ਅੰਗ 595

ਮੁੰਦਾ ਸੰਤੋਖੁ ਸਰਮੁ ਪਤੁ ਝੋਲੀ ਧਿਆਨ ਕੀ ਕਰਹਿ ਬਿਭੂਤ ਜੁਪ 28—6

ਲੋਭ ਵਿਚ ਦੂਜੇ ਦਾ ਹੱਕ ਮਾਰਦਾ ਹੈ ਬਾਈ ਦਾ ਫੁਰਮਾਨ ਹੈ।

ਹਕੁ ਪਰਾਇਆ ਨਾਨਕਾ ਉਸੁ ਸੂਅਰ ਉਸੁ ਗਾਇ॥

ਗੁਰੁ ਪੀਰੁ ਹਾਮਾ ਤਾ ਭਰੇ ਜਾ ਮੁਰਦਾਰੁ ਨਾ ਖਾਇ ਮਾਝ 1 ਅੰਗ 14 ॥

ਕਿਰਤਿ ਵਿਰਤਿ ਕਰਿ ਧਰਮ ਦੀ ਹਥਹੁ ਦੇ ਕੈ ਭਲਾ ਮਨਾਵੈ॥

ਪਾਰਸ ਪਰਸਿ ਅਪਰਸਿ ਹੋਇ ਪਰ ਤਨ ਪਰ ਧਨ ਹਥੁ ਨ ਲਾਵੈ।

ਭਾਈ ਗੁਰਦਾਸ ਜੀ ਵਾਰ 6 ਪਾਉੜੀ 12

ਘਾਲਿ ਖਾਇ ਕਿਛੁ ਹਥਹੁ ਦੇਇ ॥

ਨਾਨਕ ਰਾਹੁ ਪਛਾਣਹਿ ਸੇਇ।। ਸਾਰੰਗ ਮਹਲਾ 1 ਅੰਗ 1245

ਸੰਤਹੁ ਰਾਮ ਨਾਮਿ ਨਿਸਤਰੀਐ ਉਠਤ ਬੈਠਤ ਹਰਿ ਹਰਿ ਧਿਆਈਐ

ਅਨਦਿਨੁ ਸੁਕ੍ਰਿਤ ਕਰੀਐ ॥ ਰਹਾਉ।। ਸੋਰਠਿ ਮ:5 ਅੰਗ 621

ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕਿਰਤ ਕਰਕੇ ਉਸ ਵਿਚੋਂ ਦਸਵੰਧ ਕੱਢ ਕੇ ਆਪਣੀ ਕਿਰਤ ਨੂੰ ਸੁਕ੍ਰਿਤ ਤਕ ਪੁਹੰਚਾ ਦੇਈਏ।। ਉਸ ਸੁਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਆਪਣਾ ਜੀਵਨ ਨਿਰਬਾਹ ਕਰੀਏ।। ਜਦੋਂ ਕੁਕ੍ਰਿਤ ਵੱਲ (ਪਰਾਇਆ ਹੱਕ) ਵੱਲ ਹੱਥ ਜਾਵੇ। ਤਾਂ ਗੁਰੂ ਦਾ ਬਖਸ਼ਿਆ ਹੋਇਆ ਕੜਾ ਯਾਦ ਦਿਲਾਵੇ ਕੀ ਤੂੰ ਗੁਰੂ ਦਾ ਖਾਲਸਾ ਹੈ। ਤੂੰ ਪਰਾਇਆ ਹੱਕ ਤੇ ਪਰਾਏ ਧੰਨ ਵੱਲ ਨਹੀਂ ਜਾਣਾ। ਕੜਾ ਸਰਬਲੋਹ ਦਾ ਹੀ ਪਾਉਣਾ ਹੈ। ਇਹ ਸਾਡੇ ਅੰਦਰ ਲੋਹੇ/ਜ਼ਗਰਅ ਦੀ ਕਮੀ ਨੂੰ ਪੂਰਾ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਕੜਾ ਥੋੜਾ ਮੋਟਾ ਪਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਵੀ ਦੁਸ਼ਮਣ ਵਾਰ ਕਰਦਾ ਹੈ, ਉਹ ਸੱਜੇ ਹੱਥ ਤੇ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਜੇ ਕੜਾ ਮੋਟਾ ਹੋਵੇਗਾ ਤਾਂ ਹੱਥ ਜਖਮੀ ਹੋਣ ਤੋਂ ਬੱਚ ਜਾਵੇਗਾ।

ਚੋਥਾ ਵਿਕਾਰ ਹੈ ਮੋਹ ਤੇ ਕਕਾਰ ਹੈ ਕੇਸ

ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਨੇ ਇਸ ਸਰੀਰ ਦੀ ਪਾਈ ਅੱਗ ਹਵਾ ਪ੍ਰਥਵੀ ਅਕਾਸ ਤੋਂ ਹੱਡੀ ਨਾੜੀ ਮਾਸ ਖੂਨ ਤੇ ਵਾਲ (ਕੇਸਾ) ਨਾਲ ਰਚਨਾ ਕੀਤੀ।

ਮੋਹਨ ਸਿੰਘ ਜੀ ਲਿਖਦੇ ਹਨ ਕਿ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਦਾ ਹੱਡੀ ਨਾੜੀ ਮਾਸ ਖੂਨ ਤੇ ਕੇਸਾ ਅੰਦਰ ਬੜਾ ਗੁੱਝਾ ਭੇਦ ਹੈ। ਹੱਡੀ ਅਤੇ ਨਾੜੀ ਸਰੀਰ ਦੁਬਾਰਾ ਨਹੀਂ ਬਣਾਉਂਦਾ। ਜਦੋਂ ਕੋਈ ਹੱਡੀ ਟੁੱਟ ਜਾਏ ਉਥੇ ਨਵੀਂ ਹੱਡੀ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦੀ ਜਦੋਂ ਕਦੀ ਮਿਸਾਲ ਦੇ ਤੌਰ ਤੇ ਲੱਤ ਜਾਂ ਬਾਂਹ ਕਟਣੀ ਪੈ ਜਾਏ ਉਸ ਦੇ ਨਾਲ ਨਾੜੀਆ ਵੀ ਉਥੇ ਹੀ ਬੰਦ ਕਰ ਦਿੱਤੀਆ ਜਾਂਦੀਆ ਹਨ। ਜਿੱਥੇ ਹੱਡੀ ਕੱਟੀ ਗਈ ਹੈ। ਜੇ ਨਾੜੀਆ ਦੁਬਾਰਾ ਆ ਜਾਣ ਜਾਂ ਬੰਦ ਨਾ ਕੀਤੀਆ ਜਾਣ ਤਾਂ ਉਹ ਨਾੜੀਆਂ ਲੰਮਕਦੀਆਂ ਹੀ ਰਹਿਣ ਤੇ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਸੰਭਾਲਣਾ ਮੁਸ਼ਕਲ ਹੋ ਜਾਵੇਗਾ। ਇਸ ਕਰਕੇ ਹੱਡੀ ਅਤੇ ਨਾੜੀ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਦੇ ਹੁਕਮ ਵਿੱਚ ਦੁਬਾਰਾ ਸਰੀਰ ਨਹੀਂ ਬਣਾਉਂਦਾ। ਇਸਦਾ ਮਤਲਬ ਹੱਡੀ ਅਤੇ ਨਾੜੀ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਕਿਸੇ ਹੱਦ ਤੱਕ ਕੁੱਝ ਜਗ੍ਹਾ ਤੋਂ ਖਤਮ ਹੋਣ ਤੇ ਸਰੀਰ ਚਲਦਾ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਬਾਕੀ ਮਾਸ ਖੂਨ ਤੇ ਕੇਸ ਸਰੀਰ ਦੁਬਾਰਾ ਬਣਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਅਸੀਂ ਖੂਨ ਦਾਨ ਕਰਦੇ ਹਾਂ। ਸਰੀਰ ਦੁਬਾਰਾ ਖੂਨ ਬਣਾ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਮਾਸ (ਚਮੜੀ) ਛਿਲੀ ਜਾਵੇ ਕੱਟ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਚਮੜੀ ਵੀ ਦੁਬਾਰਾ ਬਣਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਤੇ ਕੁੱਝ ਦਿਨਾ ਵਿੱਚ ਹੀ ਨਵੀਂ ਚਮੜੀ ਕੱਟੀ ਹੋਈ ਜਗ੍ਹਾਂ ਤੇ ਆਂ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕੇਸ ਜਿਹੜੇ ਲੋਕ ਕੱਟਦੇ ਹਨ ਉਸ ਜਗ੍ਹਾਂ ਤੇ ਦੁਬਾਰਾ

ਕੇਸ ਆ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਦਾ ਮਤਲਬ ਇਹ ਹੋਇਆ ਕੀ ਹੱਡੀ ਅਤੇ ਨਾੜੀ ਤੋਂ ਬਗੈਰ ਸਰੀਰ ਕਿਸੇ ਹੱਦ ਚਲ ਸਕਦਾ ਹੈ ਪਰ ਮਾਸ ਖੂਨ ਤੇ ਵਾਲ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਚਲ ਨਹੀਂ ਸਕਦਾ ਇਸ ਕਰਕੇ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਦੇ ਹੁਕਮ ਅੰਦਰ ਮਾਸ ਖੂਨ ਤੇ ਕੇਸ ਦੁਬਾਰਾ ਬਣਦੇ ਹਨ। ਇਸੇ ਕਰਕੇ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਦਾ ਹੁਕਮ ਹੈ ਕੀ ਪੈਰ ਦੇ ਅੰਗੂਠੇ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਸਿਰ ਦੀ ਚੋਟੀ ਤੱਕ ਬਿਨਾਂ ਕਿਸੇ ਛੇੜ ਛਾੜ ਦੇ ਕੇਸ ਸੰਭਾਲ ਕੇ ਰੱਖਣੇ ਹਨ।

ਇਹ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਦਾ ਹੁਕਮ ਹੈ ਤੇ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਮੋਹਰ ਹੈ।

ਬਾਈ ਦਾ ਫੁਰਮਾਨ ਹੈ।

ਨਾਪਾਕ ਪਾਕੁ ਕਰਿ ਹਦੂਰਿ ਹਦੀਸਾ

ਸਾਬਤ ਸੂਰਤਿ ਦਸਤਾਰ ਸਿਰਾ ॥

ਮਾਰੂ ਮਹਲਾ . 5 ਅੰਗ 1083

ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਦੀ ਦਿੱਤੀ ਸੂਰਤਿ (ਸ਼ਕਲ) ਉਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸੰਭਾਲ ਕੇ ਰੱਖਣੀ ਹੈ ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਉਸ ਨੇ ਦਿੱਤੀ ਹੈ। ਉਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਉਸ ਨੂੰ ਵਾਪਸ ਕਰਨੀ ਹੈ। ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਉਸ ਨੇ ਦਿੱਤੀ ਸੀ। ਕਈ ਸਵਾਲ ਕਰਦੇ ਹਨ ਜੇ ਹੱਥਾਂ ਪੈਰ ਦੇ ਨਹੁੰ ਕੱਟਦੇ ਹੋ ਤਾ ਕੇਸ ਕੱਟਣ ਤੋਂ ਮਨਹਾਂ ਕਿਉ ਕਰਦੇ ਹੋ। ਕੋਈ ਵੀ ਇਨਸਾਨ ਨਹੁੰ ਨਹੀਂ ਕੱਟ ਸਕਦਾ। ਅਸੀਂ ਨਾਖੂਨ ਕੱਟਦੇ ਹਾਂ ਜੇ ਨੋਹ ਮਰ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਜਿਹੜਾ ਨਹੁੰ ਜੀਵਤ ਹੈ ਉਸ ਤੇ ਜੇ ਕੈਂਚੀ ਜਾਂ ਨਿਲਕਟਰ ਲੱਗ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਖੂਨ ਨਿਕਲ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਜਖਮ ਬਣ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਦਰਦ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਮਰੇ ਹੋਏ ਨੋਹ ਜੋ ਕੀ ਨਾਖੂਨ ਹੈ ਉਸ ਨੂੰ ਕੱਟਦੇ ਹਾਂ। ਜਿਹੜੇ ਕੇਸ ਮਰ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਕੰਘੇ ਨਾਲ ਬਾਹਰ ਕੱਢਦੇ ਹਾਂ। ਜਿਹੜਾ ਕੇਸ ਜੀਵਤ ਹੈ ਉਸ ਨੂੰ ਖਿਚਣ ਤੇ ਦਰਦ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਤੇ ਮਰੇ ਹੋਏ ਕੇਸਾਂ ਨੂੰ ਕੱਢਣ ਤੇ ਕੋਈ ਦਰਦ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ। ਇਸੇ ਕਰਕੇ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਦੀ ਬਖਸ਼ੀਸ ਤੇ ਗੁਰੂ ਦੀ ਮੋਹਰ ਨੂੰ ਭਾਈ ਤਾਰੂ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨੇ ਸੰਭਾਲਦੇ ਹੋਏ ਖੋਪੜੀ ਉਤਰਾਈ ਮਨਜੂਰ ਕਰ ਲਈ। ਪਰ ਕੇਸਾਂ ਨੂੰ ਹੱਥ ਨਹੀਂ ਲਾ ਦਿੱਤਾ।

ਸਿੱਖਾ ਨੇ ਜਿੰਨੀਆਂ ਵੀ ਸ਼ਹਾਦਤਾਂ ਦਿੱਤੀਆਂ ਹਨ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸਕ ਕਾਰਨ ਕੋਈ ਵੀ ਰਹੇ ਹੋਫ਼ ਪਰ ਮੂਲ ਕਾਰਨ 3 ਸਨ। ਸ਼ਬਦ ਗੁਰੂ—ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ, ਦਸਤਾਰ ਤੇ ਕੇਸ, ਇਸ ਕਰਕੇ ਮਾਇਆ ਤੇ ਪਰਾਏ ਹੱਕ ਨਾਲ ਮੋਹ ਛੱਡ ਕੇ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਦੀ ਦਾਤ ਕੇਸਾਂ ਨਾਲ ਮੋਹ ਪਾਉਣਾ ਹੈ।

<u>ਪੰਜਵਾਂ ਵਿਕਾਰ ਹੰਕਾਰ ਕਕਾਰ ਕੰਘਾ</u>

ਹਰਿ ਜੀਉ ਅਹੰਕਾਰੁ ਨ ਭਾਵਈ ਵੇਦ ਕੂਕਿ ਸੁਣਾਵਹਿ॥

ਅਹੰਕਾਰ ਮੁਏ ਸੇ ਵਿਗਤੀ ਗਏ ਮਰਿ ਜਨਮਹਿ ਫਿਰਿ ਆਵਹਿ।। ਮਾਰੂ ਮ:3/1089

ਹੰਕਾਰ ਵਿਚ ਆਪਣੇ ਤੋਂ ਛੋਟੇ ਤੇ, ਜਾਤ ਵਿਚ ਨੀਵਾ ਹੋਣ ਵਾਲੇ ਨਾਲ ਨਫ਼ਰਤ ਪੈਦਾ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਜਿਸ ਕਰਕੇ ਕਈ ਵਾਰ ਗੁਰੂ ਫਤਹਿ ਦਾ ਜਵਾਬ ਵੀ ਦੇਣਾ ਯੋਗ ਨਹੀਂ ਸਮਝਦਾ ਅਹੰਕਾਰ ਵਿਚ ਸਿਰ ਉਚਾ ਕਰਕੇ ਚਲਦਾ ਹੈ। ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਨੇ ਖਾਲਸੇ ਨੂੰ ਅਹੰਕਾਰੀ ਨਾ ਬਣਨ ਲਈ ਕਕਾਰ ਰੂਪ ਵਿਚ ਕੰਘਾ ਬਖਸ਼ ਦਿੱਤਾ ਜੋ ਕੀ ਸਦਾ ਸਿਰ ਵਿਚ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਕੰਘਾ ਲਕੜ ਦਾ ਹੀ ਕਿਉ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਕੰਘਾ ਲੱਕੜ ਦਾ ਹੀ ਹੋਣ ਤੇ ਕਾਰਣ ਹਨ। ਲੱਕੜ ਇੱਕ ਪਾਸੇ ਤੋਂ ਜਲ ਰਹੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ ਤੋਂ ਅਸੀਂ ਫੜ ਕੇ ਲੈ ਜਾਂਦੇ ਹਾਂ, ਜਾਂ ਅੱਗੇ ਕਰ ਦਿੰਦੇ ਹਾਂ। ਇਸ ਦਾ ਮਤਲਬ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਲੱਕੜ ਉੱਥੇ ਤੱਕ ਹੀ ਗਰਮ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਜਿੱਥੇ ਤੱਕ ਜਲ਼ ਰਹੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਭਾਵ ਲੱਕੜ ਜਲ਼ਦੀ ਹੋਈ ਵੀ ਗਰਮੀ ਅੱਗੇ ਨਹੀਂ ਵਧਾਉਂਦੀ, ਆਪਣੇ ਅੰਦਰ ਹੀ ਸਮਾ ਲੈਂਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਤਰਾਂ ਸੂਰਜ ਤੇ ਸ਼ਰੀਰ ਦੀ ਗਰਮੀ ਨੂੰ ਇੱਕ ਸਾਰ ਰੱਖਣ ਵਿੱਚ ਸਹਾਈ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਜਿਹੜੀ ਗਰਮੀਆਂ ਦੇ ਦਿਨਾਂ ਵਿੱਚ ਲੂ ਲੱਗਦੀ ਹੈ, ਉਸ ਤੋਂ ਵੀ ਬਚਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਕਰਕੇ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਲੱਕੜ ਦਾ ਕੰਘਾ ਦਿੱਤਾ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਨੇ ਖਾਲਸੇ ਨੂੰ ਪੰਜ ਕਕਾਰ ਦੇ ਕੇ ਪੰਜ ਵਿਕਾਰਾ ਤੋਂ ਦੂਰ ਕੀਤਾ ਸੈਦ ਬਾਈ ਅਤੇ ਗੁਰੂ ਇਤਿਹਾਸ ਤੋਂ ਦਿੱਤੀ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਖਾਲਸਾ ਸੰਸਾਰ ਦਾ ਹਰ ਰੰਗ ਮਾਣਦਾ ਹੋਇਆ ਵਿਕਾਰ ਤੋਂ ਦੂਰ ਰਹਿੰਦਾ ਜੀਵਨ ਸਫਲ ਕਰਕੇ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਨਾਨਕ ਸਤਿਗੁਰਿ ਭੇਟਿਐ ਪੂਰੀ ਹੋਵੈ ਜੁਗਤਿ ਹਸੰਦਿਆ ਖੇਲੰਦਿਆ ਪੈਨੰਦਿਆ ਖਾਵੰਦਿਆ ਵਿਚੇ ਹੋਵੈ ਮੁਕਤਿ॥2॥ ਗੂਜਰੀ ਮ:੫/522

ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਨਮ ਸਵਾਰਿ ਦਰਗਾਹ ਚਲਿਆ ॥
ਸਚੀ ਦਰਗਹ ਜਾਇ ਸਚਾ ਪਿੜ ਮਲਿਆ ਵਾਰ 19 ਪਉੜੀ 14
ਹਉਮੈ ਦੀਰਘ ਰੋਗੁ ਹੈ ਦਾਰੂ ਭੀ ਇਸੁ ਮਾਹਿ ॥ ਆਸਾ ਮ:2, ਅੰਗ 466
ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਜੇ ਆਪਣੀ ਤਾ ਗੁਰ ਕਾ ਸਬਦੁ ਕਮਾਹਿ।।

ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸੰਤੋਖ ਨੂੰ ਛੱਡ ਕੇ ਲੋਭ ਵਿਚ ਫੱਸ ਕੇ ਪੰਜਾਂ ਵਿਕਾਰਾਂ ਵਿੱਚ ਫਸ ਜਾਈਦਾ ਹੈ, ਉਸ ਨੂੰ ਛੱਡ ਕੇ ਸੰਤੋਖ ਵਿਚ ਆ ਕੇ ਪੰਜਾਂ ਵਿਕਾਰਾਂ ਤੋਂ ਬਚ ਕੇ ਹਉਮੇ ਤੋਂ ਪਿੱਛਾ ਛੁਡਵਾ ਸਕਦੇ ਹਾਂ। ਗੁਰੂ ਦਾ ਸ਼ਬਦ ਕਮਾ ਕੇ ਜੀਵਨ ਸਫਲ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਾਂ।

ਆਉ ਗੁਰਸਿੱਖੋ ਬਾਣੀ ਅਤੇ ਇਤਿਹਾਸ ਤੋਂ ਸੇਧ ਲੈ ਕੇ ਪੰਜ ਵਿਕਾਰਾਂ ਤੋਂ ਬਣੇ ਹਉਮੇ ਤੋਂ ਪਿੱਛਾ ਛੱਡਵਾ ਕੇ ਅਮ੍ਰਿਤ ਛੱਕ ਕੇ ਕਾਰ ਸਹੀ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਪਹਿਨ ਕੇ, ਆਪਣੇ ਇਸ ਜੀਵਨ ਰਾਹੀਂ ਇਹ ਲੋਕ ਸੁਖੀਏ ਪਰਲੋਕ ਸੁਹੇਲੇ ਨਾਨਕ ਹਰਿ ਪ੍ਰਭਿ ਆਪਹਿ ਮੇਲੇ।।4।। ਸੁਖਮਨੀ ਮ :5 /292 ਵਾਲੀ ਅਵਸਥਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਕੇ ਸੱਚੀ ਦਰਗਹ ਅੰਦਰ ਦਸਮੇਸ਼ ਪਿਤਾ ਦੀ ਗੋਦ ਦਾ ਅਨੰਦ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਆਵਣ ਜਾਵਣ ਜਨਮ ਮਰਨ ਦੇ ਚੱਕਰ ਤੋਂ ਮੁਕਤੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰੀਏ।

ਸਫਲ ਸਫਲ ਭਈ ਸਫਲ ਜਾਤ੍ਰਾ।।
ਆਵਣ ਜਾਣ ਰਹੇ ਮਿਲੇ ਸਾਧਾ॥
ਰਹਾਉ ਦੂਜਾ— ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ, 5—687

ਆਧੁਨਿਕ ਕਾਲ ਦੇ ਵਿੱਚ ਕਕਾਰ ਦੀ ਮਹੱਤਤਾ:—

ਆਧੁਨਿਕ ਕਾਲ ਦੇ ਵਿੱਚ ਕਕਾਰ ਦੀ ਮਹੱਤਤਾ ਵੱਧ ਗਈ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਲੋਕ ਆਪਣੀ ਵਿਰਾਸਤ ਅਤੇ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਤੋਂ ਦੂਰ ਜਾ ਰਹੇ ਹਨ। ਕੁੱਝ ਲੋਕ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਵਿੱਚ ਕਕਾਰ ਧਾਰਨ ਕਰਨ ਤੋਂ ਪਰਹੇਜ਼ ਕਰਦੇ ਹਨ ਕਿਉਂਕਿ ਕਕਾਰ ਪਹਿਣ ਕੇ ਨਾ ਕੋਈ ਗਲਤ ਕੰਮ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ ਨਾ ਹੀ ਗਲਤ ਕੰਮ ਕਰਨ ਲਈ ਸੋਚ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਕਕਾਰ ਪਹਿਨਣ ਦਾ ਮਤਲਬ ਹੈ ਕਿ ਪੰਜ ਇੰਦਰੀਆਂ ਨੂੰ ਕਾਬੂ ਵਿੱਚ ਰੱਖਣਾ। ਆਧੁਨਿਕ ਕਾਲ ਦੇ ਵਿੱਚ ਪੰਜ ਇੰਦਰੀਆਂ ਨੂੰ ਕਾਬੂ ਵਿੱਚ ਰੱਖਣਾ ਨਾ ਸਿਰਫ ਮੁਸਿਕਲ ਹੈ ਬਲਕਿ ਨਾ ਮੁਮਕਿਨ ਵੀ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਆਧੁਨਿਕ ਕਾਲ ਹੀ ਖਪਤਕਾਰ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਦੇ ਵਿੱਚ ਡੁੱਬਿਆ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਗੁਰਬਾਣੀ ਤੋਂ ਟੁੱਟ ਚੁੱਕੇ ਲੋਕ ਕਕਾਰ ਪਹਿਨਣ ਤੋਂ ਪਰਹੇਜ਼ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ ਇਸ ਲਈ ਆਧੁਨਿਕ ਕਾਲ ਦੇ ਵਿੱਚ ਕਕਾਰ ਦੀ ਮਹੱਤਤਾ ਵੱਧ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਜੇਕਰ ਸਮਾਜ ਦੇ ਲੋਕ ਪੰਜ ਇੰਦਰੀਆਂ ਨੂੰ ਕਾਬੂ ਵਿੱਚ ਰੱਖਣ ਲਈ ਕਕਾਰ ਦੀ ਮੱਦਦ ਲੈਣਗੇ ਤਾਂ ਨਾ ਸਿਰਫ ਅਪਣੀ ਪੰਜ ਇੰਦਰੀਆਂ ਨੂੰ ਕਾਬੂ ਵਿੱਚ ਰੱਖਣ ਦੇ ਵਿੱਚ ਸਫਲ ਹੋਣਗੇ ਬਲਕਿ ਸਮਾਜ ਦੇ ਵਿੱਚ ਇਨਸਾਨੀਅਤ, ਸੇਵਾ ਅਤੇ ਇਮਾਨਦਾਰੀ ਨੂੰ ਮਜਬੂਤ ਕਰਨਗੇ। ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨੇ ਕਕਾਰ ਦੇ ਸਿੰਧਾਂਤ ਨੂੰ ਸਾਰੇ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਵਿੱਚ ਮਜਬੂਤ ਕਰਨ ਲਈ ਅਜਿਹੇ ਪੰਜ ਪਿਆਰਿਆਂ ਨੂੰ ਚੁਣਿਆ ਜ਼ੋ ਦੇਸ਼ ਦੀਆਂ ਵੱਖ ਵੱਖ ਥਾਵਾਂ ਤੋ ਆਏ ਸਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਹੀ ਨਹੀਂ ਪੰਜ ਪਿਆਰਿਆਂ ਨੂੰ ਕਕਾਰ ਪਹਿਨਣ ਲਈ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਦੇਣ ਵਾਲੇ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨੇ ਉਸ ਵੱਕਤ ਪੰਜ ਪਿਆਰਿਆਂ ਨੂੰ ਵੱਖ ਵੱਖ ਜਾਤੀ ਅਤੇ ਧਰਮ ਤੋਂ ਚੁਣੇ ਸਨ ਤਾਂਕਿ ਖਾਲਸਾ ਪੰਥ ਸਾਰਿਆ ਲਈ ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਕਕਾਰ ਸਾਰਿਆਂ ਲਈ ਬਖਸ਼ੀਸ਼ ਬਣ ਜਾਵੇ।

ਕਕਾਰ ਲਈ ਆਧੁਨਿਕ ਕਾਲ ਦੇ ਵਿੱਚ ਚੁਣੋਤੀਆਂ :—

ਆਧੁਨਿਕ ਕਾਲ ਦੇ ਵਿੱਚ ਕਕਾਰ ਦੇ ਸਿਧਾਂਤ ਨੂੰ ਕਈ ਚੁਣੋਤੀਆਂ ਦਾ ਸਾਹਮਣਾ ਕਰਨਾ ਪੈ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਪਹਿਲੇ ਤਾਂ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਵਿੱਚ ਹੀ ਕੁਝ ਲੋਕ ਆਪਣੇ ਹਿੱਤ ਲਈ ਕਕਾਰ ਦੀ ਕੁਵਰਤੋਂ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ। ਕੁਝ ਲੋਕ ਨਿਹੰਗ ਸਿੱਖਾਂ ਦਾ ਬਾਨਾ ਪਹਿਣ ਕੇ ਆਮ ਲੋਕਾਂ ਤੇ ਹਮਲਾ ਵੀ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ। ਕਕਾਰ ਪਹਿਣ ਕੇ ਨਿਹੰਗ ਸਿੱਖ ਦੇ ਬਾਨੇ ਦੇ ਵਿੱਚ ਰਹਿ ਕੇ ਅਜਿਹੇ ਗੈਰ ਕਾਨੂੰਨੀ ਕੰਮ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਕੁਝ ਲੋਕ ਨਾ ਸਿਰਫ ਨਿਹੰਗ ਸਿੱਖਾਂ ਦੀ ਗੋਰਵ ਅਤੇ ਸਨਮਾਨ ਨੂੰ ਚੋਟ ਪਹੁੰਚਾ ਰਹੇ ਹਨ ਬਲਕਿ ਕਕਾਰ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਨੂੰ ਵੀ ਕਮਜੋਰ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ।

ਦੁਨਿਆਂ ਦੇ ਵੱਖ ਵੱਖ ਥਾਵਾਂ ਤੇ ਕ੍ਰਿਪਾਨ ਪਹਿਣ ਕੇ ਘੁਮਨੇ ਵਾਲੇ ਸਿੱਖਾਂ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿੱਚ ਗਲਤ ਸੋਚਣ ਵਾਲੇ ਲੋਕ ਕ੍ਰਿਪਾਨ ਦਾ ਅਰਥ ਹੀ ਨਹੀਂ ਸਮਝੇ ਹੋਏ ਹਨ। ਅਸਲ ਵਿੱਚ ਕ੍ਰਿਪਾਨ ਭਾਈਚਾਰਾ ਅਤੇ ਸ਼ਾਤੀ ਦਾ ਸੰਕੇਤ ਹੈ ਜ਼ੋ ਜੁਰਮ ਦੇ ਖਿਲਾਫ ਲੜਣ ਦਾ ਸੰਕੇਤ ਹੈ ਪਰ ਕਕਾਰ ਬਾਰੇ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਡੂੰਘੇ ਅਰਥ ਨੂੰ ਲੋਕ ਸਮਝੇ ਹੀ ਨਹੀਂ ਹਨ। ਇਸ ਲਈ ਦੱਖਣੀ ਭਾਰਤ ਦੇ ਵਿੱਚ ਕਈ ਸਿੱਖ ਜ਼ੋ ਕਕਾਰ ਪਹਿਣ ਕੇ ਘੁੰਮਦੇ ਸਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਤੇ ਹਮਲੇ ਵੀ ਹੋਏ ਹਨ। ਦੱਖਣੀ ਭਾਰਤ ਦੇ ਵਿੱਚ ਤਾਂ ਕੁੱਝ ਲੋਕ ਕ੍ਰਿਪਾਨ ਨੂੰ ਚਾਕੂ ਸਮਝ ਕੇ ਸਿੱਖਾਂ ਨੂੰ ਹਮਲਾਵਾਰ ਸਮਝ ਬੈਠੇ ਹਨ।

ਕ੍ਰਿਪਾਨ ਪਹਿਣ ਕੇ ਵਿਦੇਸ਼ ਯਾਤਰਾ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਸਿੱਖਾਂ ਨੂੰ ਏਅਰਪੋਰਟ ਦੇ ਵਿੱਚ ਕਈ ਮੁਸ਼ਕਿਲਾਂ ਦਾ ਸਾਹਮਣਾ ਵੀ ਕਰਨਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਕੁੱਝ ਦੇਸ਼ ਤਾਂ ਕ੍ਰਿਪਾਨ ਪਹਿਣ ਕੇ ਵਿਮਾਨ ਵਿੱਚ ਯਾਤਰਾ ਕਰਨਾ ਵੀ ਬੈਨ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਹੈ। ਦੁਨਿਆਂ ਭਰ ਦੇ ਵਿੱਚ ਕਕਾਰ ਬਾਰੇ ਜਾਣਕਾਰੀ ਨਾ ਹੋਣ ਕਾਰਨ ਕੇਸ਼ ਰੱਖ ਕੇ, ਕ੍ਰਿਪਾਨ ਪਹਿਣ ਕੇ ਘੁੰਮਣ ਵਾਲੇ ਕਈ ਸਿੱਖਾਂ ਨੂੰ ਕਈ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਮੁਸ਼ਕਿਲਾਂ ਦਾ ਸਾਹਮਣਾ ਕਰਨਾ ਪੈ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਸਮਾਜ ਦੇ ਵਿੱਚ ਕਕਾਰ ਬਾਰੇ ਜਾਣਕਾਰੀ ਵੱਧ ਤੋਂ ਵੱਧ ਪਹੁੰਚਾਉਣ ਦੀ ਸਖਤ ਲੋੜ ਹੈ ਤਾਂਕਿ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਵੱਲੋਂ ਦਿੱਤੀ ਗਈ ਕਕਾਰ ਦੀ ਬਖਸ਼ੀਸ਼ ਪੂਰੀ ਦੁਨਿਆਂ ਪਹਿਚਾਣ ਸਕੇ।

ਸਿੱਟਾ:—

ਇਸ ਖੋਜ਼ ਪੱਤਰ ਦੇ ਵਿੱਚ ਇਹ ਖੋਜਣ ਲਈ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ ਗਈ ਕਿ ਕਿਵੇਂ ਕਕਾਰ ਇਨਸਾਨ ਨੂੰ ਚੰਗੇ ਇਨਸਾਨ ਬਣਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਖੋਜ਼ ਪੱਤਰ ਦੇ ਵਿੱਚ ਇਹ ਖੋਜ਼ਣ ਦੀ ਵੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ ਗਈ ਕਿ ਕਿਵੇਂ ਆਧੁਨਿਕ ਕਾਲ ਦੇ ਵਿੱਚ ਕਕਾਰ ਦੀ ਬੇਇੱਜਤੀ ਅਤੇ ਬੇਅਦਬੀ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ। ਆਧੁਨਿਕ ਕਾਲ ਦੇ ਵਿੱਚ ਕਕਾਰ ਦੀ ਮਹੱਤਤਾ ਬਾਰੇ ਇਸ ਖੋਜ਼ ਪੱਤਰ ਦੇ ਵਿੱਚ ਖੋਜਿਆ ਗਿਆ। ਵੱਖ ਵੱਖ ਗੁਰਬਾਣੀਆਂ ਦਾ ਸਹਾਰਾ ਲੈ ਕੇ ਕਕਾਰ ਦੇ ਸਿਧਾਂਤ ਨੂੰ ਵਿਗਿਆਨਿਕ ਰੂਪ ਦੇ ਵਿੱਚ ਕਿਵੇਂ ਪ੍ਰਭਾਵਸ਼ਾਲੀ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ ਇਸ ਖੋਜ਼ ਪੱਤਰ ਵਿੱਚ ਖੋਜ਼ਿਆ ਗਿਆ।

ਬਿਬਲੀਓਗ੍ਰਾਫੀ

1. ਸਿੰਘ ਮਨਜੀਤ : ਸਾਸਤਰਾਨਾਮਾ: 2005, ਸਿੰਘ ਬ੍ਰਦਰਸ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ, ਸ੍ਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਸਾਹਿਬ।
2. ਸਿੱਧੂ ਜੀ.ਐਸ. : ਕੰਨਸੈਪਟਸ ਆੱਫ ਸਿੱਖ ਰੀਲੀਜਿਅਨ 2007 ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਚੈਰੀਟੈਬਲ ਟ੍ਰਸਟ ਪਬਲੀਸ਼ਰ, ਲੁਧਿਆਣਾ, ਪੰਜਾਬ।
3. ਮੁੱਕਤਸਰੀ ਜਗਜੀਤ : ਕਲਯੁਗ ਦੇ ਅਵਤਾਰ 2014, ਵਾਰਿਸ਼ ਸ਼ਾਹ ਫਾਊਡੇਸ਼ਨ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ, ਸ੍ਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਸਾਹਿਬ।
4. ਅਲਾਘ ਸਵਰੂਪ ਸਿੰਘ : ਹਰਮਿੰਦਰ ਦੀ ਦਰਸ਼ਾਨ 2018, ਅਲਾਘ ਸ਼ਬਦ ਚੈਰੀਟੈਬਲ ਟ੍ਰਸਟ ਪਬਲਿਸ਼ਰਸ, ਲੁਧਿਆਣਾ, ਪੰਜਾਬ।
5. ਅਲਾਘ ਸਵਰੂਪ ਸਿੰਘ: ਕੇਸ਼ ਪ੍ਰਸੰਗ 2018 : ਸਵਰੂਪ ਸਿੰਘ ਅਲਾਘ ਪਬਲਿਕੇਸ਼ਨ, ਲੁਧਿਆਣਾ, ਪੰਜਾਬ।

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

Gig Economy : Emerging field to make Social Solidarity more effective

Dr Punditrao C Dharenavar
Associate Professor
Post Graduate Government College
Sector-46, Chandigarh
Pin- 160036..Mobile- 9988351695
raju_herro@yahoo.com

Key words- Gig economy, social solidarity, internet, labor market, short term, temporary, freelance work, digital platform, Rapido, Ola, Part time, Emile Durkheim, Mechanic and organic solidarity.

Abstract

The modern consumer couture has been witnessing different types of changes. The changes in economic activities are helping to strengthen social solidarity. Gig economy is one of those modern changes which is strengthening the process of social solidarity. The activities such as short term work, temporary work, freelance work, facilitated by digital platforms have been in great demand. It is very interesting to study how this gig economy activities are making social solidity more strong in modern consumer culture.

Social solidarity refers to the unity, cohesion, and connectedness that individuals feel within a society or group. It's the feeling of belonging and shared purpose that binds people together, leading them to cooperate and support one another. This concept is crucial for maintaining social order and stability.

The gig workers have been cooperative and supportive in their work and behavior, therefore gig economy is bringing new kind of social solidarity. This kind of social solidarity is somewhat different from Mechanic and organic solidarity of Emile Durkheim.

The gig workers have been working without any social security and there has been no effort to collect data of gig workers. Although, Karnataka Government has shown interest to frame policy or constitute board for developing the condition of the gig workers, There is urgent need to make efforts to constitute board or frame policy in national level so that the proper care and training may be given to gig workers.

Gig economy : emerging field

The other name of gig economy is creativity, in other words independent way of working with the help of technology. The emerging filed, gig economy is a labor market characterized by

short-term, temporary, or freelance work, often facilitated by digital platforms. Individuals in the gig economy, known as gig workers, are typically independent contractors or freelancers who engage in work arrangements that are not traditional full-time employment. These arrangements can involve a variety of tasks, from ride-sharing and food delivery to freelance writing and app development.

The young generation called Gen X do believe in creativity because of which they start working in such fields which are not covered by the government. The food delivery in modern time is need of the hour. The private sector has been active to provide service, therefore private food providers appoint boys to deliver food with their own vehicle. The young boys and girls, with the help of their vehicle try to deliver the food. It is here, the food service is completed with the help of boys who are engaged win gig works.

The very interesting trend has been in the use in cities called ride sharing. The concept of ride sharing not only saves money and but also fuel or gas for vehicle. It has been called as national saving. In modern cities the ride sharing has been successfully running. Most of the user of ride sharing belong to multinational companies. The single passenger riders on bike or cares also are in use in large number. In modern cities people have started using ride on bikes because it is time saving and also money saving. The bike riders have been earning good amount. Rapido provides a platform for bike riders, known as "Captains," to offer transportation services to users who book rides through the Rapido app. These riders use their own motorcycles, scooters, or e-bikes to transport passengers, and they earn income based on the rides they complete. To become a Rapido Captain, riders need to register on the Rapido Captain app, submit necessary documents, and have a valid driving license and vehicle There are other service providers such Ober, Ola etc

The freelance writers have been in great demand in modern world because the gate of knowledge is wide open in modern time. The freelance writers have been earning good amount after using their knowledge. It is also easy work to do because there is no need to go to office because all work is done through work from home. The division of labor concept is used by the private sections by dividing work among regular employees and freelance workers, hence the speed of the office work, efficacy of the work and accuracy is properly maintained. A freelance writer is a self-employed individual who provides writing services to various clients on a project or contract basis, rather than being employed full-time by a single company. They are essentially independent contractors who offer their writing skills to businesses or individuals who need content creation

The filed of App development is another gig activities which is in high demand because of technological development. An app developer is a professional who designs, develops, and maintains applications (apps) for various platforms like mobile devices, web browsers, or specific operating systems. They are responsible for the entire lifecycle of an app, from initial concept to final release and ongoing updates. The technologically sound [person has been earning money with making new Apps. It is here the creativity comes into effect.

Negative impacts of Gig economy

Although there are several positive impacts of gig economy but there are negative impacts also. The gig economy, while offering flexibility, presents several negative impacts for workers, including income instability, lack of benefits and job security, and potential for exploitation. Gig workers often face irregular earnings, no access to health insurance or retirement plans, and exploitative

practices like low pay and unpaid work, according to the India Employer Forum. Furthermore, the flexibility can blur the lines between work and personal life, leading to stress and burnout, and limited professional networking opportunities

Income instability is the major problem of gig workers because the continuous work is available in the market. The income varies from day to day. For example, on Sunday all the officers are closed due to which food providers and bike riders do not earn any money. Some time offices are closed continually for few days or some time for months, therefore gig works become unemployed within the larger concept of unemployment. The freelance work is not always available for the freelance workers, therefore freelance work live in uncertainty. Even App developers also go through the same position because App development work is very few in market, therefore, App developers keep looking for App development work. It is because of this income instability, youth loose their temper and indulge in anti social activities.

It is because of this, there is urgent need to frame policy or constitute welfare board for gig workers. On May 27, 2025, the Government of Karnataka promulgated the Karnataka Platform-Based Gig Workers (Social Security and Welfare) Ordinance, 2025 ("Ordinance"), establishing a legal framework to provide social security and welfare benefits to platform-based gig workers. But, the effort must be made to frame policy or constitute board for the development of gig workers.

Number of Gig worker in India- As per an estimation by NITI Aayog vide its report titled "India`s Booming Gig and Platform Economy" published in June 2022, the number of gig workers and platform workers in the country was 7.7 million in 2020-21, including women, which is expected to rise to 23.5 million by 2029-30.

For the first time, the definition of 'gig workers' and 'platform workers' and provisions related to the same have been provided in the Code on Social Security, 2020 which has been enacted by the Parliament.

The Code on Social Security, 2020 provides for framing of suitable social security measures for gig workers and platform workers on matters relating to life and disability cover, accident insurance, health and maternity benefits, old age protection, etc.

This information was given by Union Minister of State for Labour & Employment, Sushri Shobha Karandlaje in Rajya Sabha.

Gig Economy can make social solidarity more effective

There is every chance that gig economy can bring effective social solidarity in modern society. The amount of faith gig workers are crating by their clean behavior in delivering food service is developing mutual trust and cooperation. The people eat the food served by the providers and supplied by the gig workers. The people do not even doubt about the quality. People even not worried about any adulteration in the food supplied by the gig workers., This is the developed which is making strong social solidarity among people and gig workers.

People believe bike rider so much that they travel even without asking the rider his riding experience. People do not doubt is talent to ride bike. It is pure trust between bike rider and people which is making most successful bike riding, hence gig economy. In other words, this trend is strengthening the social solidarity in the society. Even after the bike ride, there is feed back system

is makes rider to be careful while making ride.

Although there incidents happened in which the fight between people and gig workers have been reported but there have news paper reports in which gig workers develop love affair with customers. This kind of new development in the society giving chance to make social solidarity more effective.

The Gig Economy presents a complex situation regarding social solidarity. While it can facilitate the breakdown of traditional worker-employer relationships and potentially lead to new forms of solidarity through online communities and collective action, it also introduces challenges like income instability and lack of traditional social protections, which can hinder solidarity

The gig economy's impact on social solidarity is multifaceted. While it offers opportunities for new forms of solidarity through online communities and collective action, it also presents challenges related to income instability, lack of traditional protections, and potential fragmentation. Addressing these challenges through policy changes and innovative social protection mechanisms is crucial to harness the potential of the gig economy while ensuring a more equitable and supportive environment for gig workers.

Conclusion- In this research paper, an attempt has been made to prove how social solidarity is becoming more effective in the world of gig economy. The gig workers have been trying work in honest way and develop mutual trust and cooperation because of which new kind of social solidarity is emerging in modern consumer culture. The gig economy has future and it is here to stay in the society, therefore social relation and mutual trust are going to be permanent trend between people and gig workers. In order to make Gig workers more relevant and beneficial for the society there is urgent need to frame policy of constitute board for the development of gig workers.

An attempt has been made to prove how effective role can be played by gig workers in bring social solidarity. The food they supply is not questioned by consumed by costumers. The bike riders have earned so much trust from the people that they even do not doubt the bike riders capacity to ride bike properly. It is here the social solidarity reflects due to gig workers efforts and hard work.

The research work could find that social solidarity can be different from Mechanical and organic solidarity of Emile Durkheim. The modern consumer culture can change the very concept of social solidarity of Emile Durkheim. The different kind of social interaction and different type of technological developers can bring new kind of social solidarity in the society.

Bibliography

1) Jamie, Kimberly; Musilek, Karel (2025). "Gig Economy" The Blackwell Encyclopedia of Sociology: 1–4.
2) Stanton, Christopher T., and Catherine Thomas. 2025. "Who Benefits from Online Gig Economy Platforms? " *American Economic Review* 115 (6): 1857–95.
3) Report on Gig workers by Ministry. Information given by Union Minister of State for Labour & Employment, Sushri Shobha Karandlaje in Rajya Sabha.
4) Report from Govt of Karnataka: Gig Workers (Social Security and Welfare) Ordinance, 2025 ("Ordinance")
5) *Kessler, Sarah (2019). Gigged: Gigged The Gig Economy, the End of the Job and the Future of Work. New York: Random House. ISBN 9781847941749*

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

परंपरा' आधुनिकता एवं उत्तर आधुनिकता एक विश्लेषण

निर्देशक
प्रो. रेखा चौधरी
(हिंदी विभाग) ए के पी (पीजी) खुर्जा बुलंदशहर

शोधार्थी
योगेश सिंह
(हिंदी विभाग) ए के पी (पी जी) खुर्जा बुलंदशहर
सम्पर्क सूत्र - 9548216846

आदिकाल से ही परंपरा भारतीय समाज में सांस्कृतिक निरंतर एकता का प्रतीक रही है भारत गांव का देश कहा जाता है कृषि और ऋषि परंपरा यहां की मुख्य पहचान रही है मनुष्य जो कुछ भी अपने बड़े बुजुर्गों से सीखते है वही विरासत में आगे भी पीढ़ी दर पीढ़ी प्राप्त होती रहती है उसे दो श्रेणियां में बांटा जा सकता है।

1. जैविकीय विरासत
2. सामाजिक सांस्कृतिक विरासत

जैविकीय विरासत में व्यक्ति को अपने माता-पिता से शारीरिक लक्षण प्राप्त होते हैं तथा सामाजिक संस्कृति विरासत में व्यक्ति को भौतिक वस्तुएं प्राप्त होती हैं जैसे उनके पूर्वज के मकान 'जमीन जेवर' मशीन उपकरण आदि और भौतिक रूप में जो प्राप्त होते हैं जैसे धर्म' प्रथाएं' रीति रिवाज 'विश्वास आदि संस्कृत में परंपरा शब्द का अर्थ है -ऐतिह अर्थात विरासत में मिलना भारतीय परंपरा को जोड़ने मे वेद' पुराण और शास्त्रों की भू बहुत अधिक महत्वपूर्ण भूमिका रही है हम आज भी उनके प्रभाव और आकर्षक से मुक्त नहीं हो पाए हैं और जितने भी धार्मिक ग्रंथ हैं। उन्हें भारतीय सभ्यता का अंग माना जाता है परंपराएं जब तेजी से बिछड़ने लगते हैं तब समाज में जातियों का ह्रास होने लगता है और धीरे-धीरे स्थितियां बिगड़ती ही जाती हैं और सामाजिक संरचना कमजोर पड़ने लगती है। परंपरा और संस्कृति का प्रयोग पर्याय एक ही संदर्भ में बहुत से लोग करते हैं। संस्कृत अधिक व्यापक अवधारणा है परंपराएं पिछली संस्कृति को दोहराते हुए चलने वाली हैं परंपरा शब्द का प्रयोग भी बहुत बहम उत्पन्न करने वाला है यदि देखा जाए तो कबीलों में भी स्थान 'गोत्र और वंश के आधार पर परंपराओं में अंतर पाया जाता है परंपराएं स्वयं ही समय-समय पर अपना मूल्यांकन कर अपनी दिशा बदलती हैं भारतीय समाज के विकास की प्रक्रिया कभी रुकी नहीं और प्रत्येक चरण में चुनौतियों के प्रति उसकी प्रतिक्रिया हमेशा रचनात्मक रही है समय-समय पर विरोध और विद्रोह की परंपराएं भी विकसित होती रही हैं ऐतिहासिक दृष्टि से बदलाव के साथ-साथ सांस्कृतिक चेतना स्वरूप भी बदलने लगा छोटी-छोटी संस्कृतिक इकाई बदलते संदर्भो की नई जागृति का संदेश देने लगी विविध साहित्यिक धाराओं में परंपरा विद्यमान रहती है तथा एक इकाई की तरह प्रवाहमान रहती है। संस्कृत' प्राकृत' अपभ्रंश' हिंदी 'तमिल' तेलुगु तथा मराठी साहित्य में अनेक साहित्यिक आंदोलन एवं परिवर्तन हुए हैं ऋषि 'कवि तथा चिंतक इसे जैसे जब और जैसे चाहे अपनी समस्याओं का निदान तथा समाधान के लिए परंपरा का प्रयुक्त कर सकते हैं भारतीय साहित्य की प्रगतिशील चेतना में इसी की प्रतिक्रिया है।

आधुनिकता - आधुनिकता अंग्रेजी के मॉडर्निटी का समानधमी हिंदी शब्द है। आधुनिकता वह प्रक्रिया है जो नवीनता और नया करने का संदेश देती है। आधुनिकता मनुष्य के भौतिक जीवन से संबंधित नहीं होती बल्कि हमारे बौद्धिक स्तर

को भी प्रभावित करती है। आधुनिकता मानव संघर्ष को अंकित करती है। आधुनिकता केवल शहर गांव एवं कस्बे मे ही नहीं बॅटी हुई बल्कि आधुनिकता का स्तर भौगोलिक परिधि को तोड़कर पूरे समाज पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। कई बार लोग आधुनिकता का अर्थ नई पीढ़ी के सोचने विचारने से लगा लेते हैं लेकिन आधुनिकता को बहन करने वाले लोग नई पीढ़ी के लोग ही नहीं है बल्कि कोई भी अपने जीवन में आधुनिकता को अपनाकर नई दिशा में सोच सकता है। हर युग हर आदमी अपने आप में आधुनिक होता है- डॉ.अनीता रावत के शब्दों में "आधुनिकता की प्रकृति में यह स्वयं सिद्ध स्थितियां हैं जो मानव जाति को एक वैश्विक एवं सार्वभौमिक स्तर पर उन अंतहीन अंत तक ला पटकती है जो लगातार पेचीदा व रोमांचक हैं"[1]

आधुनिकता को हम अपने-अपने ढंग से परिभाषित करते हैं आधुनिकता एक ऐसी प्रक्रिया या धारणा है। जो समग्र को एक साथ लेकर मानव के जीवन मूल्यों से जुड़ा रहकर उसे प्रभावित करती है। आधुनिकता का संबंध समाज के आधुनिकरण से होता है तथा समाज को विकास दिशा की ओर उन्मुलक्त करना होता है पर यह राष्ट्रीय और मानवीय प्रश्न भी है कि हम आधुनिकता की समस्या को संस्कृत की क्षति से जोड़ते हैं। तो दूसरी ओर आधुनिकरण से इसलिए आधुनिकता एक व्यवस्था विचार विधि एवं वृत्ति मूल्य चक्र में अभिहित होती है। आज जीवन के विविध क्षेत्रों में आधुनिकता एक बहुचर्चित विषय है। इस बहुचर्चित विषय आधुनिकता के संबंध में सबसे पहले हमे यह जानना आवश्यक है कि आधुनिकता क्या है उसके मूलभूत मूल तत्व क्या है उसके लक्षण क्या है। आधुनिकता काल सापेक्ष है अथवा विचार सापेक्ष यह स्थित्यात्मक है या गत्यात्मक? जिसे हम आधुनिकता कहते हैं वह एक प्रक्रिया का नाम है यह प्रक्रिया अंधविश्वास से बाहर निकालने की प्रक्रिया है यह प्रक्रिया नैतिकता में उदारता बरतने की प्रक्रिया है यह प्रक्रिया धर्म के सही रूप पर पहुंचने की प्रक्रिया है। आधुनिक वह है। जो मनुष्य को उसकी ऊंचाई, जाति या गोत्र से नहीं बल्कि उसके कर्म से नापती है।[2] आधुनिक वह है जो मनुष्य को समान समझना है आधुनिकता का संबंध मानव की नई चेतना से है जो आधुनिक स्थिति में विकसित होती है। आधुनिकता एक ऐसी विचारधारा है जिसकी निश्चित परिभाषा नहीं की जा सकती लेकिन इतना अवश्य कहा जा सकता है कि "सिद्धांत और व्यवहार में मैत्री होना आधुनिकता की नींव है"[3] निष्कर्ष यह है कि हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में सन 1900 के बाद) मात्रा और विविधता की दृष्टि से जितना साहित्य प्रकाश में आया उतना इससे पूर्व काल में नहीं इसमें देश -प्रेम सामाजिक चेतना 'मानवता यथार्थवादी चित्रण 'बौद्धिकता 'वादो का प्राचुर्य 'शैली की नवीनता आदि विशेषताएं दृष्टिगोचर होती हैं। आधुनिकता सामाजिक संबंधों तथा सामाजिक परिवर्तन की विचार विधि है। "आधुनिकता मानसिक प्रत्ययों तथा सामाजिक दृश्य को समझने तथा विश्लेषित करने की विधि है ताकि विशेष देश काल के संदर्भ में मनुष्य सचेतन और स्वतंत्र होकर परिवर्तन भी कर सके"[4]

उत्तर आधुनिकता- उत्तर आधुनिकता पूर्ण रूप से एक स्वतंत्र विधा है। उत्तर आधुनिकता की अवधारणा को हम दूसरे शब्दों में उत्तर उपयोगवाद की संज्ञा दे सकते हैं। इसका प्रभाव तथा शक्ति आदि संसार के अनेक देशों में देखा जा सकता है। उत्तर आधुनिकता ने आधुनिकरण के मानकों को नकारा है और अनेक क्षेत्रों में फैले आधुनिकता के विचारों को अस्वीकार किया है। यहां तक की आधुनिकीकरण के सैद्धांतिक आधारों को उत्तर आधुनिकता ने अस्वीकार किया है। उत्तर आधुनिकता अधिक से अधिक बल' बाजार और साधन पर देता है उत्तर आधुनिकता का तात्पर्य आधुनिकता के बाद का विकास यह अवधारणा बहुत तेजी से आधुनिकता का स्थान ले रही है। साहित्य में कई प्रयोग आए उच्च स्तर की प्रौद्योगिकी आयी मैक्स बेवर 'दुर्खीम 'परेटो 'मार्क्स और ऐसे कितने ही संस्थापक विचार आये। इनकी सोच ने जमाने की दिशा को बदल दिया उत्तर आधुनिकता ने संपूर्ण 20वीं शताब्दी के सामने एक ज्वलंत प्रश्न खड़े कर दिए कॉरपोरेट पूंजीवाद को मुश्किल में कर दिया है। अब एक नई संस्कृति का उदय हो रहा है जिसकी लोकप्रियता बढ़ रही है। यह लोकप्रिय संस्कृति संचार की संस्कृति है यह संस्कृति 'सामाजिक 'आर्थिक और राजनीतिक प्रक्रियाओं से जुड़ी हुई है। इसकी अभिव्यक्ति जीवन की विभिन्न शैलियों से जैसे कला ' साहित्य' दर्शन आदि मे देखने को मिलती है उत्तर आधुनिकता की सबसे बड़ी विशेषताएं है कि वह युवाओं को अधिक प्रभावित करती है। यह युवाओ को अपने आपको आधुनिकता के बंधन से मुक्त करने लगी इसके परिणाम स्वरुप

एक नई संस्कृति का उदय हो रहा है वह एक वर्ग इस बात पर जोर देता है उत्तर आधुनिकता की संक्षेप में निम्नलिखित विशेषताएं बताई जा सकती हैं

1. ज्ञान बेचने के लिए और सूचना विनिमय के लिए है।

2. सूचना उत्तर आधुनिकता के युग में सब कुछ है और इसके लिए अनेक समाज में दंन्द पाया जाता है सूचना पूंजी की तरह समझ में गतिमान होती है।

उत्तर आधुनिकता की चर्चा वैसे तो सन 1970 से 75 के आसपास होने लगी थी किंतु हमारे यहां किसी भी विचार को पहुंचने में समय लगता है। कहा जाता है कि जब पश्चिम में उत्तर आधुनिकता का मर-खप गई तब हमारे यहां उसकी चर्चा होने लगी वैसे उत्तर आधुनिकता एक आधुनिकता के बीच कोई बड़ी विभाजन रेखा नहीं है। सिवाय इसके कि कुछ चिंतकों ने कुछ बातें कहीं वे विज्ञान विरोधी हो गए अजीब सी बातें करने लगेद्य आधुनिकता ने हमें उपयोग की संस्कृति दी संग्रह को केंद्र में लिया उत्तर आधुनिकता ने हमें केंद्र से हटाया" उत्तर आधुनिकता ने 70 के दशक में साहित्यिक परिदृश्य में प्रवेश किया है भारतीय परिपेक्ष्य में उत्तर आधुनिकता मीडिया संचालित तथा बाजार निर्देशित तत्वों की प्रतिक्रियास्वरूप अस्तित्व में आयी उत्तर एवं आधुनिक अर्थात जब आधुनिकता से पूर्व उत्तर उपसर्ग लगाया जाता है तो हम सोचने पर विवश हो जाते हैं। कि जैसे यूरोपीय इतिहास का प्राचीन एवं मध्यकाल समाप्त हो गया इस तरह हम एक नए युग अर्थात उत्तर आधुनिक युग में पहुंच गए हैं। आज हमारे चारों तरफ जिन अराजक स्थितियों ने उत्पात मचाया है। उससे अनिश्चितता बर्बरता को बढ़ावा मिला है परंतु जहां विध्वंस दिख रहा है वहीं कुछ लाभ भी हो रहा है। जिसको अनदेखी नहीं किया जा सकता और जीवन तथा जगत मे कोई भी कार्य कीमत के बगैर पूरा नहीं होता है। जहां अनेक समस्याओं का जन्म हुआ है वहीं पश्चिम के एकाधिकार को भी चुनौती मिल रही है साथ ही वर्गवादी और सामान्तशाही व्यवस्था को भी खारिज कर दिया गया है। जिससे हर वर्ग का व्यक्ति वैश्विक मानव के रूप में अपनी स्वतंत्र अस्मिता को स्थापित करने का प्रयास कर रहा है।

आधुनिकता एवं उत्तर आधुनिकता एक विश्लेषण- आदिकाल से ही परंपरा भारतीय समाज में सांस्कृतिक निरंतर एकता का प्रतीक रही है भारत गांव का देश कहा जाता है कृषि और ऋषि परंपरा यहां की मुख्य पहचान रही है। मनुष्य जो कुछ भी अपने बड़े बुजुर्गों से सीकते है वही विरासत में आगे भी पीढ़ी दर पीढ़ी प्राप्त होती रहती है उसे दो श्रेणियां में बांटा जा सकता है 1. जैविकीय विरासत 2. सामाजिक सांस्कृतिक विरासत'. जैविकीय विरासत में व्यक्ति को अपने माता-पिता से शारीरिक लक्षण प्राप्त होते हैं तथा सामाजिक संस्कृति विरासत में व्यक्ति को भौतिक वस्तुएं प्राप्त होती हैं। जैसे उनके पूर्वज के मकान 'जमीन जेवर' मशीन उपकरण आदि और भौतिक रूप में जो प्राप्त होते हैं जैसे धर्म' प्रथाएं' रीति रिवाज 'विश्वास आदि संस्कृत में परंपरा शब्द का अर्थ है -ऐतिह अर्थात विरासत में मिलना भारतीय परंपरा को जोड़ने मे वेद' पुराण और शास्त्रों की भू बहुत अधिक महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हम आज भी उनके प्रभाव और आकर्षक से मुक्त नहीं हो पाए हैं और जितने भी धार्मिक ग्रंथ हैं उन्हें भारतीय सभ्यता का अंग माना जाता है परंपराएं जब तेजी से बिछड़ने लगते हैं तब समाज में जातियों का ह्रास होने लगता है। और धीरे-धीरे स्थितियां बिगड़ती ही जाती हैं और सामाजिक संरचना कमजोर पडने लगती है परंपरा और संस्कृति का प्रयोग पर्याय एक ही संदर्भ में बहुत से लोग करते हैं। संस्कृत अधिक व्यापक अवधारणा है परंपराएं पिछली संस्कृति को दोहराते हुए चलने वाली हैं परंपरा शब्द का प्रयोग भी बहुत बहम उत्पन्न करने वाला है यदि देखा जाए तो कबीलों में भी स्थान 'गोत्र और वंश के आधार पर परंपराओं में अंतर पाया जाता है परंपराएं स्वयं ही समय-समय पर अपना मूल्यांकन कर अपनी दिशा बदलती हैं। भारतीय समाज के विकास की प्रक्रिया कभी रुकी नहीं और प्रत्येक चरण में चुनौतियों के प्रति उसकी प्रतिक्रिया हमेशा रचनात्मक रही है। समय-समय पर विरोध और विद्रोह की परंपराएं भी विकसित होती रही हैं ऐतिहासिक दृष्टि से बदलाव के साथ-साथ सांस्कृतिक चेतना स्वरूप भी बदलने लगा छोटी-छोटी संस्कृतिक इकाई बदलते संदर्भों की नई जागृति का संदेश देने लगी विविध साहित्यिक धाराओं में परंपरा विद्यमान रहती है तथा एक इकाई की तरह प्रवाहमान रहती है। संस्कृत' प्राकृत' अपभ्रंश' हिंदी 'तमिल' तेलुगु तथा मराठी साहित्य में अनेक साहित्यिक आंदोलन एवं परिवर्तन हुए हैं ऋषि 'कवि तथा चिंतक इसे जैसे जब और जैसे चाहे अपनी समस्याओं का निदान तथा समाधान के

लिए परंपरा का प्रयुक्त कर सकते हैं भारतीय साहित्य की प्रगतिशील चेतना में इसी की प्रतिक्रिया है।

आधुनिकता -आधुनिकता अंग्रेजी के मॉडर्निटी का समानधमी हिंदी शब्द है आधुनिकता वह प्रक्रिया है जो नवीनता और नया करने का संदेश देती है आधुनिकता मनुष्य के भौतिक जीवन से संबंधित नहीं होती बल्कि हमारे बौद्धिक स्तर को भी प्रभावित करती है आधुनिकता मानव संघर्ष को अंकित करती है आधुनिकता केवल शहर गांव एवं कस्बे मे ही नहीं बॅटी हुई बल्कि आधुनिकता का स्तर भौगोलिक परिधि को तोड़कर पूरे समाज पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है कई बार लोग आधुनिकता का अर्थ नई पीढ़ी के सोचने विचारने से लगा लेते हैं लेकिन आधुनिकता को बहन करने वाले लोग नई पीढ़ी के लोग ही नहीं है बल्कि कोई भी अपने जीवन में आधुनिकता को अपनाकर नई दिशा में सोच सकता है हर युग हर आदमी अपने आप में आधुनिक होता है- डॉअनीता रावत के शब्दों में "आधुनिकता की प्रकृति में यह स्वयं सिद्ध स्थितियां हैं जो मानव जाति को एक वैश्विक एवं सार्वभौमिक स्तर पर उन अंतहीन अंत तक ला पटकती है जो लगातार पेचीदा व रोमांचक हैं" आधुनिकता को हम अपने-अपने ढंग से परिभाषित करते हैं आधुनिकता एक ऐसी प्रक्रिया या धारणा है जो समग्र को एक साथ लेकर मानव के जीवन मूल्यों से जुड़ा रहकर उसे प्रभावित करती है। "आधुनिकता एक अन्वेषण भी है जो हमें मिथक से यथार्थता की यात्रा की सही दिशा भी समझती है " आधुनिकता का संबंध समाज के आधुनिकरण से होता है तथा समाज को विकास दिशा की ओर उन्मुलक्त करना होता है पर यह राष्ट्रीय और मानवीय प्रश्न भी है कि हम आधुनिकता की समस्या को संस्कृत की क्षति से जोड़ते हैं तो दूसरी ओर आधुनिकरण से इसलिए आधुनिकता एक व्यवस्था विचार विधि एवं वृत्ति मूल्य चक्र में अभिहित होती है आज जीवन के विविध क्षेत्रों में आधुनिकता एक बहुचर्चित विषय है इस बहुचर्चित विषय आधुनिकता के संबंध में सबसे पहले हमे यह जानना आवश्यक है कि आधुनिकता क्या है उसके मूलभूत मूल तत्व क्या है उसके लक्षण क्या है आधुनिकता काल सापेक्ष है अथवा विचार सापेक्ष यह स्थित्यात्मक है या गत्यात्मक? जिसे हम आधुनिकता कहते हैं वह एक प्रक्रिया का नाम है यह प्रक्रिया अंधविश्वास से बाहर निकालने की प्रक्रिया है यह प्रक्रिया नैतिकता में उदारता बरतने की प्रक्रिया है यह प्रक्रिया धर्म के सही रूप पर पहुंचने की प्रक्रिया है आधुनिक वह है जो मनुष्य को उसकी ऊंचाई ' जाति या गोत्र से नहीं बल्कि उसके कर्म से नापती है आधुनिक वह है जो मनुष्य को समान समझना है आधुनिकता का संबंध मानव की नई चेतना से है जो आधुनिक स्थिति में विकसित होती है आधुनिकता एक ऐसी विचारधारा है जिसकी निश्चित परिभाषा नहीं की जा सकती लेकिन इतना अवश्य कहा जा सकता है कि "सिद्धांत और व्यवहार में मैत्री होना आधुनिकता की नींव है" निष्कर्ष यह है कि हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में सन 1900 के बाद) मात्रा और विविधता की दृष्टि से जितना साहित्य प्रकाश में आया उतना इससे पूर्व काल में नहीं इसमें देश -प्रेम सामाजिक चेतना 'मानवता यथार्थवादी चित्रण 'बौद्धिकता 'वादो का प्राचुर्य 'शैली की नवीनता आदि विशेषताएं दृष्टिगोचर होती हैं आधुनिकता सामाजिक संबंधों तथा सामाजिक परिवर्तन की विचार विधि है "आधुनिकता मानसिक प्रत्ययों तथा सामाजिक दृश्य को समझने तथा विश्लेषित करने की विधि है ताकि विशेष देश काल के संदर्भ में मनुष्य सचेतन और स्वतंत्र होकर परिवर्तन भी कर सके"

उत्तर आधुनिकता- उत्तर आधुनिकता पूर्ण रूप से एक स्वतंत्र विधा है उत्तर आधुनिकता की अवधारणा को हम दूसरे शब्दों में उत्तर उपयोगवाद की संज्ञा दे सकते हैं इसका प्रभाव तथा शक्ति आदि संसार के अनेक देशों में देखा जा सकता है उत्तर आधुनिकता ने आधुनिकरण के मानकों को नकारा है और अनेक क्षेत्रों में फैले आधुनिकता के विचारों को अस्वीकार किया है यहां तक की आधुनिकीकरण के सैद्धांतिक आधारों को उत्तर आधुनिकता ने अस्वीकार किया है उत्तर आधुनिकता अधिक से अधिक बल' बाजार और साधन पर देता है उत्तर उत्तर आधुनिकता का तात्पर्य आधुनिकता के बाद का विकास यह अवधारणा बहुत तेजी से आधुनिकता का स्थान ले रही है साहित्य में कई प्रयोग आए उच्च स्तर की प्रौद्योगिकी आयी मैक्स बेवर 'दुर्खीम 'परेटो 'मार्क्स और ऐसे कितने ही संस्थापक विचार आये। इनकी सोच ने जमाने की दिशा को बदल दिया उत्तर आधुनिकता ने संपूर्ण 20वीं शताब्दी के सामने एक ज्वलंत प्रश्न खड़े कर दिए कॉरपोरेट पूंजीवाद को मुश्किल में कर दिया है अब एक नई संस्कृति का उदय हो रहा है जिसकी लोकप्रियता बढ़ रही है यह लोकप्रिय संस्कृति संचार की संस्कृति है यह संस्कृति 'सामाजिक 'आर्थिक और राजनीतिक प्रक्रियाओं से जुड़ी हुई है इसकी अभिव्यक्ति जीवन की विभिन्न शैलियों से जैसे कला

'साहित्य' दर्शन आदि मे देखने को मिलती है उत्तर आधुनिकता की सबसे बड़ी विशेषताएं है कि वह युवाओं को अधिक प्रभावित करती है यह युवाओ को अपने आपको आधुनिकता के बंधन से मुक्त करने लगी इसके परिणाम स्वरुप एक नई संस्कृति का उदय हो रहा है वह एक वर्ग इस बात पर जोर देता है उत्तर आधुनिकता की संक्षेप में निम्नलिखित विशेषताएं बताई जा सकती हैं1- ज्ञान बेचने के लिए और सूचना विनिमय के लिए है।

2- सूचना उत्तर आधुनिकता के युग में सब कुछ है और इसके लिए अनेक समाज में दंन्द पाया जाता है सूचना पूंजी की तरह समझ में गतिमान होती है 3. हम कला 'साहित्य' राष्ट्र' राज्य इतिहास आदि का अंत देख रहे हैं 4. वर्तमान युग को हम पूंजी और तकनीकी के विकास का योग कहते हैं और साथ ही साथ एक अंत का युग है उत्तर आधुनिकता की चर्चा वैसे तो सन 1970 से 75 के आसपास होने लगी थी किंतु हमारे यहां किसी भी विचार को पहुंचने में समय लगता है कहा जाता है कि जब पश्चिम में उत्तर आधुनिकता का मर -खप गई तब हमारे यहां उसकी चर्चा होने लगी वैसे उत्तर आधुनिकता एक आधुनिकता के बीच कोई बड़ी विभाजन रेखा नहीं है सिवाय इसके कि कुछ चिंतकों ने कुछ बातें कहीं वे विज्ञान विरोधी हो गए अजीब सी बातें करने लगे आधुनिकता ने हमें उपयोग की संस्कृति दी संग्रह को केंद्र में लिया उत्तर आधुनिकता ने हमें केंद्र से हटाया" उत्तर आधुनिकता ने 70 के दशक में साहित्यिक परिदृश्य में प्रवेश किया है भारतीय परिपेक्ष्य में उत्तर आधुनिकता मीडिया संचालित तथा बाजार निर्देशित तत्वों की प्रतिक्रियास्वरूप अस्तित्व में आयी उत्तर एवं आधुनिक अर्थात जब आधुनिकता से पूर्व उत्तर उपसर्ग लगाया जाता है तो हम सोचने पर विवश हो जाते हैं कि जैसे यूरोपीय इतिहास का प्राचीन एवं मध्यकाल समाप्त हो गया इस तरह हम एक नए युग अर्थात उत्तर आधुनिक युग में पहुंच गए हैं आज हमारे चारों तरफ जिन अराजक स्थितियों ने उत्पात मचाया है उससे अनिश्चितता बर्बरता को बढ़ावा मिला है परंतु जहां विध्वंस दिख रहा है वहीं कुछ लाभ भी हो रहा है जिसको अनदेखी नहीं किया जा सकता और जीवन तथा जगत मे कोई भी कार्य कीमत के बगैर पूरा नहीं होता है जहां अनेक समस्याओं का जन्म हुआ है वहीं पश्चिम के एकाधिकार को भी चुनौती मिल रही है साथ ही वर्गवादी और सामान्तशाही व्यवस्था को भी खारिज कर दिया गया है जिससे हर वर्ग का व्यक्ति वैश्विक मानव के रूप में अपनी स्वतंत्र अस्मिता को स्थापित करने का प्रयास करना कर रहा है यही उत्तर आधुनिकता का महत्व है जो उसे नवीन अर्थवत्ता है उत्तर आधुनिकता से हम कह सकते हैं कि इसमें दलित पिछड़े अपेक्षित समलैंगिक स्त्रियों और उपेक्षित लोगों को केंद्र में लाने का कार्य किया है तथा निसंदेह यह प्रशंसनीय है समस्त विरोधाभासों को सहते हुए समस्याओं को व्यापक पर दृश्य में प्रस्तुत करने का कार्य उत्तर आधुनिक साहित्य में ही संभव है अतीत के साथ वर्तमान की संगति बिठाकर भविष्य के लिए मार्ग सुगम करने की क्षमता उसमें दिखाई देती है इसलिए उसका महत्व निविर्वाद होना चाहिए संदर्भ सूची-1- डॉ वीरेंद्र सिंह यादव- उत्तर आधुनिकरणता विचार और मूल्यांकन पेज सं 3 2- वही पेज सं 6 3- डॉ शुभा वाजपेई -साहित्य परंपरा और आधुनिकता पेज सं11 4- वही पेज सं13 5-वही पेज सं14 6- डॉ सी विश्वनाथन -मोहन राकेश की रचनाओं में आधुनिक भावबोध पेज सं27 7- डॉ प्रेम सिंह के क्षत्रिय-वृंदावन लाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यासों में आधुनिक बोध पेज सं 7 8- वहीं पेज सं 8 9-डॉ पी के जयलक्ष्मी सप्तक त्रय मे आधुनिकता पेज सं 13 10-डॉ कविता त्यागी भगवती चरण वर्मा के उपन्यासों में आधुनिकता पेज सं 16 11- वही पेज सं 52 12- वही पेज सं 53 13-डॉ वीरेंद्र सिंह यादव -उत्तर आधुनिकता विचार और मूल्यांकन पेज सं 30 14-वहीं पेज सं 32 15- डॉ मीना खरात उत्तर आधुनिकता और मनोहर श्याम जोशी पेज सं 75 16- वहीं पेज सं 76 17- वही पेज सं 77

संदर्भ सूची

1. डॉ. वीरेंद्र सिंह यादव- उत्तर आधुनिकरणता विचार और मूल्यांकन पेज सं 3
2. वही पेज सं 6
3. डॉ. शुभा वाजपेई -साहित्य परंपरा और आधुनिकता पेज सं11

4. वही पेज सं13
5. डॉ. सी विश्वनाथन -मोहन राकेश की रचनाओं में आधुनिक भावबोध पेज सं27
6. डॉ. प्रेम सिंह के क्षत्रिय-वृंदावन लाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यासों में आधुनिक बोध पेज सं 7
7. वही, पेज सं 8
8. डॉ. पी के जयलक्ष्मी सप्तक त्रय मे आधुनिकता पेज सं 13
9. डॉ. कविता त्यागी भगवती चरण वर्मा के उपन्यासों में आधुनिकता पेज सं 16
10. वही पेज सं 52
11. वही पेज सं 53
12. डॉ. वीरेंद्र सिंह यादव -उत्तर आधुनिकता विचार और मूल्यांकन पेज सं 30

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

'मोर्चे पर विदागीत काव्य-संग्रह' के संदर्भ में कवि विहाग वैभव की काव्य संवेदना

डॉ. राज कुमार
सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय पांगी (चम्बा) हिमाचल प्रदेश

शोध सार- समकालीन हिन्दी काव्य जगत में विहाग वैभव एक उभरता हुआ नाम है जो अपनी मौजूदगी से समकालीन हिन्दी कविता में एक नया तेवर गढ़ता है। कवि विहाग उम्र की सीमाओं को लांघ कर सभ्यता के शिखर से बड़ी पारखी नज़र से वर्तमान व्यवस्था का अवलोकन करता है और इस पतनशील व्यवस्था के कारणों की खोज अतीत में गढ़े समाज व्यवस्था के मिथकों तथा राजनीतिक सामाजिक सांस्कृतिक आयामों में करते हैं। विहाग वैभव की कविता एक तरफ वर्तमान पथभ्रष्ट राजनीतिक सामाजिक व्यवस्था से लोहा लेती दिखाई देती हैं वहीं दूसरी तरफ दलित, महिला, किसान, मज़दूर तथा बेरोजगार वर्ग की दयनीय स्थितियों का उद्घाटन करती है। एक तरफ़ सवर्ण सत्ता के शोषणकारी रणनीतियों का उद्घाटन करती है वहीं दूसरी तरफ इनके खिलाफ़ शोषित तबके को लामबंद करने का प्रयास करती है। इनकी कविताओं में प्रकृति की निर्मम हत्या के प्रति चिन्ता भी है और किसान जीवन की त्रासदी के चित्र भी। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दौर में बनावटी संवेदनाओं का छलावा भी है और मां के आंचल में संवेदनाओं की सच्ची छांव भी। प्रेम पर लगते पहरों के बीच व्यवस्था से लड़कर अपनी-अपनी प्रेमिकाओं के साथ मिलने की उम्मीद भी इनकी कविताओं में दिखाई देती है। कवि विहाग की कविताएं घृणा, द्वेष, हिंसा, अपमान के स्थान पर प्रेम तथा सद्भाव की स्थापना पर बल देती है। विषय-वस्तु की विविधता की दृष्टि से इनकी कविताओं को किसी विमर्श विशेष तक सीमित रखना उचित प्रतीत नहीं होता। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत काव्य संग्रह का विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक दृष्टि से मूल्यांकन किया गया है।

बीज़ शब्द : मानव द्रोही, जैविक संरचना, मवाद, जर्जर खिलखिलाहट, शमशीरों, फार, सनक, अशर्फियां, नाधना।

शोध आलेख -भारतीय समाज की दिशा हीन राजनीति, रूढ़िवादी सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था, वर्तमान संघर्षशील परिस्थितियों से जुझते टूटते व्यक्ति की पीड़ा, संत्रास, कुंठा, निराशा, विद्रूपता तथा अराजकता की सटीक अभिव्यक्ति करती हुई कविताएं विहाग वैभव द्वारा रची गई है। इन समस्त परिस्थितियों से मोर्चा लेते हुए कवि मोर्चे पर विदागीत काव्य संग्रह में अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज करते हैं। यह काव्य संग्रह कवि विहाग को अल्पायु में ही हिन्दी काव्य जगत में वैभव दिलाता है। अपने नाम के अनुरूप वैभवशाली गुणों के धनी कवि विहाग वर्तमान धर्म तथा राजनीति को किसी दीर्घकालीन षड्यंत्र का नतीज़ा मानते हैं जिसका वर्तमान सामाजिक सरोकारों के साथ कोई तालमेल नहीं है। वर्तमान में इस तथाकथित धर्म तथा राजनीति से सरोकार न रखने वालों को राष्ट्रद्रोही तथा धर्मद्रोही करार दिया जाने लगा है। 'मानवद्रोहियों की जैविक संरचना के संदर्भ में' कविता में ऐसे मानवद्रोहियों की जैविक संरचना पर सवाल उठाते हुए कवि लिखते हैं–

'वे वीर्य से नहीं घृणा से उपजे थे
वे मनुष्य योनि में हुए/और मनुष्यता के मवाद की तरह जीते रहे।'[1]

मानवीय मूल्य ही मनुष्यता की पहचान के कारक होते हैं। लेकिन वर्तमान में इन मूल्यों में विघटन जारी है जिसका एक कारण वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था है जो अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए राजनीतिक विचारधारा के नाम पर आम जनता को धर्म, जाति, नस्ल, रंग तथा भाषा के आधार पर बांटने का काम कर रही है। इस बंटवारे ने मानवीय संवेदनाओं को भीतर से खोखला कर दिया है और वे इन वैचारिक उन्मादों में आकर मानवता के लिए मवाद की तरह घृणित रूप लेता जा रहा है। यह राजनीति प्रेरित स्वार्थ तथा राजनीति निर्देशित अनावश्यक वैज्ञानिक करतब कैसे विनाश लीला रच रहे हैं। इस संदर्भ में निम्न पंक्तियां देखें—

'वे पहाड़ पर गए तो पहाड़ों के गर्भ में बम छोड़ आए/ उन्होंने नदी को छुआ तो नदियां सूखती चली गई/वे जंगल में गए तो जंगल में आग लग गई /उनका लालच इतना विशाल था कि /उसमें पूरा का पूरा ग्रह शक्कर के एक दाने सा समा सकता था।'[2]

यह एक संवेदनशील कवि का ही नजरिया है कि वे अपने समय के उस यथार्थ को देखने में समर्थ हो पाता है जिसे कोई साधारण आदमी नहीं देख पाता। वर्तमान में मानवीय मूल्यों को पीछे छोड़ विकास के नाम पर प्रकृति का जो निर्मम दोहन हो रहा है। उसकी पीड़ा कवि स्वानुभूत कर पाता हैं। 'खुल रहे ग्रहों के दरवाज़े' कविता में कवि लिखते हैं—

'मैंने जिस मेज़ पर रखा अपना स्पर्श/ उसी से आने लगी दो खरगोशों के सिसकने की आवाज़ /हाथ से होकर शिराओं में दौड़ने लगीं गिलहरियां/मैंने जिस भी कमरे में किया प्रवेश/उसी से आई/कामगार पिताओं वाले बच्चों की जर्जर खिलखिलाहट'[3]

राजनीतिक दमन के खिलाफ प्रतिरोध की ज्वाला देश में निरन्तर बढ़ती जा रही है। चाहे कोई कामगार तबका हो या किसान हो। सभी लामबंद हो कर सरकार से लोहा लेने के लिए तैयार हो रहे हैं। इस संदर्भ में 'पार्श्व में नगाड़े बजते हैं' कविता की निम्न पंक्तियां देखें -

'यह लोहार की भट्टियों में काम कहां से आया/ यह शमशीरों के खनकने की आवाज़ कैसी है/ जो बूढ़े किसान सरकार की गोली खाकर मरे/आखिर कहां गए एक साथ उनके जवान लड़के/जाने तो क्या हुआ आज कि सभी हलों के फार/पिघल कर खंजरों में ढल रहे हैं।'[4]

देश में पनपती पथभ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था में बेरोज़गारी, महिलाओं के खिलाफ बढ़ते अपराधिक मामले तथा किसान जीवन की त्रासदी दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। शिक्षित युवा बेरोजगार भटक रहे हैं। न्याय व्यवस्था लचर से लचर होती जा रही है जो महिलाओं के साथ हो रहे जघन्य अपराधों के खिलाफ कोई उचित समाधान नहीं दे पाई है। अन्न उगाने वाला किसान दो वक्त की रोटी के लिए हाथ फैलाए हुए हैं। इस संदर्भ में 'ओझौती जारी है' कविता की पंक्तियां देखें—

'तपते तवे पर डिग्रियां रखकर/जवान लड़के जोर से चिल्लाए -रोजगार/बिखरे चेहरे वाली अधनंगी लड़की ने/हवा में खून सना सलवार लहराया/और रोकर चीखी-न्याय/ मोहर लगे बोरे को लालच से देख/ हंसिया जड़े हाथों को जोड़/किसान गिड़गिड़ाया -अन्न।'[5]

वैचारिक तथा दार्शनिक तरक्की की तमाम मीनारों के बावजूद समाज निरन्तर विद्रूपता तथा विघटन की तरफ़ अग्रसर है। समाज़ में बहनें, बेटियां सुरक्षित नहीं है। कवि सामाजिक बदलाव का आकांक्षी है लेकिन यह बदलाव हो कैसे? कवि का महान क्रांतिकारी तथा दार्शनिक विचारों के प्रति मोहभंग हुआ है। कवि को लगता है कि वर्तमान में क्रान्तिकारी विचार दरबारी होकर अपनी अर्थवत्ता खो रहें हैं। ऐसे दौर में उन लोगों से सामाजिक बदलाव की उम्मीद की जा सकती हैं जो अपने ऊपर आए संकट का प्रतिरोध पूरी सनक तथा पागलपन के साथ करते हैं। ' लड़ने के लिए चाहिए' कविता में कवि लिखते हैं—

'जब घर में लगी हो भीषण आग/आग की ज़द में हों बहनें और बेटियां/ तो आग के सीने पर पांव रखकर/बढ़कर आगे उन्हें बचा लेने के लिए/ नहीं चाहिए कोई दर्शन या महान विचार/चाहिए तो बस/थोड़ी-सी सनक,थोड़ा सा पागलपन'[6]

विहाग वैभव का कवि मन वर्ग विभाजन के कारण स्तरीकृत भारतीय समाज के उन तमाम भेदभावपूर्ण व्यवस्थाओं के

प्रति आक्रोशित है जो समाज के दलित तबके के उत्थान में सबसे अधिक बाधक रही है। या यों कहें कि इन व्यवस्थाओं ने समाज के एक विशेष वर्ग को हमेशा निशाने पर रखकर उसकी आकांक्षाओं तथा विचारों को मारा है, उसके कदमों को आगे बढ़ने से रोका है। इस दमन की व्यवस्था पर प्रहार करते हुए 'तुम एक औरत की हत्या का जश्न मनाते हो' कविता में कवि लिखते हैं -

'तुम हमेशा से यही करते आए हो/खुद से प्रबुद्ध नस्लों की हत्या पर तुम अशर्फियाँ बाँटते हो/तुम खुद से तेज़ चलने वाले अँगूठे काट लेते हो/तुम सह नहीं पाते/एक बेख़ौफ़ और अभिमानी औरत की मौजूदगी/तुम उसे जला देते हो।'[7]

महाभारत के धर्म युद्ध में तात्कालीन राजनीति ने अधर्म का चक्रव्यूह रच कर लाचार अभिमन्यु का वध किया था।समाज का वह अधर्म युद्ध वर्तमान में भी जारी है। इस अधर्म युद्ध से लड़ने वाला अभिमन्यु आज हार मानने को तैयार नहीं है। कवि को उम्मीद है कि वर्तमान व्यवस्था से जूझने वाले अभिमन्यु ने चक्रव्यूह के सातवें दरवाज़े को भेदने के लिए निरन्तर अभ्यास किया है। अब वह लाचार नहीं रह गया है ब्लकि उसने चक्रव्यूह की समस्त रणनीतियों को समझ लिया है। वे चक्रव्यूह के अंतिम दरवाज़े को रथ के पहिए से नहीं, बल्कि चक्की के उस पाट से तोड़ेगा जो अन्न पीस कर लोगों का भरण-पोषण करती है। 'अभिमन्यु फिर से घिर रहा है जानेजाँ' कविता में कवि कहते हैं–

'हजार बरसों में अभिमन्यु ने मृत्यु का अभ्यास किया है/तुम देखना सारे शूरवीर जब उसे/मरा हुआ समझ चले जाएँगे/तब वह खून से लथपथ देह में/साँस भरेगा/धूल झाड़ उठेगा और भेद देगा साँतवा दरवाज़ा/यह आखिरी दरवाज़ा वह किसी रथ-चक्र से नहीं/ जाँत के एक पाट से तोड़ेगा।'[8]

समाज के निम्न समझे जाने वाले वर्ग को हमारे समाज में शताब्दियों से शोषण का शिकार होना पड़ा है। इस वर्ग को जीवन में आगे बढ़ने के तमाम समान अवसरों से महरूम रहना पड़ा है। इस जाति आधारित शोषण चक्र के बावजूद भी यह वर्ग अपनी उत्कट जीवट शक्ति के फलस्वरूप हर बार नए रूप में ढल कर सामने आया है। इस संदर्भ में 'बेहया के फूल' कविता की निम्न पंक्तियां अवलोकनार्थ प्रस्तुत है–

'जाने किन कोशिकाओं से बना था मन/जाने कितना जीवट था हमारे रक्त में/कि हमें बार-बार तोड़ा गया/उखाड़ा गया, मरोड़ा गया/और बार-बार फेंक दिया गया/इस गलीच से उस गलीच/मगर ये हम थे कि हर बार उग आए/हर बार खिल आए।'[9]

भारतीय समाज में दलित, महिला तथा किसान सदियों से कभी न खत्म होने वाले दुखों से जूझ रहें हैं। वर्तमान परिदृश्य में भी यह संकट कम होने का नाम नहीं ले रहें हैं। अन्न उपजाने वाले किसान की स्थिति तो दिन प्रतिदिन बद् से बद्तर होती जा रही है। क़र्ज़ न चुका पाने की असमर्थता, सूखा, बाढ़, अतिवृष्टि आदि परिस्थितियों ने किसान जीवन को अभिशप्त किया है। आए दिन किसानों द्वारा मौत को गले लगाना एक सामान्य सा घटनाक्रम बनता जा रहा है। कवि किसान जीवन की त्रासदी को ईश्वर के लिए भी असहनीय मानता है। इस संदर्भ में 'ईश्वर को किसान होना चाहिए' कविता में कवि लिखते हैं–

'सृष्टि के किसी कोने में/सचमुच ईश्वर कहीं है/और वह अपने अस्तित्व को लेकर सचेत भी है/तो फिर समय आ गया है कि/उसे अनाज़ बोना चाहिए/काटना चाहिए,रोना चाहिए/ईश्वर को किसान की तरह होना चाहिए।'[10]

समाज की दुर्दशा को देख कर कवि का मन बैचेन है। वह भीतर ही भीतर घुट रहा है। कवि समाज के वर्तमान परिदृश्य को लेकर संवेदना तथा करूणा से भरा हुआ है इसलिए वह शोषित वर्ग को न्याय दिलाने के लिए वर्तमान व्यवस्था से दो-दो हाथ करने के लिए निभीक खड़ा है।''सोनतारा' कविता में कवि लिखते हैं–

'यहाँ बहुत अकुलाहट है, बहुत बेचौनी, बहुत -बहुत घुटन/लो मेरी करूणा और न्याय के लिए अंत तक लड़ने का साहस/लो मेरी विरासत सँभालो, सोनतारा/मुझे इस देह से बाहर निकालो।'[11]

विकास के तमाम दावों के बीच आज भी समाज में एक बहुत बड़ा तबका अनाज न उपलब्ध होने के कारण भूख से मर जाता है। कारखानों में काम करने वाला मजदूर परिवार समेत ताउम्र असंख्य रोगों से ग्रस्त रहता है। ऐसे दौर में लिखी जाने वाली कविता भी कैसे सामाजिक सरोकारों से असंपृक्त रह सकती है। कवि विहाग वैभव के काव्य अनुभवों को केवल

किसी विशेष विमर्श तक सीमित नहीं किया जा सकता, बल्कि इनकी कविताओं में जीवन की समग्र झलक मिलती है। इस संदर्भ में 'यह कविताओं को खेतों में जोतने का समय है' कविता की पंक्तियां निम्नवत् हैं–

'अन्न की भूख मृत्यु को बहुत हरामी बना देती है/यह कविताओं को खेतों में जोतने का समय है /चिमनी से उठता काला धुँआ मजूर के परिवार के फेफड़े में काली खाँसी की तरह जमता जाता है/यह कविताओं को कारखानों में नाधने का समय है।'[12]

सभी प्राणी, पहाड़, जंगल,नदी- नाले मिलकर इस खूबसूरत सृष्टि का निर्माण करते हैं। लेकिन बदनसीबी से दुनियाभर में इस सृष्टि के भीतर पुरूष सत्ता ने एक ऐसी दुनिया रची है जो सृष्टि के सभी प्राणियों तथा उपादानों को पुरुषवादी चश्मे से देखती है। इस एकाकी दृष्टिकोण से विकसित दुनिया के पाट वर्तमान में संवेदनहीनता के जलजले में भरभरा कर डूब रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में कवि सृष्टि की पंचायत में पुरूष सत्ता को कठघरे में खड़ा करना चाहता है ताकि भविष्य के समाज की रचना मनुष्यता की नीव पर की जा सके जो समस्त जगत को समभाव की दृष्टि से लेकर आगे बढ़ें। 'हमारे चेहरों पर चीखों के धब्बे हैं' कविता में कवि लिखते हैं–

'अब समय आ गया है कि/सृष्टि के सभी प्राणियों, जंगलों, पर्वतों और नदियों की सामूहिक पंचायत से/यह तय कर लिया जाए कि/इस दुनिया में पुरूष रहेगा कि मनुष्य'[13]

देश को केवल राजनीतिक व्यवस्थाएं नहीं चलाती ब्लकि उस देश के किसान, मज़दूर, महिला तथा समाज के प्रत्येक तबके की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। लेकिन वर्तमान दौर में समाज का वास्तविक सृष्टा हाशिए पर जीवन जीने को मज़बूर है। उनकी मेहनत का श्रेय उन्हें नहीं मिल पा रहा। देश की नियति गढ़ने वाला ये तबका अपनी नियति के लिए वर्तमान व्यवस्था की तरफ़ दयनीय नज़रों से ताकने को मज़बूर है। कवि इन परिस्थितियों का जिम्मेदार वर्तमान व्यवस्था को मानता है जिसने अपने स्वाथी मंसूबों को पूरा करने के लिए इस वर्ग की हमेशा अवहेलना की है। अपनी कविताओं के द्वारा इस वर्ग को देश के सच्चे शिल्पकार के रूप में स्थापित करते हुए 'ये देश उनका है' कविता में कवि लिखते हैं–

वे जो अधपके खेतों में/धूप का सही ताप पहुँचाते हुए दह गए/वे जो बस्ती भर की प्यास की ख़ातिर/धरती में उतरे/और पाताल में बह गए/वे जो हमारे लिए बनाते हुए नया घर/नींव में मिट्टी की कमी महसूस कर/खुद जवान इमारत की तरह ढह गए/ये देश उनका है।[14]

तमाम सुख सुविधाओं के बावजूद समाज कुंठा,उदासी, निराशा तथा तनाव से ग्रस्त हो रहा है। वास्तव में विकास की पटरी पर सवार समाज ने लोगों के दिलों में उम्मीदों को जन्म दिया। इन उम्मीदों ने खूबसूरत भविष्य की नीव रखी। जो वर्तमान व्यवस्था में धुमिल होती नज़र आ रही है। व्यवस्था तथा सपनों के मोहभंग होने से व्यक्ति के जीवन में संवेदनहीनता ने दखल देना शुरू कर दिया है। संवेदनाओं के ऊपर आए संकट के कारण यह दुनिया मुर्दाघर में तब्दील हो रही है। 'आबाद रहे ये मुर्दाघर' कविता में कवि लिखते हैं– 'ओह! यहाँ सब कुछ उल्टा-पुल्टा बिखरा पड़ा है/मेरी उम्र पर पानी किसने गिराया/ मेरी खिलखिलाहटों का आईना किसने तोड़ा/यह किसकी शरारत है कि मेरी घड़ी का समय इतना तेज़ चल रहा है/मेरी उम्मीदों की लालटेन का काँच कैसे चटका/मेरे तकिये इतने गीले क्यों हैं/मेरी निरीह घुटन के पन्ने कैसे तो बिखरे पड़े हैं।'[15]

संवेदनहीन समाज में होंठों से हँसी गायब होती जा रही है। खुशियों की उम्र घटती जा रही है। दुख का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है। कवि जीवन की कुरूपता देखकर व्यथित हैं। वर्तमान मशीनी समाज में मानव देह जड़वत मशीन में तब्दील होती जा रही है। आत्मा का दायरा धीरे-धीरे सिकुड़ता जा रहा है। 'कोशिकाएँ पूछती हैं पता अपना' कविता में कवि लिखते हैं–

'मेरा यकीन करिए/विहाग वैभव नाम का एक लड़का बीते साल के आख़िरी महीनों में ही मर गया/मेरी आत्मा की पत्रिका में इस बाबत लंबी ख़बर छपी थी/वो कमबख्त कहता फिरता था/पूरे जगत में वह अपने नाम का अकेला प्राणी हैं (और हँस देता था)/ख़बर कहती है मरने के पहले उसने हँसने की इच्छा जाहिर की थी।'[16]

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दौर में कृत्रिम संवेदनाओं में बदलती दुनिया पर भी कवि ने व्यंग्य किया है। आज मनुष्य बाहर से संवेदनाओं का आवरण ओढ़ कर अपने स्वार्थो को पुरा करने के सुअवसर खोजता रहता है। इस संदर्भ में 'छद्म्म संवेदनाओं

को भुना लो साथी' कविता में कवि कहते हैं–

'छद्‌म संवेदनाओं को भुना लो साथी/कहीं दुर्घटनाओं का यह सुअवसर निकल न जाए/भीतर से ज़रा और ज़रा दम साधो/आँखो में तनिक और नमी लाओ/चेहरे पर पोत लो रोना और भी अधिक/कि भुक्तभोगी जान जाय कि तुम उसके दुख में उससे अधिक दुखी हो।'[17]

समाज के तमाम तौर-तरीकों की समझ रखने के साथ घर के भीतर की व्यवस्था को बनाए रखने वाली माँ कवि विहाग के मन से एक पल के लिए भी ओझल नहीं होती।बच्चों के जीवन में माँ सृष्टि का सबसे अद्भुत उपहार है जो अपनी इच्छाओं को मारकर तमाम उम्र अपने बच्चों तथा परिवार के लिए उत्तरदायित्व बोध के प्रति सजग रहती है।

कवि माँ को पड़ोस की दूसरी औरतों की भान्ति सजते संवरते जीवन के विविध रंगों के साथ जिंदादिली के साथ जीते देखना चाहता है। 'माँ का सिंगारदान'कविता में कवि लिखते हैं–'हम माँ को हमेशा ही/खूबसूरत देखना चाहें/हम नाराज़ भी हुए माँ से/जैसे सजती थी/आस-पड़ोस की और औरतें/ माँ नहीं सजी कभी उस तरह/माँ उम्र से बड़ी ही रही'[18]

इस काव्य संग्रह में कवि जीवन की विसंगतियों से मोर्चा लेते हुए दिखाई देते हैं। एक तरफ़ कवि प्रेम के प्रति समर्पित है वहीं दूसरी तरफ जीवन से दूर होती प्रेम करूणा, परोपकार जैसी भावनाओं के कारण व्यथित हैं। वर्तमान शासन व्यवस्था में जीवन में घृणा, द्वेष, तनाव, अवसाद तथा निराशा जैसी भावनाओं ने धीरे धीरे अपना साम्राज्य फैलाना शुरू किया है। ऐसे दौर में कवि सभी प्रेमियों से निवेदन करना चाहता है कि वे अगर अपने प्रेम के साथ जीवन जीना चाहते हैं तो उन्हें सबसे पहले मानव विरोधी योजनाएं बनानी वाली व्यवस्था के खिलाफ लड़ाई छेड़नी पड़ेगी। 'मोर्चे पर विदागीत' कविता में कवि कहते हैं–'साथियों! मेरा विदागीत यहीं ख़त्म होता है/इस पेड़ को शुक्रिया कहो और चलो उठो/ हमें राजा को उसकी वहशी योजनाओं समेत दफ़न कर देना है/और समय रहते लौटना भी तो है/अपनी-अपनी प्रेमिका की बाहों में/यह इतना कठिन समय भी नहीं है।'[19]

वास्तव में कविता के लिए जितनी महत्वपूर्ण विषयवस्तु होती है, उतनी ही महत्वपूर्ण होती है उस विषयवस्तु को पाठक तक पहुंचाने की तकनीक। तकनीक को काव्य भाषा में शैली या शिल्प कहा जाता है। वास्तव में शैली या शिल्प ही कविता को मर्मस्पशी बनाती है। शैली के माध्यम से पाठक या श्रोता केवल कविता का रसास्वादन नहीं करता अपितु कविता के साथ तादात्म्य भी स्थापित कर पाता है। कवि विहाग की काव्य शैली कविता के उन संवेदनशील मर्मों को पूरी सतर्कता के साथ अभिव्यक्त करने में सक्षम हो पाती है जिन्हें कवि ने अपनी कविताओं में पिरोया है। वर्तमान दमनकारी व्यवस्था के प्रति जिन उपमानों तथा बिम्बो का प्रयोग किया गया है कवि उसमें पूरी तरह सफ़ल हुए हैं। 'शैली' कविता में कवि लिखते हैं

'मैं जीवन को ऐसे जीना चाहता हूँ/जैसे मेरे कवि ने जी है भाषा-/कोई भी एक शब्द उठाकर/उसे सुन्दर वाक्य में बदल दिया/और ध्वनियों को बनाए रखा हमेशा/अर्थवान, न्याय,समानता और प्रेम का पक्षधर।'[20]

निष्कर्ष

समाज को राह दिखाने में कविता सदियों से अग्रणी भूमिका में रही है। विहाग वैभव की कविताएं भी इसका अपवाद नहीं है। इनकी कविताओं में जीवन की विद्रूपताओं के प्रति आक्रोश तो है ही, साथ ही संघर्ष के फलस्वरूप प्रेम से परिपूर्ण जीवन की उम्मीद भी। तनाव, घृणा,द्वेष, स्वार्थ से परिपूर्ण वातावरण में कवि अपनी आत्मा की टोह लेता दिखाई देता है। कवि की आत्मा न्याय तथा करुणा जैसे मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए संघर्षरत है। कवि अपनी इस विरासत को भावी पीढ़ी को सौंपना चाहता है। बेरोज़गारी, भूख ,महिला की समाज में शोचनीय स्थिति, किसान तथा मजदूर के दर्द को कवि स्वानुभूत कर पाता है। विहाग वैभव की कविताएं वर्तमान व्यवस्था की घनघोर कालिमा में उम्मीद की किरण ले कर आती है। कवि को विश्वास है कि एक दिन समाज का यही शोषित तबका ही वर्तमान व्यवस्था को उखाड़ कर एक समतामूलक समाज की नीव गढ़ेगा।

संदर्भ सूची

1. विहाग वैभव, मोर्चे पर विदागीत (काव्य संग्रह), राजकमल प्रकाशन, सितम्बर, 2023 पृ.सं.14
2. वही, पृ. सं.15
3. वही पृ.सं.17
4. वही, पृ.सं.19
5. वही, पृ.सं.27
6. वही, पृ.सं.33
7. वही, पृ.सं.40
8. वही, पृ.सं.41-42
9. वही, पृ.सं.51-52
10. वही, पृ.सं.55
11. वही, पृ.सं.38
12. वही, पृ.सं.49
13. वही, पृ.सं.57
14. वही, पृ.सं.21
15. वही, पृ.स.114-115
16. वही, पृ.सं.116
17. वही, पृ.सं.123
18. वही, पृ.सं.107
19. वही, पृ.सं.128
20. वही, पृ.सं.13

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

Performing Digital Selfhood: A Socio-Cultural and Aesthetic Analysis of Identity Construction in Metaverse and Virtual Environments

Anchal Sharma
Assistant Professor (English)
Email: sanchal006@gmail.com
Mobile No.: 9928926193

Abstract

Digital identity, as a dynamic construct, shapes and is shaped by interactions in virtual worlds, from social media platforms to immersive metaverses. This article examines how digital identities are constructed and navigated, drawing on socio-cultural theory to explore the role of social norms, cultural contexts, and power dynamics, and digital aesthetics to analyze the visual, auditory, and interactive elements that define identity representation. Two recent science fiction novels, *The Algorithmic Self* (2024) by Elena Voss and *Virtual Veils* (2023) by Marcus Lin, serve as narrative case studies, offering speculative insights into digital identity. This analysis argues that digital identities are fluid, performative constructs mediated by socio-cultural frameworks and aesthetic choices, reflecting both individual agency and systemic constraints. By synthesizing theoretical perspectives, literary analysis, and empirical research, this article illuminates the complexities of identity navigation in virtual spaces.

Keywords: Digital Identity, Virtual Worlds, Socio-culture Theory, Digital Aesthetics, Avatar Performance, Algorithmic Constraints.

Introduction

In an era where virtual worlds dominate human interaction, digital identity has emerged as a critical lens for understanding selfhood in digital environments. Defined as the aggregate of attributes, behaviors, and representations that constitute an individual's presence online (Turkle 3), digital identity transcends mere technological representation, embodying socio-cultural and aesthetic dimensions. Virtual worlds, encompassing platforms like social media, multiplayer games, and immersive environments, provide the stage for such identity performances. Central to this discourse is the metaverse, a term describing a collective virtual shared space that integrates augmented reality, virtual reality, and persistent digital environments, enabling seamless interaction across the platforms (Ball 12). Socio-cultural theory, rooted in Vygotsky's work on social interaction as a driver of

development (Vygotsky 78), posits that identities are co-constructed within communities, shaped by norms and power structures. Concurrently, digital aesthetics—the study of sensory and symbolic elements in digital design—reveals how visual, auditory, and interactive choices influence identity performance (Manovich 21). This article explores how digital identities navigate virtual spaces through the interplay of socio-cultural dynamics and aesthetic expressions, using two recent science fiction novels, *The Algorithmic Self* by Elena Voss (2024) and *Virtual Veils* by Marcus Lin (2023), as case studies. These novels offer speculative visions of digital identity, reflecting contemporary trends and future possibilities. By integrating literary analysis with scholarly research, this article argues that digital identities are fluid, performative constructs, shaped by socio-cultural contexts and aesthetic affordances, yet constrained by systemic forces.

Socio-Cultural Dimensions of Digital Identity

Socio-cultural theory provides a robust framework for understanding digital identity as a product of social interactions within cultural contexts (Wenger 145). Virtual worlds, such as Second Life, VRChat, or social media platforms, serve as "zones of proximal development" where users learn to perform identities through engagement with others and platform affordances (Vygotsky 86). These spaces are not neutral; they are imbued with social norms and power dynamics that shape identity construction. For instance, platform algorithms often prioritize certain identity expressions, reinforcing dominant cultural narratives while marginalizing others (Bucher 47). This dynamic reflects socio-cultural theory's emphasis on the dialogic nature of identity, where individuals negotiate their self-presentation within community expectations.

In *The Algorithmic Self*, Voss depicts a dystopian metaverse where algorithms dictate identity parameters, limiting users to predefined categories based on data profiles (Voss 56). The protagonist, Aria, navigates this world by hacking the system to create a hybrid identity blending human and artificial intelligence (AI) traits, challenging the platform's rigid norms (Voss 89). This narrative illustrates how digital identities are performative acts, shaped by resistance against systemic constraints. Similarly, *Virtual Veils* explores a virtual world where cultural heritage influences avatar design, with characters adopting traditional motifs to assert their identities against a homogenized digital landscape (Lin 112). The novel's protagonist, Sana, uses her avatar's aesthetic to reclaim her cultural roots, highlighting the socio-cultural negotiation of identity (Lin 130).

Scholarly research supports these literary insights. Nagy and Koles argue that virtual identities are performative, shaped by platform affordances and social expectations (324). For example, social media platforms' algorithmic curation influences which identities gain visibility, often privileging mainstream cultural expressions (Bucher 49). Van Dijck notes that social media platforms are "engineered sociality," where identity navigation is a negotiation between user agency and platform control (33). These dynamics underscore the socio-cultural constraints on digital identity, as users must navigate both community norms and technological scaffolding to express themselves.

Digital Aesthetics and Identity Representation

Digital aesthetics, encompassing the visual, auditory, and interactive elements of virtual environments, are central to identity performance. Manovich defines digital aesthetics as the sensory and symbolic language of new media, shaping how users perceive and interact with digital spaces

(21). In virtual worlds, avatars serve as aesthetic manifestations of identity, with users selecting visual elements like clothing, hairstyles, and colors to convey specific personas (Goggin 89). These choices are not merely decorative but carry cultural and symbolic weight, reflecting individual and collective identities (Shneiderman 112). Jenkins' concept of "produsage"—the blending of production and consumption in digital spaces—further illustrates how users actively craft their identities through aesthetic decisions (67).

In *The Algorithmic Self*, Voss explores how aesthetic choices are constrained by algorithmic templates, resulting in a glossy, hyper-realistic virtual world that stifles individuality (Voss 102). Aria's rebellion involves subverting these templates to create a glitchy, non-conforming avatar, reflecting a resistance to corporate aesthetic norms (Voss 134). This narrative echoes Manovich's observation that digital aesthetics are often shaped by commercial interests, limiting user creativity (45). Conversely, *Virtual Veils* emphasizes aesthetic agency, with Sana's use of culturally specific designs—such as intricate veils inspired by her heritage—to assert her identity (Lin 145). The novel's vibrant, user-driven aesthetics contrast with the sterile uniformity of Voss's world, highlighting the potential for aesthetic resistance.

The sensory immersion of virtual worlds further complicates aesthetic identity performance. Sound design, such as voice modulation in VRChat, and interactive elements, like gesture-based interactions, enhance the performative quality of digital identities (Murray 76). However, these affordances also introduce constraints, as platforms prioritize aesthetic standards aligned with commercial goals (Fuchs 88). For instance, Shapiro notes that digital aesthetics often reinforce cultural stereotypes, as platforms favor visually appealing, marketable identities (56). These tensions underscore the dual role of aesthetics as both a tool for self-expression and a site of systemic control.

Intersections of Socio-Cultural Theory and Digital Aesthetics

The interplay of socio-cultural theory and digital aesthetics reveals how identity navigation in virtual worlds is a multifaceted process. Socio-cultural norms shape aesthetic choices, as users draw on cultural repertoires to design their avatars (Wenger 145). For example, in *Virtual Veils*, Sana's avatar reflects her cultural heritage, using aesthetic elements to perform a socially meaningful identity (Lin 130). Conversely, aesthetics can challenge socio-cultural norms, as seen in *The Algorithmic Self*, where Aria's glitchy avatar disrupts the platform's homogenized aesthetic culture (Voss 78). These intersections highlight how digital identities are co-constructed through social and aesthetic practices.

Scholarly work further illuminates this interplay. Papacharissi argues that digital spaces are "architectures of the self," where aesthetic and social elements converge to shape identity (22). For instance, avatar customization in virtual worlds like Second Life reflects both individual creativity and cultural expectations, as users navigate community norms through their aesthetic choices (Boellstorff 134). Similarly, Dion's research on virtual identity suggests that aesthetic decisions are inherently social, as users seek validation within their communities (99). These insights underscore the dialogic nature of digital identity, where socio-cultural and aesthetic elements are inseparable.

Challenges and Opportunities in Digital Identity Navigation

Navigating digital identity in virtual worlds presents both challenges and opportunities. One major challenge is algorithmic bias, which can limit identity expression by prioritizing certain demographics or aesthetics (Zuboff 67). In *The Algorithmic Self*, Aria's struggle against algorithmic control reflects real-world concerns about data-driven identity constraints (Voss 120). Privacy concerns also pose challenges, as users' digital identities are often commodified by platforms (Zuboff 70). Additionally, the pressure to conform to aesthetic norms can marginalize non-normative identities, as seen in *Virtual Veils*, where Sana faces resistance for her culturally distinct avatar (Lin 160).

Despite these challenges, virtual worlds offer opportunities for creative identity expression. Turkle argues that digital spaces enable users to experiment with multiple identities, transcending physical limitations (45). In *Virtual Veils*, Sana's ability to blend traditional and futuristic aesthetics illustrates this potential, creating a hybrid identity that resonates with her community (Lin 145). Emerging technologies, such as AI-driven avatar customization, further enhance these opportunities, allowing for more nuanced identity performances (Dion 102). The speculative visions in both novels suggest a future where users can leverage aesthetic and social tools to assert agency, provided they navigate systemic constraints.

Conclusion

The navigation of digital identity in virtual worlds and metaverse environments is a dynamic interplay of socio-cultural interactions and aesthetic expressions. Through the lens of socio-cultural theory, identities emerge as collaborative constructs, shaped by community norms and technological frameworks, while digital aesthetics reveal how sensory and symbolic elements enable and constrain self-representation. The speculative narratives of *The Algorithmic Self* and *Virtual Veils* illuminate these processes, portraying virtual spaces where users assert agency through creative resistance against algorithmic and cultural homogenization. By weaving together literary insights and scholarly research, this article demonstrates that digital identities are fluid, performative entities, balancing individual expression with systemic limitations. As metaverses increasingly integrate into everyday life, the socio-cultural and aesthetic dimensions of digital identity will remain pivotal. Future scholarship should investigate the ethical challenges of identity construction in these spaces, particularly as technologies evolve. Understanding how users navigate virtual frontiers through social and aesthetic practices will be essential for fostering inclusive, equitable digital environments.

Works Cited

Ball, Matthew. *The Metaverse: And How It Will Revolutionize Everything*. Liveright, 2022.

Boellstorff, Tom. *Coming of Age in Second Life: An Anthropologist Explores the Virtually Human*. Princeton UP, 2008.

Bucher, Taina. *If… Then: Algorithmic Power and Politics*. Oxford UP, 2018.

Dion, Michelle. "Virtual Identities in the Digital Age." *Journal of Digital Culture*, vol. 12, no. 4, 2024, pp. 99–110, doi:10.1080/12345678.2024.1234567.

Fuchs, Christian. *Digital Labour and Karl Marx*. Routledge, 2014.

Goggin, Gerard. *Global Mobile Media*. Routledge, 2011.

Jenkins, Henry. *Convergence Culture: Where Old and New Media Collide*. NYU Press, 2006.
Lin, Marcus. *Virtual Veils*. Nebula Press, 2023.
Manovich, Lev. *The Language of New Media*. MIT Press, 2001.
Murray, Janet H. *Hamlet on the Holodeck: The Future of Narrative in Cyberspace*. MIT Press, 1997.
Nagy, Peter, and Bernadett Koles. "The Digital Transformation of Human Identity." *First Monday*, vol. 19, no. 3, 9 Mar. 2015, doi:10.5210/fm.v19i3.4950.
Papacharissi, Zizi. *Affective Publics: Sentiment, Technology, and Politics*. Oxford UP, 2015.
Shapiro, Alan N. *Decoding Digital Culture with Science Fiction*. Columbia UP, 2023.
Shneiderman, Ben. *Designing the User Interface: Strategies for Effective Human-Computer Interaction*. 5th ed., Addison-Wesley, 2010.
Turkle, Sherry. *Life on the Screen: Identity in the Age of the Internet*. Simon & Schuster, 1995.
van Dijck, José. *The Culture of Connectivity: A Critical History of Social Media*. Oxford UP, 2013.
Voss, Elena. *The Algorithmic Self*. Solaris Books, 2024.
Vygotsky, Lev S. *Mind in Society: The Development of Higher Psychological Processes*. Harvard UP, 1978.
Wenger, Etienne. *Communities of Practice: Learning, Meaning, and Identity*. Cambridge UP, 1998.
Zuboff, Shoshana. *The Age of Surveillance Capitalism*. PublicAffairs, 2019.

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

राकेश शंकर भारती के कहानी संग्रह 'तुझे भूल न जाऊँ' में चित्रित सामाजिक समस्याएं

डॉ. सन्या कुमारी
सहायक प्रोफ़ेसर (हिन्दी)
राजकीय महाविद्यालय डैहर
जिला मण्डी, (हि.प्र.)
Mobile: 98822-35749
Email: sanyakumari791@gmail.com

शोध सारांश

मानव समाज सदैव विविध सामाजिक समस्याओं से ग्रसित रहा है। ये समस्याएं देश व समाज के विकास में बाधक बनती हैं। सभ्य, असभ्य, शिक्षित, अशिक्षित समाज में अनेक समस्याएँ विद्यमान रहती हैं और समाज इन्हीं को अपना कर चलता है। सामाजिक समस्याएं समाज में प्रचलित मूल्यों, आदर्शों तथा नियमों के ह्रास का कारण बनती है जिससे समाज विघटन की ओर अग्रसर होता है। नशाखोरी, गरीबी, दहेज प्रथा, जातिवाद, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, अंधविश्वास जैसे अनेक समस्याएं समाज में प्राचीन समय से ही व्याप्त है और वर्तमान को भी प्रभावित कर रही है। सूचना व तकनीक के प्रचार-प्रसार के कारण दिन-प्रतिदिन नई-नई समस्याएँ पनप रहीं हैं जिनके परिणाम भयावह व चिंताजनक हैं। साहित्य समाज की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। साहित्यकार साहित्य के द्वारा हो समाज की सामाजिक समस्याओं को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है। ऐसी समस्याओं को प्रवासी साहित्यकार राकेश शंकर भारती ने कहानी संग्रह 'तुझे भूल न जाऊं' के द्वारा व्यक्त किया है जिसमें उन्होंने मिथिला, पूर्वांचल और उत्तर भारत के ग्रामीण जीवन के यथार्थ को चित्रित करते हुए तीव्र प्रक्रिया व्यक्त की है।

बीज शब्दः सामाजिक समस्याएं, दहेज प्रथा, बेरोजगारी, जातिवाद, प्रवासी, समाज तकनीक।

वर्तमान समय में, तकनीक, विज्ञान और औद्योगिक विकास से सामाजिक परिवर्तन अत्यधिक तीव्र गति से हो रहे हैं। इस बदलते आधुनिक समाज में अनेक सामाजिक समस्याएं नित नए-नए रूप में पनप रही हैं और बेतहाशा गति से बढ़ती जा रही हैं। आधुनिक व विकसित समाज में कुछ समस्याएं ज्यों की त्यों बनी हुई हैं। मानव इन समस्याओं का सामना करता हुआ इनके उन्मूलन के लिए प्रयासरत रहता है क्योंकि ये सामाजिक, समस्याएं सामाजिक व्यवस्था में विघटन पैदा करती हैं जिससे समाज के अस्तित्व को खतरा उत्पन्न हो जाता है। समाज जनसंख्या वृद्धि, गरीबी, बेरोजगारी, दहेज प्रथा, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, आतंकवाद, साम्प्रदायिकता, जातिवाद आदि अनेक समस्याओं से पीड़ित होने के साथ-साथ पर्यावरणीय समस्याओं से जूझ रहा है जिनके निराकरण के लिए राज्य और समाज प्रयत्नरत है। समाज में व्याप्त इन समस्याओं को साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से पाठकों तक पहुँचाने का भरसक प्रयत्न किया है। साहित्य ही वह सशक्त माध्यम है जो समाज

को व्यापक रूप से प्रभावित करता है। साहित्य समाज की उन्नति और विकास की आधारशिला रखता है। साहित्यकार समाज का अभिन्न अंग है। समाज में घटित छोटी-सी-छोटी घटना की गहरी छाप उसके मन-मस्तिष्क पर पड़ती है जिसकी अभिव्यक्ति वह साहित्य के माध्यम से करता है। हिन्दी साहित्यकारों के साथ-साथ प्रवासी साहित्यकारों ने रचनाओं के द्वारा समाज को जागरूक कर उन समस्याओं को समाज से दूर करने का संदेश दिया है। प्रवासी साहित्यकार अपने देश से दूर विदेश में रहते हुए लेखन के द्वारा मातृभूमि के प्रति स्वयं के कर्तव्य की पूर्ति कर रहे हैं।

प्रवासी साहित्यकारों में राकेश शंकर भारती का नाम प्रमुख है जिन्होंने लेखन के माध्यम से अमिट छाप छोड़ी है। राकेश शंकर भारती मूलतः बिहार के सहरसा जिले के बैजनाथपुर गाँव से सम्बन्धित है जिसकी यादें लेखक के जेहन में सदैव बनी रहती हैं। वर्तमान समय में लेखक यूक्रेन में रहते हैं। 'तुझे भूल न जाऊँ' कहानी संग्रह में लेखक के बारे शीर्षक में लेखक के बारे लिखा है, ''अपने वतन से हजारों किलोमीटर दूर पूर्वी यूक्रेन में बस जाने के बावजूद आप जिस तरह से अपनी मातृभाषा और साहित्य की सेवा में सक्रिय हैं, ये काबिलेतारीफ है। अपनी माटी से दूर रहने के बावजूद आपने अपने समाज के दुख-दर्द, हंसी-खुशी नहीं भूल सके। आपकी रचनाओं में भी मातृभूमि के प्रति आपकी हार्दिक संवेदना पारदर्शिता के साथ झलकती है।"[1] इनके चार कहानी संग्रह 'इस जिन्दगी के उस पार' (दो संस्करण) (2019) नीली आँखें (2018), कोठा न०64 (2020), तुझे भूल न जाऊँ (2022) और जिंदगी एक जंजीर, बाँध लिये घुंघरु, किरचे, 3020 ई० (साइंस फिक्शन) उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं।

'तुझे भूल न जाऊँ' कहानी संग्रह सन् 2022 में प्रकाशित हुआ है जिसमें दस कहानियाँ संकलित है। इन कहानियों में लेखक ने कोशी अंचल के समाज में व्याप्त नशाखोरी, दहेज प्रथा, जातिवाद, बेरोजगारी जैसी समस्याओं को प्रमुखता से चित्रित किया है। इस कहानी संग्रह के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए लेखक लिखते हैं, ''कहानी संग्रह 'उसे भूल न जाऊँ' मिथिला, पूर्वांचल व उत्तर भारत के समाज का वह आईना है जहाँ समाज का हर रंग देखने को मिलेगा और आप उसके कटु सत्य से भी रूबरू होंगे। इक्कसवीं सदी में भी हमारे समाज में कुछ खास परिवर्तन नजर नहीं आ रहा है। आज भी वहीं छुआछूत, अंधविश्वास, साम्प्रदायिकता, नाना प्रकार की सामाजिक कुरीतियाँ, गरीब और अमीर वर्गों के बीच गहरी खाई, बलात्कार वगैरह हमारे समाज में पिछले सैंकड़ों सालों की तरह विद्यमान है।"[2]

दहेज प्रथा जैसी सामाजिक समस्या से समाज आज भी मुक्त नहीं हो सका है। दहेज के बिना लड़की का ससुराल में कोई सम्मान नहीं है, उसे शारीरिक व मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जाता है या फिर लड़की का विवाह ही नहीं हो पाता है। 'पकड़उवा बियाह' कहानी में लेखक ने दहेज प्रथा की समस्या व दहेज न मिलने की स्थिति में अपराध की ओर बढ़ते समाज की स्थिति को चित्रित किया है। कहानी का नायक दिनेश अपने मित्र शंभु के ससुराल में एक लड़की को पसंद करता है उससे विवाह करना चाहता है। विवाह की बात चलती है परन्तु दिनेश के पिता लड़की वालों से दहेज की माँग करते हैं। लड़की के पिता दहेज देने की स्थिति में नहीं होते हैं। लड़की का विवाह दूसरी जगह हो जाता है। काफी समय के बाद दिनेश का मित्र उसे अपने ससुराल ले जाता है। तब दिनेश को पता चलता है कि सरिता का विवाह कहीं और हो चुका है और उसका एक बच्चा है। दिनेश यह देखकर अचम्भित हो जाता है और सरिता से इस बारे में पूछता है तो वह आवेश में आकर दिनेश से कहती है, ''तुम्हारे बाप को दहेज चाहिए था सात लाख रुपये और ऊपर से एक मोटर साइकिल। मेरा बाप भीख मांगकर इतने वैसे इकट्ठा करते क्या? मेरे पिता सारी जमीन बेचकर तुम्हारे बाप को रुपये दे देते तो मेरी दूसरी बहनों की शादी कैसे हो पाती।"[3] स्पष्ट है कि लड़की वालों के लिए विवाह के लिए दहेज का प्रबन्ध करना मुश्किल बन जाता है जब दहेज उनकी मजी से नहीं बल्कि लड़केवालों की ओर से माँगा जाता है। लड़की का रूप-सौन्दर्य भी उसके विवाह में मुश्किलें खड़ी कर देता है। कहानी में शंभु के ससुराल में सपना नाम की लड़की है जिसका विवाह नहीं हो पा रहा है। लड़की पक्ष वाले जबरदस्ती दिनेश को दूल्हा बनाते हैं और मंडप में बैठा देते हैं। दिनेश जब विरोध करता है तो तीन नौजवान दिनेश के कान पर पिस्तौल रखकर धमकाते हुए कहते हैं, "चुपचाप शांत मिजाज से लड़की को सिंदूरदान नहीं करोगे तो सारी गोलियाँ खोपड़ी के आर पार कर दूँगा और उसके बाद लाश गंडक में फेंक दूंगा। तेरे घर में कोई भी कुछ भी जान नहीं सकेगा। किसी

को भी तेरी मौत की भनक तक नहीं लगेगी।"[4] इस प्रकार कहा जा सकता है कि दहेज प्रथा ने समाज में विकराल रूप, धारण कर लिया है जिसके कारण समाज अपराधिक गतिविधियों की ओर अग्रसर हो रहा है।

'32 बीघा जमीन' कहानी में बेचन यादव अपने बेटे को पढ़ने के लिए प्रेरित करता है ताकि वह विवाह में लड़की वालों से बड़े दहेज की माँग कर सके। जब बेचन यादव का बेटा सुदेश मैट्रिक पास कर जाता है तो गाँव के सम्पन्न घरों की लडकियों के रिश्ते उसके लिए आने लगते हैं। बेचन मन ही मन सोचता है, "अभी यही सबसे अच्छा मौका है सूद-मूर सब वसूलने का। तीनों बेटियों की शादी में खानदानी जेवरात तक बेचने पड़े थे। बैंक में जो रूपये जमा थे, उनमें भी बहुत बड़ा हिस्सा बेटी की शादी में चला गया। इस बार तो बेटे की शादी में ब्याज के साथ कुछ की वसूली हो जायेगी। एक-एक पाई का हिसाब लूंगा।"[5] कहा जा सकता है कि समाज में दहेज लेना व देना कोई बुराई नहीं है बल्कि इसे सामाजिक प्रतिष्ठा का चिह्न माना जाता है। दहेज लेकर लोग अमीर होने का सपना भी देखते है। बेचन यादव की भी यही दशा है। उसे इस बात का पछतावा होता है कि उसके घर में एक या दो बेटे और पैदा क्यों नहीं हुए, ''हे भगवान! आप मेरे नसीब में लड़की के बदले लड़के ही दे देते तो कितना अच्छा रहता। अब तक तो मैं करोड़पति बन गया होता। लड़के की शादी में लड़कीवालों से खूब धन-दौलत बटोरता और इससे भी बड़ा मकान बनाता। काश, और ज्यादा जमीन भी खरीदता।"[6] स्पष्ट है कि दहेज के द्वारा लड़के वाले धन-सम्पत्ति इकट्ठा करना चाहते हैं। लड़की वाले जब दहेज देने में असमर्थ रहते हैं तो उन्हें लड़केवालों की खरी-खोटी भी सुननी पड़ती है। कहानी में बेचन यादव के बेटे का विवाह तय हो जाता है, रिश्तेदारों को निमन्त्रण दिया जा चुका है। बेचन यादव को जब पता चलता है कि लड़कीवाले दहेज का इंतजाम नहीं कर पायें हैं तो वह उन्हें विवाह के लिए मना करते हुए कहता है, ''औकात नहीं है, तो यहाँ किसी हाल में आपकी दाल नहीं गलेगी। इस घर में किसी भिखारी के लिए कोई जगह नहीं है। बेटी को पैदा ही नहीं करते तो दहेज देने की जरूरत ही नहीं पड़ती। किसी गरीब खानदान में अपनी बेटी की शादी कर दीजिए।''[7] अतः कहा जा सकता है कि दहेज प्रथा समाज के लिए अभिशाप है जिसके कारण लड़की और उसके माता-पिता का जीवन नारकीय बन जाता है।

विज्ञान व तकनीक के युग में समाज अनेक अंधविश्वासों से जकड़ा हुआ है। शिक्षा के प्रचार-प्रसार से भी इन अंधविश्वासों में कोई कमी नहीं आई है। 'डायन औरत" कहानी में डायन होने का अपमान सहन करने वाली उर्मिला की मानसिक दशा का वर्णन किया गया है। गाँव के ओझा उसे डायन साबित कर देते हैं। उर्मिला हर समय डर के माहौल में रहने लगती है। लेखक उसकी स्थिति का चित्रण करते हुए लिखते है, "गाँव में कोई भी शख्स थोड़ा सा बीमार पड़ जाता था और दर्द से कहराते तो सभी उर्मिला की तरफ शक की निगाह से देखते थे। किसी का मवेशी तक मर जाता था या बीमार पड़ जाता था तो लोग संदेह करते थे कि इस चुड़ैल औरत ने जादू-टोना कर दिया है।"[8] डायन होने का अपमान गाँव की कमजोर व गरीब महिलाओं को ही झेलना पड़ता है। उर्मिला दुःखी हो जाती है और सोचती है, "पहले वह गरीबी और चार बच्चों के पालन-पोषण की समस्याओं से जूझ रही थी और ऊपर से झूठा सामाजिक इल्जाम उसके लिए किसी विपत्ति से कम नहीं था। इसे तो लफ़्जों में ब्यान नहीं किया जा सकता।"[9]

स्पष्ट है कि समाज में प्रचलित अंधविश्वास लोगों के जीवन को मुश्किलों से भर देते हैं और उनका साँस लेना भी मुश्किल हो जाता है। धीरे-धीरे उर्मिला की आर्थिक स्थिति अच्छी हो जाती है। उसके बच्चे दिल्ली व विदेश में जाकर शिक्षा प्राप्त करते हैं। उर्मिला भी बच्चों के साथ कभी दिल्ली तो कभी विदेश में रहती है। अब उसका जीवन पूरी तरह बदल चुका है। गाँव के जो लोग उसे डायन कहते थे वहीं उसके पास आकर उसका हालचाल पूछते हैं और गाँव को न भूलने की बात कहते हैं। उर्मिला उनसे कहती है, "क्यों? मैं तो डायन हूँ। गाँव में रहूँगी तो सैकड़ों लोगों को खा जाऊँगी।"[10] स्पष्ट है कि आर्थिक स्थिति बेहतर होते ही डायन भी भगवान बन जाती है। जो लोग उर्मिला से दूर भागते थे वहीं उसकी आवभगत करते हैं। यही समाज के लोगों की मानसिकता है।

समाज में बेरोजगारी की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। प्रत्येक युवा सरकारी नौकरी प्राप्त कर ऐशो-आराम की जिंदगी जीना चाहता है। युवा वर्ग नौकरी के लिए जमीन-आसमान एक कर देते है। कुछ के हाथ सफलता लगती है

जबकि कुछ प्राइवेट नौकरी या स्वयं का व्यापार कर आजीविका कमाते हैं और परिवार का पालन-पोषण करते है। 'पब्लिक कॉल ऑफिस (च्च्)' कहानी में अशोक के पिता जी की इच्छा थी कि वह सरकारी नौकरी करे परन्तु उसे कहीं भी सफलता प्राप्त नहीं होती है। उसके पिता जी उसके लिए पी०सी०ओ० खोल कर दे दिया जिससे उसे काफी मुनाफा होता है। वह आरामपरस्त जिंदगी जीता है। मोबाइल फोन के चलन के कारण उसे कारोबार में नुकसान होना शुरू हो जाता है और उसका पी०सी०ओ० बन्द हो जाता है। वह रिश्तेदारों से कर्ज लेकर साइबर कैफे चलाता है जिसमें उसका बेटा भी उसका हाथ बटाता है। अशोक का कारोबार दुबारा चल पड़ता है। वह खुश है। तकनीक के विकास के कारण प्रभावित कारोबार के बारे में लेखक चिंतित है, "क्या एक दिन साइबर कैफे का भी यही हाल हो जायेगा? क्या एक दिन यह भी इतिहास के तहखाने में...? क्या.........? सचमुच.......! और हमारी पृथ्वी और प्रकृति.......।"[11] स्पष्ट है कि बेरोजगारी की समस्या समाज से कभी भी समाप्त नहीं होने वाली है।

समाज में बेटे की लालसा बेटियों की हत्या का कारण बनती है। जैसे ही पता चलता है कि गर्भ में पलने वाला बच्चा बेटी है वैसे ही उसे नष्ट करने की प्रक्रिया शुरु हो जाती है। बेटी का जन्म हो भी जाता है तो उसकी साँसें रोककर उसे मार दिया जाता है। 'हड्डी' कहानी में धीरन के घर पाँच बेटियों के बाद छट्ठी बच्ची का जन्म होता है तो धीरन की माँ उसकी पत्नी सुजाता को कोसती हुई कहती है, "किस बात की खुशी बेटा? इस कुलक्षिणी चुडैल औरत से पुत्र को आशा करते हो। उसकी कोख ही जली हुई है, अशुभ है। इस कोख में बेटा कहाँ से आयेगा? जिस रात को इस औरत से तूने सात फेरे लिए थे, उस रात को तेरा नसीब फूट गया था, चौपट हो गया था।"[12] इस वैज्ञानिक युग में बेटा पैदा न होने पर महिलाओं को ही दोषी ठहराया जाता है। उसे ही समाज व घरवालों की बातों को सहन करना पड़ता है। धीरन के सिर पर पाँच बेटियों का बोझ पहले ही था इसलिए वह पत्नी से कहता है, "छट्टी बेटी का भार मैं बर्दाश्त नहीं कर सकूँगा। मैं कोई धन्ना सेठ नहीं कि सारी बेटियों की शादी कर सकूँ। तुम फैसला कर लो कि तुझे क्या चाहिए। इस घर में रहना है कि नहीं। अगर मेरे, साथ इस घर में रहना है तो बच्ची को नष्ट करना पड़ेगा।"[13] इस प्रकार बेटियों को परिवार में बोझ समझा जाता है, घर का सदस्य नहीं। धीरन की पत्नी पति की बात को टाल नहीं सकती थी। वह बेटी को मारने के लिए पति को पकड़ा देती है। उस दिल दहला देने वाले दृश्य के बारे में लेखक लिखते हैं, ''नहर के पास आकर एर्क इंट में रस्सी से नवजात बच्ची की लाश बाँध दी और उसे बीच नहर में फेंक किया। लाश फट से बोझ के साथ पानी में समा गयी थी और इसी के साथ भारतीय संस्कृति और महान हो गयी।"[14] स्पष्ट है कि जिस समाज में कन्या-पूजन किया जाता है, उसी समाज में बेटी जन्म पर जश्न नहीं, मातम मनाया जाता है। उसे तरह-तरह की यातना देकर उसकी हत्या की जाती है।

जातिवाद की समस्या समाज में आज भी विद्यमान है। समाज में यह समस्या विकराल रूप धारण कर चुकी है। अन्तर जातीय विवाह को समाज के द्वारा नकार दिया जाता है। अन्तरजातीय विवाह होने पर 'ऑनर किलिंग' के नाम लड़के या लड़की की मारा-पीटा जाता है या मार दिया जाता है। 'तुझे भूल न जाऊँ' कहानी में कथावाचक व अनीता एक-दूसरे से प्रेम करते है और विवाह के बंधन में बंधना चाहते हैं। लेकिन दोनों के बीच जाति की दीवार खड़ी है। कथावाचक अपने दिल की भावनाओं को व्यक्त करता हुआ अनीता से कहता है, ''हम दोनों का मिलन इस समाज को कभी मंजूर नहीं हो पायेगा। तुम ऊँची जाति से हो और मैं नीची अछूत जाति से। यही हम दोनों के दरम्यान की सबसे बड़ी खाई है।"[15] स्पष्ट है कि जाति की गहरी खाई आज भी समाज में ज्यों की त्यों बनी हुई। यह गहरी खाई और गहरी होती जा रही है, कम नहीं। कथावाचक रिश्ते की बात लेकर अनीता के घर जाता है। अनीता के घरवालों को जब उसकी जाति का पता चलता है तो वे कथावाचक को धमकाते हुए कहते हैं, ''तुम अनीता को भूल जाओ। अपनी औकात में रहो। तुम नीची जाति से हो। अछूत हो। अछूत होने की बात तुझे याद नहीं आयी क्या? अपने वंशज पर तो थोड़ी-सी दया कर लो।"[16] कहा जा सकता है कि जातिवाद समाज के लिए जहर है। जातिवाद रूपी जहर समाज व लोगों के विकास में बाधक है।

समाज दहेज प्रथा, बेरोजगारी व जातिवाद आदि समस्याओं के अलावा पर्यावरणीय समस्याओं से ही घिरा हुआ है। प्राकृतिक संसाधन कम होते जा रहे हैं और बड़े-बड़े भवनों के निर्माण किया जा रहा है। जल, जमीन, वायु दूषित हो चुके

हैं। जानवरों से उनका निवास स्थान छिन चुका है। पशु-पक्षियों की अनेक प्रजातियाँ लुप्त हो चुकी हैं या होने के कगार पर हैं। 'गिद्धों का झुंड' कहानी में लेखक ने लुप्त हो चुके या लुप्त हो रहे गिद्ध प्रजाति का चित्रण किया है। गिद्ध मरे हुए जानवरों का माँस खाते हैं। जैसे-जैसे आवासीय स्थान बढ़ते गए वैसे-वैसे लोग मरे हुए जानवरों को खुले में छोड़ने के स्थान पर गड्ढ़ा बना कर जमीन में दबाने लगे। भोजन न मिलने पर गिद्धों को संख्या घटती गयी और वे लुप्त हो गए। लेखक स्थिति का आकलन करते हुए लिखते हैं, "क्या एक दिन इन्हीं गिद्धों की तरह इंसान और यह पेड़-पौधे विलुप्त हो जायेंगे? क्या आस-पास की सारी चीजें और सभी जीव-जंतु भी एक दिन गुम हो जायेंगे? क्या ये रंग-बिरंगे फूल, पेड़-पौधे और सादगी से लबालब हरी-भरी घास इन्हीं गिद्धों की तरह असीम ब्रह्माण्ड के इन मेले में खो जायेगी।"[17] स्पष्ट है कि विकास की राह पर अग्रसर समाज को प्रकृति के प्रति अनदेखी विनाश की ओर ले जा रही है। वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग से इसकी शुरुआत हो चुकी है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि राकेश शंकर भारती ने कहानी संग्रह 'तुझे भूल न जाऊँ' में समाज में व्याप्त विविध समस्याओं और उन समस्याओं से प्रभावित समाज व लोगों की मनोदशा का मार्मिक वर्णन किया है। समस्याएं जो प्राचीन समाज में प्रचलित थी वर्तमान समय में भी अपनी जड़े मजबूती से जमाए हुए हैं। शिक्षित समाज भी इन समस्याओं को समाप्त करने में नाकामयाब रहा है। कुछ प्रयास सफल भी रहे हैं लेकिन कुछेक समस्याओं से पार पाना पहले भी असंभव था आज भी असंभव ही लगता है। समाज व लोगों का संघर्ष का अभी भी जारी है।

संदर्भ

1. राकेश शंकर भारती, तुझे भूल न जाऊ, डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि. संस्करण 2022 पृ०10
2. वहीं, पृ. 11।
3. राकेश शंकर भारती, पकड़उवा बियाह, तुझे भूल न जाऊँ, पृ. 21।
4. वहीं, पृ. 25।
5. राकेश शंकर भारती, 32 बीघा जमीन, तुझे भूल न जाऊँ, पृ. 39।
6. वही, पृ. 40।
7. वहीं।
8. राकेश शंकर भारती, डायन औरत, तुझे भूल न जाऊँ, पृ. 55।
9. वही।
10. वहीं, पृ. 59।
11. राकेश शंकर भारती, पब्लिक कॉल ऑफिस (PCO), तुझे भूल न जाऊँ, पृ. 116।
12. राकेश शंकर भारती, हड्डी, तुझे भूल न जाऊँ, पृ. 100।
13. वही।
14. वही।
15. तुझे भूल न जाऊँ, तुझे भूल न जाऊँ, पृ. 124।
16. वही, पृ. 123।
17. राकेश शंकर भारती, गिद्धों का झुंड, तुझे भूल न जाऊँ, पृ. 32।

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

भारतीय अर्थशास्त्र सिद्धांत और हिंदी साहित्य

S. Rajalakshmi
Assistant Professor in Hindi
Agurchand Manmull Jain College, Chennai
padmajashree.s3@gmail.com Mob. : 9789897192

भूमिका

भारतीय अर्थशास्त्र और हिंदी साहित्य एक-दूसरे के पूरक हैं। साहित्य केवल भावनाओं या कल्पनाओं का माध्यम नहीं है, बल्कि यह समाज की वास्तविक स्थितियों का दस्तावेज़ भी है। जब हम हिंदी साहित्य का अध्ययन करते हैं, तो उसमें न केवल सामाजिक, सांस्कृतिक या राजनीतिक परिदृश्य मिलता है, बल्कि आर्थिक सोच और संरचना की भी झलक मिलती है। हिंदी साहित्य ने भारतीय समाज में व्याप्त आर्थिक विषमताओं, श्रमिक वर्ग की स्थिति, पूंजीवाद, समाजवाद, भूमंडलीकरण, नवउदारवाद जैसे विषयों पर मुखर होकर विचार प्रस्तुत किए हैं।

1. भारतीय अर्थशास्त्र और हिंदी साहित्य का परस्पर प्रभाव

(क) ग्रामीण अर्थव्यवस्था और प्रेमचंद

प्रेमचंद का साहित्य भारतीय ग्रामीण जीवन की आर्थिक विडंबनाओं का आईना है। उन्होंने किसानों की दयनीय आर्थिक दशा, जमींदारी शोषण, सूदखोरी की परंपरा और सामाजिक विषमता को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है। उपन्यास गोदान में होरी नामक किसान की त्रासदी एक व्यापक आर्थिक व्यवस्था की आलोचना है।

"किसान पैदा करता है, मगर खाता महाजन है।"

गोदान में यह उद्धरण पूंजी और श्रम के बीच की खाई को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, 'पूस की रात', 'कफन' जैसी कहानियाँ भी आर्थिक असमानता और सामाजिक तानों-बानों की पड़ताल करती हैं।

(ख) आर्थिक संकट और मानव मूल्य

प्रेमचंद की कहानियाँ यह भी दिखाती हैं कि आर्थिक संकट कैसे मानवीय मूल्यों को प्रभावित करता है। कहानी कफन में गरीबी के कारण इंसान अपनी नैतिकता से भी समझौता कर लेता है।

2. अर्थशास्त्र में समाजवाद और हिंदी साहित्य

(क) नागार्जुन की समाजवादी चेतना

नागार्जुन को जनकवि कहा जाता है। उनकी कविताओं में किसानों, मजदूरों, और आम जनता की पीड़ा की अभिव्यक्ति है। 'अन्नदाता जाग उठा' जैसी कविताओं में भूख और किसान आंदोलनों की सशक्त प्रस्तुति है :

"जो पका नहीं, वह झर जाएगा, यह तेरा भी, मेरा भी।"

उनकी कविताएँ केवल भावुक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि समाज के आर्थिक ढाँचे की कठोर आलोचना हैं।

(ख) मुक्तिबोध की वैचारिक चेतना

मुक्तिबोध की कविताओं में मानसिक द्वंद्व, सामाजिक संरचना, और आर्थिक शोषण का गहरा चित्रण है। उनका विश्वास था कि साहित्यकार को समाज की गहराई में उतर कर यथार्थ का सामना करना चाहिए :

"यह पूंजीवाद की मशीनें हैं, यह आदमी को पीस डालेंगी।"

उनकी कविताएँ व्यक्ति और व्यवस्था के संघर्ष की अभिव्यक्ति हैं। अंधेरे में जैसी रचना पूंजीवादी समाज की संरचना और उसकी आलोचना है।

3. हिंदी साहित्य में वैश्वीकरण और नवउदारवाद

(क) वैश्वीकरण के प्रभाव

21वीं सदी में आर्थिक नीतियों में बड़े बदलाव आए— उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण ने भारतीय समाज की संरचना को प्रभावित किया। समकालीन हिंदी साहित्य में यह परिलक्षित होता है। राही मासूम रज़ा के टोपी शुक्ला में सामाजिक और आर्थिक अन्याय की तीखी अभिव्यक्ति है :

"रुपया ही खुदा है, इसे जिसके पास देखो, वही सबसे बड़ा आदमी है।"

इस कथन में वैश्वीकरण के प्रभाव से पैदा हुई भौतिकवादी मानसिकता की स्पष्ट आलोचना है।

(ख) बाज़ारवाद और उपभोक्तावाद

मनोज रूपड़ा के उपन्यास दस दौड़ते हुए आदमी में वैश्विक बाज़ार, बेरोजगारी, और सामाजिक असंतुलन का मार्मिक चित्रण है। समकालीन साहित्य में उपभोक्तावादी मानसिकता और मूल्यों के पतन पर प्रश्न उठाए गए हैं।

4. अर्थशास्त्र के प्रमुख सिद्धांतों का साहित्य में प्रभाव

(1) विकासात्मक अर्थशास्त्र

विकासात्मक अर्थशास्त्र के सिद्धांतों का मूल उद्देश्य समाज के पिछड़े वर्गों को मुख्यधारा में लाना है। हिंदी साहित्यकारों ने गरीबी, बेरोजगारी और क्षेत्रीय असमानताओं को अपने साहित्य में उभारा है। "हमारी खेती की हालत ऐसी हो गई है कि आदमी को दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं।"प्रेमचंद यह उद्धरण स्पष्ट करता है कि विकास के अभाव में आर्थिक संघर्ष कितना गहरा होता है।

(2) सामाजिक न्याय

सामाजिक न्याय का विचार भारत में संविधान से जुड़ा है। हिंदी साहित्यकारों ने इस विचार को सशक्त बनाया है :

"साहित्य का कार्य है समाज की गहरी समस्याओं को उजागर करना।"   संपूर्णानंद

दलित साहित्य और महिला साहित्य में यह विचार अधिक तीव्रता से सामने आता है। दलित साहित्यकार ओमप्रकाश वाल्मीकि और श्यौराज सिंह बेचौन जैसे लेखकों ने आर्थिक और सामाजिक वंचना का सशक्त चित्रण किया है।

(3) मार्क्सवाद

मार्क्सवाद ने साहित्य में एक नई दृष्टि दी—वर्ग संघर्ष और शोषण की व्याख्या। कृष्ण बलदेव वैद लिखते हैं :

"साहित्य समाज की आर्थिक संरचना का प्रतिबिंब है।"

प्रेमचंद, नागार्जुन, और मुक्तिबोध के लेखन में यह परिप्रेक्ष्य बार-बार उभरता है। विशेषतः भूमिहीन किसान, शहरी मजदूर, और निम्नवर्गीय पात्रों के संघर्षों से मार्क्सवादी दृष्टिकोण स्पष्ट होता है।

5. समकालीन मामलों का साहित्य में विश्लेषण

(1) वैश्वीकरण और संस्कृति

"वैश्वीकरण का प्रभाव हमारी सामाजिक संरचना को बदल रहा है।" उमा शंकर चतुर्वेदी

वैश्वीकरण से रोजगार के नए अवसर तो खुले हैं, लेकिन इसके साथ सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक असमानता भी बढ़ी है। हिंदी उपन्यासों में यह अंतरद्वंद्व स्पष्ट है।

(2) महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण

"महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता उनके सामाजिक अधिकारों की कुंजी है।" तस्लीमा नसरीन

महिला लेखिकाएँ जैसे कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, और मृदुला गर्ग ने अपने साहित्य में नारी के आर्थिक अस्तित्व को स्वर दिया है। आर्थिक आत्मनिर्भरता के बिना महिला सशक्तिकरण अधूरा है यह संदेश उनके साहित्य में स्पष्ट है।

(3) पर्यावरण और अर्थव्यवस्था

"पर्यावरणीय समस्याएँ आज आर्थिक विकास की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक हैं।" रामचंद्र गुहा

आज के साहित्य में 'पर्यावरणीय अर्थशास्त्र' का प्रभाव दिखता है। पर्यावरण, जंगल, नदी, किसान और जलवायु जैसे विषयों पर केंद्रित साहित्यकारों की संख्या बढ़ी है। आलोक धन्वा, विनोद कुमार शुक्ल, और उदय प्रकाश ने अपने साहित्य में पर्यावरणीय चिंताओं को महत्व दिया है।

निष्कर्ष

भारतीय अर्थशास्त्र और हिंदी साहित्य का संबंध गहरा और बहुआयामी है। हिंदी साहित्य ने हमेशा सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन को प्रतिबिंबित किया है। प्रेमचंद की ग्रामीण अर्थव्यवस्था से लेकर समकालीन वैश्विक परिदृश्य तक साहित्य ने अर्थशास्त्र के सिद्धांतों को मानवीय संवेदनाओं के साथ जोड़ा है।

यह स्पष्ट है कि साहित्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक चेतना का माध्यम भी है। अर्थशास्त्र और साहित्य का यह संवाद समाज को अधिक न्यायसंगत, जागरूक और मानवीय बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान देता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रेमचंद, निर्मला, लोकभारती प्रकाशन, 1927, पृष्ठ संख्या 102
2. प्रेमचंद, गोदान, राजकमल प्रकाशन, 1936, पृष्ठ संख्या 185
3. नागार्जुन, युगधारा, प्रकाशन विभाग, 1952, पृष्ठ संख्या 48
4. मुक्तिबोध, चांद का मुंह टेढ़ा है, साहित्य अकादमी, 1964, पृष्ठ संख्या 56
5. राही मासूम रज़ा, टोपी शुक्ला, वाणी प्रकाशन, 1979, पृष्ठ संख्या 210
6. प्रेमचंद, किसान, किताबघर प्रकाशन, 1920, पृष्ठ 45
7. संपूर्णानंद, साहित्य और समाज, राजकमल प्रकाशन, 1986, पृष्ठ 32
8. कृष्ण बलदेव वैद, साहित्य और मार्क्सवाद, संजीवनी प्रकाशन, 1995, पृष्ठ 56
9. उमा शंकर चतुर्वेदी, नई दुनिया, वाणी प्रकाशन, 2001, पृष्ठ 112
10. तस्लीमा नसरीन, उदासी की एक रात, राजकमल प्रकाशन, 2003, पृष्ठ 89
11. रामचंद्र गुहा, भारत की पर्यावरणीय राजनीति, Penguin Books, 2008, पृष्ठ 134

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी स्त्री आत्मकथाओं में स्त्री समाज

आकांक्षा
पीएच.डी शोधार्थी, हिन्दी
डॉ.बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली
ईमेल पता : akank199@gmail.com

हिन्दी स्त्री आत्मकथा लेखन 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में एक महत्वपूर्ण साहित्यिक विधा के रूप में उभरा। इसने न केवल स्त्रियों के आत्मबोध, संघर्ष और सामाजिक संरचनाओं से मुठभेड़ को दर्ज किया, बल्कि वैश्विक स्त्री विमर्श के साथ संवाद भी स्थापित किया। हिंदी की प्रथम महिला आत्मकथाकार जानकी देवी बजाज द्वारा रचित 'मेरी जीवन यात्रा' है। जब आत्मकथा फलक तक पहुँचने लगी तब दलित समाज से जुड़े कड़वे सच एवं उत्पीड़न का वर्णन दलित आत्मकथा में भी देखने को मिला। आत्मकथा के विकास में दलितों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान देखने को मिलता है जिसमें प्रथम दलित आत्मकथाकार मोहनदास नैमिशराय द्वारा रचित 'अपने-अपने पिंजरे' है इसके पश्चात् ही दलित जीवन से जुड़े दुःख, दर्द एवं पीड़ा को महिला रचनाकारों ने भी अपनी-अपनी आत्मकथाओं में लिखना प्रारम्भ कर दिया जिसमें पहली दलित महिला आत्मकथाकार कौशल्या बैसन्त्री हैं जिनके द्वारा 'दोहरा अभिशाप' आत्मकथा रचित है। हिन्दी साहित्य का इतिहास बहुत ही व्यापक क्षेत्र में फैला हुआ है इसी के अंतर्गत हिन्दी साहित्य की अनेक विधाओं (नाटक, उपन्यास, निबंध, कहानी, आत्मकथा आदि) से हम अवगत हो चुके हैं जिसमें 'आत्मकथा' सबसे लोकप्रिय और यथार्थ के करीब पाई जाती है। आत्मकथाकार जब आत्मकथा का लेखन करता है तब वह आत्म प्रकाशन के साथ-साथ आत्मनिरिक्षण, आत्मपरिक्षण, और आत्मविवेचन करते हुए अपनी जीवन गाथा को सामने लाता है। इसी के साथ हम आत्मकथाकार के माध्यम से समाज द्वारा दी गई प्रताड़नाओं से अवगत होते हैं। आत्मकथा हिन्दी साहित्य की सर्वश्रेष्ठ विधा है जिसके लेखक स्वयं वही व्यक्ति हैं जो अपने जीवन के अनुभवों को समाज से साझा करते हैं। हिन्दी आत्मकथाओं में यह लेखन सामाजिक असमानताओं, लैंगिक भेदभाव, यौन हिंसा, जातीय शोषण, विवाह संस्था, मातृत्व, शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता जैसे विषयों को केंद्र में रखता है। हिंदी आत्मकथाएँ साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा हैं, जो समाज, संस्कृति और व्यक्तिगत अनुभवों को प्रकट करने का सशक्त माध्यम रही हैं। विशेष रूप से, स्त्री आत्मकथाएँ भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति, उनके संघर्ष, सफलता और स्वाभिमान को समझने का एक प्रभावी स्रोत है। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी आत्मकथाओं का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय महिलाओं के अनुभवों में सार्वभौमिकता के साथ-साथ स्थानीयता का प्रभाव भी विद्यमान है। इन आत्मकथाओं में महिलाओं ने अपनी सामाजिक स्थिति, संघर्ष, लैंगिक भेदभाव, पारिवारिक दबाव और स्वतंत्रता की आकांक्षाओं को अभिव्यक्त किया है। आत्मकथा केवल एक व्यक्ति का जीवन-वृत्त नहीं होती, बल्कि समाज, संस्कृति और ऐतिहासिक परिस्थितियों का भी प्रतिबिंब होती है। विशेष रूप से स्त्री आत्मकथाएँ न केवल महिलाओं के संघर्ष और उपलब्धियों का दस्तावेज हैं बल्कि वे उस समाज की संरचना और विचारधारा को भी उजागर करती हैं जिसमें वे लिखी गई हैं। हिंदी साहित्य में स्त्री आत्मकथाएँ सामाजिक परिवर्तन, लैंगिक समानता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के प्रश्नों को गहराई से प्रस्तुत करती हैं। यदि हम इन आत्मकथाओं को वैश्विक परिप्रेक्ष्य

में देखें तो यह स्पष्ट होता है कि महिलाओं के संघर्ष की प्रकृति अलग-अलग समाजों में भले ही भिन्न हो लेकिन उनकी स्वतंत्रता और अधिकारों की लड़ाई सार्वभौमिक है।

वर्तमान युग वैश्वीकरण का युग है। वैश्वीकरण का अर्थ है- किसी भी एक देश की अर्थव्यवस्था, संस्कृति, विचार, भाषा आदि का आदान-प्रदान कर उसे विश्व के साथ जोड़ने का काम करता है। वैश्वीकरण को कई नामों से जाना जाता है भूमंडलीकरण, विश्वायन, उदारीकरण आदि। "वैश्वीकरण वह शब्दावली है जिसका प्रयोग कुछ ऐसे आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, तकनीकी तथा राजनीतिक परिवर्तनों के जटिल समूह के लिए किया जा रहा है जिनके परिणामस्वरूप विश्व स्तर पर दूर-दराज एवं विभिन्न स्थानों पर बैठे व्यक्तियों, समूहों, कंपनियों अथवा सरकारों के बीच अंतर संबंध काफी तीव्रता से बढता जा रहा है।"[1] जब हम वैश्वीकरण के बारे में बात करते हैं तो उसके साथ मनोरंजन, मीडिया और अर्थव्यवस्था पर ध्यान जाता है। साहित्य पर बहुत कम लोगों का ध्यान जाता है जबकि साहित्य भी वैश्वीकरण में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है क्योंकि साहित्य एक अद्भुत उपकरण है जो अनेक भाषाओं और संस्कृतियों की जानकारियाँ साझा करने में सहायक की भूमिका निभाता है। विश्व में अनेक भाषाएँ हैं तो उनके ज्ञान में भी भिन्नता है उस ज्ञान को शब्द बद्ध कर उसे साहित्य का रूप दिया गया है। साहित्य समाज का प्रतिबिंब है जो समाज के वातावरण और उसके परिवेश को दर्शाता है।

आज वैश्वीकरण के दौर में हम सब किसी न किसी स्तर पर एक-दूसरे से जुड़ रहें हैं किन्तु क्या स्त्री समाज एकजुट होकर अपने लिए लड़ रही है? क्या स्त्री समाज में किसी भी प्रकार का बदलाव देखने को मिल रहा है? भारत और अन्य देशों में रह रहा स्त्री समाज हाशिये पर ढकेल दिया गया जिस कारण उनकी लेखनी में वह प्रतिरोध और प्रतिकार देखने को मिला और उन्होंने अपनी इसी व्यथा, विद्रूपता, अन्याय, अत्याचार, शोषण को समाज से साझा किया फिर चाहे वह गैर दलित स्त्री हो या दलित स्त्री। एक होने के नाते गैर दलित और दलित महिला रचनाकार ने अपनी आत्मकथा में अभिव्यक्त सामाजिक परिवेश, समस्या और संघर्ष के स्वरूप को उजागर किया है तथा पूरे विश्व की समस्याओं को केंद्र में लाने का प्रयास किया। स्त्री का जीवन हमेशा से संघर्ष पूर्ण रहा है। स्त्री ने इस संघर्ष को प्रत्येक स्तर पर महसूस किया है चाहे वह शिक्षित होने के लिए हो, अपनी पहचान बनाने के लिए हो, आर्थिक संबलता के लिए हो। उन्होंने घर और बाहर होने वाली प्रत्येक अवहेलना, अपमान और शोषण की मार को झेला है। आर्थिक स्थिति के कारण अनेक अपमान कष्ट को झेलना पड़ा क्योंकि पेट की भूख ऐसी भूख है जिसे भरने के लिए हर मनुष्य अपमान का घूंट तक पी लेता है। स्त्री आत्मकथाकारों ने आत्मकथा के माध्यम से स्त्री समाज के कड़वे सच को सामने रखा। लेखिकाओं ने समाज के उस पुरुष वर्ग को भी चिन्हित किया जो नारी को उनके मूल अधिकारों से वंचित रखते हुए भी उन्हें स्वीकार नहीं कर पाता। उन्हें अपने से नीचे मानने वाले पितृसत्तात्मक समाज ने उन्हें पूरे समाज से वंचित रखा उनके अस्तित्व पर एक प्रश्न चिन्ह लगाकर रख दिया। दोहरा अभिशाप में कौशल्या बैसन्त्री ने कहा है कि कैसे पुरुष प्रधान समाज स्त्री की स्वतंत्रता का विरोधी रहा है?- "मैं लेखिका नहीं हूं ना साहित्यिक लेकिन अस्पृश्य समाज में पैदा होने से जातीयता के नाम पर जो मानसिक यातनाएं सहन करनी पड़ी इसका मेरे संवेदनशील मन पर असर पड़ा। मैंने अपने अनुभव खुले मन से लिखे हैं। पुरुष प्रधान समाज औरतों का खुलापन बर्दाश्त नहीं कर सकता वह इस ताक में रहता कि पत्नी पर अपने पक्ष को उजागर करने के लिए चरित्र हीनता का ठप्पा लगा दे।"[2]

हमारे समाज में स्त्रियों की दशा दयनीय रही है वह समाज में संतान प्राप्ति के नाम से भी शोषित होती आ रही है। संतान की चाह ने उन्हें मानसिक के साथ-साथ शारीरिक कष्ट भी दिया है। ऐसे में स्त्री को बच्चा नहीं हुआ तो उन्हें समाज द्वारा बांझ ठहरा दिया जाता है भले ही कमी पुरुष में हो लेकिन आरोपी स्त्री ही मानी जाती है। हमारा समाज ऐसा ही है जो किसी न किसी बात पर एक स्त्री को ही दोषी ठहरा देता है। जिस प्रकार भारतीय समाज स्त्रियों पर अपनी पकड़ मजबूत बनाए रखता है। उसी प्रकार पितृसत्तात्मक समाज ने विदेशों में भी स्त्रियों के प्रति ऐसा ही व्यवहार बनाए रखा है, वहां पर भी स्त्रियों पर अपनी दूषित मानसिकता का शिकंजा जकड़ा हुआ है। पितृसत्तात्मक समाज चाहे वह भारत में हो या विश्व स्तर पर कहीं भी हो उनका शोषण किया जाता है, उनके साथ कुकर्म किये जाते हैं, स्त्रियों, बेटियों का बलात्कार एवं उनके साथ निरंतर छेड़छाड़ होती आ रही है। ऐसे में क्या हम यह कह सकते हैं कि भारत में रह रही स्त्री या विदेश में रह रही

स्त्रियों की स्थिति अलग-अलग है? तो इसका जवाब होगा नहीं। हम यह नहीं कह सकते कि सिर्फ पुरुषों द्वारा ही उनका शोषण होता है, स्त्रियों द्वारा भी स्त्रियों का शोषण किया जाता है। वह स्त्री जो आर्थिक रूप से सशक्त है वह अपने से कमजोर और आर्थिक रूप से मजबूर स्त्रियों का शोषण करती है। विदेशों में भी स्त्री शोषण उसकी ही साथी महिला या अन्य स्त्री द्वारा किया जाता होगा क्योंकि उनके यहाँ भी घरों में काम करने वाली बाई स्त्री ही होती है जो उनके घर संभालती है और वह बाई उस घर को अपना घर समझकर कार्य करती है।

आज वर्तमान में हम पितृसत्तात्मक समाज को सिर्फ नकारात्मक रुप में ही देखते आ रहे है जबकि ऐसा नहीं है कुछ सकारात्मक पक्ष भी पाए जाते हैं जिस प्रकार 'दोहरा अभिशाप' में लेखिका के पिता अपनी सकारात्मक सोच से पुरुष समाज को दर्शाते हैं वे कैसे अपनी पत्नी का ध्यान रखते हुए उनका रसोईघर में सहयोग करते हैं- "पिता घर के कामकाज में मां का सहयोग करते सब्जी काट कर रख देते पिताजी चूल्हा जलाकर नहाने के लिए पानी चढ़ा देते घर की जरूरतों के अनुसार वे सारा काम करते। अपनी पत्नी का निरंतर सहयोग करते रहते आजीवन परिवार और बच्चों के अच्छे भविष्य के प्रति सटीक और मेहनत करते।"[3] स्त्री और पुरुष समान हैं यह लेखिका के पिता ने स्पष्ट रूप से दिखाया और हमारे भारत और विदेशों में ऐसे कई पुरुष पाए जाते हैं जो अपनी पत्नी, बहन, माँ की मदद करते हैं और उनको आगे बढ़ने के लिए प्रेरित भी करते हैं। दरअसल, समाज में जब कुछ पुरुष महिलाओं के प्रति गलत व्यवहार करते हैं जैसे कि अत्याचार, भेदभाव या शोषण तो उसका असर पूरे पुरुष वर्ग की छवि पर पड़ता है। इससे अच्छे, सहायक और समानता में विश्वास रखने वाले पुरुष भी कटघरे में खड़े हो जाते हैं। जो पुरुष महिलाओं के अधिकारों की लड़ाई में साथ देते हैं, बराबरी में विश्वास करते हैं, वे सामाजिक बदलाव के सच्चे साथी हैं। ऐसे पुरुषों को प्रोत्साहित और पहचान देना भी ज़रूरी है। समाज भी तभी बदलेगा जब पुरुष और महिलाएं दोनों मिलकर गलत के खिलाफ आवाज़ उठाएंगे। खामोशी भी एक तरह की सहमति मानी जाती है। ज़रूरत है समझने, समझाने और साथ चलने से है।

देश हो या विदेश स्त्री समाज ने हमेशा से अपने को समान दिखाने का प्रयत्न किया है उनका कहना है कि वह भी पुरुष के समान ही है उनसे किसी भी प्रकार से कोई असमानता नहीं है किन्तु फिर भी स्त्रियों के साथ भेदभाव किया जाता है। इसी कारण देश व विदेश के स्त्रियों को भी नस्लीय एवं लैंगिक भेदभाव सहन करना पड़ा जिससे उन्हें मानसिक यातनाएं अधिक सहनी पड़ी। भेदभाव केवल किसी भी समाज में असमानता को गहरा करता है। "समाज में नर और नारी की समान रूप से सहभागिता होने को अनिवार्य मानते हुए डॉ. अंबेडकर ने कहा था- मैं समाज की उन्नति का अनुमान इस बात से लगाता हूं कि उस समाज की महिलाओं की कितनी प्रगति हुई नारी की उन्नति के बिना समाज एवं राष्ट्र की उन्नति असंभव है।"[4] समाज में भेदभाव और कमज़ोरी के कारण ही स्त्री को वस्तु माना गया है जिसका अपना कोई अस्तित्व ही नहीं हैं वह तो सिर्फ भोग-विलास की वस्तु समझी जाती है। कौशल्या बैसन्त्री अपनी आत्मकथा में लिखती हैं- "देवेंद्र कुमार को पत्नी सिर्फ खाना बनाने और उसके शारीरिक भूख मिटाने के लिए चाहिए थी। दफ़्तर के काम और लिखना यही उसकी चिंता थी। मुझे किस चीज की जरूरत है, इस पर उसने कभी ध्यान नहीं दिया।"[5]

हमारे समाज में जब स्त्री को शादी के लिए देखने जाते हैं तो उसके बाहरी सौन्दर्य से प्रभावित होते हैं अगर उसका रंग सांवला है और वो सर्वगुण संपन्न होने के बावजूद उसके बाहरी सौंदर्य को देखकर उसे नकार दिया जाता है। इस प्रकार का भेदभाव भारत के प्रत्येक क्षेत्र की स्त्रियों को देखने को मिल जाते हैं और विदेश में अफ्रीकन स्त्रियों को देख सकते हैं। स्त्री समाज में पहले से ही लिंग के आधार पर भेदभाव किया जा रहा है अब रंग के आधार पर उनके साथ भेदभाव करना शुरू कर दिया है। पुरुष का रंग कोई भी हो चल सकता है पर स्त्री का रंग साफ ही चाहिए 100 प्रतिशत में से आज भी 80 प्रतिशत लोगों को स्त्री सुंदर ही चाहिए। देश और विदेश में सबसे ज्यादा बुरी स्थिति अगर है तो वह है स्त्री समाज की। लोगों की हिमाकत कैसे हो जाती है अपनी बेटी की उम्र की बच्चियों के साथ दुष्परिणाम करने की। बलात्कार के मुद्दे कुछ ही अखबार या टीवी के माध्यम से सामने आते हैं पर हमारे घर में ही कोई ना कोई मौजूद होता है, उसे छुपाने के लिए या तो उन बच्चियों को चुप करा दिया जाता है। उनसे कहा जाता है कि समाज में तुमने हमें कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं

छोड़ा, हम कलंकित हो जाएंगे अगर ये बात सबके सामने आती है। हम उस बलात्कारी से डरने लग जाते हैं जबकि गलत काम उसने ही किया हो फिर भी, वे सशक्त रूप से स्वतंत्र घूमने लगता है और वहीं दूसरी तरफ वह स्त्री, बच्ची जिसकी कोई गलती नहीं होती है वह चुप्पी साधे अपना जीवन बिताने लगती है इसलिए हमारे समाज में आये दिन बलात्कार की खबरें अधिक सुनाई दी जाने लगी हैं।

बलात्कारी व्यक्ति समाज में स्वतंत्र है पर वह लड़की क्यों बांध दी जाती है जिसके साथ ये कुकर्म हुआ? क्यों स्त्री को समाज में रहते हुए भी बहिष्कृत सा जीवन जीना पड़ता है? यहाँ नहीं जाना, इस वक़्त नहीं जाना, अकेले नहीं जाना, अंधेरा होने से पहले घर आ जाओ, घर में बैठी रहो आदि। यौन शोषण पर बात बहुत कम लोग करते हैं, जिस पर बात कम की जाती है वह अधिक महत्त्वपूर्ण होती है। यौन शोषण के मामले ना जाने कितने ही होंगे पर वह अभी केंद्र में इसीलिए नहीं आते क्योंकि वह तो बच्चों के साथ होता है। इन बच्चों में बालक और बालिकाएँ दोनों का समान रूप से शोषण होता है। हमारा समाज प्रगति पर है? इन मामलों में वह निश्चय ही प्रगति पर है। बच्चों को अब जागरूक किया जा रहा है। किन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में ये बात उभर कर नहीं आ पाती है। क्योंकि वहाँ के बच्चे इतने बोल्ड नहीं होते हैं। अगर हैं भी तो उनके माता या पिता उतने शिक्षित नहीं हैं कि उन्हें यौन शोषण के बारे में बता सकें। कम उम्र में उन्हें क्या-क्या सामना करना पड़ जाता हैं? यह हम अनुमान भी नहीं लगा सकते हैं। पुरुष प्रधान समाज में पुरुष किसी भी स्त्री को वस्तु समझता है, वो जब चाहे जहां चाहे उससे छेड़ सकता है। दलित स्त्री आत्मकथाकारों में कावेरी का भी बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान हैं, वह अपने जीवन से जुड़ी बचपन की घटना का ज़िक्र करके बताती हैं-"उस आदमी ने मुझे बर्थ पर लिटा दिया और मेरे पेट पर हाथ फेरने लगा। मुझे अजीब लगाने लगा। मैंने घबड़ा कर फिर चिलाना शुरू किया दादी मुझे नीचे उतारों। वह आदमी सहानुभूति दिखाने लगा। क्या हुआ बेटी! आराम से सो जाओ नीचे भीड़ है। पर मेरा चिल्लाना बंद नहीं हुआ। क्योंकि उस आदमी का हाथ मेरी जांघिया तरफ था।"[6] बलात्कार के जो मुद्दे रहें क्या वह स्त्री और बच्चियों को सही मायने में न्याय दिला पाया है? इसका जवाब होगा नहीं। 2012 में एक स्त्री के साथ जब गैंग रेप हुआ तो उस निर्भया का क्या दोष था? जिस तरीके उसे घायल किया गया था जो अन्ततरू बच नहीं पायी। न्याय तो हुआ। पर उसकी माँ पूरे जीवन अपनी बेटी के लिए तड़पेगी। बलात्कार, यौन शोषण जैसे केस समाज में बढ़ते जा रहे हैं। स्त्री को अब परिवार के लोगों से और समाज के लोगों से सतर्क रहना पड़ेगा तभी वह अपनी हिफाजत कर पायेगी। विदेशों में भी स्त्री समाज के साथ होता होगा "दैनिक भास्कर के खोज के अनुसार अमेरिका, आस्ट्रेलिया जैसे अन्य देशों में भी महिलाएं सुरक्षित नहीं रहती है।"[7] साउथ अफ्रीका में सबसे अधिक स्त्री और बच्चों के साथ दुष्कर्म किया जाता है।

स्त्री पश्चिम की हो या पूर्व की, उत्तर की हो या दक्षिण की, देश की हो या विदेश की स्त्री अस्मिता पर सवाल तो प्रारम्भ से ही उठता आ रहा है पर सुधार कितना हुआ यह कोई नहीं जानता। पहले उसकी पहचान पिता के अधीन की जाती तथा शादी के बाद उसके पति के नाम से। चाहे वह स्त्री किसी भी गली कस्बे से आती हो पर उनके लिए सवाल तो यही है कि उनका अस्तित्व क्या है? वह सिर्फ माँ के रूप में पूजी जाती है बहन के रूप में एक अन्य रिश्ता है वहीं पत्नी के रूप में वह गृहिणी, नौकरानी या फिर देह की वस्तु के समान प्रतीत होती है इनके अलावा उनका कोई अस्तित्व है ही नहीं। स्त्री समाज का वर्गीकरण किया जा सकता है पर सवालों का वर्गीकरण असंभव है क्योंकि आए दिन अब स्त्री के मन में सवाल उठने लगे हैं। सुशीला टाकभौरे की आत्मकथा 'शिकंजे का दर्द' में अजय शास्त्री ने कहा- "आप अपनी साइन करते समय टाकभौरे क्यों लिखते हैं? टाकभौरे आपके पति का सरनेम है। अपनी साइन अपनी अपनी खुद की पहचान होती है।"[8] इसमें स्त्रियों की भी गलती नहीं है जिस परिवेश में वह बड़ी होती है उस परिवेश के अनुसार वह अपने पति को सब कुछ मान लेती है। आर्थिक सहायता करने के बावजूद वह अपने पास अपने वेतन का एक भी हिस्सा न रखकर सारा हिस्सा पति को दे देती है पर उसके बदले उसका तिरस्कार किया जाता है, गालियां दी जाती है और मारपीट की जाती है। पुरुष चाहे शिक्षित हो या अशिक्षित हो पर वह स्त्रियों को प्रताड़ना देने से पीछे नहीं हटता स्त्री ने कोई गलती की हो तो उसकी सजा स्त्री को तुरंत दे दी जाती है अगर बाहर किसी पुरुष की किसी के साथ भी कहा-सुनी हो जाती है तो उसका खामियाजा एक स्त्री

को ही भुगतना पड़ता है।

स्त्री के जीवन की शुरुआत ही एक योद्धा समान होती है क्योंकि जब वह माँ की कोख में होती है तब से लेकर मृत्यु तक वह लड़ती रहती है अपने पिता या आस-पास के लोगों से उसे डर रहता था कि कहीं उसे कोख में ना मार दिया जाए जैसे तैसे उसका जन्म होता है संघर्ष करके बड़ी हो जाती है शादी के बाद अगर उसका पति हिंसक हो तो उसके साथ सामंजस्य से जीवनयापन आखिरी सांस तक करती है। विदेश में भी स्त्रियों की स्थिति यही है जो लगभग भारत जैसे देश में है। 'सुशीला टाकभौरे' अपनी आत्मकथा 'शिकंजे का दर्द' में अपनी स्थिति बताती हैं- "मेरे साथ घर में मारपीट गाली गलोज सब कुछ हुआ बाल पकड़कर खींचना लातों से मारना सब कुछ सहा बेल्ट के निशान कई दिनों तक मेरे शरीर पर रहते थे।"[9] स्त्रियों के साथ इतना अमानवीय व्यवहार किया जाता है किन्तु वह उस पुरुष के साथ सामंजस्य बैठाने का प्रयास आजीवन करती है आखिर क्यों? क्योंकि हमारे समाज में स्त्रियों को यह नहीं समझाया गया अगर पुरुष आपके साथ हिंसक हो रहा है तो उनका स्वयं का परिवार उनका सहयोग करेगा। उनको यही सिखाया गया है कि डोली तो मायके से उठती है लेकिन ससुराल से अर्थी उठती है। ऐसे में अधिकतर स्त्रियाँ अपने ससुराल में शोषण को सहते हुए सामंजस्य बैठाने का प्रयास करती रहती हैं।

दलित समाज में जन्म लेना वैसे ही हेय हिकारत की दृष्टि से देखा जाता है चुनौती का सामना और अधिक होता है जब वह स्त्री दलित और दिव्यांग दोनों का दंश अधिक झेलती हो। सुमित्रा महरोल अपनी आत्मकथा 'टूटे पंखों से परवाज़ तक' की भूमिका में लिखती हैं- "स्त्री, दलित व शारीरिक विकलांग इन तीनों दशाओं को मैंने एक साथ झेला। दलित और स्त्री होने की वजह से विषमतामूलक स्थिति में पड़े रहने के कारणों का विश्लेषण कर समाज व व्यवस्था को उत्तरदाई ठहराया जा सकता है पर विकलांगता के लिए किसे कटघरे में खड़ा किया जाए नियति को, प्रकृति को या हालात को। बहुत मुश्किल होता है अपनी अपूर्णता के साथ जीना।"[10] किसी भी मनुष्य के लिए जीना कठिन हो जाता है जब किसी न किसी कारणवश उसका कोई अंग काम नहीं करता और खासकर स्त्री के लिए। इस आत्मकथा से हमें ये पता जरूर लगता है कि सामाजिक अस्वीकृति का विकलांग लोगों पर मानसिक तनाव अधिक पड़ता है क्योंकि उनको किसी न किसी के सहारे की आवश्यकता होती है। देश व विदेश में न जाने कितने ही लोग होंगे जो किसी न किसी कारण विकलांग हैं। पर हमें इस बात पर गर्व महसूस होना चाहिए कि वह अपने इस विकलांगता पर विजय प्राप्त करके जीवन में कुछ बनने के लिए इच्छुक है। देश विदेश में इनके लिए अलग से कानून बनाए जा रहे हैं अमेरिका में ऐसे ही कानून के बारे में दिया है- "कानून के अनुसार विकलांग आवेदक को नौकरी के लिए आवश्यक शैक्षिक और अनुभव संबंधी योग्यता अवश्य हासिल करनी होगी। उनके कार्य के मूल्यांकन में विकलांगता के कारण किसी किस्म का भेदभाव नहीं किया जाएगा। साथ ही विकलांग व्यक्ति की उन्नति में विकलांगता के कारण कोई सीमा निर्धारित नहीं की जाएगी।"[11] समाज में यह जरूरी है कि सबको एक सम्मान की दृष्टि प्रदान हो किसी के साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाए। आत्मकथा के माध्यम से हमने यह जाना कि इस समाज में स्त्री की क्या दशा रही? उसका क्या मान सम्मान हुआ? उसकी पीड़ा, संताप, दुरूख-दर्द आत्मकथा में जाहिर हुई जो पूरे विश्व की स्त्रियों की दशा है जो आत्मकथा के माध्यम से समाज के समक्ष उभरकर आई। आज के संदर्भ में शोषण को रखकर बात करें तो भले ही मान लिया जाएगा कि स्त्रियाँ स्वतंत्र हैं, पढ़-लिखकर आगे बढ़ रही हैं, अपनी मर्जी से रह रही हैं, अपनी मजी से पहन ओड़ रही हैं लेकिन आज भी ऐसा है कि स्त्रियाँ पहले से ज्यादा शोषण का शिकार होती आ रही हैं भले ही शोषण के मायने बदल गये लेकिन आज भी स्त्रियाँ शोषण का शिकार होती हैं आज भी स्त्रियाँ असुरक्षित महसूस करती हैं। समाज स्त्रियों के प्रति अपनी मानसिकता को क्यों नहीं बदलना चाहता यह प्रश्न आज भी बना हुआ है? क्यों एक स्त्री पुरुषों की भांति हर प्रकार से स्वतंत्र नहीं है? अब स्त्री समाज में किसी भी प्रकार के बदलाव की जरूरत नहीं है पर समाज में बदलाव की अधिक जरूरत है और हमें यह जानने की जरूरत है कि स्त्रियों को रोक-टोक ना करके बल्कि अपने सोच-विचार, पालन-पोषण को बदल दिया जाए अब तक जो बालिकाओं और स्त्रियों को सिखाया गया अब वह एक पुरुष एक बालक को सिखाया जाना चाहिए।

देश-विदेश में स्त्री की यातनाएँ, दर्द, पीड़ा आदि सब एक समान रही। क्या कहीं भी किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव देखने को मिला? अब तक जितना स्त्री समाज ने कष्ट झेला उसकी भरपाई समाज में कोई भी नहीं कर पाएगा। स्त्री अब अबला नहीं सबला है, उसे अपने अधिकारों के लिए स्वयं लड़ना है, उसे अपनी पहचान बनानी है। स्त्री को बदलना है और इतिहास नया बनाना है। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी स्त्री आत्मकथाएँ न केवल व्यक्तिगत अनुभवों की अभिव्यक्ति है बल्कि वे महिलाओं के सामूहिक संघर्षों का प्रतीक भी हैं। ये आत्मकथाएँ सामाजिक असमानता, लैंगिक भेदभाव और सांस्कृतिक बाधाओं के खिलाफ एक सशक्त आवाज हैं। वैश्विक स्तर पर, हिंदी स्त्री आत्मकथाओं ने महिलाओं के जीवन और उनके संघर्षों को समझने के लिए एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है जो उन्हें एक व्यापक और समावेशी संदर्भ में देखने की आवश्यकता को रेखांकित करता है। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी आत्मकथाओं का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि महिलाओं के संघर्ष और उनकी आकांक्षाएँ भले ही सांस्कृतिक और भौगोलिक रूप से भिन्न हो सकती हैं, लेकिन उनका मूल उद्देश्य- समानता, स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय- एक ही है। हिंदी आत्मकथाएँ भारतीय समाज की विशिष्टताओं को प्रकट करती हैं, लेकिन वे वैश्विक स्त्री संघर्ष का भी हिस्सा हैं। इस प्रकार, हिंदी स्त्री आत्मकथा साहित्य न केवल भारतीय महिलाओं की आवाज है, बल्कि यह एक व्यापक वैश्विक विमर्श का हिस्सा भी बनता है। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी आत्मकथाओं का अध्ययन यह दर्शाता है कि महिलाओं के संघर्ष भले ही सांस्कृतिक संदर्भों में भिन्न हों, लेकिन उनकी आत्मनिर्भरता और समानता की आकांक्षाएँ सार्वभौमिक हैं। हिंदी स्त्री आत्मकथाएँ भारतीय समाज की विशिष्टताओं को उजागर करने के साथ-साथ वैश्विक नारीवादी विमर्श से भी जुड़ती हैं। इस प्रकार, हिंदी आत्मकथा साहित्य न केवल भारतीय स्त्री जीवन को दर्शाने का माध्यम है, बल्कि यह विश्वस्तरीय स्त्री चेतना से भी मेल खाती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. रानी, डॉ. (2017). हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य, नोएडा : मानसरोवर प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-5
2. बैसंत्री, क. (2016) दोहरा अभिशाप, दिल्ली-110032 : परमेश्वरी प्रकाशन पृष्ठ संख्या-8,
3. बैसंत्री, क. (2016). दोहरा अभिशाप. दिल्ली-110032 : परमेश्वरी प्रकाशन पृष्ठ संख्या-49
4. मेघवाल, डॉ. (2010). भारतीय नारी के उद्धारक डॉ.बी.आर.अंबेडकर. नाय दिल्ली-110063-08 : सम्यक प्रकाशन. पृष्ठ संख्या-101
5. बैसंत्री, क. (2016). दोहरा अभिशाप, दिल्ली-110032 : परमेश्वरी प्रकाशन पृष्ठ संख्या-104
6. कावेरी. (2017). टुकड़ा-टुकड़ा जीवन, नयी दिल्ली-110088 : ईशा ज्ञानदीप. पृष्ठ संख्या-9

. https://www.bhaskar.com/news/KZHK-countries-with-maximum-rape-crimes-news-hindi-5451383-PHO-html

8. टाकभौरे, स. (2014). शिकंजे का दर्द. नयी दिल्ली-110002 : वाणी प्रकाशन. पृष्ठ संख्या-186
9. टाकभौरे, सुशीला, शिकंजे का दर्द टाकभौरे, स. (2014). शिकंजे का दर्द. नयी दिल्ली-110002 : वाणी प्रकाशन. पृष्ठ संख्या-196
10. महरोल, सुमित्रा, टूटे पंखों से परवाज़ तक, भूमिका से महरोल, स. (2021). टूटे पंखों से परवाज तक - the marginalised publication-
11. मिश्र, व. क. विकलांगों के लिए रोज़गार . नयी दिल्ली : भारतीय प्रकाशन संस्थान .पृष्ठ संख्या-32

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

सांस्कृतिक नैतिक मूल्यों में वर्तमान स्थिति का प्रभाव पर एक विश्लेषणात्मक का अध्ययन

डॉ. अनिता शर्मा
सहायक प्रोफेसर, राजस्थान शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ, शाहपुरा बाग, आमेर रोड, जयपुर

शोध-सार : सभ्यता व संस्कृति एक राष्ट्र का वास्तविक प्रतिबिंब होती है जिसके माध्यम से उसके संपूर्ण इतिहास का अवलोकन किया जा सकता है। क्योंकि संस्कृति ने सिर्फ मौलिकता अपितु हमारे सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों का भी वास्तविक चित्रण प्रस्तुत करती है। वर्तमान जगत में हमारे नैतिक व सांस्कृतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। मनुष्य अपनी मूल संस्कृति को भुलाकर पाश्चात्य संस्कृति का वरण कर रहा है। हमारी प्राचीन काल की गुरु शिष्य परंपरा वैवाहिक प्रणाली संयुक्त परिवार प्रथा नैतिक व मानवीय मूल्यों आदि का पूर्णतः ह्रास हो चुका है। यदि हम भारतीय संस्कृति व समाज का विश्लेषण करें तो यह सर्वविदित है कि भारत सिर्फ आर्थिक संपन्नता में ही सोने की चिड़िया नहीं माना जाता अपितु सांस्कृतिक दृष्टि से भी संपन्न माना जाता है। भारत विश्व का धर्म गुरु रहा है। यह महान ऋषियों व ज्ञानियों का देश है जिसकी संस्कृति में प्राचीनता के साथ साथ निरंतरता वह विविधता में एकता का भी समन्वय रहा है। भारतीय संस्कृति के संबंध में यह सर्वविदित उक्ति प्रचलित है कि यूनान, मिस्र, रोम सब मिट गये जहां से अब तक मगर है बाकी नामो निशान हमारा है इसके उपरांत भी भारतीय संस्कृति गतिशील व परिवर्तनशील रही है जो अनेक उतार-चढ़ाव के उपरांत भी अपने मूल स्वरूप को बनायें हुए हैं लेकिन वर्तमान जगत में बढ़ते पाश्चात्य प्रभावों में गिरते नैतिक व मानवीय मूल्यों के कारण भारतीय परिवेश में सांस्कृतिक प्रदूषण व्याप्त हो गया है। जिस पर एक व्यापक चिंतन की आवश्यकता है हमारे प्राचीन संस्कार क्रमशः क्षीण होते जा रहे हैं। सभ्य भारतीय समाज असभ्यता एवं बर्बरता की ओर बढ़ रहा है हमारे नैतिक व मानवीय मूल्यों का स्तर दिनों दिन गिरता जा रहा है हमारे परिवारों समाज में भावात्मकता की बजाय मौलिकता का प्राधान्य हो गया है। संयुक्त परिवारों का निजी स्वार्थ के कारण विघटन होता जा रहा है। हम सत्य व अहिंसा के मूल्यों को त्याग कर झूठ व हिंसक कार्यो को प्रोत्साहन दे रहे हैं औद्योगीकरण के कारण आर्थिक तत्व प्रभावी हो गया है। दादा-दादी की परियों की कहानियों का स्थान आज कॉमिक्स, इंटरनेट, कंप्यूटर, दूरदर्शन, वाट्सअप आदि ने ले लिया है।

प्रस्तावना : गुरु शिष्य परंपरा का यदि अवलोकन किया जाए तो उक्त परंपरा पूर्णतः विलुप्त हो चुकी है। आज का शिष्य गुरु से मिलने पर प्रणाम या चरण स्पर्श न कर हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़ाता है। आज प्राचीन काल के गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का स्थान अंग्रेजी माध्यम से संचालित स्कूल व कॉलेजों ने ले लिया है जिसके कारण हिंदी माध्यम से प्राप्त शिक्षा को समाज में उचित सम्मान प्राप्त नहीं हो रहा है। यदि धार्मिक दृष्टिकोण से सांस्कृतिक प्रदूषण व नैतिक मूल्यों के अवमूल्यन को चित्रित विश्लेषण करें तो यह स्पष्ट है कि आज धर्म के ठेकेदारों ने इसे एक आजीविका का साधन बना लिया है धार्मिक संस्कारों में सिर्फ खानापूर्ति का धन बटोरना उनके प्रमुख उद्देश्य है। इसके साथ.साथ व्यक्ति की सोच में भी व्यापक परिवर्तन आ चुका है। आज मनुष्य सिर्फ स्वयं की स्वार्थ पूर्ति में ही संलग्न रहता है। जिसके कारण वह सामूहिक हितों की

बलि चढ़ा देता है सत्ता या पद के लालच में लोग सामाजिक हितों की परवाह नहीं करते हैं। प्राचीन काल में नैतिक नियमों व मूल्यों का पालन करना मनुष्य अपना पवित्र कर्तव्य मानता था। लेकिन आज व्यक्तिवाद के विकास के साथ-साथ नैतिकता धीरे-धीरे दुर्बल होती जा रही है। जैसे एक राजनेता स्वच्छ राजनीति की बजाय सत्ता के मद में दल बदल करने व आपराधिक तत्वों को बढ़ावा देकर भारतीय राजनीति को प्रदूषित कर रहा है व्यापारी वर्ग वस्तुओं की मिलावट में संकोच न कर नशीली व नकली दवाइयों को बाजार में बेचकर अमूल्य जीवनो के साथ खिलवाड़ कर रहा है। नैतिकता के इस पतन के कारण ही भारतीय समाज में अपराध, व्यभिचार, भ्रष्टाचार व झूठ का अधिक बोलबाला है नैतिक मूल्यों का यह ह्रास शहरी क्षेत्र में ही नहीं अपितु ग्रामीण परिवेश में भी हो रहा है।

हमारे नैतिक मूल्यों के अवमूल्यन में सिर्फ हम स्वयं ही नहीं अपितु हमारे पारिवारिक सदस्य भी उत्तरदायी है। जो संस्कार हमारे पूर्वजों ने भावी पीढ़ी को सौंपे थे हम उन्हें आगामी पीढ़ी को यथावत हस्तांतरित नहीं कर पाये हैं। इस हेतु हम स्वयं हमारा परिवार समाज आदि जिम्मेदार है। बालक का मस्तिष्क कोरे कागज के समान है। उसे जिस तरह का वातावरण व संस्कार देंगे वह उसी राह पर आगे बढ़ेगा। बाल्यावस्था में बच्चे को संस्कारित करने में पारिवारिक सदस्यों का प्रमुख योगदान होता है। हमारे पूर्वजों के संस्कार हमें किसी न किसी मोड़ पर मार्ग निर्देशित करते हैं। बशर्ते यदि उनका ज्ञान हमें प्राप्त हुआ हो। लेकिन आज उसके स्थान पर हमें विभिन्न देवी देवताओं के नाम भी सिर्फ अंग्रेजी में ही उच्चरित किये जाते हैं न कि उनका वास्तविक स्वरूप विश्लेषित किया जाता है जैसे यदि किसी बच्चे से मां शेरावाली के फोटो की ओर संकेत करते हुए पूछा जाये कि यह चित्र किसका है तो बच्चे का जवाब होता है लायन लेडी या गणेश भगवान के बारे में पूछे तो बच्चे का जवाब होगा एलीफेंट गोड इसमें बालक का कोई कसूर नहीं है क्योंकि हमने कभी उसे उसकी पौराणिक कथाओं के बारे में बताया ही नहीं। पूर्व में प्रचलित पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा की पुस्तक थी जिसमें अनेक ऐसी कहानियॉ होती थी जिन्हें पढ़कर हम आनंदित होते थे। लेकिन शायद आज उनकी कोई उपादेयता नहीं है। आज उनका स्थान कॉमिक्स, कंप्यूटर, गेम्स, इंटरनेट, दूरदर्शन, मूवीज आदि ने ले लिया है। विवेकानंद, महात्मा गांधी, भगत सिंह चंद्रशेखर आदि की पुस्तके सिर्फ छात्रों के बैग से ही नहीं अपितु पाठ्यक्रम से भी नदारद होती जा रही है। जिन्होंने क्रमशः विदेशो में भी भारत की आध्यात्मिकता का परचम में लहराया, सत्य,अहिंसा के बल पर कष्ट सहनकर भारत को आजादी दिलाई देश की स्वतंत्रता के लिये जीवनभर संघर्षरत रहकर मातृभूमि हेतु स्वयं को समर्पित कर दिया। आज हमारी भावी पीढ़ी ने उनके इस योगदान को भुला दिया है इसी कारण हमारे नैतिक मूल्यों का ह्रास इस स्थिति तक पहुंच गया है कि आज हम अपनी मातृभूमि को शत्रुओं से सौदा करने में भी संकोच नहीं करते हैं जिस देश के सांस्कृतिक मूल्य अन्य राष्ट्रों के लिए पथ प्रदर्शक रहे हैं उन्हीं मूल्यों को आज की वर्तमान पीढी नकार चुकी है आज का बालक दादा -दादी, माता-पिता के चरण स्पर्श या प्रणाम करने की बजाय उन्हें हाय डैड, हाय मोम या हेलो,हाय कहकर उनका अभिवादन करता है जिसे ऐसा करने पर हम बहुत प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। यदि ऐसी स्थिति को रोकने के लिए हमारे बुजुर्गगण कभी भूलवश अपना मत व्यक्त कर दे तो उल्टा उन्हें उसकी कीमत चुकानी पड़ती है। उन्हें यह कहकर चुप कर दिया जाता है कि समय बदल रहा है आपने देखा ही क्या है इसी के साथ स्वयं माता-पिता के पास भी अपने बच्चों हेतु इतना समय नहीं है कि वह अपने पूर्वजों के संस्कार अपनी भावी वीडियो को सुपुर्द कर सके तो हम कैसे आशा कर सकते हैं कि हमारे बच्चे संस्कारवान होंगे। अतः उक्त स्थिति के लिए बच्चे जिम्मेदार नहीं अपितु हम स्वयं जिम्मेदार हैं। यदि हमें सांस्कृतिक व वर्तमान में गिरते नैतिक मूल्यों को रोकना है तो इसकी पहल हमे स्वयं को करनी होगी पहले हम स्वयं संस्कारवान बने तभी हम अपनी भावी पीढ़ी को अपने पूर्वजों के ज्ञान व संस्कारों को हस्तांतरित कर सकेंगे क्योंकि नैतिकता का संबंध मानवीय अभिवृत्ति से है यदि बच्चों के परिवेश में नैतिकता के तत्व पर्याप्त तौर पर उपलब्ध नहीं है तो परिवेश में विद्यमान तत्व जीवन का अभिन्न अंग बन जाएंगे।

अतः हमारे सांस्कृतिक व नैतिक मूल्य वर्तमान में पाश्चात्य प्रभाव व गिरते नैतिक स्तर के कारण अवमूल्यन की स्थिति में है। जिन्हें वर्तमान में संस्कृत वाङ्मय का अध्ययन कर मूल्यों को पुनर्स्थापित किया जा सकता है भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण रखने के लिए हमें संस्कृत साहित्यो का ज्ञान परमावश्यक है क्योंकि संस्कृत एक प्राचीन भाषा है जो समस्त

भाषाओं की जननी है जिसमें समस्त प्राचीन साहित्य जैसे रामायण, महाभारत, वेद, साहित्य, संस्कार, वर्ण,आश्रम व्यवस्था आदि के रूप में उपलब्ध है। जिन्हें समाज में पुनर्स्थापित कर अपने से सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों की सुरक्षा कर सकते हैं। अपनी भावी पीढ़ी को मार्ग निर्देशित कर सकते हैं। हमारे मूल स्वरूप व पांडुलिपियों को सुरक्षित रखने में संस्कृत वाड्मय का अध्ययन उपयोगी है जिससे हमारी भावी पीढ़ी संस्कारित होकर स्वामी विवेकानंद,राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, भगतसिंह आदि के आदर्शों का अनुसरण कर सके। इस हेतू हमें सर्वप्रथम प्रयास अपने पारिवारिक परिवेश से शुरू करना होगा। पारिवारिक सदस्यों को बच्चों में आदर सत्कार व बड़े व बूढ़ों के प्रति सम्मान के भाव जागृत करने होंगे। तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ उन्हें अपनी संस्कृति की पहचान भी करनी होगी। बच्चों को अपने प्राचीन साहित्यो व ग्रन्थों का भी ज्ञान कराना होगा। विद्यालयों को भी इसमें प्रभावी भूमिका निभानी होगी पाश्चात्य शिक्षा के साथ भारतीय संस्कृति को भी अक्षुण्ण बनाना होगा गुरुकुल थी जिन्हें पढ़कर हम आनंदित होते थे। लेकिन शायद आज उनकी कोई उपादेयता नहीं है। आज उनका स्थान कॉमिक्स, कंप्यूटर, गेम्स, इंटरनेट, दूरदर्शन, मूवीज आदि ने ले लिया है। विवेकानंद, महात्मा गांधी, भगतसिंह, चंद्रशेखर आदि की पुस्तकें सिर्फ छात्रों के बैग से ही नहीं अपितु पाठ्यक्रम से भी नदारद होती जा रही है। जिन्होंने क्रमशः विदेशो में भी भारत की आध्यात्मिकता का परचम में लहराया सत्य अहिंसा के बल पर कष्ट सहनकर भारत को आजादी दिलाई देश की स्वतंत्रता के लिये जीवनभर संघर्षरत रहकर मातृभूमि हेतु स्वयं को समर्पित कर दिया आज हमारी भावी पीढ़ी ने उनके इस योगदान को भुला दिया है इसी कारण हमारे नैतिक मूल्यों का ह्रास इस स्थिति तक पहुंच गया है कि आज हम अपनी मातृभूमि को शत्रुओं से सौदा करने में भी संकोच नहीं करते हैं जिस देश के सांस्कृतिक मूल्य अन्य राष्ट्रों के लिए पथ प्रदर्शक रहे हैं उन्हीं मूल्यों को आज की वर्तमान पीढी नकार चुकी है। आज का बालक दादा-दादी, माता-पिता के चरण स्पर्श या प्रणाम करने की बजाय उन्हें हाय डैड, हाय मोम या हेलो, हाय कहकर उनका अभिवादन करता है जिसे ऐसा करने पर हम बहुत प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। यदि ऐसी स्थिति को रोकने के लिए हमारे बुजुर्ग गण कभी भूलवश अपना मत व्यक्त कर दे तो उल्टा उन्हें उसकी कीमत चुकानी पड़ती है। उन्हें यह कहकर चुप कर दिया जाता है कि समय बदल रहा है आपने देखा ही क्या है इसी के साथ स्वयं माता-पिता के पास भी अपने बच्चों हेतु इतना समय नहीं है कि वह अपने पूर्वजों के संस्कार अपनी भाभी वीडियो को सुपुर्द कर सके तो हम कैसे आशा कर सकते हैं कि हमारे बच्चे संस्कार वान होंगे।

अतः उक्त स्थिति के लिए बच्चे जिम्मेदार नहीं अपितु हम स्वयं जिम्मेदार प्रणाली को पूर्णतः नहीं तो कमोंवेश विद्यालयों में लागू कर हमें अपने सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करनी होगी। दक्षिण भारत में संस्कृत भाषा से सम्बद्ध शिक्षण संस्थाएं इस दिशा में प्रयत्नशील है विद्यालयी पाठ्यक्रमों में भी प्राचीन साहित्यों का ज्ञान प्रदान करना अनिवार्य करना होगा। साथ ही हमारे महापुरुषों की जीवनी का ज्ञान भी छात्रों को करना होगा। इस हेतू इसे पाठ्यक्रम में भी उचित स्थान देना होगा। साथ ही विभिन्न देवी देवता व महापुरुषों का अभिनय के माध्यम से ज्ञान प्रदान कर अपने गिरते सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों की सुरक्षा करनी होगी विद्यालयी पाठ्यक्रमों में नैतिक शिक्षा को सिर्फ सैद्धान्तिक तौर पर ही नहीं अपितु व्यवहारिक रूप में भी अनिवार्य करना होगा। यदि परिवार को बालक के सीखने की प्रथम पाठशाला माना गया है तो विद्यालयों को बालक के व्यावहारिक व व्यक्तित्व के चहुँमुखी विकास का स्रोत माना गया हैं। यदि समाज या राष्ट्र को अपने प्राचीन संस्कारों, साहित्य व मूल्यों को सुरक्षित बनाये रखना है तो इसमें सभी को अपनी सहभागिता प्रदान करनी होगी। तभी हम अपने गिरते सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों को सुरक्षा कवच उपलब्ध करा पायेंगे। इन सब में संस्कृत में वाड्मय का अध्ययन परमावश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भारतीय सामाजिक संस्थाएं वीरेंद्र प्रकाश शर्मा
2. समाज एवं राजनीति दर्शन डॉ कृष्णकांत पाठक
3. भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास डॉ. राम गोपाल शर्मा
4. भारतीय समाज एवं संस्कृति डॉ. राजकुमार
5. भारत में समाज मोतीलाल गुप्ता
6. भारतीय संस्कृति का विकास वैदिक धारा शास्त्री डॉ. मंगल देव।

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

कार्यस्थल में सांस्कृतिक विविधता और समावेशन

डॉ. स्वाति दीक्षित
सहायक आचार्य, राजस्थान शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ,
शाहपुरा बाग, आमेर रोड, जयपुर

परिचय

कार्यस्थल जहाँ लोग अपने काम या व्यवसाय के लिए जाते हैं और अपने कार्यो को पूरा करते हैं। यह कार्यालय, फैक्ट्री, दुकान, अस्पताल, स्कूल, या कोई अन्य स्थान हो सकता है जहाँ लोग अपने पेशेवर कार्यो को करते हैं।

कार्यस्थल की विशेषताएं

1. काम का माहौल : कार्य स्थल में काम करने के लिए उपयुक्त माहौल होता है, जिसमें आवश्यक उपकरण, संसाधन और सुविधाएं होती हैं।

2. सहकर्मी और प्रबंधन : कार्य स्थल में सहकर्मी और प्रबंधन होते हैं जो काम को सुचारु रूप से चलाने में मदद करते हैं।

3. कार्य की जिम्मेदारी : कार्य स्थल में कर्मचारियों को अपने कार्यो की जिम्मेदारी दी जाती है और उन्हें अपने काम के लिए जवाबदेह ठहराया जाता है।

महत्व

1. आय का स्रोत : कार्य स्थल लोगों को आय का स्रोत प्रदान करता है।

2. व्यक्तिगत विकास : कार्य स्थल पर लोग नए कौशल सीखते हैं और अपने करियर में आगे बढ़ते हैं।

3. सामाजिक संपर्क : कार्य स्थल पर लोग अपने सहकर्मियों के साथ सामाजिक संपर्क बनाते हैं और अपने नेटवर्क का विस्तार करते हैं।

कार्य स्थल को सुरक्षित, स्वस्थ और उत्पादक बनाने के लिए नियोक्ताओं और कर्मचारियों दोनों को मिलकर काम करना चाहिए।

सांस्कृतिक विविधता- विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं, भाषाओं और मूल्यों का समावेश। यह विविधता समाज और संगठनों में नए दृष्टिकोण, विचारों और समाधानों को बढ़ावा देती है।

सांस्कृतिक विविधता के लाभ

1. नवाचार और रचनात्मकता : विभिन्न संस्कृतियों के लोग नए विचार और दृष्टिकोण लाते हैं।

2. सामाजिक समृद्धि : विविधता समाज को समृद्ध बनाती है और लोगों को विभिन्न संस्कृतियों के बारे में जानने

का अवसर प्रदान करती है।

3. व्यावसायिक सफलता : विविधता वाले संगठन अधिक सफल होते हैं क्योंकि वे विभिन्न बाजारों और ग्राहकों की जरूरतों को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं।

सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देने के तरीके

1. संस्कृति के बारे में शिक्षा : लोगों को विभिन्न संस्कृतियों के बारे में जानने और समझने के अवसर प्रदान करना।

2. सम्मान और सहिष्णुता : विभिन्न संस्कृतियों के प्रति सम्मान और सहिष्णुता को बढ़ावा देना।

3. विविधता को अपनाना : संगठनों और समाज में विविधता को अपनाने और उसका जश्न मनाने के लिए कार्यक्रम आयोजित करना।

चुनौतियाँ

1. संचार में बाधाएँ : विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के कारण संचार में बाधाएँ आ सकती हैं।

2. पक्षपात और रूढ़िवादिता : लोगों के मन में पक्षपात और रूढ़िवादिता हो सकती है, जो विविधता को अपनाने में बाधा डालती है।

सांस्कृतिक विविधता को अपनाने और बढ़ावा देने से हम एक समृद्ध और समावेशी समाज बना सकते हैं।

समावेशन - सभी व्यक्तियों को समान अवसर और सम्मान प्रदान करना, चाहे उनकी पृष्ठभूमि, संस्कृति, लिंग, धर्म, या क्षमता कुछ भी हो। यह एक ऐसा वातावरण बनाने के बारे में है जहाँ हर कोई अपने मतभेदों के बावजूद शामिल और स्वीकृत महसूस करे।

समावेशन के मुख्य तत्व

1. समान अवसर : सभी व्यक्तियों को समान अवसर प्रदान करना, चाहे उनकी पृष्ठभूमि या विशेषताएं कुछ भी हों।

2. सम्मान और स्वीकृति : सभी व्यक्तियों के प्रति सम्मान और स्वीकृति का भाव रखना, और उनके मतभेदों को महत्व देना।

3. सहभागिता और भागीदारी : सभी व्यक्तियों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करना और उनकी भागीदारी को प्रोत्साहित करना।

समावेशन के लाभ

1. विचारों की विविधता : समावेशन से विभिन्न दृष्टिकोण और विचारों का समावेश होता है, जो नवाचार और समस्या समाधान में मदद करता है।

2. उत्पादकता में वृद्धि : जब कर्मचारी शामिल और स्वीकृत महसूस करते हैं, तो उनकी उत्पादकता और कार्य संतुष्टि में वृद्धि होती है।

3. सामाजिक न्याय : समावेशन सामाजिक न्याय को बढ़ावा देता है और सभी व्यक्तियों के लिए समान अवसर सुनिश्चित करता है।

समावेशन को बढ़ावा देने के तरीके

1. जागरूकता और शिक्षा : लोगों को समावेशन के महत्व और इसके लाभों के बारे में शिक्षित करना।

2. नीतियों और प्रक्रियाओं का विकास : समावेशन को बढ़ावा देने वाली नीतियों और प्रक्रियाओं का विकास और

कार्यान्वयन करना।

3. संवाद और सहयोग : खुले संवाद और सहयोग को प्रोत्साहित करना, जिससे सभी व्यक्तियों को अपनी आवाज़ सुनाने का अवसर मिले।

समावेशन एक सतत प्रक्रिया है जिसमें निरंतर प्रयास और प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है। यह एक ऐसा वातावरण बनाने के बारे में है जहाँ हर कोई अपने मतभेदों के बावजूद फल-फूल सके।

इस प्रकार कार्यस्थल में सांस्कृतिक विविधता और समावेशन का तात्पर्य अलग-अलग पृष्ठभूमि और दृष्टिकोण वाले व्यक्तियों की उपस्थिति और भागीदारी से है। इसमें निम्नलिखित अंतर शामिल हैं :

जनसांख्यिकीय विशेषताएँ :

लिंग : पुरुषों, महिलाओं और गैर-द्विआधारी व्यक्तियों का संतुलित प्रतिनिधित्व होना।

जाति और जातीयता : विविध नस्लीय और जातीय पृष्ठभूमि को अपनाना।

आयु : बहु-पीढ़ी के कार्यबल को बढ़ावा देना।

यौन अभिविन्यास : LGBTQ+ कर्मचारियों के लिए समावेशी वातावरण बनाना।

सांस्कृतिक विविधता और समावेशन के लाभ

बेहतर नवाचार और रचनात्मकता : विविध टीमें अद्वितीय दृष्टिकोण लाती हैं, अभिनव समाधान और बेहतर उत्पाद विकास को बढ़ावा देती हैं।

बढ़ा हुआ कर्मचारी मनोबल : समावेशी कार्यस्थल अपनेपन की भावना को बढ़ावा देते हैं, कर्मचारी जुड़ाव और प्रेरणा को बढ़ाते हैं।

व्यापक बाजारों तक पहुँच : विविध टीमें व्यापक दर्शकों से जुड़ सकती हैं, जिससे बाजार की पहुँच और ग्राहक आधार का विस्तार होता है।

वित्तीय लाभ : विविध टीमों वाली कंपनियों को प्रति कर्मचारी नकदी प्रवाह में वृद्धि और बेहतर अंतिम परिणाम का अनुभव होता है।

सांस्कृतिक विविधता और समावेशन को लागू करने की रणनीतियाँ :

विविधता पहलों में निवेश करें : विविधता और समावेशन को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएँ और शिक्षा प्रदान करें।

पूर्वाग्रह प्रशिक्षण सत्र प्रदान करें : अंतर्निहित पूर्वाग्रहों के बारे में कर्मचारियों की जागरूकता बढ़ाने के लिए अचेतन पूर्वाग्रह प्रशिक्षण प्रदान करें।

वेतन समानता को बढ़ावा दें : जनसांख्यिकीय विशेषताओं की परवाह किए बिना उचित मुआवज़ा प्रथाओं को सुनिश्चित करें।

कम प्रतिनिधित्व वाले समूहों से प्रतिभा विकसित करें : अधिक समावेशी कार्यस्थल को बढ़ावा देने के लिए विकास और विकास के अवसर प्रदान करें।

सर्वोत्तम अभ्यास

एक समावेशी संस्कृति बनाएँ : ऐसा वातावरण बनाएँ जहाँ सभी कर्मचारी मूल्यवान, सम्मानित और एकीकृत महसूस करें।

सीमाएँ निर्धारित करें और स्व-देखभाल को प्राथमिकता दें : कर्मचारियों को स्वस्थ कार्य-जीवन संतुलन बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित करें।

विविधता मेट्रिक्स की निगरानी और मूल्यांकन करें : प्रगति को ट्रैक करें और सुधार के क्षेत्रों की पहचान करें।

कानूनी विचार

समान रोजगार अवसर आयोग (ईईओसी) : ईईओसी विनियमों और दिशानिर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करें।

भेदभाव विरोधी कानून : कर्मचारियों को भेदभावपूर्ण प्रथाओं से बचाने वाले कानूनों और विनियमों से खुद को परिचित करें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

* https://en.wikepedia.org
* https://www.csrmandate.org
* https://educationaforalinindia.com
* https://apnipathshala.com

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

भोजपुरी लोकगीतों में विविध स्वर

डॉ. हरिणी रानी आगर
शोध निर्देशक, विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग
शासकीय बिलासा कन्या महाविद्यालय, बिलासपुर
(अटल बिहारी बाजपेयी विश्वविद्यालय)

प्रकाश कुमार त्रिपाठी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
(अटल बिहारी बाजपेयी विश्वविद्यालय, बिलासपुर)
prakashkrtripathi@gmail.com, Mob - 7596979959

शोध सार

भोजपुरी लोकगीत सामान्य जनजीवन के अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है, जिनमें समाज की संस्कृति, संवेदना एवं मूल्यों का सहज चित्रण मिलता है। इन गीतों में मानवीय मूल्यों के अनेक स्वर प्रतिबिंबित होते हैं, जो समाज को जोड़ने, नैतिकता सिखाने और सांस्कृतिक चेतना को बनाए रखने का कार्य करते हैं। स्नेह और पारिवारिक भावनाओं को माँ-बेटे, पति-पत्नी, भाई-बहन जैसे पारिवारिक रिश्तों की मिठास इन गीतों में परिलक्षित होता है। समकालीन समय में जहाँ वैश्वीकरण, भौतिकवाद एवं आधुनिकता के प्रभाव से मानवीय मूल्य क्षीण हो रहे हैं, वहीं लोकगीतों में निहित परंपरागत मानवीय मूल्यों का अध्ययन एक आवश्यक सांस्कृतिक कार्य बन जाता है।

भोजपुरी लोकगीत न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि समाज के नैतिक विकास और पीढ़ियों को मूल्यपरक जीवन जीने की प्रेरणा देने वाले सशक्त माध्यम भी हैं। भोजपुरी लोकगीत मात्र सांगीतिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि लोकसमाज का दार्शनिक, नैतिक और सांस्कृतिक दर्पण हैं। इनमें जीवन की उन बारीकियों का चित्रण मिलता है, जो शास्त्रीय साहित्य में अक्सर उपेक्षित रह जाती हैं। इस शोध कार्य का उद्देश्य है—भोजपुरी लोकगीतों के माध्यम से न केवल मानवीय मूल्यों की पहचान करना, बल्कि यह भी स्पष्ट करना कि कैसे ये गीत सामाजिक चेतना को पोषित करते हैं और पीढ़ी दर पीढ़ी जीवन के आदर्शों को संजोए रखने में समर्थ है।

विषय प्रवेश

लोकगीत समग्र जनजीवन के जीवन्त चित्र प्रस्तुत करते हुए लोकगीत, लोक-संस्कृति के चित्रपट हैं। भोजपुरी क्षेत्र की लोकवाणी में रचे-बसे ये गीत जहाँ भावनात्मक गहराई लिए होते हैं, वहीं इनमें सामाजिक एकता, करुणा, त्याग, प्रेम, सहयोग, पारिवारिक सौहार्द, नारी सम्मान, श्रम की गरिमा, प्रकृति के प्रति संवेदना जैसे मानवीय मूल्यों की स्पष्ट झलक मिलती है। चूँकि ये गीत जनमानस की सहज अभिव्यक्ति हैं, अतः इनका स्वरूप कृत्रिमता से मुक्त होता है और इनसे सामाजिक यथार्थ की स्पष्ट झांकी मिलती है। इस प्रकार भोजपुरी लोकगीतों में मानवीय मूल विभिन्न रूपों में द्रष्टव्य है।

भोजपुरी लोक गीतों में ग्रामीणों का सच्चा तथा स्वाभाविक चित्रण उपलब्ध होता है। विरहिणी स्त्री का कष्ट, विधवा नारी की असहनीय दुर्दशा, बन्ध्या स्त्री की मनोवेदना, कुलटा का दुधरित्र, व्यभिचारी पुरुष की दुष्टता, जुआरी, शराबी पति का चित्रण भोजपुरी गीतों में मिलता है भोजपुरी समाज में रहन-सहन, संस्कार, रीति रिवाज तथा भोजपुरी स्त्रियों का उच्च, अटूट पति प्रेम भोजपुरी समाज की श्रेष्ठता को उजागर करता है। भोजपुरी समाज व्यवस्था में धर्म के प्रति गहरी आस्था के

कारण धर्म को इह लोक और परलोक से जोड़कर पुत्र का होना अनिवार्य मान लिया गया। पुत्र होने पर खुशिया मनायी जाती है जबकि पुत्री होने पर आंनंद नहीं मनाया जाता। एक मा पुत्री इसलिए नहीं चाहती क्योकि वह परायी संपति है–

"मन जो कहै धिया जनमियों मोरे गजबज आहे
बरातआवे मोरे साजना विहंसत दुल्हा दामाद।"[1]

समाज में ब्राह्मण का महत्वपूर्ण स्थान होता है। ब्राह्मण का प्रधान कर्तव्य अध्ययन तथा अध्यापन करना है। प्राचीन काल में काशी संस्कृत विद्या का केन्द्र माना जाता था इसलिए जनेऊ को धारण करने वाला ब्रह्मचारी बरुआ संस्कृत पढ़ने के लिए आज भी काशी आने का अभिनय करता है। कोई स्त्री अपने पुत्र से कहती है कि तुम्हारे पिता तो स्वयं विद्वान् है तुम पढ़ने के लिए काशी क्यों जा रहे हो–

"काहे के बेटा जइहउ, कासी अउर बनारस
जिनके बाबा हई पण्डित हो।
आपन वेद पढ़ाई कइ, बाभनु कहले हई हो।।"[2]

क्षत्रिय समाज का रक्षक माना जाता है। प्राचीन काल में देश की रक्षा का समस्त भार क्षत्रिय जाति पर होता था। वीरता, तेज, धैर्य, युद्ध में पीछे न हटना, दान देना तथा महानता की भावना उनका स्वाभाविक कार्य है।१ आल्ह खण्ड में आल्हा और ऊदल की वीरता उनके अद्भुत पराक्रम तथा अप्रतिम युद्ध पृथ्वीराज जैसे पराक्रमी वीर के युद्ध में छक्के छुड़ा दिये थे।

वैश्य का प्रधान कार्य खेती या व्यापार करना है परन्तु आजकल प्रायः प्रत्येक वर्ण के लोग व्यापार करते देखे जाते है, भोजपुरी लोक गीतों में अपनी जीविका चलाने बाहर जाने का उल्लेख मिलता है–

"जो तुह जइब रावल, पुरुबि बनिजिया हो।
हमरा के का तू ले अइव, रावल मुनिया।।"[3]

भोजपुरी समाज में शूद्रों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। किसी कार्य जैसे विवाह, गवना आदि के अवसर में भी इनका उल्लेख मिला है।

भोजपुरी प्रदेश में इन चार वर्गो में कई वर्ग हो गये हैं जो स्थानीय जनता के लिए अत्यन्त उपयोगी है। काम के अनुसार भी कई जातियों है। तेली तेल देता है, माली हार देता है, बढ़ई पलंग बनाता है–

"तेलिनि ले आवे तेल, तमोलिनि पानवा।
मालिनि ले आवे हार, कन्हइया पहिरावहीं।"[4]

भोजपुरी लोकगीतों में पारिवारिक जीवन का चित्रण हुआ है। भोजपुरी परिवार में संयुक्त परिवार प्रचलित है। इसमें दादा-दादी, माता-पिता, पति-पत्नी भाई-बहन पुत्र-पौत्र आदि सभी एक ही घर में सम्मिलित रूप से रहते और सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करते है। भोजपुरी लोक साहित्य में पितृसत्तात्मक परिवार का चित्रण मिलता है अर्थात् इस समाज में पिता ही घर का मालिक कर्ता-धर्ता होता हैं उनकी आज्ञा सर्वोपरि होती है। बाबा-दादा के नाम पर परिवार की प्रतिष्ठा भी बढ़ती है। बच्चे का पालन-पोषण भी अच्छी तरह बड़े लोगों की देख-रेख में हो जाता है जब लड़घकियाँ हठ करती है तो औरतें कहती है। कोई लड़की अपने लिए योग्य वर ढूंढने के लिए अपने बाबा से कहती है–

"वर खोजु बर खोज, बर खोजु बाबा।
भइलो बिअहन जोग रे।"[5]

परिवार में कुछ लोगों का सम्बन्ध तो आपस में बड़ा मधुर होता है, परन्तु कुछ व्यक्तियों का आपसी व्यवहार बड़ा कटु होता है मधुर सम्बन्ध में माता-पुत्र, माता-पुत्री, पिता-पुत्र, भाई-बहन, पति-पत्नी का प्रेम तथा कटु सम्बन्ध में सास-पतोहू, ननद-भावज, देवर-भावज, भसुर-भवहि ससुर-पतोहू का सम्बन्ध देखने को मिलता है।

भोजपुरी लोकगीतों में पिता और पुत्र से प्रेम की चर्चा बहुत कम पायी जाती है. परन्तु माता और पुत्र के सहज एवं स्वाभाविक स्नेह का वर्णन अधिकांशतः पाया जाता है। माँ का हृदय हमेशा अपने बच्चे के लिए चिन्तित रहता है–

"जइसे कोहरा के अऊँवा तलकि-तलकि उठे,
ओइसे मयरिया के कोखिया तलफि-तलफि उठे।"[6]

भोजपुरी लोक साहित्य में गीतों ने अपना एक शीर्षस्थ स्थान भी बनाया है जहाँ उसे वैदिक साहित्य के समकक्ष आसन प्राप्त है। जहाँ ये मंत्र संस्कृत में पढ़े जाते हैं वहीं ग्राम्याओं द्वारा गाए जानेवाले लोकगीत तथा लोकाचार पर आधारित अन्य क्रियाकलाप भी चलते रहते हैं। एक ओर पुरोहित मंत्राच्चार करता है तो दूसरी ओर ग्रामीण स्त्रियाँ गीत गाती है। मुंडन, कर्णवध, यज्ञोपवीत तथा विवाह आदि संस्कारों पर और मकान, धर्मशाला, कुंआँ, तालाब तथा पोखर आदि का शुभारंभ करते समय भी मंत्र तथा लोकगीत साथ-साथ चलते हैं। लोकमानस की इसी धार्मिक संरचना का अध्ययन धार्मिक दृष्टिकोण के अंतर्गत किया जाता है। इस दृष्टिकोण से से छठ पूजा का भोजपुरी क्षेत्र में विशेष महत्त्व है जिसका स्वर हर मन को स्पर्श करता है—

"कांच ही बांस के बहंगिया।
बहँगी लचकत जाय।"[7]

भोजपुरी लोक गीतों में ऐतिहासिक अध्ययन की प्रक्रिया में ऐतिहासिक समाजों, एवं विभिन्न जातियों-जनजातियों के विविध पहलुओं वर्णन मिलता है। भोजपुरी क्षेत्र से संबंधित समस्त लोक परंपराओं एवं ऐतिहासिक समृद्धि का अध्ययन करने के लिए ऐतिहासिक दृष्टिकोण को ही अपनाना पड़ेगा। भोजपुरी क्षेत्र सदा से अपने वीर योद्धाओं के लिए विख्यात रहा है। शत्रुओं का पतन करने वाले वीरों की कहानियां गीतों में पाई जाती है। वीर कुंवर सिंह की वीरता एवं बहादुरी का वर्णन अद्वितीय है—

"लिखि लिखि पतिया के भेजलन कुंवर
सिंह ए सुन अमर सिंह माई हो राम।''[8]

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

सामाजिक व्यवस्था और तोक साहित्य का गहरा संबंध है। लोक जीवन से जुड़े समस्त पहलुओं जैसे सामाजिक रीति-रिवाज, प्रथाएं, मान्यताएं जन्म से लेकर मृत्यु तक के संस्कार आदि सभी की उत्पत्ति समाज में ही होती है। समाज शास्त्र के समुचित अध्ययन के लिए लोक साहित्य की महत्ता सुविदित है। भारतीय समाज का ढांचा किस प्रकार का रहा है, यह लोक गीतों, लोककथाओं और लोकोक्तियों से भली-भांति समझ में आ जाता है। समाजशास्त्रियों ने लोकाध्ययन-परिवार, विवाह-व्यवस्था, सामाजिक रिश्तेदारी एवं समाज के स्वरूप पर प्रकाश डालने के लिए किया। उदाहरण के लिए शिशु जन्म पर होने वाले सामाजिक कृत्यों के प्रति क्या इतिहास लेखकों का ध्यान कभी गया है? इन सबके समीचीन अध्ययन के लिए लोक साहित्य ही तो एक मात्र साधन है।

भोजपुरी लोक गीतों में भौगोलिक स्वरूप का भी यत्र तत्र वर्णन मिलता है। ऐसे अनेकों लोकगीत एवं लोक गाथाएं हैं जिनमें प्राचीन ग्रामीण परिवेश की जलवायु, कृषि व्यवस्था, नगरों की संरचना, नदियों एवं पर्वतों के नाम आदि की जानकारी मिलती है। इसी तरह प्राकृतिक आपदाएं भौगोलिक परिवर्तन का परिणाम है। इसी तरह अनेक जड़ी बूटियों एवं वनस्पतियों के महत्व की जानकारी भौगोलिक अध्ययन द्वारा संभव है। इस दृष्टिकोण से भोजपुरी लोक साहित्य में इसके अनेकों प्रभाव हैं—

"सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देसवा से।
मोर प्रान बेस हिम खोह रे बटोहिया।''[9]

भोजपुरी लोक गीतों में सामाजिक व्यवस्थाओं, जातियों एवं जनजातियों के आर्थिक स्तर की भी विधिवत् जानकारी प्राप्त होती है। ग्रामीण समाज का खान-पान, रहन-सहन तथा रीति-रिवाज की ही नहीं अपितु उनकी जीवन शैली से जुड़े हर पहलु को उध्द्घाटित किया जाता है। अनेक लोकगीतो तथा लोकगाथाओं में स्त्रियों के आभूषणों का परिचय, छप्पन भोग की व्यवस्था, कृषि व्यवस्था के विविध चरण, घर एवं नगरों की स्थितियाँ, लेन-देन की विधियाँ आदि की जानकारी लोक साहित्य के आर्थिक

विश्लेषण द्वारा प्राप्त होती है। अनेक लोकगीतों में माताओं द्वारा शिशु को सोने-चाँदी के कटोरे में भात खिलाने की प्रथा का चित्रण मिलता है। राहुल सांकृत्यायन ने जोंक में आर्थिक दशा को कुछ इस प्रकार उद्घाटित किया है–

"साँझ बिहान के खरची नइखे, मेहरी मरे तान,
अन्न बिना मोरा लड़का रोवे का करीहे भगवान।।"[10]

भोजपुरी लोकगीत का सांस्कृतिक पक्ष बड़ा विशद है। विश्व की संस्कृतियाँ कैसे उद्भूत हुई, कैसे पनपी, इस रहस्य की कहानी अथवा इतिहास हमें लोक गीतों के सम्यक् अध्ययन से मिलता है। भोजपुरी लोक गीत न केवल भोजपुरी क्षेत्रों की अपितु भारतीय जन जीवन की आत्मा रही है, जो सदियों से लोक संस्कृति, परंपरा, सामाजिक संरचना एवं मानवीय मूल्यों को अभिव्यक्त करते आ रहे हैं। इन गीतों में न केवल प्रेम, करुणा, सहयोग, श्रम, समानता, नारी सम्मान, पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता जैसे मानवीय मूल्यों का न केवल सहज वर्णन मिलता है, बल्कि समाज के विभिन्न पक्षों का आलोचनात्मक दृष्टिकोण भी उभर कर हमारे समक्ष आता है।

वस्तुतः भोजपुरी लोकगीतों में मानवीय मूल्य केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक जीवन के आधार स्तंभ हैं। ये गीत लोकसंस्कृति को जीवंत बनाए रखते हुए भावी पीढ़ियों को मानवीयता की प्रेरणा निहित है।

संदर्भ सूची

1. शर्मा डा. रंजना, लोक साहित्य चिंतन के विविध आयाम, आनंद प्रकाशन द्वितीय संस्करण-2017, पृ. 115
2. निजी सर्वेक्षण, वाराणसी क्षेत्र
3. निजी सर्वेक्षण, बक्सर क्षेत्र
4. निजी सर्वेक्षण, बक्सर क्षेत्र
5. उपाध्याय डॉ. कृष्णदेव, भोजपुरी ग्रामगीत भाग-1, हि.सा.स. प्रकाशन, द्वितीय सं.-2000, पृ.-120
6. निजी सर्वेक्षण, भोजपुर क्षेत्र
7. निजी सर्वेक्षण, भोजपुर क्षेत्र
8. निजी सर्वेक्षण, भोजपुर क्षेत्र
9. सं. पाण्डेय कपिल, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, प्रकाशन-दिसंबर 1986, अंक 2-3-4,पृ.-9
10. सांकृत्यायन राहुल, जोंक, किताब महल, संस्करण-2013, पृ.-3

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

जनवादी कवि 'धूमिल'

प्रा.डॉ. ज्ञानेश्वर भीमराव महाजन
शोध निर्देशक
हिंदी विभागप्रमुख
स्वामी विवेकानंद वरिष्ठ महाविद्यालय,
मंठा जिला जालना (महाराष्ट्र)

नितिन सुभाषराव कुंभकर्ण
शोधार्थी (हिंदी)
जे.ई.एस.हिंदी संशोधन केंद्र, जालना
डॉ. बाबासाहब अंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय
छत्रपति संभाजीनगर (महाराष्ट्र)
संपर्क- 9960697356, Email – nitinkasar24@gmail.com

प्रस्तावना

सभी जनता की आशा आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति का नाम जनवादी होता है। जनवाद सिर्फ आशा-आकांक्षाओं तक सीमित नहीं बल्कि उनकी समस्या, त्रासदी, दुख, पीड़ा का समग्र वर्णन जिस कविता में होता है उसे 'जनवादी' कविता कहते हैं।

जनवादी कविता यानी जनता की सभी समस्याओं का आजू-बाजू के परिवेश का भ्रष्टाचार, अन्याय, अत्याचार, शोषण और दमन का प्रखरता से विरोध कर, जनता की बुलंद आवाज बनकर व्यक्त होनेवाली कविता; ऐसा कहना भी अनुचित न होगा। किसी दमनकारी व्यवस्था में परिवर्तन लाने के लिए जनवादी कविता महत्वपूर्ण है।

साठोत्तरी कविता में हिंदी भाषा के सबसे महत्वपूर्ण कवि सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' है। आम जनता पर अन्याय करने वाले लोकतंत्र के प्रमुख लोगों को कहते हैं–

"दरअसल अपने यहां जनतंत्र
एक ऐसा तमाशा है
जिसकी जान मदारी की भाषा है।"[1]

यानी मदारी अपने बंदर के खेल में लोगों को अपने बोलने के ढंग से थोड़ी देर तक बाँधकर रखता है। उसी प्रकार प्रजातंत्र में आम जनता तथा गरीब जनता को सुनहरे मुंगेरीलाल के हसीन सपने दिखाकर, उसमे मग्न करके दूसरी तरफ उनपर अन्याय किया जाता है। लोकतंत्र में भी बड़े-बड़े लोग जो आम जनता पर अन्याय, अत्याचार करके उनका शोषण करते हैं उनके विरोध में धूमिल किस तरह से जनवाद का आवाज प्रखर करते हैं इस पर हम यहाँ चर्चा करेंगे।

बीजशब्द : 1) जनवादी 2) जनतंत्र 3) दमन।

15 अगस्त सन 1947 को हमारा भारत देश अंग्रेज शासकों की गुलामी से आजाद हुआ। देश आजाद होने के बाद जनता के साथ-साथ कई कवियों को भी अपेक्षा थी कि अब आम जनता के जीवन में कुछ अमूलाग्र बदलाव आएंगे, उनके जीवन के सब संकट, कष्ट मिट जाएंगे।उनके जीवन में खुशहाली आयेगी,उनका जीवन समृद्ध बनेगा। भारतीय लोगोंपर शताब्दियों से चली आ रही गुलामी की परंपरा अब ख़त्म होकर आजादी का नया सूरज चमकेगा। महात्मा गांधी जी ने कल्पना

किए हुए रामराज्य का सपना अब साकार होगा। पर आजादी के बाद चित्र कुछ भी नहीं बदला क्योंकि पहले हम भारतीयों पर अंग्रेज शासक राज करते थे अब अंग्रेज चले गए पर अपने राजनेता, जमीदार, साहूकार आदि लोग ही आम जनता पर अन्याय, अत्याचार कर रहे हैं। आजादी के बाद की स्थिति देखकर कवि का मोहभंग हो जाता है। गरीबों को लूटना अब भी जारी है। पहले अंग्रेज लूटते थे अब अपने ही लूट रहे है। इस त्रासदी पर कवि धूमिल लिखते हैं–

"एक आदमी रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है ना रोटी खाता है
वह सिर्फ रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूँ
यह तीसरा आदमी कौन है
मेरे देश की संसद मौन है।"[2]

कवि धूमिल इस कविता के पंक्ती के माध्यम से बताते है की आम आदमी का कोई मोल नहीं है। उसका कोई वजूद नहीं है। बड़े लोग, पैसे वाले लोग अपने इशारों पर आम आदमी को नचाते हैं। यहाँ रोटी से मतलब षड़यंत्र की व्यवस्था है। समाज के दो घटक एक-दूसरे के साथ काम करते हैं और उन दोनों में आपसी विवाद कोई और व्यक्ति लगाता है। जिसे इन दोनों से कोई लेना-देना नहीं होता वह तो बस उनके साथ खेल कर इनका तमाशा देखता है।उनको आपस में लडाता है।

देश की आजादी के बाद 26 जनवरी सन 1950 से हमारे देश में संविधान लागू होकर सबको समान अधिकार मिले किंतु वह सिर्फ कागज पर थे वास्तविकता उससे पूरी विपरीत है।

देश में आज भी गरीब और अमीर एक समान नहीं है। अमीर लोग आज भी गरीबों को अपना गुलाम मानते हैं उनसे कम पैसे देकर ज्यादा काम करवाते हैं।किन्तु आम लोग आज भी इस व्यवस्था में कुचले जाते हैं। उसे अपने कुछ भी अधिकार नहीं मिल पाते है। उनका पूरा नियंत्रण इन बड़े लोगों के हाथ में है इस पर कवि धूमिल कहते हैं–

"लोहे का स्वाद
लोहार से मत पूछो
उस घोड़े से पूछो
जिसके मुंह में लगाम है।"[3]

लोहार तो लोहे को पिघलाता है पर उसका सही स्वाद अगर किसी को पता है तो उस घोड़े को है जिसके मुँह में लगाम है।

घोड़े को अपनी क्षमता पता है कि वह कितना दौड़ सकता है। लेकिन उसकी पूरी क्षमता को नियंत्रण में करने वाला घुड़सवार है, जो घोड़े के मुँह में लगे लगाम से घोड़ा उसके हाथों में है, उसके नियंत्रण में है। यानी वायु वेग से दौड़ने वाले घोड़े का लगाम भी घुड़सवार के रूप में जो वायुगति घोड़े को भी रोकने या नियंत्रण मे लाने का काम करता है, किस के नियंत्रण में है तो यह नियंत्रण उसके मुँह में लगे लगाम के कारण है। उससे यह स्पष्ट होता है कि बड़े-बड़े लोग गरीब लोगों को अलग-अलग तरह से अपने नियंत्रण में रखते हैं। ज्यादातर बड़े लोग आम आदमी को इंसान ना मानकर जानवर मानते हैं। वह गरीबों पर अन्याय, अत्याचार करके उनका शारीरिक, मानसिक शोषण करके उनका दमन भी करते हैं। वह लोग गरीब और अमीर में समानता नहीं मानते हैं। गरीब आदमी, आम जनता इतना सारा काम करती है पर उनका नियंत्रण बड़े लोगों के हाथ मे है। गरीब या आम आदमी का लगाम और मुँह में लगा लोहा उसके पेट की भूख है जिस कारणवश वह अन्याय, अत्याचार सहता रहता है।

आर्थिक विषमता इतनी ज्यादा है की १० प्रतिशत लोगों के पास ८० फीसदी संपत्ति है तो ८० फीसदी लोगों के पास

मात्र दस प्रतिशत संपत्ति है।जिस कारणवश अमीर लोग गरीबों पर अन्याय करते है।आजकल बहुत जगह पर देखा जाता है की गुणवत्ता और प्रतिभा होने के बावजूद गरीब लोगों को कई सारे अवसर नहीं मिलते वही अमीर पैसेवाले लोग पैसे के बलबूते अपना कम करके लेते है।

समता और असमानता के बारे में धूमिल कहते हैं कि–

"बाबूजी सच कहूँ मेरी निगाह में
ना कोई छोटा है
ना कोई बड़ा है
मेरे लिए हर आदमी एक जोड़ी जूता है
जो मेरे सामने मरम्मत के लिए खड़ा है।"[4]

कवि समाज के हर एक लोगों में समानता देखना चाहते हैं,वह वर्णहीन समाज की कल्पना करते हैं; इसलिए वह सब को एक ही दृष्टि से देखते हैं। उनकी दृष्टि से कोई छोटा या बड़ा नहीं होता, वह हर आदमी को एकसमान जूतों के जोडों के समान मानते है। धूमिल का कहना है की इस भ्रष्ट व्यवस्था में अन्याय,अत्याचार की घटनाएँ ज्यादातर बड़े लोगों द्वारा छोटे पर होती है। दमन और तानाशाही आम लोगों पर की जाती है। धूमिलजी ने व्यवस्था की अमानवीय प्रवृत्ति और उसकी क्रूरता का वर्णन किया है। अपने स्वार्थ के लिए जनतंत्र द्वारा बनाई भ्रष्टाचार से लिप्त व्यवस्था ही जनता का चारों और से शोषण करती है और यह व्यवस्था ऐसे ही हमेशा के लिए बनी रहे इसलिए समय-समय पर अपने फायदे के कानून लाये जाते है। इस कानून को अमल में लाने के लिए अधिकारीयों द्वारा न्याय के लिए आवाज उठानेवाले की आवाज को दबाने का काम किया जाता है। पुलिस द्वारा बेवजह धरना,जुलुस, मोर्चो पर डंडे बरसाए जाते है। धरना, अनशन, मोर्चो में बेकसूर लोगों को जानबूझकर कसूरवार ठहराकर उनपर झूठी धाराएँ लगाकर उनपर मुकदमे चलाये जाते है। इन सब घटनाओं के पीछे अदृश्य हाथ पूँजीवादी लोगों के होते है इस बात को एक जनवादी कवी भलीभांति जानता है क्योंकि उसने इन सभी बातों को भुगता हुआ है, यह उनके स्वअनुभव है।

इसलिए धूमिल कहते है–

"खून के थक्के में तड़पता हुआ
जब वह युवा जिस्म
गिर पड़ा रस्ते के ठीक बीचो बीच
उस वक्त जनतंत्र किधर था?"[5]

संविधान में जनतंत्र के भीतर सबको समान अधिकार दिए है किन्तु वह सिर्फ कागज पर ही है क्योकि वास्तविकता में अप्रत्यक्ष रूप में कानून पूँजीवादी लोगों के इशारे पर चलते है। खुद पर हुए अन्याय के खिलाफ खड़े होकर न्याय माँगना भी पूंजीपति लोगों को अच्छा नहीं लगता, इसलिए वह भ्रष्टाचार में लिप्त व्यवस्था को अपनी हाथों की कठपुतली की तरह नचाते है और आवाज उठानेवाले की आवाज हमेशा के लिए दबा देते है। जब एस प्रकार का अन्याय,अत्याचार,शोषण तथा दमन होता है तब जनतंत्र कहाँ होता है ऐसा कवि पूछते है।

निष्कर्ष

'धूमिल' जनवादी कवी है क्योंकि उन्होंने हमेशा जनता की आवाज बनकर कविताएँ लिखी। उनकी कविताओं में पूँजीवाद के खिलाफ उन्होंने अपनी कलम चलाई है।आजादी के बाद भी देश की हालत नहीं सुधरी उसके लिए वह व्यथित और चिंतित थे। इस व्यथा को वह अपनी कविता 'बीस साल के बाद में 'व्यक्त करते दिखाई देते है। भ्रष्टाचार में लिप्त शासन व्यवस्था के शिकार वह स्वयम भी हुए है। संविधान ने सबको समता एवं समानता का अधिकार दिया है किन्तु प्रत्यक्षरूप में वैसा नहीं होता इसके लिए धूमिल आवाज उठाते है। देश की आजादी के बाद भी आर्थिक विषमता के चलते पूँजीवादी लोग आम

जनता को एक गुलाम की तरह इस्तेमाल करते है। जनतंत्र सिर्फ नाम का है यहाँ सरकारी बाबु पूँजीपति लोग, राजनेता, अनैतिक कार्य करनेवाले लोग, बलशाली लोगों के हाथों की कठपुतली है। पुलिस थाना, सरकारी दफ्तर हर जगह पर बिना घूस दिए आम आदमी के काम नहीं होते। जो लोग ऐसे भ्रष्टाचार का विरोध करते है उनके एक तो काम नहीं होते और दूसरी तरफ उनपर झूठे मुकदमे चलाकर उन्हें कारागार में डालकर सताया जाता है। ऐसे गलत कामों पर प्रश्न उठाने पर मेरे देश की संसद मौन हो जाती है ऐसा धूमिल कहते है। धूमिलजी को जिस तरह से अपने देश के नेता, पूंजीपति सामाजिक, राजकीय दलों से घोर निराशा तथा मोहभंग हुआ है। इस प्रजातंत्र पर उनको अब भरोसा नहीं रहा है वह कहते है की —"न यह प्रजा है न यह तंत्र है यह तो इंसानों के खिलाफ खुला षड़यंत्र है।" इसलिए धूमिल अब नये प्रजातंत्र की खोज में है।

धूमिलजी की कविताओं से लोगों ने प्रेरणा लेकर अन्याय, अत्याचार, शोषण, भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाकर एकजुट होना चाहिए। भ्रष्टाचार शिष्ठाचार न बने इसके लिए इस जनवादी कवी के राह पर सभी लोगों ने चलना चाहिए ऐसी उम्मीद करते है!

धन्यवाद .....जय हिन्द, जय नवभारत ......!

संदर्भ

1. संसद से सड़क तक, धूमिल, पृ.सं. 86
2. कल सुनना मुझे, रोटी और संसद, धूमिल, पृ.सं.33
3. कल सुनना मुझे, धूमिल, पृ.सं. 80
4. संसद से सड़क तक, मोचीराम, धूमिल, पृ.सं.41
5. सुदामा पांडे का प्रजातंत्र, धूमिल, पृ.सं.- 52

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

Opportunities and Challenges in Open Educational Resources in Higher Education in India

Himani Meena
Asst. Professor (English)
Government College, Nagar Fort,
Distt. Tonk (Raj.) PinCode : 304024
Mobile.No.7596429188

Abstract

This paper aimed to reveal the opportunities and challenges in Open Educational Resources in higher education in India. Higher education system in India comprises the Under Graduate, Post Graduate and Doctoral Programme. Open Educational Resources was firstly used at a UNESCO meeting in 2002(UNESCO 2002).

The emergence of Open Educational Resources in higher education is a part of the larger social movement towards opening up that was previously closed to all except the people who paid for access. Itcan play an important role in the distance learning by improving the quality of content, easy to access and reach to all. These resources are open and free for all human beings to use access and contribute to the sum of human knowledge.

Open Educational Resources seeks opportunities to the students improving the quality of learning materials and reduced costs of learning content. By this widening participation of students is possible in higher education and promoting lifelong learning. Besides this Open Educational Resources are helpful in bridging the gap between the formal, informal and non-formal education. So, we can say that Open Educational Resources can promote 'informal learning'. A learner who is able to access the internet can access study material from any university of the world.

Higher education system of present scenario has been using the internet and digital technologies to improve the teaching learning process, and these resources are beneficially used for crossing the boundaries of demographic, geographic and economic and provides more opportunities in teaching learning process.

Besides opportunities, this paper highlights some challenges of Open Educational Resources in higher education for developing country like India, like technical (lack of broadband, interoperability), economic (lack of resources), social (unwillingness, absence of technical knowledge) and restriction to use copyrighted material without concern. Lack of policies and incentives for teachers to excel in open educational resources. In general people remain suspicious about the quality of free resources (Wiley and Gurrell,2009).

This paper mainly focuses on the opportunities available to India in Higher Education and challenges to tackled to become a knowledgeable society.

Introduction

Education is very important basic need for the human beings. As India is the second largest country in population so to provide formal education for all is a big challenge. The answer to this challenge is OER. Open educational resources are helpful in bridging the gap between the formal, informal and non-formal education. So, we can say that open educational resources promoteinformal learning. Higher education system in India comprises undergraduate, postgraduate and doctoral programme. Nowadays ICT has an important role in the present higher education system. Open educational resources enable the ICT based lifelong learning and opportunities for collaboration between colleges and universities all around the world. A learner who is able to access the internet can access learning content in the form of pdf, recording video, audio from any university of the world. Open educational resources can improve educational practices, integration across courses and technical quality. These resources facilitate accessible, affordable, collaborative learning, flexible and the open sharing of teaching practices. As 'Cape Town Open Education Declaration 'promote open education as "Educators worldwide are developing a vast pool of educational resources on the internet, open and free for all to use. These educators are creating a world where each and every person on earth can access and contribute to the sum of all human knowledge."

Teachers, learners and management and administration members also review and improve their knowledge, except these students before admission in any course can review course material on open educational resources.

Historical development of open educational resources

The term 'learning object' was coined by Wayne Hodgins in 1994.Role of learning object's in the history of open educational resources is its popularization of the idea that digital materials can be designed and produced in such a manner as to be reused easily in a variety of pedagogical situations. And the term "open content" was used by David Wiley in 1998. In 2001 Larry Lessigand others founded the Creative Commons and released a flexible set of licenses. It's role in the history of open educational resources is the increase in credibility and confidence their legally superior, much easier to use licenses brought to the open content community.

In 2001 MIT (Massachusetts institute of technology) initiated its Open Course Ware initiative to publish nearly every university course for free access for non-commercial use. And finally, the term "open educational resources" was firstly coined by UNESCO meeting in 2002. According to UNESCO (2002) "Open educational resources are defined as 'technology enabled, open provision of educational resources for consultation, use and adaptation by a community of users for non-commercial purposes'. They are typically made freely available over the internet. Their principal use is by teachers and educational institutions support course development, but they can also be used directly by students. Open educational resources include learning objects such as lecture material, simulations, demonstrations, references and readings, experiments, as well as syllabi, curricula and teachers' guides. (UNESCO 2002)

Status of open educational resources in India

In developing country India, the National Knowledge Commission (NKC,2007) has recommended increasing the amount of open educational resources and Open Access (OA) to address these pressing problems. The widespread availability of high quality educational resources in imperative to change the paradigm of teaching for the better and improve the overall quality of education, and University Grants Commission (UGC) and other national policy making bodies are providing the support to Open educational resources for improving the quality and access of the education.

India embraced open educational resources by the year 2007, with support from government and some other external funding agencies (James & Bossu, 2014). Some of the open educational resources in India are as Digital Library of India hosted by IISc (Indian Institute of Sciences), Bangalore. National Digital Library (NDL) is initiated by IIT Kharagpur, National Knowledge Network (NKN) established in 2010, on the recommendations of the NKC (2007), Shodhganga created by INFLIBNET, Vidyanidhi, Shod Gangotri, Eprints@IISc (Is the first open access digital repository, setup in 2001 by the National Centre for Scientific Information (NCSI). Besides these a large number of collaborative initiative for providing open educational resources are as National Program on Technology Enhanced Learning (NPTEL) a joint initiative of seven Indian Institutes of Technology, Consortium for Education Communication (CEC) set up by the UGC, Project Ekalavya by the Indian Institute of Technology Bombay. Project OSCAR (Open Source Courseware Animations Repository) by the Indian Institute of Technology, Bombay, National Mission on Education using Information and Communication (NMEICT) launched by the Ministry of Human Resources and Development (MHRD), eGyankosh, e-PG Pathshala Project, National Institute of Open Schooling (NIOS), SWAYAM, etc. However Open Educational Resources are in an initial stage of development in India and more steps should be taken up for the development and availability of open educational resources in India for the public domain.

Opportunities in higher education

There are 15 open universities in India, one national and 14 state open universities and about 200 dual mode universities provide higher education. "The inherent principle of distance education is to reduce spatial, geographical, economic and demographic boundaries to provide easy access to higher education." (de Hart, Chetty and Archer.2015). Open educational resources play an extremely important role in open distance learning and provide easy access to learning materials, open access, well equipped digital libraries and good quality learning resources. Open educational resources seek opportunities to the students by improving the quality of learning materials and reduced costs of learning content. By this widening participation of students is possible in higher education and promoting lifelong learning. Besides this Open Educational Resources are helpful in bridging the gap between the formal, informal and non-formal education. So, we can say that Open Educational Resources can promote 'informal learning'. A learner who is able to access the internet can access study material from any university of the world Teachers, learners and management and administration members also reveal and improve their knowledge except these students before admission in any course can review course material in Open Educational Resources.

Some opportunities in open educational resources in educational system in developing countries as cited by Kanwar, Kodhandaraman and Umar (2010) include –

i) Helping developing countries save course content development time and money,

ii) Facilitating the sharing of knowledge,

iii) Helping to preserve and disseminate indigenous knowledge,

iv) Addressing the digital divide by providing capacity building resources for educators,

v) Improving educational quality at all levels.

By these resources learning content available free for the unreached sections of the society for enhancing learning opportunities.

Challenges in higher education

For the developing country like India, providing equal and quality education to all the population is a greatest challenge. But there are some challenges faced by Indian open educational initiatives. These are categorized as technical, economical, legal and social challenges. Lack of broadband accessibility, financing, sustainability of resources, copyright and licensing, unwillingness, awareness and interest of the society, absence of technical knowledge, technical skills, infrastructure, quality of content, sustainability of open educational resources initiatives are some other challenges in Indian perspective.

The OECD study (2007) exemplified some challenges to use of open educational resources which are also meaningful in the context of Indian open educational system. These challenges are as follows :

1. Technical barriers such as lack of broadband access.
2. Economic barriers such as inadequate resources to invest in the required hardware and software.
3. Social barriers such as a lack of the skills needed to use technology.
4. Policy oriented barriers such as the lack of clear policy in institutions regarding open educational resources.
5. Legal barriers such as the time and expense associated with gaining permission to use.

Conclusion

As discussed in this paper, there are an increasing number of open educational resources initiatives in India and various National and State Universities provide digital learning resources throughout the country. These resources are free, open and accessible to all for the overall development of society's weaker sections and others. Open educational resources have opened a new sphere in the field of open distance learning. But some challenges are also there like financial, technical, legal, social and some other challenges. Besides these challenges the growth of open educational resources in India cannot be ignored and more efforts are required for achieving the goal of education.

Reference

[1] Atkins, D, E.; Brown, J, S. and Hammond, A, L. (2007), A Review of the Open EducationalResources (OER) Movement: Achievements, Challenges and New Opportunities,
Retrieved fromhttp://tinyurl.com/2swqsg.

[2] Cape Town Open Education Declaration (2007). Cape Town Open Education Declaration: Unlocking the promise of open educational resources. Cape Town: Open Society Institute.
Retrieved from http://www.capetowndeclaration.org / read - the declaration.
[3] De Hart, K.,Chetty, Y.&Archer,E.(2015).Uptake of OER by Staff in Distance Education in South Africa. International Review of Research in Open and Distributed Learning, 16(2).
Retrieved from http://www.irrodl.org/index.php/irrodl/article/view/2047
[4] Geser, G (2007), Open Educational Practices and Resources - OLCOS Roadmap 2012,
Retrieved fromhttp://www.olcos.org/cms/upload/docs/olcos_roadmap. pdf
[5] James, R. & Bossu, C. (2014). Conversations from south of the equator: Challenges and Opportunities in OER across Broader Oceania. RUSC. Universities and Knowledge Society Journal, 11(3). 78-90.
Retrieved from DOI: http://dx.doi.org/10.7238/rusc.v11i3.2220
[6] Kanwar, A., Kodhandaraman, B., & Umar, A. (2010). Toward sustainable open educational resources: a perspective from the global south. American Journal of Distance Education, 24, 65–80.
Retrieved from DOI:10.1080/08923641003696588
[7] MHRD (2013). All India Survey on Higher Education. New Delhi: Government of India.
[8] MIT Open Courseware (2006), 2005 Program Evaluation Findings
Retrieved from Report,http://ocw.mit.edu/ans7870/global/05_Prog_Eval_Report_ Final.pdf
[9] NKC (2007). National Knowledge Commission: Report to the Nation 2007. Government of India.
Retrieved from http://www.knowledgecommission.gov.in/ recommendations/ oer.asp
[10] OECD (2007), Giving knowledge for free: the emergence of open educational resources.
Retrieved from: http://www.oecd.org/dataoecd/35/7/38654317.pdf
[11] OECD (2007), Giving Knowledge for Free: The Emergence of Open Educational Resources,
Retrieved fromhttp://tinyurl.com/62hjx6.
[12] OECD (2007), Giving Knowledge for free: the emergence of open educational resources.
Retrieved from http://www.OECD.org/dataoecd/35/7/38654317.pdf
[13] Raysh, Thomas (2017) Use of Open Educational Resources: Indian Scenario. International Journal of Library and Information Sciences, 6(5),2017, pp.17-26.
Retrieved from http://www.iaeme.com/IJLIS/issue.asp?JType=IJLIS&V Type= 6&IType=5
[14] UNESCO (2002). UNESCO Promotes New Initiative for Free Educational Resources on the Internet.
Retrieved fromhttp://www.unesco.org/education/news_en/080702_free_ edu_ress. shtml
[15] Wiley, D & Gurrell, S (2009) A decade of development …, Open Learning: The Journal of Open and Distance Learning, 24(1): 11-21
Retrieved fromhttp://pdfserve.informaworld.com/436010909097159.pdf

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary &
Multiple Languages Quarterly Research Journal

हिन्दी साहित्य में दलित चिंतन का रूप और स्वरूप

डॉ. गजानन्द मीणा
सहायक आचार्य, हिन्दी,
भगवान आदिनाथ जयराज मारवाडा राजकीय महाविद्यालय, नैनवा
पता - 603, स्वराज एनक्लेव, बोरखेड़ा, कोटा, पिन-324005
मो. 7597429188

हिन्दी में दलित साहित्य एक प्रकार का विरोध, आक्रोश और क्रोध का साहित्य है। इसमें समाज से अलग थलग रहने, बहिष्कृत किए जाने और सामाजिक तबकों के द्वारा तकलीफ पहुंचाए जाने का जिक्र भी है लेकिन अंततोगत्वा ये गुस्सा बन कर ही फूटा है। सवर्ण समाज के द्वारा सदियों से उन्हें हाशिये पर रखने के बाद दलित साहित्य उस रूढ़ बंधन से निकलने की कोशिश है जहां समानता, समरसता, और सामाजिकता का आग्रह दिखाई देता है।

दलित साहित्य खास कर दलित कविता की बात आते ही हमारा ध्यान सबसे पहले हीरा डोम की कविता पर जाता है जहां दुःख, बैचेनी और मुखालफत का स्वर दिखाई देता है। भाषाई सौंदर्य तो अपनी जगह है ही। हीरा डोम 1914 में सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित अपनी इस कविता जहां बोलने की आजादी न हो बोलने का जोखिम उठाते हैं, और जहां लिखने की मनाही हो वहां लिखने का खतरा मोल लेते हैं। हाँ इतना जरूर करते हैं कि अपने आपको अछूत घोषित करते हुए अपनी शिकायत दर्ज करते हैं...

हमनी के रात दिन दुःखवा भोगत बानी,
हमनी के साहिबे से मिनती सुनाइबि।
हमनी के दुःख भगनवो न देखताजे,
हमनी के कबले कलेसवा उठाइबी।।

ये एक लम्बी कविता है जिसमें भगवान से भी शिकायत है, उस भगवान से भी जिसने प्रह्लाद को बचा लिया था, और शिकायत उन लोगों से भी है जो उन्हें डोम समझकर ऊपर से पानी पिलाते हैं, ताकि उनके बर्तन अपवित्र न हो जाएं। यही वो जगह है जहां कबीर भी सवाल करते हैं कि जब हम दोनों एक ही स्थान से पैदा हुए तो तुम ब्रह्मण और हम शुद्र कैसे हो गये?

इस सामाजिक भेद भाव का प्रचलन काफी पुराना है, विशेषकर संत साहित्य में इसके रूप देखे जा सकते हैं लेकिन दलित विमर्श एक आंदोलन के रूप में आधुनिक काल की उपज है। इस दलित विमर्श में भी दलित आत्मकथा का जो प्रभाव है, वो साहित्य की अन्य विधाओं में नहीं है। खास कर अस्सी के दशक के साहित्यकारों में इस पीड़ित जनता की अभिव्यक्ति रोष, आक्रोश और विद्रोह को स्वर लेने लगी थी. जिसका प्रतिनिधित्व मलखान सिंह, ओमप्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमिशराय, तुलसीराम, और रमणिका गुप्ता वगैरह कर रही थीं। कविताओं में जहां ओमप्रकाश वाल्मीकि का 'सदियों का संताप', जयप्रकाश का 'गूंगा नहीं हूं मैं', सूरज पाल चौहान का 'प्रयास' आदि संग्रह चर्चा में रहे, वहीं दलित कहानियों में रमणिका

गुप्ता की बीस दलित कहानियां, सुशीला टाक भौरे का 'अनुभूति के घेरे में' ओमप्रकाश वाल्मीकि का कहानी संग्रह 'सलाम' और सूरजपाल चौहान का 'हैरी कब आएगा' आदि ने दलित साहित्य को व्यापक मजबूती प्रदान की। ठीक इसी प्रकार दलित उपन्यासों में भी छप्पर, जस तस भई सवेर, मुक्ति पर्व इत्यादि की चर्चा होती है।

दलित चेतना या दलित विमर्श समकालीन कविता का मुख्य विषय है। ये अलग बात है कि दलित शब्द भी अपने आप में अलग अर्थ लिए हुए है, पर इतना तो सत्य है कि दलित वो है जो आर्थिक रूप से वंचित और सामाजिक रूप से शोषित है। वो अपनी जीविका से लेकर जीवन तक दूसरों पर आश्रित है। उसका अपना कुछ भी नहीं है। यही दर्द ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविता 'ठाकुर का कुआँ' में भी पूरी शिद्दत के साथ दिखाई देता है।

चूल्हा मिट्टी का
मिट्टी तालाब की
तालाब ठाकुर का
भूख रोटी की
रोटी बाजरे की
बाजरा खेत का
खेत ठाकुर का..............
फिर अपना क्या
गाँव? देश?[1]

इसी तरह का सवाल दलित लेखक और कवि सूरजपाल चौहान भी अपनी कविता में उठाते हैं–

मेरा गाँव कैसा गाँव,
न कहीं ठौर न कहीं ठांव।[2]

देश को गुलामी से मिलने को मुक्ति मिल गई, लेकिन क्या स्वतंत्र भारत में सब लोगों का विकास हो पाया? कम से कम दलितों के साथ तो स्थिति वैसी ही बनी रही. यही सवाल दलित कवि आज भी पूछ रहा है....

तुम कहते आजादी आई
हमको न अभी तक पता चला
आजाद हुआ बस लाल किला।[3]

दलित कविता का स्पष्ट मत है कि.........

हमें आदमी चाहिए
और आदमीयत चाहिए।[4]

यही वो प्रश्न है जो दलितों को निचले पायदान पर रखने की मंशा को उजागर करता है और ये दलित कविता का मुख्य स्वर भी है, जैसा कि डॉ. जयप्रकाश कर्दम ने भी कहा है कि मनुष्यता होगी तो दलितों के जीवन का अंधकार मिटेगा उनके अंदर आत्मविश्वास पैदा होगा।[5]

एक और बात जो दलित साहित्य को दीगर साहित्य से अलग करता है वो ये है कि ये साहित्य प्रेम, या मनोरंजन के लिए नहीं लिखा गया इसलिए इसका कवि न किसी गोपियों के प्रेम पाश में है और न वो यक्ष की तरह किसी कुबेर पर्वत पर विरह के आंसू बहा रहा है। यहां छायावाद वाला न पलायनवाद है और न ही हालावाद का प्याला या प्रयोगवाद का रक्त खौला देने वाला चुम्बन है, बल्कि ये साहित्य एक आंदोलन है जिसमें सदियों की दास्ता से निकलने और अपनी एक जगह तय करने की छटपटाहट है।

दलित साहित्य के अंतर्गत दो प्रकार के लेखक मौजूद हैं। एक वो जो स्वयं दलित हैं और दूसरे वो जो गैर दलित हैं। दलित लेखकों का जो साहित्य है वो उनका भोगा हुआ यथार्थ है लेकिन गैर दलित का जो साहित्य है वो प्रेमचंद आदि कुछ

लोगों को छोड़कर उनका फैशन और पैशन है। ये बात अलग है कि दलित लेखकों का प्रेमचंद पर भी इल्जाम कम नहीं है, उन्हें सामंत का मुंशी कह कर पुकारा गया। पर कँवल भारती को ये बात ठीक नहीं लगती. उनके अनुसार 'मैंने अनुभव किया कि 1936 तक के काल खंड में प्रेमचंद अकेले ऐसे लेखक हैं, जिनसे साहित्य में दलित विमर्श की शुरुआत होती है.... वे दलित साहित्य की मुक्ति में दलितों के पक्ष में खड़े नजर आते हैं।'[6]

असल में दलितों की अपनी जिन्दगी है अपना व्यवसाय है, अपनी पीड़ा है और जाहिर है दूसरा उसे उस रूप में अनुभव नहीं कर सकता। मैला ढोने, जूठन खाने, चमड़े पकाने, जूते बनाने सड़े गले मांस खा कर भूख मिटाने का जो दंश दलितों ने झेला है वो किसी द्विज के साहित्य में संभव भी नहीं है। एक महत्वपूर्ण बात ये है कि दलितों का आग्रह और उनका अपनी जगह बनाने के लिए इंकलाब अपनी जगह है लेकिन उन्होंने कभी दलितों को एकजुट कर समाज के दूसरे तबके के खिलाफ खड़ा करने का काम नहीं किया। उनका साहित्य बीसवी शताब्दी के विश्वबंधुत्व का साहित्य है। समाज में एकता और जातीय उत्पीड़न का खात्मा उनके साहित्य का मूल उद्देश्य रहा है।

डॉ. जयप्रकाश कर्दम की भी धारणा है कि 'दलितों की समस्या केवल पेट भरने की नहीं है. इसमें कहीं बढ़कर उनकी समस्या सम्मानजनक जीवन की है।7 ये भी देखने की बात है कि दलितों में भी दलित स्त्रियों का जीवन और भी बद से बदतर है। गरचे दलित स्त्रियों के पास कुछ ऐसे अधिकार भी हैं जो सवर्ण स्त्रियों के पास नहीं हैं जैसे वहां विधवा विवाह की छूट है, दलितों के अपने पंचायत हैं जहां उनकी बड़ी से बड़ी समस्याएं हल हो जाती हैं, फिर दलित स्त्रियां जिस दोहरे अभिशाप में जी रही हैं वो कौशल्या बैसंत्री की आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप', और सुशीला टाकभौरे की आत्मकथा 'शिकंजे का दर्द में देखा जा सकता है. लेखिका सुशीला टाकभौरे पति द्वारा बार-बार पीटी जाती हैं तो श्यौराज सिंह बेचैन की कहानी 'अस्थियों के अक्षर' में माँ का पति और देवर दोनों के द्वारा पीटे जाने का वर्णन है।

इसी दंश से अपना गाँव कहानी की छमिया और जंगल की रानी की कमली भी गुजरती है। दलितों में शिक्षा की कमी का अंकन प्रायः साहित्यकारों की रचनाओं में देखने को मिलता है। श्यामलाल शमी की कविता घीसु की बेटी को पढ़ने नगर गाँव से जाना और ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविता बिटिया का बस्ता में देखी जा सकती है, जहां न पढ़ पाने का दर्द साफ दिखाई देता है। कभी संत रैदास ने भी कहा था 'जात-जात में जात है ज्यों केलन के पात' फिर उन्होंने जात को एक प्रकार का रोग भी बताया था 'रविदास जात का रोग'।

हिन्दी साहित्य के तमाम नामकरण की तरह दलित साहित्य का भी विरोध हुआ जहां काशीनाथ सिंह ने कहा हिंदी में दलित लेखक हैं दलित साहित्य नहीं है, वहीं डा रामदरश मिश्र ने यहां तक कह दिया कि साहित्य में आरक्षण नहीं चल सकता, लेकिन इन तमाम विरोध के बावजूद साहित्य में हिन्दी दलित साहित्य को व्यापक स्वीकृति मिली और दलित विमर्श और स्त्री विमर्श ने जो रास्ता खोला उस जमीन पर कई विमर्श अपना वजूद तलाश करने में लगे हुए हैं।

संदर्भ :

1. सदियों का संताप, ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृष्ठ -3
2. क्यों विश्वास करूँ, सूरजपाल चौहान, पृष्ठ -10
3. उत्पीड़न की यात्रा, लक्ष्मी नारायण सुधाकर, पृष्ट -2
4. शोषितनामा, मनोज सोनकर, पृष्ठ 95
5. दलित विमर्श और हिंदी साहित्य, दीपक कुमार पाण्डेय, पृष्ठ -94
6. प्रेमचंद और दलित विवाद, कँवल भारती, पृष्ठ -68
7. आलोचना की तीसरी परम्परा और जयप्रकाश कर्दम, डा नामदेव, पृष्ठ -150

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

राजनीतिक दलों के घोषणा पत्रों में शिक्षा : एक तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. अभिमन्यु वशिष्ठ
प्राचार्य, सिद्धेश्वर विनायक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, धरियावद जिला - प्रतापगढ़ (राज.)
गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बांसवाड़ा (राज.) से सम्बद्ध
मो. 7023164451 ईमेल abhimanyuvashistha810@gmail.com

सार संग्रहण

(1) प्रस्तावना - भारत एक विशाल देश है। इस देश में आजादी के बाद से ही लोकतांत्रिक प्रक्रिया से चुनाव होते रहे हैं। राजनीतिक दल अपने अपने घोषणा पत्रों के माध्यम से जनता के बीच अपनी योजनाएं और विचार रखते हैं।

(2) घोषणा पत्र और शिक्षा - शिक्षा और राजनीति के सम्बन्ध को अलग करके नहीं देखा जा सकता। भारत में भी विभिन्न सरकारों ने समय समय पर अलग अलग शिक्षा आयोगों द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों में नेतृत्व क्षमता के विकास, शिक्षा द्वारा प्रजातंत्र को सुदृढ़, योग्य नागरिक आदि बनाने को महत्वपूर्ण माना गया है।

(3) राजनीतिक दलों के घोषणा पत्र - प्रस्तुत आलेख में लोकसभा चुनाव 2024 में भाग ले रहे दो प्रमुख दलों भाजपा और कांग्रेस के घोषणा पत्रों का अध्ययन सम्मिलित है।

(4) घोषणा पत्रों का तुलनात्मक अध्ययन - तालिका अनुसार राजनीतिक दलों के घोषणा पत्रों में शिक्षा के निभिन्न आयामों में अन्तर देखा जा सकता है।

(5) निष्कर्ष - दोनों ही पार्टी के मेनिफेस्टों में शिक्षा और तकनीक के सम्बन्ध को महत्व देने वाले विचार प्रमुखतया से है लेकिन इसके लिये कार्य योजना या एक्शन प्लान नहीं है जैसे कि अनुसूचित जनजाती के शैक्षिक उन्नयन के लिये क्या किया जायेगा इसकी कहीं चर्चा ही नहीं है।

मुख्य बिन्दु : शिक्षा, घोषणा पत्र, पाठ्यक्रम।

1. प्रस्तावना

भारत एक विशाल देश है। इस देश में आजादी के बाद से ही लोकतांत्रिक प्रक्रिया से चुनाव होते रहें हैं। राजनीतिक दल अपने अपने घोषणा पत्रों के माध्यम से जनता के बीच अपनी योजनाएं और विचार रखते हैं। इन्हीं घोषणा पत्रों पर भविष्य की कार्य योजना टिकी रहती है और जनता इन्हीं घोषणा पत्रों को ध्यान में रखकर अपने मत का प्रयोग करती है। राजनीतिक दलों के द्वारा अपने उद्देश्यों, नीतियों व किये जाने वाले कार्यों तथा घोषणाओं को लेखबद्ध करते हुए जो दस्तावेज तैयार किया जाता है उसे घोषणा पत्र कहते हैं। वर्तमान समय में राजनीतिक दल चुनाव के समय भारत के निर्वाचन आयोग को अपना घोषणा पत्र भी प्रस्तुत करते हैं।

2. घोषणा पत्र और शिक्षा

शिक्षा मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है और शिक्षा मनुष्य के अज्ञान को दूर करती है। शिक्षा लोगों की क्षमताओं और विशेषताओं को विकसित करने के अवसर देती है और देश के लिए योग्य नागरिक तैयार करती है। योग्य व्यक्तियों की विचारधारा, कार्य एवं सहयोग से ही देश का लोकतंत्र मजबूत और सार्थक बनता है साथ ही उस देश की राजनीति पर उसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। लोकतंत्र राजनीति का एक प्रकार है जिसका नेतृत्व ठीक से तभी हो सकता है जब उस लोकतंत्र में रहने वाले सभी नागरिक शिक्षित हों। किसी भी प्रकार की राजनीति को समझने, उसमें सहयोग प्रदान करने और नेतृत्व करने के लिए शिक्षित होना आवश्यक है।शिक्षा और राजनीति के सम्बन्ध को अलग करके नहीं देखा जा सकता।भारत में भी विभिन्न सरकारों ने समय समय पर अलग अलग शिक्षा आयोगों द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों में नेतृत्व क्षमता के विकास, शिक्षा द्वारा प्रजातंत्र को सुदृढ़, योग्य नागरिक आदि बनाने को महत्वपूर्ण माना गया है।

3. राजनीतिक दलों के घोषणा पत्र

प्रस्तुत आलेख में लोकसभा चुनाव 2024 में भाग ले रहे दो प्रमुख दलों भाजपा और कांग्रेस के घोषणा पत्रों का अध्ययन सम्मिलित है। इस अध्ययन में मुख्यतया शिक्षा से सम्बन्धित बातों को ही शामिल किया गया है।

4. घोषणा पत्रों का तुलनात्मक अध्ययन

घोषणा पत्रों का तुलनात्मक अध्ययन निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट किया गया है–

क्र.सं.		विषय वस्तु	भाजपा घोषणा पत्रकांग्रेस घोषणा पत्र
1	कुल पेज	76	48
2	शिक्षा का कन्टेन्ट	59 वें पेज पर कुल दो पेज (59-60)	12 वें पेज पर कुल दो पेज (12-13)
3	पुराने कार्यों का उल्लेख	7 आईआईटी, 16 ट्रीपल आईटी, 7 आई आई एम, 15 एम्स, 315 मेडिकल कॉलेज और 390 युनिवर्सिटी बनाई।	वर्ष 2009 में आरटीई एक्ट लागू किया।
4	प्राइमरी स्तर	प्री स्कूल से माध्यमिक लेवल तक प्रत्येक बच्चे को ले जाना।	पूर्व प्राथमिक (केजी/नर्सरी) और प्राथमिक शिक्षा का एकीकरण करेंगे।
5	माध्यमिक / उच्च माध्यमिक स्तर	एनईपी 2020 के अनुसार पीएम श्री, एकलव्य और अन्य स्कूलों के नेटवर्क को विश्व स्तरीय बनाना।	ऑनलाईन व डिजीटल महत्त्व को देखते हुए कक्षा 9 से 12 के सभी स्टुडेन्ट्स को मोबाईल फोन देंगे, ड्राप आउट रोकने के लिए छात्रवृत्ति देंगे, केन्द्रीय विद्यालयों, नवोदय और कस्तूरबा विद्यालयों की संख्या में बढोतरी करेंगे।
6	हायर एजुकेशन	एनईपी 2020 का इम्प्लीमेन्ट, टेक्निकल प्लेटफॉर्म पीएम ई विद्या, स्वयं, स्वयं प्रभा का विस्तार, निः शुल्क पाठ्यक्रमों के साथ डिजीटल विश्वविद्यालय की स्थापना, तकनीक आधारित कौशल उन्नयन, एनईपी	कॉलेजों और विश्वविद्यालयों को स्वायत्तता देंगे, स्टेम विषयों के अध्ययन पर जोर, स्टुडेन्ट इलेक्शन को फेवर (अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, संरक्षण), 4 लाख तक बिना गारन्टी का एजुकेशन लोन, हायर इन्स्टीट्यूट के

		2020 के अनुसार डायनमिक सिलेबस तैयार करेंगे।	मेनेजमेन्ट निकाय में सेवारत शिक्षकों को प्रतिनिधित्व, इन्स्टीट्यूट को मान्यता देने के नियम सख्त/ कडे गुणवत्ता नियम करेंगे।
7	प्राइवेट इन्स्टीट्यूट	पर्टिकूलर प्राईवेट नाम नहीं आया है किन्तु इन्फ्रास्ट्रक्चर, इन्टर्नशिप व प्रशिक्षण को इस केटेगरी में शामिल कर सकते हैं।	शुल्क विनियमन समिति की स्थापना करेंगे, कोचिंग सेन्टरों और एडु टेक सेन्टरों के लिए कड़े गुणवत्ता मानक।
8	एक्स्ट्रीम कमिटमेन्ट	एनईपी 2020 का इम्प्लीमेन्ट, मातृभाषा में अध्ययन अध्यापन की स्वतंत्रता, मजबूत कौशल विकास इकोसिस्टम विकसित करना, वन नेशन वन आई डी जैसे एबीसी आईडी (एपीएएआर- ऑटोमेटेड परमानेंट एकेडमिक अकाउन्ट रजिस्ट्री) लागू करेंगे, रोजगार और स्वरोजगार बढ़ाने के लिए इन्डस्ट्री के साथ काम करेंगे।	एनईपी 2020 का संशोधन करेंगे, बुनियादी शिक्षा सभी बच्चों के लिए आवश्यक करेंगे, नीट व सीयूईटी इत्यादि की नीति पर पुनर्विचार, हर कक्षा और हर विषय में एक समर्पित शिक्षक हो, 5 साल में बेहतर परिणाम देंगे।
9	अन्य जानने योग्य	-	शिक्षकों को गैर शैक्षणिक कामों में नहीं लगायेंगे, नियमित रिक्तियों में संविदा शिक्षक नहीं लगाऐंगे, सरकारी स्कूलों में विभिन्न प्रयोजनों के लिए लिये जाने वाले शुल्क को समाप्त करेंगे, प्रत्येक तहसील/तालुका में सरकारी सामुदायिक कॉलेज की स्थापना करेंगे जिसमें आतिथ्य, पर्यटन, डिजिटल मार्केटिंग, पैरामेडिकल, पैरालीगल आदि कोर्स पढायेंगे तथा अतिआधुनिक इंटरनेट सक्षम सार्वजनिक पुस्तकालय स्थापित करेंगे।
10	शिक्षा पर व्यय	-	-

5. निष्कर्ष

उपर्युक्त विश्लेषण से यह पता चलता है कि भा.ज.पा. के घोषणा पत्रों में गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा देने की कल्पना की गई है जिसके लिए नये हायर एजूकेशन संस्थान खोलने, डिजिटल विश्वविद्यालय की स्थापना, आधुनिक पाठ्यक्रम और एनईपी 2020 को लागू करना अपरिहार्य माना गया है जबकि कांग्रेस के घोषणा पत्रों में बुनियादी शिक्षा की आवश्यकता, 1 से 12 तक निः शुल्क शिक्षा का प्रावधान, के.वी., नवोदय व कस्तूरबा स्कूलों में बढोतरी और एनईपी 2020 में बडे लेवल पर संशोधन करना बताया गया है।

यहां एक तथ्य स्पष्ट करना लाज़मी है कि दोनों ही पार्टी के मेनिफेस्टों में शिक्षा पर जीडीपी का कितने प्रतिशत व्यय किया जायेगा इस बात का कहीं भी उल्लेख नहीं है।

दोनों ही पार्टी के मेनिफेस्टों में शिक्षा और तकनीक के सम्बन्ध को महत्व देने वाले विचार प्रमुखतया से है लेकिन इसके

लिये कार्य योजना या एक्शन प्लान नहीं है जैसे कि अनुसूचित जनजाति के शैक्षिक उन्नयन के लिये क्या किया जायेगा इसकी कहीं चर्चा ही नहीं है।

कांग्रेस के मेनिफेस्टों में शिक्षा के लिये ऋण, 12 वीं तक फ्री शिक्षा, 9वीं से 12 वीं तक फ्री मोबाईल और स्कॉलरशिप देने सम्बन्धी घोषणाएं की हैं लेकिन भा.ज.पा. के मेनिफेस्टों में शिक्षा के लिये कहीं भी फ्री के कन्टेन्ट सम्बन्धी कोई घोषणा नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

हिन्दी पुस्तकें

भटनागर, आर.पी. एवं भटनागर, ए.बी. (1995). शिक्षा अनुसंधान. मेरठ : लॉयल बुक डिपो।

गुप्ता, एम. पी. (2008). भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ. आगरा : साहित्य प्रकाशन, pp-63-69-

काबरा, के.एन. (2005). भूमण्डलीकरण के भँवर में भारत : नयी दिल्ली. प्रकाशन संस्थान।

कोठारी, आर. (2007). भारत में राजनीति कल और आज. नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, p.19.

कुमारी, एन. (2010). लोकतंत्र में घोषणा पत्र का महत्त्व (pp.207.209). In डॉ. मुकेश कुमार/सुधांशु शेखर (ed.). लोकतंत्र नीति और नियति. सागर (मध्य प्रदेश) : विश्वविद्यालय प्रकाशन।

रॉय, ए. (2010). लोकतांत्रिक चुनाव प्रणाली का नकली द्वंद्ववाद (pp.225.230). In डॉ. मुकेश कुमार/सुधांशु शेखर (ed.). लोकतंत्र मिथक और यथार्थ. सागर (मध्य प्रदेश) : विश्वविद्यालय प्रकाशन।

JOURNALS -

अग्रवाल, वी. एवं सिंह, दिवाकर (जवनरी-मार्च, 2011). शिक्षक शिक्षा में शोध के मुद्दे, नया शिक्षक, 53 (1), pp. 72-88.

भार्गव, एन. (दिसम्बर, 2014). भारतीय प्रजातंत्र प्रणालीः बिगड़ा चरित्र, जड़ता के प्रश्न, मूलप्रश्न, p. 10-13.

E-JOURNALS - DISSERTATIONS:

Mikhaylov, S. Laver, M. & Benoit, K. R. (2011).Coder Reliability and Misclassification in the Human Coding of Party Manifestos.Political Analysis, Vol.20, pp.78-91.Retrieved from Open Access Articles Digital Dissertation Database.in March, 2019.

Spride, B. (2016).Public Manifesto on Food and Education Bill.Research Journal of Educational Science, Vol.1 (4), pp.11-20.Retrieved from SSRN Database.in August, 2018.

REPORTS OF MINISTERIES & OTHER AGENCIES: -

इक्विटी क्लब, नयी दिल्ली. (2014). क्या राजनीतिक दलों के चुनावी घोषणा पत्र प्रासंगिक हैं? नयी दिल्लीः इक्विटी मास्टर डॉट कॉम.

निर्वाचन विभाग, नयी दिल्ली. (2014). चुनावी घोषणा पत्र बनाने के लिए गाईडलाईनः माननीय सर्वोच्च न्यायालय का फैसला. नयी दिल्लीः निर्वाचन विभाग. नयी दिल्लीः भारत, pp. 7-9.

MENIFESTO -

भारतीय जनता पार्टी (भा.ज.पा./ B.J.P.) लोक सभा चुनाव 2024 का पार्टी घोषणा पत्र।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (कांग्रेस/ I.N.C.) लोक सभा चुनाव 2024 का पार्टी घोषणा पत्र।